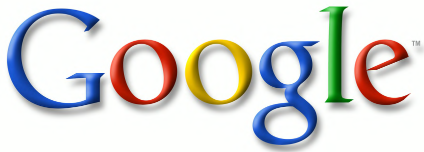
Google

ANDOVER-HARVARD LIBRARY
AH 3YMP P

HARVARD
UNIVERSITY
LIBRARY

SIGILLVM ACADEMIAE HARVARDIANAE IN NOV ANG
CHRISTO ET ECCLESIAE
VE RI TAS

# EVANGELIUM

## S. JOANNIS

SECUNDUM CODICES VETERO-SLAVICOS
CHARACTERIBUS GLAGOLICIS
ET CYRILLICIS UNACUM
TEXTU GRAECO ET LATINO
EXARATUM.

PRAGAE.
IN COMMISSIONE FRANC. ŘIVNÁČ, BIBLIOPOLAE.
A. S. H. 1897.

IN BENEDICTAM

# SS. CYRILLI ET METHODII

MEMORIAM

OFFERT

*J. M.*

## ΕΥΑΓΓΕΛΙΟΝ ΚΑΤΑ ΙΩΑΝΝΗΝ.

### Κεφαλη I.

1. Ἐν ἀρχῇ ἠν ὁ Λογος, και ὁ Λογος ἠν προς τον Θεον, και Θεος ἠν ὁ Λογος.

2. Οὑτος ἠν ἐν ἀρχῇ προς τον Θεον.

3. Παντα δἰ αὐτοῦ ἐγενετο, και χωρις αὐτοῦ ἐγενετο οὐδε ἑν, ὁ γεγονεν.

4. Ἐν αὐτῷ ζωη ἠν, και ἡ ζωη ἠν το φῶς τῶν ἀνθρωπων,

5. και το φῶς ἐν τῇ σκοτιᾳ φαινει, και ἡ σκοτια αὐτο οὐ κατελαβεν.

6. Ἐγενετο ἀνθρωπος, ἀπεσταλμενος παρα Θεοῦ, ὀνομα αὐτῷ Ἰωαννης.

7. Οὑτος ἠλθεν εἰς μαρτυριαν, ἱνα μαρτυρηση περι τοῦ φωτος, ἱνα παντες πιστευσωσι δἰ αὐτοῦ.

8. Οὐκ ἠν ἐκεῖνος το φῶς, ἀλλ' ἱνα μαρτυρηση περι τοῦ φωτος.

9. Ἠν το φῶς το ἀληθινον, ὁ φωτιζει παντα ἀνθρωπον ἐρχομενον εἰς τον κοσμον.

10. Ἐν τῷ κοσμῳ ἠν, και ὁ κοσμος δἰ αὐτοῦ ἐγενετο, και ὁ κοσμος αὐτον οὐκ ἐγνω.

11. Εἰς τα ἰδια ἠλθεν, και οἱ ἰδιοι αὐτον οὐ παρελαβον.

12. Ὁσοι δε ἐλαβον αὐτον, ἐδωκεν αὐτοῖς ἐξουσιαν τεκνα Θεοῦ γενεσθαι, τοῖς πιστευουσιν εἰς το ὀνομα αὐτοῦ,

13. οἱ οὐκ ἐξ αἱματων, οὐδε ἐκ θεληματος σαρκος, ουδε ἐκ θεληματος ἀνδρος, ἀλλ' ἐκ Θεοῦ ἐγεννηθησαν.

[illegible]

# EVANGELIUM SECUNDUM JOANNEM.

## Caput I.

1. In principio erat Verbum, et Verbum erat apud Deum, et Deus erat Verbum.

2. Hoc erat in principio apud Deum.

3. Omnia per ipsum facta sunt, et sine ipso factum est nihil, quod factum est.

4. In ipso vita erat, et vita erat lux hominum,

5. et lux in tenebris lucet, et tenebrae eam non comprehenderunt.

6. Fuit homo missus a Deo, cui nomen erat Joannes.

7. Hic venit in testimonium, ut testimonium perhiberet de lumine, ut omnes crederent per illum.

8. Non erat ille lux, sed ut testimonium perhiberet de lumine.

9. Erat lux vera, quae illuminat omnem hominem venientem in hunc mundum.

10. In mundo erat, et mundus per ipsum factus est, et mundus eum non cognovit.

11. In propria venit, et sui eum non receperunt;

12. quotquot autem receperunt eum, dedit eis potestatem filios Dei fieri, his, qui credunt in nomine ejus:

13. qui non ex sanguinibus, neque ex voluntate carnis, neque ex voluntate viri, sed ex Deo nati sunt.

# ЄВАНЪГЕЛИЮ ѠТЪ ИОАНА.

## Глава .а҃.

.а. Искони бѣ Слово, и Слово бѣ ѿтъ Бога, и Богъ бѣ Слово.

.в. Се бѣ искони ѹ Бога.

.г. Тѣмь вьсѧ быша, и без нѥго ничь-тоже не бысть, ѥже бысть.

.д. Въ томь животъ бѣ, и животъ бѣ свѣтъ чловѣкомъ,

.є. и свѣтъ въ тьмѣ свьтить сѧ, и тьма ѥго не ѡбѧтъ.

.ѕ. Бысть чловѣкъ посъланъ ѿтъ Бога, ѥмоуже имѧ Иоанъ.

.з. Тъ прїиде въ съвѣдѣтельство, да съвѣдѣтельствоуѥть ѡ свѣтѣ, да вьси вѣрѫ имѫть имь.

.и. Не бѣ тъ свѣтъ, нъ да съвѣдѣтельствоуѥть ѡ свѣтѣ.

.ѳ. Бѣ свѣтъ истиньный, иже просвѣштаѥть вьсѧкого чловѣка грѧдѫшта въ миръ.

.і. Въ мирѣ бѣ, и миръ тѣмь бысть, и миръ ѥго не позна.

.аі. Въ своꙗ прїиде и свои ѥго не приѩша.

.ві. Ѥлико же ихъ приѩтъ и, дастъ имъ ѡбластъ чѧдомъ Божиѥмъ быти, вѣроуѭштемъ въ имѧ ѥго:

.гі. иже не ѿтъ кръве, ни ѿтъ похоти плътьскыѩ, ни ѿтъ похоти мѫжьскыѩ, нъ ѿтъ Бога родиша сѧ.

14. *Και ὁ Λογος σαρξ ἐγενετο, και ἐσκηνωσεν ἐν ἡμῖν, (και ἐθεασαμεθα την δοξαν αὐτοῦ, δοξαν ὡς μονογενοῦς παρα Πατρος,) πληρης χαριτος και ἀληθειας.*

[illegible]

15. *Ιωαννης μαρτυρεῖ περι αὐτοῦ και κεκραγεν λεγων· Οὑτος ἡν ὁν εἶπον· Ὁ οπισω μου ἐρχομενος ἐμπροσθεν μου γεγονεν, ὁτι πρῶτος μου ἠν,*

[illegible]

16. *και ἐκ τοῦ πληρωματος αὐτοῦ ἡμεῖς παντες ἐλαβομεν, και χαριν ἀντι χαριτος,*

[illegible]

17. *ὁτι ὁ νομος δια Μωυσεως ἐδοθη, ἡ χαρις και ἡ ἀληθεια δια Ιησοῦ Χριστοῦ ἐγενετο.*

[illegible]

18. *Θεον οὐδεις ἑωρακεν πωποτε· ὁ μονογενης υἱος ὁ ων εἰς τον κολπον τοῦ Πατρος, ἐκεῖνος ἐξηγησατο.*

[illegible]

19. *Και αὑτη ἐστιν ἡ μαρτυρια τοῦ Ιωαννου, ὁτε ἀπεστειλαν (προς αὐτον) οἱ Ιουδαῖοι ἐξ Ἱεροσολυμων ἱερεῖς και λευῖτας, ἱνα ἐρωτησωσιν αὐτον· Συ τις εἰ;*

[illegible]

20. *Και ὡμολογησεν και οὐκ ἠρνησατο, και ὡμολογησεν· Ὁτι οὐκ εἰμι ἐγω ὁ Χριστος.*

[illegible]

21. *Και ἠρωτησαν αὐτον· Τι οὐν, Ἡλιας εἰ συ; και λεγει· Οὐκ εἰμι. Ὁ προφητης εἰ συ; Και ἀπεκριθη· Οὐ.*

[illegible]

22. *Εἶπον οὐν αὐτῷ· Τις εἰ; ἱνα ἀποκρισιν δῶμεν τοῖς πεμψασιν ἡμᾶς. Τι λεγεις περι σεαυτοῦ;*

[illegible]

23. *Ἐφη· Ἐγω „φωνη βοῶντος ἐν τῇ ἐρημῳ· Εὐθυνατε την ὁδον Κυριου" καθὼς εἶπεν Ἡσαϊας ὁ προφητης.*

[illegible]

24. *Και οἱ ἀπεσταλμενοι ἠσαν ἐκ τῶν Φαρισαιων·*

[illegible]

25. *και ἠρωτησαν αὐτον, και εἶπον αὐτῷ· Τι οὐν βαπτιζεις, εἰ συ οὐκ εἰ ὁ Χριστος, οὐτε Ἡλιας, οὐτε ὁ προφητης;*

[illegible]

26. *Ἀπεκριθη αὐτοῖς ὁ Ιωαννης, λεγων· Ἐγω βαπτιζω ἐν ὑδατι· μεσος δε ὑμῶν ἑστηκεν, ὁν ὑμεῖς οὐκ οἰδατε.*

[illegible]

27. *Αὐτος ἐστιν ὁ ὀπισω μου ἐρχομενος, ὁς ἐμπροσθεν μου γεγονεν· οὑ ἐγω οὐκ εἰμι ἀξιος, ἱνα λυσω αὐτοῦ τον ἱμαντα τοῦ ὑποδηματος.*

[illegible]

14. Et Verbum caro factum est et habitavit in nobis; et vidimus gloriam ejus, gloriam quasi unigeniti a Patre, plenum gratiae et veritatis.

.дı. И Слово плъть бъıстъ, и въсели са въ нъı· и видѣхомъ славѫ ѥго, славѫ ѧко ѥдиноучадааго ѡтъ Ѡтьца, испльнь благодѣти и истины.

15. Joannes testimonium perhibet de ipso et clamat dicens: Hic erat, quem dixi: Qui post me venturus est, ante me factus est, quia prior me erat.

.еı. Иоанъ съвѣдѣтельствова ѡ нѥмь и възъва глаголѩ· Сь бѣ, ѥгоже рѣхъ: Грѧдъıй по мънѣ, прѣдъ мъноѭ бъıстъ, ѩко пръвѣи мене бѣ.

16. Et de plenitudine ejus nos omnes accepimus, et gratiam pro gratia.

.ѕı. И ѡтъ исплъненнѩ ѥго мы вьси приѩхомъ благодѣть въз благодѣть.

17. Quia lex per Moysen data est, gratia et veritas per Jesum Christum facta est.

.зı Ѩко законъ Мойсеомь данъ бъıстъ, благодѣть и истина Іисоусомь Христомь бъıстъ.

18. Deum nemo vidit umquam: unigenitus Filius, qui est in sinu Patris, ipse enarravit.

.иı. Бога никътоже никъдеже не видѣ· тъкъмо ѥдиноучадъıй Сынъ сый въ лонѣ Ѡтьчи, тъ исповѣда.

19. Et hoc est testimonium Joannis, quando miserunt Iudaei ab Jerosolymis Sacerdotes et Levitas ad eum, ut interrogarent eum: Tu quis es?

.ѳı. И се ѥсть съвѣдѣтельство Иоаново, ѥгда посълашѧ Июдеи ѡтъ Иероусалима Иерей и Левъгитъı къ нѥмоу, да въпросать ѥго· Ты къто ѥси;

20. Et confessus est et non negavit, et confessus est: Quia non sum ego Christus.

.к. И исповѣда и не ѡтъвръже са и исповѣда· Ѩко нѣсмь азъ Христосъ.

21. Et interrogaverunt eum: Quid ergo? Elias es tu? Et dixit: Non sum. Propheta es tu? Et respondit: Non.

.ка. И въпросиша и· Къто оубо ты ѥси; Илиѩ ли ѥси; И глагола· Нѣсмь. Пророкъ ли ѥси ты; И ѡтъвѣшта· Ни.

22. Dixerunt ergo ei: Quis es, ut responsum demus his, qui miserunt nos? quid dicis de te ipso?

.кв. Рѣшѧ же ѥмоу· Къто ѥси, да ѡтъвѣтъ дамъ посълавъшиимъ нъı; чьто глаголѥши ѡ тебѣ самомь;

23. Ait: Ego vox clamantis in deserto: Dirigite viam Domini, sicut dixit Isaias propheta.

.кг. Рече же· Азъ гласъ въпиѭштааго въ поустыни· Исправите пѫть Господьнь, ѩкоже рече Исаиѩ пророкъ.

24. Et qui missi fuerant, erant ex Pharisaeis:

.кд. Посълании же бѣахѫ ѡтъ Фарисеи.

25. Et interrogaverunt eum et dixerunt ei: Quid ergo baptizas, si tu non es Christus, neque Elias, neque Propheta?

.ке. И въпросиша ѝ и рѣшѧ ѥмоу· Чьто оубо крьштаѥши, аште ты нѣси Христосъ, ни Илиѩ, ни Пророкъ;

26. Respondit eis Joannes, dicens: Ego baptizo in aqua: medius autem vestrum stetit, quem vos nescitis.

.кѕ. Ѡтъвѣшта имъ Иоанъ глаголѩ· Азъ крьштаю въ водѣ, посрѣдѣ же васъ стоить, ѥгоже въı не вѣсте.

27. Ipse est, qui post me venturus est, qui ante me factus est, cujus ego non sum dignus ut solvam ejus corrigiam calceamenti.

.кз. Тъ ѥсть грѧдъıй по мънѣ, ѩко пръвѣи мене бѣ ѥмоуже нѥсмь достоинъ, да ѡтърѣшѫ ремень сапогоу ѥго.

28. Ταῦτα ἐν Βηθανίᾳ ἐγένετο, πέραν τοῦ Ἰορδάνου, ὅπου ἦν Ἰωάννης βαπτίζων.

29. Τῇ ἐπαύριον βλέπει ὁ Ἰωάννης τὸν Ἰησοῦν ἐρχόμενον πρὸς αὐτόν, καὶ λέγει· Ἴδε ὁ ἀμνὸς τοῦ Θεοῦ, ὁ αἴρων τὴν ἁμαρτίαν τοῦ κόσμου.

30. Οὗτός ἐστι, περὶ οὗ ἐγὼ εἶπον· Ὀπίσω μου ἔρχεται ἀνήρ, ὃς ἔμπροσθέν μου γέγονεν, ὅτι πρῶτός μου ἦν.

31. Κἀγὼ οὐκ ᾔδειν αὐτόν· ἀλλ' ἵνα φανερωθῇ τῷ Ἰσραήλ, διὰ τοῦτο ἦλθον ἐγὼ ἐν τῷ ὕδατι βαπτίζων.

32. Καὶ ἐμαρτύρησεν Ἰωάννης, λέγων· Ὅτι τεθέαμαι τὸ Πνεῦμα καταβαῖνον ὡσεὶ περιστερὰν ἐξ οὐρανοῦ, καὶ ἔμεινεν ἐπ' αὐτόν.

33. Κἀγὼ οὐκ ᾔδειν αὐτόν· ἀλλ' ὁ πέμψας με βαπτίζειν ἐν ὕδατι, ἐκεῖνός μοι εἶπεν· Ἐφ' ὃν ἂν ἴδῃς τὸ Πνεῦμα καταβαῖνον καὶ μένον ἐπ' αὐτόν, οὗτός ἐστιν ὁ βαπτίζων ἐν Πνεύματι Ἁγίῳ.

34. Κἀγὼ ἑώρακα, καὶ μεμαρτύρηκα, ὅτι οὗτός ἐστιν ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ.

35. Τῇ ἐπαύριον πάλιν εἱστήκει ὁ Ἰωάννης, καὶ ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ δύο.

36. Καὶ ἐμβλέψας τῷ Ἰησοῦ περιπατοῦντι, λέγει· Ἴδε ὁ ἀμνὸς τοῦ Θεοῦ.

37. Καὶ ἤκουσαν αὐτοῦ οἱ δύο μαθηταὶ λαλοῦντος, καὶ ἠκολούθησαν τῷ Ἰησοῦ.

38. Στραφεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς καὶ θεασάμενος αὐτοὺς ἀκολουθοῦντας, λέγει αὐτοῖς·

39. Τί ζητεῖτε; Οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· Ῥαββὶ (ὃ λέγεται ἑρμηνευόμενον διδάσκαλε) ποῦ μένεις;

40. Λέγει αὐτοῖς· Ἔρχεσθε καὶ ἴδετε. Ἦλθον καὶ εἶδον, ποῦ μένει· καὶ παρ' αὐτῷ ἔμειναν τὴν ἡμέραν ἐκείνην. Ὥρα δὲ ἦν ὡς δεκάτη.

41. Ἦν Ἀνδρέας, ὁ ἀδελφὸς Σίμωνος Πέτρου εἷς ἐκ τῶν δύο τῶν ἀκουσάντων παρὰ Ἰωάννου καὶ ἀκολουθησάντων αὐτῷ.

42. Εὑρίσκει οὗτος πρῶτον τὸν ἀδελφὸν τὸν ἴδιον Σίμωνα, καὶ λέγει αὐτῷ· Εὑρήκαμεν τὸν Μεσσίαν (ὅ ἐστιν μεθερμηνευόμενον, ὁ Χριστός).

.κη. [illegible]

.κθ. [illegible]

.λ. [illegible]

.λα. [illegible]

.λβ. [illegible]

.λγ. [illegible]

.λδ. [illegible]

.λε. [illegible]

.λϛ. [illegible]

.λζ. [illegible]

.λη. [illegible]

.λθ. [illegible]

.μ. [illegible]

.μα. [illegible]

.μβ. [illegible]

28. Haec in Bethania facta sunt trans Jordanem, ubi erat Joannes baptizans.

.кн. Си въ Виѳаніи бꙑшѧ ѡб ѡнъ полъ Иордана, идеже бѣ Иоанъ крьстѧ.

29. Altera die vidit Joannes Jesum venientem ad se, et ait: Ecce, Agnus Dei, ecce qui tollit peccatum mundi.

.кѳ. Въ оутрѣи же дьнь видѣ Иоанъ Іисоуса грѧдѫшта къ себѣ и глагола: Се, Агньць Божій въземлѧй грѣхъ вьсего мира.

30. Hic est, de quo dixi: Post me venit vir, qui ante me factus est, quia prior me erat.

.л. Сь ѥсть, ѡ нѥмьже азъ рекохъ: По мънѣ идеть мѫжь, иже прѣдъ мъноѭ бꙑстъ. ꙗко пръвѣи мене бѣ.

31. Et ego nesciebam eum: sed ut manifestetur in Israel, propterea veni ego in aqua baptizans.

.ла. И азъ невѣдѣахъ ѥго· нъ да ѣвить сѧ Израилѥви, сего ради приидохъ азъ въ водѣ крьстѧ.

32. Et testimonium perhibuit Joannes, dicens: Quia vidi Spiritum descendentem quasi columbam de caelo, et mansit super eum.

.лб. И съвѣдѣтельствова Иоанъ, глаголѧ: Ꙗко видѣхъ Доухъ съходѧшть ꙗко голѫбь съ небесе, и прѣбꙑсть на нѥмь.

33. Et ego nesciebam eum: sed qui misit me baptizare in aqua, ille mihi dixit: Super quem videris Spiritum descendentem et manentem super eum, hic est, qui baptizat in Spiritu sancto.

.лг. И азъ не вѣдѣахъ ѥго· нъ посълавꙑй мѧ крьстити въ водѣ, тъ мънѣ рече: Надъ ньже оузьриши Доухъ съходѧшть и прѣбꙑвающть на нѥмь, сь ѥсть крьстѧй Доухъмь свѧтꙑмь.

34. Et ego vidi et testimonium perhibui, quia hic est Filius Dei.

.лд. И азъ видѣхъ и съвѣдѣтельствовахъ, ꙗко сь ѥсть Сꙑнъ Божій.

35. Altera die iterum stabat Joannes, et ex discipulis ejus duo.

.ле. Въ оутрѣи же дьнь пакꙑ стоꙗаше Иоанъ, и ѿтъ оученикъ ѥго дъва.

36. Et respiciens Jesum ambulantem dixit: Ecce, Agnus Dei.

.лѕ. И оузьрѣвъ Іисоуса ходѧшта глагола: Се, Агньць Божій.

37. Et audierunt eum duo discipuli loquentem et secuti sunt Jesum.

.лз. И слꙑшаста і ѡба оученика глаголѭшть, и по нѥмь идоста.

38. Conversus autem Jesus, et videns eos sequentes se, dixit eis:

.лн. Ѡбраштъ же сѧ Іисоусъ и видѣвъ ꙗ по себѣ идѫшта, глагола има:

Quid quaeritis? Qui dixerunt ei: Rabbi, (quod dicitur interpretatum Magister,) ubi habitas?

Чьсо иштета; Ѡна же рекоста ѥмоу: Равви (ѥже глаголѥть сѧ съказаѥмо Оучителю,) къде живеши;

39. Dicit eis: Venite, et videte. Venerunt et viderunt, ubi maneret; et apud eum manserunt die illo: hora autem erat quasi decima.

.лѳ. Глагола има: Приидѣта и видита. Приидоста же и видѣста, къде живѣаше, и прѣбꙑста оу нѥго дьнь тъ· година же бѣ ꙗко десѧтаꙗ.

40. Erat autem Andreas frater Simonis Petri unus ex duobus, qui audierant a Joanne et secuti fuerant eum.

.м. Бѣ же Андреꙗ, братъ Симона Петра, ѥдинъ ѿтъ ѡбоѭ слꙑшавъшоуѭ ѿтъ Иоана и по нѥмь шьдъшоуѭ.

41. Invenit hic primum fratrem suum Simonem, et dicit ei: Invenimus Messiam (quod est interpretatum Christus).

.ма. Ѡбрѣте сь прѣжде брата своѥго Симона и глагола ѥмоу: Ѡбрѣтохомъ Месиѭ, (ѥже ѥсть съказаѥмо Христосъ).

43. *Και ἤγαγεν αὐτον προς τον Ἰησοῦν. Ἐμβλεψας δε αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς εἰπεν· Συ εἰ Σιμων, ὁ υἱος Ἰωνᾶ· συ κληθησῃ Κηφᾶς (ὁ ἑρμηνευεται Πετρος).*

44. *Τῇ ἐπαυριον ἠθελησεν ὁ Ἰησοῦς ἐξελθεῖν εἰς την Γαλιλαιαν, και εὑρισκει Φιλιππον, και λεγει αὐτῷ· Ἀκολουθει μοι.*

45. *Ἠν δε ὁ Φιλιππος ἀπο Βηθσαϊδα, ἐκ τῆς πολεως Ἀνδρεου και Πετρου.*

46. *Εὑρισκει Φιλιππος τον Ναθαναηλ, και λεγει αὐτῷ· Ὁν ἐγραψε Μωϋσῆς ἐν τῷ νομῳ και οἱ προφῆται, εὑρηκαμεν, Ἰησοῦν τον υἱον τοῦ Ἰωσηφ τον ἀπο Ναζαρετ.*

47. *Και εἰπεν αὐτῷ Ναθαναηλ· Ἐκ Ναζαρετ δυναται τι ἀγαθον εἰναι; Λεγει αὐτῷ Φιλιππος· Ἐρχου και ἰδε.*

48. *Εἰδεν ὁ Ἰησοῦς τον Ναθαναηλ ἐρχομενον προς αὐτον, και λεγει περι αὐτοῦ.' Ἰδε ἀληθῶς Ἰσραηλιτης, ἐν ᾧ δολος οὐκ ἐστιν.*

49. *Λεγει αὐτῷ Ναθαναηλ· Ποθεν με γινωσκεις; Ἀπεκριθη ὁ Ἰησοῦς και εἰπεν αὐτῷ. Προ τοῦ σε Φιλιππον φωνῆσαι ὀντα ὑπο την συκῆν εἰδον σε.*

50. *Ἀπεκριθη Ναθαναηλ και λεγει αὐτῷ· Ῥαββι, συ εἰ ὁ υἱος τοῦ Θεοῦ, συ εἰ ὁ βασιλευς τοῦ Ἰσραηλ.*

51. *Ἀπεκριθη Ἰησοῦς και εἰπεν αὐτῷ· Ὁτι εἰπον σοι· Εἰδον σε ὑποκατω τῆς συκῆς, πιστευεις; μειζω τουτων ὀψει.*

52. *Και λεγει αὐτῷ· Ἀμην, Ἀμεν λεγω ὑμῖν, Ἀπ' ἀρτι οψεσθε τον οὐρανον ἀνεῳγοτα, και τους ἀγγελους τοῦ Θεοῦ ἀναβαινοντας και καταβαινοντας ἐπι τον υἱον τοῦ ἀνθρωπου.*

## *Κεφ. II.*

1. *Και τῇ ἡμερᾳ τῇ τριτῃ γαμος ἐγενετο ἐν Κανᾷ τῆς Γαλιλαιας· και ἠν ἡ μητηρ τοῦ Ιησοῦ ἐκεῖ.*

42. Et adduxit eum ad Jesum. Intuitus autem eum Jesus, dixit: Tu es Simon, filius Jonae: tu vocaberis Cephas, quod interpretatur Petrus.

.мв. И приведе ѝ къ Исоусови. Възьрѣвъ же на нь Інсоусъ рече: Ты єси Симонъ, сынъ Иониинъ· ты наречеши сѧ Кифа, єже съказаєть сѧ Петръ.

43. In crastinum voluit exire in Galilaeam, et invenit Philippum. Et dicit ei Jesus: Sequere me.

.мг. Въ оутрѣи же дьнь въсхотѣ Інсоусъ изити въ Галилеѭ и обрѣте Филипа, и глагола ємоу: Гради по мънѣ

44. Erat autem Philippus a Bethsaida, civitate Andreae et Petri.

.мд. Бѣ же Филипъ отъ Виѳсаиды, града Андреова и Петрова.

45. Invenit Philippus Nathanael, et dicit ei: Quem scripsit Moyses in lege et Prophetae, invenimus Jesum, filium Joseph a Nazareth.

.ме. Обрѣте Филипъ Наѳанаила и глагола ємоу: Єгоже писа Моисей въ законѣ и Пророци, обрѣтохомъ Інсоуса, сына Иосифова, иже отъ Назареѳа.

46. Et dixit ei Nathanael: A Nazareth potest aliquid boni esse? Dicit ei Philippus: Veni, et vide.

.мѕ. И глагола ємоу Наѳанаилъ: Отъ Назареѳа можеть ли что добро быти; Глагола ємоу Филипъ: Прииди и виждь.

47. Vidit Jesus Nathanael venientem ad se, et dicit de eo: Ecce, vere Israelita, in quo dolus non est.

.мз. Видѣ же Інсоусъ Наѳанаила грѧдѫшта къ себѣ и глагола о немь: Се, въ истинѫ Израилитѣнинъ, въ немьже льсти нѣсть.

48. Dicit ei Nathanael: Unde me nosti? Respondit Jesus et dixit ei: Priusquam te Philippus vocaret, cum esses sub ficu, vidi te.

.ми. Глагола ємоу Наѳанаилъ: Како мѧ знаєши; Отъвѣштавъ Інсоусъ рече ємоу: Прѣжде даже не възгласи тебе Филипъ сѫшта подъ смокъвиѭ, видѣхъ тѧ.

49. Respondit ei Nathanael, et ait: Rabbi, tu es Filius Dei, tu es Rex Israel.

.мѳ. Отъвѣшта Наѳанаилъ и глагола ємоу: Равви, ты єси Сынъ Божій, ты єси царь Израилєвъ.

50. Respondit Jesus, et dixit ei: Quia dixi tibi: Vidi te sub ficu, credis: majus his videbis.

.н. Отъвѣшта Інсоусъ и рече ємоу: занє рекохъ ти· ꙗко видѣхъ тѧ подъ смокъвиѭ, вѣроуєши; Больша сихъ оузьриши.

51. Et dicit ei: Amen, amen dico vobis: Videbitis caelum apertum, et Angelos Dei ascendentes et descendentes super Filium hominis.

.на. И глагола ємоу: Аминъ, аминъ глаголѭ вамъ: Отъ селѣ оузьрите небеса отъврьста, и Анъгелъи Божиꙗ въсходѧшта и низъходѧшта надъ Сынъ чловѣчьскый.

## Caput II.

## Глава .в.

1. Et die tertio nuptiae factae sunt in Cana Galilaeae, et erat mater Jesu ibi.

.а. И въ третій дьнь бракы быша въ Кана Галилейстѣ, и бѣ мати Інсоусова тоу.

2. 'Εκληθη δε και ὁ 'Ιησοῦς και οἱ μαθηται αὐτοῦ εἰς τον γαμον.

3. Και ὑστερησαντος οἰνου, λεγει ἡ μητηρ τοῦ 'Ιησοῦ προς αὐτον: Οἰνον οὐκ ἐχουσι.

4. Λεγει αὐτῇ ὁ 'Ιησοῦς· Τι ἐμοι και σοι, γυναι; οὐπω ἡκει ἡ ὡρα μου.

5. Λεγει ἡ μητηρ αὐτοῦ τοῖς διακονοις· 'Ο τι ἀν λεγῃ ὑμῖν, ποιησατε.

6. 'Ησαν δε ἐκεῖ ὑδριαι λιθιναι ἐξ κειμεναι κατα τον καθαρισμον τῶν 'Ιουδαιων, χωροῦσαι ἀνα μετρητας δυο ἠ τρεῖς.

7. Λεγει αὐτοῖς ὁ 'Ιησοῦς· Γεμισατε τας ὑδριας ὑδατος. Και ἐγεμισαν αὐτας ἑως ἀνω.

8. Και λεγει αὐτοῖς· 'Αντλησατε νῦν και φερετε τῷ ἀρχιτρικλινῳ. Και ἠνεγκαν.

9. 'Ως δε ἐγευσατο ὁ ἀρχιτρικλινος το ὑδωρ οἰνον γεγενημενον (και οὐκ ᾔδει, ποθεν ἐστιν, οἱ δε διακονοι ᾔδεισαν οἱ ἠντληκοτες το ὑδωρ), φωνεῖ τον νυμφιον ὁ ἀρχιτρικλινος,

10. και λεγει αὐτῷ· Πᾶς ἀνθρωπος πρῶτον τον καλον οἰνον τιθησι, και ὁταν μεθυσθῶσι, τοτε τον ἐλασσω· συ τετηρηκας τον καλον οἰνον ἑως ἀρτι.

11. Ταυτην ἐποιησε την ἀρχην τῶν σημειων ὁ 'Ιησοῦς ἐν Κανᾷ τῆς Γαλιλαιας, και ἐφανερωσε την δοξαν αὐτοῦ· και ἐπιστευσαν εἰς αὐτον οἱ μαθηται αὐτοῦ.

12. Μετα τοῦτο κατεβη εἰς Καπερναουμ, αὐτος και ἡ μητηρ αὐτοῦ, και οἱ ἀδελφοι αὐτοῦ και οἱ μαθηται αὐτοῦ· και ἐκεῖ ἐμειναν οὐ πολλας ἡμερας.

13. Και ἐγγυς ἦν το πασχα τῶν 'Ιουδαιων, και ἀνεβη εἰς 'Ιεροσολυμα ὁ 'Ιησοῦς.

14. Και εὑρεν ἐν τῷ ἱερῷ τους πωλοῦντας βοας και προβατα και περιστερας, και τους κερματιστας καθημενους.

15. Και ποιησας φραγελλιον ἐκ σχοινιων παντας ἐξεβαλεν ἐκ τοῦ ἱεροῦ, τα τε προβατα και τους βοας· και τῶν κολλυβιστῶν ἐξεχεε το κερμα, και τας τραπεζας ἀνεστρεψε·

2. Vocatus est autem et Jesus et discipuli ejus ad nuptias.

3. Et deficiente vino dicit mater Jesu ad eum: Vinum non habent.

4. Et dicit ei Jesus: Quid mihi et tibi est mulier? Nondum venit hora mea.

5. Dicit mater ejus ministris: Quodcumque dixerit vobis, facite.

6. Erant autem ibi lapideae hydriae sex positae secundum purificationem Judaeorum, capientes singulae metretas binas vel ternas.

7. Dicit eis Jesus: Implete hydrias aqua. Et impleverunt eas usque ad summum.

8. Et dicit eis Jesus: Haurite nunc et ferte architriclino. Et tulerunt.

9. Ut autem gustavit architriclinus aquam vinum factam, et non sciebat, unde esset, ministri autem sciebant, qui hauserant aquam, vocat sponsum architriclinus,

10. et dicit ei: Omnis homo primum bonum vinum ponit, et cum inebriati fuerint, tunc id, quod deterius est: tu servasti bonum vinum usque adhuc.

11. Hoc fecit initium signorum Jesus in Cana Galilaeae et manifestavit gloriam suam, et crediderunt in eum discipuli ejus.

12. Post hoc descendit Capharnaum ipse et mater ejus et fratres ejus et discipuli ejus, et ibi manserunt non multis diebus.

13. Et prope erat Pascha Judaeorum, et ascendit Hierosolymam Jesus.

14. Et invenit in templo vendentes boves et oves et columbas, et nummularios sedentes:

15. et cum fecisset quasi flagellum de funiculis, omnes ejecit de templo, oves quoque et boves et nummulariorum effudit aes et mensas subvertit;

.в. Ꙁъванъ же бысть и Іисоусъ, и оученици ѥго на бракъи.

г. И недоставъшоу виноу глагола мати Іисоусова къ нѥмоу: Вина не имѫть.

.д. И глагола ѥй Іисоусъ: Чьто ѥсть мънѣ и тебѣ жено; Не оу приде година моꙗ.

.е. Глагола мати ѥго слоугамъ: Ѥже аште глаголѥть вамъ, сътворите.

.ѕ. Бѣ же тоу водоносъ камѣнъ шесть, лежашть по ѡчиштению Июдейскоу, въмѣстаашть по дъвѣма ли по трьмъ мѣрамъ.

.ꙁ. Глагола имъ Іисоусъ: Напльните водоносъи воды. И напльниша ѩ до врьха.

.и. И глагола имъ Іисоусъ: Почрьпѣте нынѣ и принесѣте архитриклинови. Ѡни же принесоша.

.ѳ. Ꙗко же въкоуси архитриклинъ вина бывъшаго ѡтъ воды и не вѣдѣаше, ѡтъ кѫдоу ѥсть· а слоугы вѣдѣахѫ, почрьпъшеи водѫ, пригласи жениха архитриклинъ,

.і. и глагола ѥмоу: Вьсакъ чловѣкъ прѣжде доброѥ вино полагаѥть, и ѥгда оупиѭть сѧ, тъгда хоуждеѥ· ты же съблюде доброѥ вино до селѣ.

.аі. Сь сътвори ꙁнамениѥмъ начатъкъ Іисоусъ въ Кана Галилейстѣи, и ꙗви славѫ своѭ, и вѣроваша въ нь оученици ѥго.

.ві. По семь сънide въ Кафарънаоумъ самъ и мати ѥго, и братиꙗ ѥго, и оученици ѥго, и тоу не мъногъи дьни прѣбыша.

.гі. И близъ бѣ Пасха Июдейска, и въниде Іисоусъ въ Иѥроусалимъ.

.ді. И ѡбрѣте въ црькъви продаѭштаꙗ волъи и ѡвьцѧ и голѫби и пѣнѧжьникъи сѣдѧшта·

.еі. и сътворь ꙗко бичь ѡтъ връвиі изгъна вьсѧ из црькъве, ѡвьцѧ же и волъи, и тръжьникомъ расъипа сьребро и дъскъи испроврьже.

16. *και τοῖς τας περιστερας πωλοῦσιν εἶπεν· Ἀρατε ταῦτα ἐντεῦθεν· μη ποιεῖτε τον οἶκον τοῦ Πατρος μου οἶκον ἐμποριου.*

17. *Ἐμνησθησαν δε οἱ μαθηται αὐτοῦ, ὅτι γεγραμμενον ἐστιν· „Ὁ ζηλος τοῦ οἴκου σου καταφαγεται με.“*

18. *Ἀπεκριθησαν οὖν οἱ Ἰουδαῖοι και εἶπον αὐτῷ· Τι σημεῖον δεικνυεις ἡμῖν, ὅτι ταῦτα ποιεῖς;*

19. *Ἀπεκριθη ὁ Ἰησοῦς και εἶπεν αὐτοῖς· Λυσατε τον ναον τουτον, και ἐν τρισιν ἡμεραις ἐγερῶ αὐτον.*

20. *Εἶπον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι· Τεσσαρακοντα και ἑξ ἐτεσιν ᾠκοδομηθη ὁ ναος οὗτος, και συ ἐν τρισιν ἡμεραις ἐγερεῖς αὐτον;*

21. *Ἐκεῖνος δε ἐλεγε περι τοῦ ναοῦ τοῦ σωματος αὐτοῦ.*

22. *Ὅτε οὖν ἠγερθε ἐκ νεκρῶν, ἐμνησθησαν οἱ μαθηται αὐτοῦ, ὅτι τοῦτο ἐλεγε· και ἐπιστευσαν τῇ γραφῇ και τῷ λογῳ, ᾧ εἶπεν ὁ Ἰησοῦς.*

23. *Ὡς δε ἦν ἐν (τοῖς) Ἱεροσολυμοις ἐν τῷ Πασχα, ἐν τῇ ἑορτῇ, πολλοι ἐπιστευσαν εἰς το ὀνομα αὐτοῦ, θεωροῦντες αὐτοῦ τα σημεῖα, ἁ ἐποιει.*

24. *Αὐτος δε ὁ Ἰησοῦς οὐκ ἐπιστευεν ἑαυτον αὐτοῖς, δια το αὐτον γινωσκειν παντας·*

25. *και ὅτι οὐ χρειαν εἶχεν, ἱνα τις μαρτυρηση περι τοῦ ἀνθρωπου· αὐτος γαρ ἐγινωσκε, τι ἦν ἐν τῷ ἀνθρωπῳ.*

## *Κεφ. III.*

1. *Ἠν δε ἀνθρωπος ἐκ τῶν Φαρισαιων, Νικοδημος ὀνομα αὐτῷ, ἀρχων τῶν Ἰουδαιων.*

2. *Οὗτος ἦλθε προς αὐτον νυκτος και εἶπεν αὐτῷ· Ῥαββι, οἴδαμεν, ὅτι ἀπο Θεοῦ ἐληλυθας διδασκαλος· οὐδεις γαρ δυναται ταῦτα τα σημεῖα ποιεῖν, ἁ συ ποιεῖς, ἐαν μη ᾐ ὁ Θεος μετ' αὐτοῦ.*

3. *Ἀπεκριθη ὁ Ἰησοῦς και εἶπεν αὐτῷ· Ἀμην, ἀμην λεγω σοι, ἐαν μη τις γεννηθῇ*

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

## [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

16. et his, qui columbas vendebant, dixit: Auferte ista hinc, nolite facere domum Patris mei domum negotiationis.

.ѕі. и продаѭштіимъ голѫби рече: Възьмѣте си ѿтъ сѫдоу, и нетворите домоу Ѿтьца моюго домоу коупьнааго.

17. Recordati vero sunt discipuli ejus, quia scriptum est: »Zelus domus tuae comedit me.«

.ꙁі. Помѧнѫша же оученици юго ꙗко написано юсть: „Жалость домоу твоюго сънѣстъ мѧ."

18. Responderunt ergo Judaei et dixerunt ei: Quod signum ostendis nobis, quia haec facis?

.иі. Ѿтъвѣшташа же Июдеи и рекоша юмоу: Коюе ꙁнамениюе ꙗвлѩюши намъ, ꙗко си твориши;

19. Respondit Jesus et dixit eis: Solvite templum hoc, et in tribus diebus excitabo illud.

.ѳі. Ѿтъвѣшта Іисоусъ и рече имъ: Раꙁорите цръкъвь сиѭ, и трьми дьньми въꙁдвигнѫ ѭ.

20. Dixerunt ergo Judaei: Quadraginta et sex annis aedificatum est templum hoc, et tu in tribus diebus excitabis illud?

.к. Рекоша же Июдеи: Четырьми десѧты и шестиѭ лѣтъ съꙁьдана бꙑстъ цръкꙑ си, а тꙑ ли трьми дьньми въꙁдвигнеши ѭ;

21. Ille autem dicebat de templo corporis sui.

.ка. Ѡнъ же глаголааше ѡ цръкъви тѣла своюго.

22. Cum ergo resurrexisset a mortuis, recordati sunt disciupli ejus, quia hoc dicebat, et crediderunt scripturae et sermoni, quem dixit Jesus.

.кв. Югда оубо въста ѿтъ мрътвꙑихъ, помѧнѫша оученици юго, ꙗко се глаголааше, и вѣрѫ ꙗша кънигамъ и словеси, юже рече Іисоусъ.

23. Cum autem esset Hierosolymis in Pascha in die festo, multi crediderunt in nomine ejus, videntes signa ejus, quae faciebat.

.кг. Югда же бѣ въ Иꙗроусалимѣ въ Пасхѫ, въ праꙁдьникъ, мъноꙃи вѣроваша въ имѧ юго, видѧште ꙁнамениꙗ юго, ꙗже творѣаше.

24. Ipse autem Jesus non credebat semet ipsum eis, eo quod ipse nosset omnes,

.кд. Самъ же Іисоусъ не въдаꙗше сѧ въ вѣрѫ ихъ, ꙁанюе самъ вѣдѣаше вьсѧ,

25. et quia opus ei non erat, ut quis testimonium perhiberet de homine: ipse enim sciebat, quid esset in homine.

.ке. и ꙗко не трѣбоваашe, да къто съвѣдѣтельствоують ѡ чловѣцѣ· самъ бо вѣдѣаше, чьто юсть въ чловѣцѣ.

## Cap. III.

## Глава Г.

1. Erat autem homo ex Pharisaeis, Nicodemus nomine, princeps Judaeorum:

.а. Бѣ же чловѣкъ ѿтъ Фарисей, имѧ юмоу Никодимъ, кънѧꙁь Июденскъ·

2. hic venit ad eum nocte et dixit ei: Rabbi, scimus quia a Deo venisti magister; nemo enim potest haec signa facere, quae tu facis, nisi fuerit Deus cum eo.

.в. сь пріиде къ нюмоу ноштиѭ и рече юмоу: Рав'ви, вѣмъ ꙗко ѿтъ Бога пришьлъ юси оучитель· никътоже бо неможеть ꙁнамениі сихъ творити, ꙗже тꙑ твориши, аште небѫдеть Богъ съ нимь.

3. Respondit Jesus et dxit ei: Amen, amen dico tibi, nisi quis natus fuerit

.г. Ѿтъвѣшта Іисоусъ и рече юмоу: Аминъ, аминъ глаголѭ тебѣ, аште къто

ἀνωθεν, οὐ δυναται ἰδεῖν την βασιλειαν τοῦ Θεοῦ.

4. Λεγει προς αὐτον ὁ Νικοδημος· Πῶς δυναται ἀνθρωπος γεννηθῆναι γερων ὤν; μη δυναται εἰς την κοιλιαν τῆς μητρος αὐτοῦ δευτερον εἰςελθεῖν και γεννηθῆναι;

5. Ἀπεκριθη ὁ Ἰησοῦς· Ἀμην, ἀμην λεγω σοι, ἐαν μη τις γεννηθῇ ἐξ ὑδατος και Πνευματος, οὐ δυναται εἰςελθεῖν εἰς την βασιλειαν τοῦ Θεοῦ.

6. Το γεγεννημενον ἐκ τῆς σαρκος σαρξ ἐστι· και το γεγεννημενον ἐκ τοῦ Πνευματος πνεῦμα ἐστιν.

7. Μη θαυμασῃς, ὁτι εἶπον σοι· Δεῖ ὑμᾶς γεννηθῆναι ἀνωθεν.

8. Το πνεῦμα ὁπου θελει πνεῖ, και την φωνην αὐτοῦ ἀκουεις, ἀλλ' οὐκ οἰδας, ποθεν ἐρχεται και ποῦ ὑπαγει: οὑτως ἐστι πᾶς ὁ γεγεννημενος ἐκ τοῦ Πνευματος.

9. Ἀπεκριθη Νικοδημος και εἰπεν αὐτῷ· Πῶς δυναται ταῦτα γενεσθαι;

10. Ἀπεκριθη Ἰησοῦς, και εἰπεν αὐτῷ· Συ εἶ ὁ διδασκαλος τοῦ Ἰσραηλ, και ταῦτα οὐ γινωσκεις;

11. Ἀμην αμην λεγω σοι, ὁτι ὁ οἰδαμεν λαλοῦμεν, και ὁ ἑωρακαμεν μαρτυροῦμεν, και την μαρτυριαν ἡμῶν οὐ λαμβανετε.

12. Εἰ τα ἐπιγεια εἰπον ὑμῖν και οὐ πιστευετε, πῶς ἐαν εἰπω ὑμῖν τα ἐπουρανια, πιστευσετε;

13. Και οὐδεις ἀναβεβηκεν εἰς τον οὐρανον, εἰ μη ἐκ τοῦ οὐρανου καταβας, ὁ υἱος τοῦ ἀνθρωπου (ὁ ὢν ἐν τῷ οὐρανῷ·)

14. Και καθως Μωϋσῆς ὑψωσεν τον ὀφιν ἐν τῇ ἐρημῳ, οὑτως ὑψωθῆναι δεῖ τον υἱον τοῦ ἀνθρωπου·

15. ἱνα πᾶς ὁ πιστευων εἰς αὐτον μη ἀποληται, ἀλλ' ἐχῃ ζωην αἰωνιον.

16. Οὑτως γαρ ἠγαπησεν ὁ Θεος τον κοσμον, ὡστε τον υἱον αὐτοῦ τον μονογενῆ ἐδωκεν, ἱνα πᾶς ὁ πιστευων εἰς αὐτον μη ἀποληται, ἀλλ' ἐχῃ ζωην αἰωνιον.

17. Οὐ γαρ ἀπεστειλεν ὁ Θεος τον υἱον αὐτοῦ εἰς τον κοσμον, ἱνα κρινῃ τον κοσμον, ἀλλ' ἱνα σωθῇ ὁ κοσμος δι' αὐτοῦ.

[illegible]

denuo, non poterit videre regnum Dei.

4. Dicit ad eum Nicodemus: Quomodo potest homo nasci, cum senex sit? Numquid potest in ventrem matris suae iterato introire et nasci?

5. Respondit Jesus: Amen, amen dico tibi, nisi quis renatus fuerit ex aqua et Spiritu, non potest introire in regnum Dei.

6. Quod natum est ex carne, caro est, et quod natum est ex Spiritu, spiritus est.

7. Non mireris, quia dixi tibi: Oportet vos nasci denuo.

8. Spiritus ubi vult spirat, et vocem ejus audis, sed non scis, unde veniat, et quo vadat: sic est omnis, qui natus est ex Spiritu.

9. Respondit Nicodemus et dixit ei: Quo modo possunt haec fieri?

10. Respondit Jesus et dixit ei: Tu es magister in Israël, et haec ignoras?

11. Amen, amen dico tibi, quia quod scimus, loquimur, et quod vidimus, testamur, et testimonium nostrum non accipitis.

12. Si terrena dixi vobis et non creditis, quomodo si dixero vobis coelestia, credetis?

13. Et nemo ascendit in coelum, nisi qui descendit de coelo, Filius hominis, qui est in coelo.

14. Et sicut Moyses exaltavit serpentem in deserto, ita exaltari oportet Filium hominis:

15. ut omnis, qui credit in ipsum, non pereat, sed habeat vitam aeternam.

16. Sic enim dilexit Deus mundum, ut Filium suum unigenitum daret, ut omnis, qui credit in eum, non pereat, sed habeat vitam aeternam.

17. Non enim misit Deus Filium suum in mundum, ut judicet mundum, sed ut salvetur mundus per ipsum.

не родить сѧ съ выше, не можеть видѣти царьствиѩ Божиѩ.

.д. Глагола ѥмоу Никодимъ: Како можеть чловѣкъ родити сѧ, старъ сꙑи; Ѥда можеть въторицеѭ вънити въ ѫтробѫ матере своѥѩ и родити сѧ;

.е. Ѿтъвѣшта Іисоусъ: Аминъ, аминъ глаголѭ тебѣ, аще къто не родить сѧ водоѭ и Доухомь, не можеть вънити въ царьство Божиѥ.

.ѕ. Рожденоѥ бо ѿтъ плъти, плъть ѥсть, и рожденоѥ отъ Доуха, доухъ ѥсть.

.з. Не диви сѧ, ѩко рекохъ ти: Подобаѥть вамъ родити сѧ съ выше.

.и. Доухъ идеже хоштеть дышеть, и гласъ ѥго слышиши, нъ не вѣси, ѿтъ кѫдоу приходить и камо идеть· тако ѥсть вьсакъ рожденый ѿтъ Доуха.

.ѳ. Ѿтъвѣшта Никодимъ и рече ѥмоу: Како могѫтъ си быти;

.і. Ѿтъвѣшта Іисоусъ и рече ѥмоу: Ты ѥси оучитель Израилѥвъ, и сихъ ли не вѣси;

.аі. Аминъ аминъ глаголѭ тебѣ; ѩко ѥже вѣмъ, глаголѥмъ, и ѥже видѣхомъ, съвѣдѣтельствоуѥмъ, и съвѣдѣтельства нашего не приѥмлѥте.

.ві. Аще земьнаѩ рекохъ вамъ, и не вѣроуѥте, како аще рекѫ вамъ небесьнаѩ, вѣрѫ имете;

.гі. И никътоже не възиде на небо, тъкъмо сшьдый съ небесе, Сынъ чловѣчьскый, сый на небеси.

.ді. И ѩко Моѵсей възнесе змиѭ въ поустыни, тако подобаѥть възнести сѧ Сыноу чловѣчьскоуоумоу·

.еі. да вьсакъ вѣроуѩй въ нь непогыбнеть, нъ имать животъ вѣчьный.

.ѕі. Тако бо възлюби Богъ миръ, ѩко Сына своѥго ѥдиночадааго дастъ, да вьсакъ вѣроуѩй въ нь непогыбнеть, нъ имать животъ вѣчьный.

.зі. Не посъла бо Богъ Сына своѥго въ миръ, да сѫдить мирови; нъ да съпасеть сѧ миръ имь.

18. Ὁ πιστευων εἰς αὐτον οὐ κρινεται· ὁ δε μη πιστευων ἠδη κεκριται, ὁτι μη πεπιστευκεν εἰς το ὀνομα τοῦ μονογενοῦς υἱοῦ τοῦ Θεοῦ.

19. Αὑτη δε ἐστιν ἡ κρισις, ὁτι το φῶς ἐληλυθεν εἰς τον κοσμον, και ἠγαπησαν οἱ ἀνθρωποι μᾶλλον το σκοτος, ἡ το φῶς· ἠν γαρ αὐτῶν πονηρα τα ἐργα.

20. Πᾶς γαρ ὁ φαῦλα πρασσων μισεῖ το φῶς, και οὐκ ἐρχεται προς το φῶς, ἱνα μη ἐλεγχθῇ τα ἐργα αὐτοῦ·

21. ὁ δε ποιῶν την ἀληθειαν ἐρχεται προς το φῶς, ἱνα φανερωθῇ αὐτοῦ τα ἐργα, ὁτι ἐν Θεῷ ἐστιν εἰργασμενα.

22. Μετα ταῦτα ἠλθεν ὁ Ἰησοῦς και οἱ μαθηται αὐτοῦ εἰς την Ἰουδαιαν γῆν, και ἐκεῖ διετριβεν μετ' αὐτῶν και ἐβαπτιζεν.

23. Ἠν δε και Ἰωαννης βαπτιζων ἐν Αἰνων ἐγγυς τοῦ Σαλειμ, ὁτι ὑδατα πολλα ἠν ἐκεῖ· και παρεγινοντο και ἐβαπτιζοντο.

24. Οὐπω γαρ ἠν βεβλημενος εἰς την φυλακην Ἰωαννης.

25. Ἐγενετο οὐν ζητησις ἐκ τῶν μαθητῶν Ἰωαννου μετα Ἰουδαιων περι καθαρισμοῦ.

26. Και ἠλθον προς τον Ἰωαννην και εἰπον αὐτῷ· Ῥαββι, ὁς ἠν μετα σοῦ περαν τοῦ Ἰορδανου, ᾧ συ μεμαρτυρηκας, ἰδε οὑτος βαπτιζει, και παντες ἐρχονται προς αὐτον.

27. Ἀπεκριθη Ἰωαννης και εἰπεν· Οὐ δυναται ἀνθρωπος λαμβανειν οὐδεν, ἐαν μη ᾖ δεδομενον αὐτῷ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ.

28. Αὐτοι ὑμεῖς μοι μαρτυρεῖτε, ὁτι εἰπον ἐγω· Οὐκ εἰμι ἐγω ὁ Χριστος, ἀλλ' ὁτι ἀπεσταλμενος εἰμι ἐμπροσθεν ἐκεινου.

29. Ὁ ἐχων την νυμφην νυμφιος ἐστιν· ὁ δε φιλος τοῦ νυμφιου, ὁ ἑστηκως και ἀκουων αὐτοῦ, χαρᾷ χαιρει δια την φωνην τοῦ νυμφιου. Αὑτη οὐν ἡ χαρα ἡ ἐμη πεπληρωται.

30. Ἐκεῖνον δεῖ αὐξανειν, ἐμε δε ἐλαττοῦσθαι.

31. Ὁ ἀνωθεν ἐρχομενος ἐπανω παντων ἐστιν. Ὁ ὢν ἐκ τῆς γῆς, ἐκ τῆς γῆς ἐστιν

18. Qui credit in eum, non judicatur; qui autem non credit, jam judicatus est, quia non credidit in nomine unigeniti Filii Dei.

19. Hoc est autem judicium, quia lux venit in mundum et dilexerunt homines magis tenebras, quam lucem; erant enim eorum mala opera.

20. Omnis enim, qui male agit, odit lucem, et non venit ad lucem, ut non arguantur opera ejus;

21. qui autem facit veritatem, venit ad lucem, ut manifestentur opera ejus, quia in Deo sunt facta.

22. Post haec venit Jesus et discipuli ejus in terram Judaeam, et illic demorabatur cum eis et baptizabat.

23. Erat autem et Joannes baptizans in Aenon juxta Salim, quia aquae multae erant illic, et veniebant et baptizabantur.

24. Nondum enim missus fuerat Joannes in carcerem.

25. Facta est autem quaestio ex discipulis Joannis cum Judaeis de purificatione.

26. Et venerunt ad Joannem et dixerunt ei: Rabbi! qui erat tecum trans Jordanem, cui tu testimonium perhibuisti, ecce hic baptizat, et omnes veniunt ad eum.

27. Respondit Joannes, et dixit: Non potest homo accipere quidquam, nisi fuerit ei datum de coelo.

28. Ipsi vos mihi testimonium perhibetis, quod dixerim: Ego non sum Christus, sed quia missus sum ante illum.

29. Qui habet sponsam, sponsus est; amicus autem sponsi, qui stat et audit eum, gaudio gaudet propter vocem sponsi. Hoc ergo gaudium meum impletum est.

30. Illum oportet crescere, me autem minui.

31. Qui desursum venit, super omnes est. Qui est de terra, de terra est, et

.ні. Вѣроуѩй въ нь, не бѫдеть ѡсѫжденъ· а не вѣроуѩй оуже ѡсѫжденъ ѥсть, ꙗко не вѣрова въ имѧ ѥдиночѧдааго Сына Божиꙗ.

.ѳі. Сь же ѥсть сѫдъ, ꙗко свѣтъ пріиде въ миръ, и възлюбиша чловѣци паче тьмѫ, неже свѣтъ· бѣша бо ихъ дѣла ꙁъла.

.к. Вьсакъ бо дѣлаѩй ꙁълаꙗ, ненавидить свѣта, и не приходить къ свѣтоу, да не ѡбличать сѧ дѣла ѥго·

.ка. а творѩй истинѫ, градеть къ свѣтоу, да ꙗвать сѧ дѣла ѥго, ꙗко ѡ Бозѣ сѫть съдѣлана.

.кв. По сихъ же пріиде Іисоусъ и оученици ѥго въ ꙁемлѭ Июдейскѫ, и тоу живѣаше съ ними и крьщааше.

.кг. Бѣ же и Иоанъ крьста въ Енонѣ близъ Салима, ꙗко воды мъногы бѣахѫ тоу, и прихождаахѫ и крьщаахѫ сѧ.

.кд. Не оу бо бѣ въсажденъ въ тьмьницѫ Иоанъ.

.ке. Бысть же сътѧꙁаниѥ ѡтъ оученикъ Иоановъ съ Июдеи ѡ ѡчищеніи.

.кѕ. И пріидоша къ Иоаноу и рекоша ѥмоу· Рав'ви, иже бѣ съ тобоѭ ѡб ѡнъ поль Иордана, ѥмоуже ты съвѣдѣтельствова, се тъ крьщаѥть, и вьси градѫть къ нѥмоу.

.кꙁ. Ѡтъвѣща Иоанъ и рече: Не можеть чловѣкъ пріимати ничьсоже, аще не бѫдеть ѥмоу дано съ небесе.

.ки. Вы сами мънѣ съвѣдѣтельствоуѥте, ꙗко рекохъ: Нѣсмь аꙁь Христосъ, нъ посъланъ ѥсмь прѣдъ нимь.

.кѳ. Имѣѩй невѣстѫ женихъ ѥсть· а дроугъ жениховъ стоꙗ и послоушаꙗ ѥго радостиѭ радоуѥть сѧ ꙁа гласъ жениховъ. Си оубо радость моꙗ испълни сѧ.

.л. Ѡномоу подобаѥть расти, а мънѣ мьнити сѧ.

.ла. Градꙑй съ выше надъ вьсѣми ѥсть. Сꙑй отъꙁемлꙗ ѡтъ ꙁемлꙗ ѥсть, и ѡтъ

και ἐκ τῆς γῆς λαλεῖ· ὁ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἐρχομενος ἐπανω παντων ἐστιν, (και)

32. ὁ ἑωρακεν και ἠκουσεν, τοῦτο μαρτυρεῖ, και την μαρτυριαν αὐτοῦ οὐδεις λαμβανει.

33. Ὁ λαβων αὐτοῦ την μαρτυριαν ἐσφραγισεν, ὁτι ὁ Θεος ἀληθης ἐστιν.

34. Ὁν γαρ ἀπεστειλεν ὁ Θεος, τα ῥηματα τοῦ Θεοῦ λαλεῖ· οὐ γαρ ἐκ μετρου διδωσιν ὁ Θεος το Πνεῦμα.

35. Ὁ Πατηρ ἀγαπᾷ τον Υἱον και παντα δεδωκεν ἐν τῇ χειρι αὐτοῦ.

36. Ὁ πιστευων εἰς τον Υἱον ἐχει ζωην αἰωνιον· ὁ δε ἀπειθῶν τῷ Υἱῷ οὐκ ὀψεται ζωην, ἀλλ' ἡ ὀργη τοῦ Θεοῦ μενει ἐπ' αὐτον.

[illegible]

## Κεφ. IV.

[illegible]

1. Ὡς οὖν ἐγνω ὁ Κυριος, ὁτι ἠκουσαν οἱ Φαρισαῖοι, ὁτι Ἰησοῦς πλειονας μαθητας ποιεῖ και βαπτιζει ἡ Ἰωαννης,

2. (καιτοιγε Ἰησοῦς αὐτος οὐκ ἐβαπτιζεν, ἀλλ' οἱ μαθηται αὐτοῦ·)

3. ἀφηκεν την Ἰουδαιαν και ἀπῆλθεν παλιν εἰς την Γαλιλαιαν.

4. Ἐδεῖ δε αὐτον διερχεσθαι δια τῆς Σαμαρειας.

5. Ἐρχεται οὖν εἰς πολιν τῆς Σαμαρειας λεγομενην Συχαρ, πλησιον τοῦ χωριου ὁ ἐδωκεν Ἰακωβ τῷ Ἰωσηφ, τῷ υἱῷ αὐτοῦ.

6. Ἠν δε ἐκεῖ πηγη τοῦ Ιακωβ. Ὁ οὖν Ἰησοῦς κεκοπιακως ἐκ τῆς ὁδοιποριας, ἐκαθεζετο οὑτως ἐπι τῇ πηγῇ· ὡρα ἠν ὡς ἐκτη.

7. Ἐρχεται γυνη ἐκ τῆς Σαμαρειας ἀντλῆσαι ὑδωρ. Λεγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Δος μοι πιεῖν.

8. Οἱ γαρ μαθηται αὐτοῦ ἀπεληλυθεισαν εἰς την πολιν, ἱνα τροφας ἀγορασωσιν.

9. Λεγει οὖν αὐτῷ ἡ γυνη ἡ Σαμαρεῖτις· Πῶς συ Ἰουδαῖος ὢν παρ' ἐμοῦ πιεῖν αἰτεῖς, γυναικος Σαμαρειτιδος οὐσης; οὐ γαρ συγχρῶνται Ἰουδαῖοι Σαμαρειταις.

[illegible]

de terra loquitur. Qui de coelo venit, super omnes est,

32. et quod vidit et audivit, hoc testatur, et testimonium ejus nemo accipit.

33. Qui accepit ejus testimonium, signavit, quia Deus verax est.

34. Quem enim misit Deus, verba Dei loquitur; non enim ad mensuram dat Deus Spiritum.

35. Pater diligit Filium, et omnia dedit in manu ejus.

36. Qui credit in Filium, habet vitam aeternam; qui autem incredulus est Filio, non videbit vitam, et ira Dei manet super eum.

## Cap. IV.

1. Ut ergo cognovit Jesus, quia audierunt Pharisaei, quod Jesus plures discipulos facit et baptizat, quam Joannes,

2. (quamquam Jesus non baptizaret, sed discipuli ejus:)

3. reliquit Judaeam et abiit iterum in Galilaeam.

4. Oportebat autem eum transire per Samariam.

5. Venit ergo in civitatem Samariae, quae dicitur Sichar, juxta praedium, quod dedit Jacob Joseph, filio suo.

6. Erat autem ibi fons Jacob. Jesus ergo fatigatus ex itinere, sedebat sic supra fontem. Hora erat quasi sexta.

7. Venit mulier de Samaria haurire aquam: dicit ei Jesus: Da mihi bibere.

8. Discipuli enim ejus abierant in civitatem, ut cibos emant.

9. Dicit ergo ei mulier illa Samaritana: Quomodo tu Judaeus cum sis, bibere a me poscis, quae sum mulier Samaritana? non enin coutuntur Judaei Samaritanis.

ꙁемлꙗ глаголꙗеть. Грꙗдꙑй съ небесе, надъ вьсѣми ꙗесть,

.лв. и ꙗеже видѣ и слꙑша, се съвѣдѣтельствоуꙗеть, и съвѣдѣтельства ꙗего никътоже не приꙗемлꙗеть.

.лг. Приимꙑй ꙗего съвѣдѣтельство ꙁапечатьлѣ, ꙗко Богъ истиньнъ ꙗесть.

.лд. Ꙗегоже бо посъла Богъ, глаголъи Божиꙗ глаголꙗеть· не въ мѣрѫ бо Богъ даꙗеть Доуха.

.ле. Отьць любить Сꙑна, и вьса дастъ въ рѫцѣ ꙗего.

.лѕ. Вѣроуꙗй въ Сꙑна, имать животъ вѣчьнꙑй, а иже не вѣроуеть въ Сꙑна, не оуꙁьрить живота, нъ гнѣвъ Божій прѣбꙑваꙗеть на ниꙗемь.

## Глава .д.

.а. Ꙗегда же оувѣдѣ Іисоусъ, ꙗко оуслꙑшаша Фарисеи, ꙗко Іисоусъ мъножайша оученикъи творить и крьщаꙗеть, неже Иоанъ,

.в. (а Іисоусъ самъ не крьщаꙗше; нъ оученици ꙗего·)

.г. оставити Июдеѩ и иде пакꙑ въ Галилеѩ.

.д. Достоꙗаше же ꙗемоу проити скоꙁѣ Самариѩ.

.е. Приде же въ градъ Самарейскъ, нарицаꙗемꙑй Сухарь, блиꙁъ вьси, ꙗже дастъ Иꙗковъ Иосифоу, сꙑноу своꙗемоу.

.ѕ. Бѣ же тоу стоуденьць Иꙗковль. Іисоусъ же троуждь сꙗ отъ пѫти сѣдѣаше тако на стоуденьци. Година же бѣ ꙗко шестаꙗ.

.ꙁ. Приде жена отъ Самариꙗ почрѣтъ водꙑ· глагола ꙗей Іисоусъ: Даждь ми пити.

.и. Оученици бо ꙗего отъшьли бѣахѫ въ градъ, да брашьна коупать.

.ѳ. Глагола ꙗемоу жена та Самаꙗнꙑни: Како тꙑ Июдей сꙑи отъ мене пити просиши, женꙑ Самаꙗнꙑнꙗ сѫшта; неприкасаѩть бо сꙗ Июдеи Самарѣньхъ.

10. Ἀπεκριθη Ἰησοῦς και εἰπεν αὐτῇ· Εἰ ᾔδεις την δωρεαν τοῦ Θεοῦ, και τις ἐστιν ὁ λεγων σοι· Δος μοι πιεῖν, συ ἀν ᾔτησας αὐτον και ἐδωκεν ἀν σοι ὑδωρ ζῶν.

[illegible]

11. Λεγει αὐτῷ ἡ γυνη· Κυριε, οὐτε ἀντλημα ἐχεις, και το φρεαρ ἐστι βαθυ· ποθεν οὐν ἐχεις το ὑδωρ το ζῶν;

[illegible]

12. Μη συ μειζων εἶ τοῦ πατρος ἡμῶν Ἰακωβ, ὁς ἐδωκεν ἡμῖν το φρεαρ, και αὐτος ἐξ αὐτοῦ ἐπιεν και οἱ υἱοι αὐτοῦ και τα θρεμματα αὐτοῦ;

[illegible]

13. Ἀπεκριθη Ἰησους και εἰπεν αὐτῇ· Πας ὁ πινων ἐκ τοῦ ὑδατος τουτου διψησει παλιν·

[illegible]

14. ὁς δ' ἀν πιῃ ἐκ τοῦ ὑδατος οὗ ἐγω δωσω αὐτῷ, οὐ μη διψησει εἰς τον αἰῶνα, ἀλλα το ὑδωρ ὁ δωσω αὐτῷ, γενησεται ἐν αὐτῷ πηγη ὑδατος ἀλλομενου εἰς ζωην αἰωνιον.

[illegible]

15. Λεγει προς αὐτον ἡ γυνη· Κυριε, δος μοι τοῦτο το ὑδωρ, ἱνα μη διψῶ μηδε διερχωμαι ἐνθαδε ἀντλεῖν.

[illegible]

16. Λεγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Ὑπαγε, φωνησον σου τον ἀνδρα και ἐλθε ἐνθαδε.

[illegible]

17. Ἀπεκριθη ἡ γυνη και εἰπεν (αὐτῷ)· Οὐκ ἐχω ἀνδρα. Λεγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Καλῶς εἰπας· Ὅτι ἀνδρα οὐκ ἐχω·

[illegible]

18. πεντε γαρ ἀνδρας ἐσχες, και νῦν ὁν ἐχεις, οὐκ ἐστιν σου ἀνηρ. Τοῦτο ἀληθες εἰρηκας.

[illegible]

19. Λεγει αὐτῷ ἡ γυνη· Κυριε, θεωρῶ, ὁτι προφητης εἶ συ.

[illegible]

20. Οἱ πατερες ἡμῶν ἐν τῷ ὀρει τουτῳ προσεκυνησαν· και ὑμεῖς λεγετε, ὁτι ἐν Ἱεροσολυμοις ἐστιν ὁ τοπος, ὁπου προςκυνεῖν δεῖ.

[illegible]

21. Λεγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Πιστευε μοι, γυναι, ὁτι ἐρχεται ὡρα· ὁτε οὐτε ἐν τῷ ὀρει τουτῷ οὐτε ἐν Ἱεροσολυμοις προςκυνήσετε τῷ Πατρι.

[illegible]

10. Respondit Jesus et dixit ei: Si scires donum Dei, et quis est, qui dicit tibi: Da mihi bibere, tu forsitan petisses ab eo, et dedisset tibi aquam vivam.

.і. Ѡтвѣшта Ісоусъ и рече ѥй: Аште бы вѣдѣла даръ Божій, и къто ѥсть глаголѩй ти: Даждь ми пити, ты бы просила оу нѥго, и далъ ти бы водѫ живѫ.

11. Dicit ei mulier: Domine, neque in quo haurias, habes et puteus altus est: unde ergo habes aquam vivam?

.аі. Глагола ѥмоу жена: Господи, ни поуръпала имаши, и стоуденьць глѫбокъ ѥсть· ѡтъ кѫдоу оубо имаши водѫ живѫ;

12. Numquid tu major es patre nostro Jacob, qui dedit nobis puteum et ipse ex eo bibit, et filii ejus et pecora ejus?

.ві. Ѥда ты болій ѥси ѡтьца нашего Ꙗкова, иже дастъ намъ стоуденьць и тъ иѕ нѥго пи, и сынове ѥго, и скоти ѥго;

13. Respondit Jesus et dixit ei: Omnis qui bibit ex aqua hac, sitiet iterum; qui autem biberit ex aqua, quam ego dabo ei, non sitiet in aeternum,

.гі. Ѡтвѣшта Ісоусъ и рече ѥй: Вьсѩкъ пиѩй ѡтъ воды сеѩ, въжаждеть сѧ пакы· а иже пиѥть ѡтъ воды, ѭже аѕъ дамь ѥмоу, не имать въждадати сѧ въ вѣкъ,

14. sed aqua, quam ego dabo ei, fiet in eo fons aquae salientis in vitam aeternam.

.ді. нъ вода, ѭже аѕъ дамь ѥмоу, бѫдеть въ нѥмь источьникъ воды истекѫѭштаѩ въ животъ вѣчьный.

15. Dicit ad eum mulier: Domine, da mihi hanc aquam, ut non sitiam, neque veniam huc haurire.

.еі. Глагола къ нѥмоу жена: Господи, даждь ми сиѭ водѫ, да не жаждѫ, ни прихождѫ сѣмо поуръпатъ.

16. Dicit ei Jesus: Vade, voca virum tuum et veni huc.

.ѕі. Глагола ѥй Ісоусъ: Иди приѕови мѫжа своѥго, и прінди сѣмо.

17. Respondit mulier et dixit: Non habeo virum. Dicit ei Jesus: Bene dixisti, quia non habeo virum;

.зі. Ѡтвѣшта жена и рече: Не имамь мѫжа. Глагола ѥй Ісоусъ: Добрѣ рече, ꙗко мѫжа не имамь·

18. quinque enim viros habuisti, et nunc, quem habes, non est tuus vir: hoc vere dixisti.

.иі. пѧть бо мѫжь имѣла ѥси, и нынѣ ѥгоже имаши, нѣсть ти мѫжь· се въ истинѫ рече.

19. Dicit ei mulier: Domine, video, quia propheta es tu.

.ѳі. Глагола ѥмоу жена: Господи, виждѫ, ꙗко пророкъ ѥси ты.

20. Patres nostri in monte hoc adoraverunt et vos dicitis, quia in Hierosolymis est locus, ubi adorare oportet.

.к. Ѡтьци наши въ горѣ сей поклонишѧ сѧ, и вы глаголѥте, ꙗко въ Иѥроусалимѣ ѥсть мѣсто, идеже поклонити сѧ подобаѥть.

21. Dicit ei Jesus: Mulier crede mihi, quia venit hora, quando neque in monte hoc, neque in Hierosolymis adorabitis Patrem.

.ка. Глагола ѥй Ісоусъ: Жено, вѣрѫ ми ими, ꙗко идеть година, ѥгда ни въ горѣ сей, ни въ Иѥросолѵмѣхъ поклоните сѧ Ѡтьцоу.

22. Ὑμεῖς προςκυνεῖτε ὁ οὐκ οἴδατε, ἡμεῖς προσκυνοῦμεν, ὁ οἴδαμεν· ὅτι ἡ σωτηρια ἐκ τῶν Ἰουδαιων ἐστιν.

23. Ἀλλα ἐρχεται ὡρα και νῦν ἐστιν, ὅτε οἱ ἀληθινοι προσκυνηται προσκυνησουσι τῷ Πατρι ἐν πνευματι και ἀληθειᾳ. Και γαρ ὁ Πατηρ τοιουτους ζητεῖ τους προσκυνοῦντας αὐτον.

24. Πνεῦμα ὁ Θεος, και τους προσκυνοῦντας αὐτον, ἐν πνευματι και ἀληθειᾳ δεῖ προσκυνεῖν.

25. Λεγει αὐτῷ ἡ γυνη· Οἶδα ὅτι Μεσσιας ἐρχεται, ὁ λεγομενος Χριστος· ὅταν ἔλθῃ ἐκεῖνος, ἀναγγελεῖ ἡμῖν παντα.

26. Λεγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγω εἰμι, ὁ λαλων σοι.

27. Και ἐπι τουτῳ ἦλθον οἱ μαθηται αὐτοῦ, και ἐθαυμαζον ὅτι μετα γυναικος ἐλαλει· οὐδεις μεντοι εἶπε· Τι ζητεῖς; ἤ· Τι λαλεῖς μετ' αὐτῆς;

28. Ἀφῆκεν οὖν την ὑδριαν αὐτῆς ἡ γυνη, και ἀπῆλθεν εἰς την πολιν, και λεγει τοῖς ἀνθρωποις·

29. Δεῦτε ἴδετε ἀνθρωπον, ὃς εἶπε μοι παντα ἃ ἐποιησα· μητι οὗτος ἐστιν ὁ Χριστος;

30. Ἐξῆλθον οὖν ἐκ τῆς πολεως, και ἤρχοντο προς αὐτον.

31. Ἐν δε τῷ μεταξυ ἠρωτων αὐτον οἱ μαθηται, λεγοντες· Ῥαββι, φαγε.

32. Ὁ δε εἶπεν αὐτοῖς· Ἐγω βρῶσιν ἔχω φαγεῖν, ἣν ὑμεῖς οὐκ οἴδατε.

33. Ἐλεγον οὖν οἱ μαθηται προς ἀλληλους· Μητις ἤνεγκεν αὐτῷ φαγεῖν;

34. Λεγει αὐτοῖς ὁ Ἰησους· Ἐμον βρῶμα ἐστιν, ἵνα ποιῶ το θελημα τοῦ πεμψαντος με και τελειωσω αὐτοῦ το ἐργον.

35. Οὐχ ὑμεῖς λεγετε, ὅτι ἔτι τετραμηνος ἐστι και ὁ θερισμος ἐρχεται; Ἰδου, λεγω ὑμῖν, ἐπαρατε τους ὀφθαλμους ὑμῶν και θεασασθε τας χωρας, ὅτι λευκαι εἰσι προς θερισμον ἤδη·

36. Και ὁ θεριζων μισθον λαμβανει και συναγει καρπον εἰς ζωην αἰωνιον, ἵνα και

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

22. Vos adoratis, quod nescitis; nos adoramus, quod scimus, quia salus ex Judaeis est;

.кв. Вы кланѣѥте сѧ, ѥгоже не вѣсте· мы кланѣѥмъ сѧ, ѥже вѣмъ, ꙗко съпасениѥ ѿтъ Июдей ѥсть.

23. sed venit hora et nunc est, quando veri adoratores adorabunt Patrem in spiritu et veritate: nam et Pater tales quaerit, qui adorent eum.

.кг. нъ градеть година и нынѣ ѥсть, ѥгда истиньнии поклоньници поклонѧть сѧ Ѡтьцоу доухъмь и истиноѭ· ибо Ѡтьць тацѣхъ иштеть кланѣѭштіихъ сѧ ѥмоу.

24. Spiritus est Deus, et eos, qui adorant eum, in spiritu et veritate oportet adorare.

.кд. Доухъ ѥсть Богъ и иже кланѣѭть сѧ ѥмоу, доухъмь и истиноѭ достоить кланѣти сѧ.

25. Dicit ei mulier: Scio, quia Messias venit, qui dicitur Christus: cum ergo venerit ille, nobis annuntiabit omnia.

.ке. Глагола ѥмоу жена: Вѣмь, ꙗко Месиꙗ градеть, нарицаѥмый Христосъ· ѥгда же тъ пріидеть, възвѣстить намъ вьсѧ.

26. Dicit ei Jesus: Ego sum, qui loquor tecum.

.кѕ. Глагола ѥй Іисоусъ: Азъ ѥсмь глаголѭй съ тобоѭ.

27. Et continuo venerunt discipuli ejus et mirabantur, quia cum muliere loquebatur; nemo tamen dixit: Quid quaeris, aut quid loqueris cum ea?

.кз. И тъгда же пріидоша оученици ѥго и чюждѣахѫ сѧ, ꙗко съ женоѭ глаголааше· а никъто же не рече ѥмоу: Чьсо иштеши, или чьто глаголѥши съ неѭ;

28. Reliquit ergo hydriam suam mulier, et abiit in civitatem, et dicit illis hominibus:

.ки. Ѡстави же водоносъ свой жена, и иде въ градъ и глагола тѣмъ чловѣкомъ:

29. Venite et videte hominem, qui dixit mihi omnia, quaecumque feci; numquid ipse est Christus?

.кѳ. Пріидѣте и видите чловѣка, иже рече ми вьсе, ѥлико сътворихъ· ѥда тъ ѥсть Христосъ;

30. Exierunt ergo de civitate, et veniebant ad eum.

.л. Изидоша же изъ града, и идѣахѫ къ нѥмоу.

31. Interea rogabant eum discipuli, dicentes: Rabbi, manduca!

.ла. Междоу же симь молѣахѫ й оученици ѥго глаголѭште: Рав'ви, ѣждь!

32. Ille autem dicit eis: Ego cibum habeo manducare, quem vos nescitis.

.лв. Ѡнъ же рече имъ: Азъ брашьно имамь ѣсти, ѥгоже вы невѣсте.

33. Dicebant ergo discipuli ad invicem: Numquid aliquis attulit ei manducare?

.лг. Глаголаахѫ же оученици ѥго къ себѣ: Ѥда къто принесе ѥмоу ѣсти;

34. Dicit eis Jesus: Meus cibus est, ut faciam voluntatem ejus, qui misit me et perficiam opus ejus.

.лд. Глагола имъ Іисоусъ: Моѥ брашьно ѥсть, да творѭ волѭ посълавъшааго мѧ, и съвръшѫ дѣло ѥго.

35. Nonne vos dicitis, quod adhuc quatuor menses sunt, et messis venit? Ecce, dico vobis: Levate oculos vestros, et videte regiones, quia albae sunt jam ad messem.

.ле. Не вы ли глаголѥте, ꙗко ѥште четыре мѣсѧци сѫть, и жатва пріидеть; Се, глаголѭ вамъ, възведѣте ѡчи ваши и видите нивъи, ꙗко плавы сѫть къ жатвѣ оуже.

36. Et qui metit, mercedem accipit, et congregat fructum in vitam aeter-

.лѕ. И жьнѧй мьздѫ приѥмлѥть и събираѥть плодъ въ животъ вѣчьный, да

ὁ σπειρων ὁμου χαιρῃ και ὁ θεριζων.

[illegible]

37. Ἐν γαρ τουτῳ ὁ λογος ἐστιν ὁ ἀληθινος, ὁτι ἀλλος ἐστιν ὁ σπειρων και ἀλλος ὁ θεριζων.

[illegible]

38. Ἐγω ἀπεστειλα ὑμᾶς θεριζειν ὁ οὐχ ὑμεῖς κεκοπιακατε· ἀλλοι κεκοπιακασι, και ὑμεῖς εἰς τον κοπον αὐτῶν εἰσεληλυθατε.

[illegible]

39. Ἐκ δε τῆς πολεως ἐκεινης πολλοι ἐπιστευσαν εἰς αὐτον τῶν Σαμαρειτῶν, δια τον λογον τῆς γυναικος μαρτυρουσης· Ὁτι εἰπε μοι παντα ὁσα ἐποιησα.

[illegible]

40. Ὡς οὖν ἦλθον προς αὐτον οἱ Σαμαρεῖται, ἠρωτων αὐτον μεῖναι παρ' αὐτοις· και ἐμεινεν ἐκεῖ δυο ἡμερας.

[illegible]

41. Και πολλῷ πλειους ἐπιστευσαν δια τον λογον αὐτοῦ·

[illegible]

42. τῇ δε γυναικι ἐλεγον· Οὐκετι δια την λαλιαν σου πιστευομεν· αὐτοι γαρ ἀκηκοαμεν και οἰδαμεν, ὁτι οὐτος ἐστιν ἀληθῶς ὁ σωτηρ τοῦ κοσμου ὁ Χριστος.

[illegible]

43. Μετα δε τας δυο ἡμερας ἐξῆλθεν ἐκεῖθεν και ἀπῆλθεν εἰς την Γαλιλαιαν.

[illegible]

44. Αὐτος γαρ ὁ Ἰησοῦς ἐμαρτυρησεν, ὁτι προφητης ἐν τῇ ἰδιᾳ πατριδι τιμην οὐκ ἐχει.

[illegible]

45. Ὁτε οὖν ἦλθεν εἰς την Γαλιλαιαν, ἐδεξαντο αὐτον οἱ Γαλιλαῖοι, παντα ἑωρακοτες ὁσα ἐποιησεν ἐν Ἱεροσολυμοις ἐν τῇ ἑορτῇ· και αὐτοι γαρ ἦλθον εἰς την ἑορτην.

[illegible]

46. Ἦλθεν οὖν ὁ Ἰησοῦς παλιν εἰς την Κανᾶ τῆς Γαλιλαιας, ὁπου ἐποιησε το ὑδωρ οἰνον. Και ἦν τις βασιλικος, οὗ ὁ υἱος ἠσθενει ἐν Καπερναουμ·

[illegible]

47. Οὗτος ἀκουσας ὁτι Ἰησοῦς ἡκει ἐκ τῆς Ἰουδαιας εἰς την Γαλιλαιαν, ἀπῆλθεν προς αὐτον και ἠρωτα αὐτον, ἱνα καταβῇ και ἰασηται αὐτοῦ τον υἱον· ἡμελλε γαρ ἀποθνησκειν.

[illegible]

48. Εἰπεν οὖν ὁ Ἰησοῦς προς αὐτον· Ἐαν μη σημεῖα και τερατα ἰδητε, οὐ μη πιστευσητε.

[illegible]

nam; ut et qui seminat, simul gaudeat, et qui metit.

сѣѭй въ коупѣ радоуѥть сѧ и жьнѭй.

37. In hoc enim est verbum verum: quia alius est, qui seminat, et alius est, qui metit.

.лꙁ. Ѡ семь бо слово ѥсть истиньноѥ, ꙗко инъ ѥсть сѣѭй, и инъ ѥсть жьнѭй.

38. Ego misi vos metere, quod vos non laborastis; alii laboraverunt, et vos in labores eorum introistis.

.ли. Аꙁъ же посълахъ вꙑ жатъ, идеже вꙑ не троудисте сѧ· инии троудишѧ сѧ, и вꙑ въ троудъи ихъ вънидосте.

39. Ex civitate autem illa multi crediderunt in eum Samaritanorum, propter verbum mulieris testimonium perhibentis: Quia dixit mihi omnia, quaecumque feci.

.лѳ. Ѡтъ града же того мъноѕи вѣроваша въ нь ѡтъ Самарꙗнъ, ꙁа слово женꙑ съвѣдѣтельствоуѭштаѩ: Ꙗко рече ми вьсе, ѥлико сътворихъ.

40. Cum venissent ergo ad illum Samaritani, rogaverunt eum, ut ibi maneret. Et mansit ibi duos dies.

.м. Ѥгдаже прiидошѧ къ нѥмоу Самарꙗне, молѣахѫ и, да бꙑ прѣбꙑлъ оу нихъ. И прѣбꙑстъ тоу дъва дьни.

41. Et multo plures crediderunt in eum propter sermonem ejus.

.ма. И мъного паче (ихъ) вѣроваша въ нь ꙁа слово ѥго.

42. Et mulieri dicebant: Quia jam non propter tuam loquelam credimus: ipsi enim audivimus et scimus, quia hic est vere Salvator mundi.

.мв. Женѣ же глаголаахѫ: Ꙗко оуже не ꙁа твоѭ бесѣдѫ вѣроуѥмъ· сами бо слꙑшахомъ и вѣмъ, ꙗко сь ѥсть въ истинѫ Съпасъ вьсего мира, Христосъ.

43. Post duos autem dies exiit inde, et abiit in Galilaeam.

.мг. По дъвою же дьнию иꙁиде ѡтъ тѫдоу, и иде въ Галилеѭ.

44. Ipse enim Jesus testimonium perhibuit, quia propheta in sua patria honorem non habet.

.мд. Самъ бо Iисоусъ съвѣдѣтельствова, ꙗко Пророкъ въ своѥмъ ѡтьчьствѣ чьсти не иматъ.

45. Cum ergo venisset in Galilaeam, exceperunt eum Galilaei, cum omnia vidissent, quae fecerat Jerosolymis in die festo; et ipsi enim venerant ad diem festum.

.ме. Ѥгда же прiиде въ Галилеѭ, приꙗшѧ и Галилѣане, вьсе видѣвъше, ѥлико сътвори въ Иѥросолꙋмѣхъ въ праꙁдьникъ· и ти бо прiидошѧ въ праꙁдьникъ.

46. Venit ergo iterum in Cana Galilaeae, ubi fecit aquam vinum. Et erat quidam regulus, cujus filius infirmabatur, Capharnaum:

.мѕ. Прiиде же пакꙑ въ Кань Галилейскѫ, идеже сътвори ѡтъ водꙑ вино. Бѣ же нѣкꙑй цѣсарь мѫжь, ѥгоже сꙑнъ болѣаше въ Кафарънаоумѣ·

47. hic cum audisset, quia Jesus adveniret a Judaea in Galilaeam, abiit ad eum et rogabat eum, ut descenderet et sanaret filium ejus: incipiebat enim mori.

.мꙁ. сь слꙑшавъ, ꙗко Iисоусъ прiиде ѡтъ Июдеѩ въ Галилеѭ, иде къ нѥмоу, и молѣаше и, да сънидеть и исцѣлить сꙑна ѥго· хотѣаше бо оумьрѣти.

48. Dixit ergo Jesus ad eum: Nisi signa et prodigia videritis, non creditis.

.мн. Рече же Iисоусъ къ нѥмоу: Аште ꙁнамений и чюдесъ не видите, не вѣроуѥте.

49. *Λεγει προς αύτον ό βασιλικος· Κυριε, καταβηθι πριν άποθανεῖν το παιδιον μου.*

50. *Λεγει αύτῷ ό 'Ιησοῦς· Πορευου, ό υίος σου ζῇ. Και έπιστευσεν ό άνθρωπος τῷ λογῳ ῷ είπεν αύτῷ 'Ιησοῦς, και έπορευετο.*

51. *Ήδη δε αύτοῦ καταβαινοντος, οί δοῦλοι αύτοῦ άπηντησαν αύτῷ και άπηγγειλαν λεγοντες· Ότι ό παῖς σου ζῇ.*

52. *Έπυθετο οὐν παρ' αυτῶν την ὡραν, έν ῇ κομψοτερον έσχεν. Και είπον αύτῷ· Ότι χθες ὡραν έβδομην άφῆκεν αύτον ό πυρετος.*

53. *Έγνω οὐν ό πατηρ, ότι έν έκεινῃ τῇ ὡρᾳ, έν ῇ είπεν αύτῷ ό 'Ιησοῦς· Ότι ό υίος σου ζῇ, και έπιστευσεν αύτος και ή οίκια αύτοῦ όλη.*

54. *Τοῦτο παλιν δευτερον σημεῖον έποιησεν ό 'Ιησοῦς έλθων έκ τῆς 'Ιουδαιας είς την Γαλιλαιαν.*

## *Κεφ. V.*

1. *Μετα ταῦτα ἦν έορτη τῶν 'Ιουδαιων, και άνεβη ό 'Ιησοῦς είς 'Ιεροσολυμα.*

2. *Έστι δε έν τοῖς 'Ιεροσολυμοις έπι τῇ προβατικῇ κολυμβηθρα, ή έπιλεγομενη Έβραϊστι Βηθεσδα, πεντε στοας έχουσα.*

3. *Έν ταυταις κατεκειτο πλῆθος πολυ τῶν άσθενουντων, τυφλῶν, χωλῶν, ξηρῶν, ένδεχομενων την τοῦ ύδατος κινησιν.*

4. *Άγγελος γαρ κατα καιρον κατεβαινεν έν τῇ κολυμβηθρᾳ και έταρασσε το ύδωρ· ό οὐν πρῶτος έμβας μετα την ταραχην τοῦ ύδατος ύγιης έγινετο, ῷ δηποτε κατειχετο νοσηματι.*

5. *Ἦν δε τις άνθρωπος έκεῖ τριακοντα όκτω έτη έχων έν τῇ άσθενειᾳ αύτοῦ.*

6. *Τοῦτον ίδων ό 'Ιησοῦς κατακειμενον, και γνους, ότι πολυν ήδη χρονον έχει, λεγει αύτῷ· Θελεις ύγιης γενεσθαι;*

49. Dixit ad eum regulus: Domine, descende prius, quam moriatur filius meus.

.мѳ. Глагола къ нѥмоу цѣсарѥвъ мѫжь: Господи, сънииди прѣжде даже не оумьреть ѡтроча моѥ.

50. Dicit ei Jesus: Vade, filius tuus vivit Credidit homo sermoni, quem dixit ei Jesus, et ibat.

.н. Глагола ѥмоу Іисоусъ: Иди, сынъ твой живъ ѥсть. И вѣрѫ ѩтъ чловѣкъ словеси, ѥже рече ѥмоу Іисоусъ, и идѣаше.

51. Jam autem eo descendente servi occurrerunt ei et nuntiaverunt, dicentes, quia filius ejus viveret.

.на. Абиѥ же съходаштоу ѥмоу, се раби ѥго сърѣтоша й и възвѣстиша глаголѭште: Ѩко сынъ твой живъ ѥсть.

52. Interrogabat ergo horam ab eis, in qua melius habuerit. Et dixerunt ei, quia heri hora septima reliquit eum febris.

.нв. Въпрашааше же годины ѡтъ нихъ, въ кѫѭ оулѣѥ ѥмоу бысть. Рекоша же ѥмоу: Ѩко вьчера въ годинѫ седмѫѭ ѡстави ѝ ѡгнь.

53. Cognovit ergo pater, quod illa hora erat, in qua dixit ei Jesus: Filius tuus vivit, et credidit ipse et domus ejus tota.

.нг. Разоумѣ же ѡтьць ѥго, ѩко та година бѣ, въ нѭже рече ѥмоу Іисоусъ: Сынъ твой живъ ѥсть, и вѣрова самъ, и домъ ѥго вьсь.

54. Hoc iterum secundum signum fecit Jesus, cum venisset a Judaea in Galilaeam.

.нд. Се пакы въторое знамениѥ сътвори Іисоусъ, пришьдъ ѡтъ Июдеѩ въ Галилеѭ.

## Cap. V.

## Глава .е҃.

1. Post haec erat dies festus Judaeorum, et ascendit Jesus Hierosolymam.

.а. По сихъ же бѣ праздьникъ Июдейскъ, и възиде Іисоусъ въ Ѥроусалимъ.

2. Est autem Hierosolymis probatica piscina, quae cognominatur hebraeice Bethesda, quinque porticus habens.

.в. Ѥсть же въ Иѥроусолоумѣхъ на ѡвьчій (бравъ) кѫпѣль, ѩже нарицаѥть сѧ еврей-скы Виѳесда, пѧть притворъ имѫшти.

3. In his jacebat multitudo magna languentium, coecorum, claudorum, aridorum exspectantium aquae motum.

.г. Въ тѣхъ лежааше мъножьство болѩштіихъ, слѣпъ, хромъ, соухъ, чаѭштіихъ движениѩ воды.

4. Angelus autem Domini secundum tempus descendebat in piscinam et movebat aquam: qui ergo primus descendisset post motum aquae, sanus fiebat, a quacumque tenebatur infirmitate.

.д. Анъгелъ бо Господьнь на вьсѩ лѣта въхождааше къ кѫпѣль, и възмѫштааше водѫ· и иже прѣжде вълажааше по възмѫштеніи воды, бывааше съдравъ, ѩцѣмь же недѫгъмь ѡдръжимъ бѣаше.

5. Erat autem quidam homo ibi triginta et octo annos habens in infirmitate sua:

.е. Бѣ же тоу ѥдинъ чловѣкъ тридесате и ѡсмь лѣтъ имы въ недѫѕѣ своѥмь.

6. Hunc cum vidisset Jesus jacentem, et cognovisset, quia multum jam tempus habet, dicit ei: Vis sanus fieri?

.ѕ. Сего видѣвъ Іисоусъ лежашта и разоумѣвъ, ѩко мънога лѣта оуже имѣаше, глагола ѥмоу: Хоштеши ли цѣлъ быти;

7. *'Απεκριθη αὐτῷ ὁ ἀσθενῶν· Κυριε, ἀνθρωπον οὐκ ἐχω, ἱνα, ὁταν ταραχθῇ το ὑδωρ, βαλλῃ με εἰς την κολυμβηθραν· ἐν ᾧ δε ἐρχομαι ἐγω, ἀλλος προ ἐμοῦ καταβαινει.*

8. *Λεγει αὐτῷ ὁ 'Ιησοῦς· 'Εγειρε ἀρον τον κραββατον σου, και περιπατει.*

9. *Και εὐθεως ἐγενετο ὑγιης ὁ ἀνθρωπος, και ἦρεν τον κραββατον αὐτοῦ και περιεπατει. 'Ην δε σαββατον ἐν ἐκεινῃ τῃ ἡμερᾳ.*

10. *'Ελεγον οὐν οἱ 'Ιουδαῖοι τῷ τεθεραπευμενῳ· Σαββατον ἐστιν, οὐκ ἐξεστιν σοί ἀραι τον κραββατον.*

11. *'Απεκριθη αὐτοῖς· 'Ο ποιησας με ὑγιῆ, ἐκεῖνος μοι εἰπεν· 'Αρον τον κραββατον σου και περιπατει.*

12. *'Ηρωτησαν οὐν αὐτον· Τις ἐστιν ὁ ἀνθρωπος ὁ εἰπων σοι· 'Αρον τον κραββατον σου και περιπατει;*

13. *'Ο δε ἰαθεις οὐκ ᾔδει τις ἐστιν· ὁ γαρ 'Ιησοῦς ἐξενευσεν, ὀχλου ὀντος ἐν τῷ τοπῳ.*

14. *Μετα ταῦτα εὑρισκει αὐτον ὁ 'Ιησοῦς ἐν τῷ ἱερῷ και εἰπεν αὐτῷ· 'Ιδε, ὑγιης γεγονας· μηκετι ἁμαρτανε, ἱνα μη χεῖρον τι σοι γενηται.*

15. *'Απηλθεν ὁ ἀνθρωπος και ἀνηγγειλε τοῖς 'Ιουδαιοις, ὁτι 'Ιησοῦς ἐστιν, ὁ ποιησας αὐτον ὑγιῆ.*

16. *Και δια τοῦτο ἐδιωκον τον 'Ιησοῦν οἱ 'Ιουδαῖοι, και ἐζητουν αὐτον αποκτεῖναι, ὁτι ταῦτα ἐποιει ἐν σαββατῳ.*

17. *'Ο δε 'Ιησοῦς ἀπεκρινατο αὐτοῖς· 'Ο Πατηρ μου ἑως ἀρτι ἐργαζεται, κἀγω ἐργαζομαι.*

18. *Δια τοῦτο οὐν μᾶλλον ἐζητουν αὐτον οἱ 'Ιουδαῖοι ἀποκτεῖναι, ὁτι οὐ μονον ἐλυε το σαββατον, ἀλλα και πατερα ἰδιον ἐλεγε τον Θεον, ἰσον ἑαυτον ποιῶν τῷ Θεῷ.*

19. *'Απεκρινατο οὐν ὁ 'Ιησοῦς και εἰπεν αὐτοῖς· 'Αμην, ἀμην λεγω ὑμῖν, οὐ δυναται ὁ υἱος ποιεῖν ἀφ' ἑαυτοῦ οὐδεν, ἐαν μη τι βλεπῃ τον Πατερα ποιοῦντα· ἁ γάρ ἀν ἐκεῖνος ποιῇ, ταῦτα και ὁ υἱος ὁμοιως ποιεῖ.*

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

7. Respondit ei languidus: Domine, hominem non habeo, ut cum turbata fuerit aqua, mittat me in piscinam: dum venio enim ego, alius ante me descendit.

.ꙁ. Ѡтъвѣшта ѥмоу недѫжьный: Господи, чловѣка не имамь, да, ѥгда въꙁмѫтить сѧ вода, въврьжеть мѧ въ кѫпѣль· ѥгда же прихождѫ аꙁъ, инъ прѣжде мене вълаꙁить.

8. Dicit ei Jesus: Surge, tolle grabatum tuum et ambula

.и. Глагола ѥмоу Іисоусъ: Въстани, въꙁьми ѡдръ твой, и ходи.

9. Et statim sanus factus est homo, et sustulit grabatum suum et ambulabat. Erat autem sabbatum in illo die.

.ѳ. И абиѥ цѣлъ бысть чловѣкъ, и въꙁѧтъ ѡдръ свой, и хождаше. Бѣ же сѫбота въ тъ дьнь.

10. Dicebant ergo Judaei illi, qui sanatus fuerat: Sabbatum est; non licet tibi tollere grabatum tuum.

.і. Глаголаахѫ же Июдеи исцѣлѣвъшоуоумоу: Сѫбота ѥсть, не достоить тебѣ въꙁѧти ѡдра твоѥго.

11. Respondit eis: Qui me fecit sanum, ille mihi dixit: Tolle grabatum tuum et ambula.

.аі. Ѡнъ же ѡтъвѣшта имъ: Иже мѧ сътвори цѣла, тъ мьнѣ рече: Въꙁьми ѡдръ твой и ходи.

12. Interrogaverunt ergo eum: Quis est ille homo, qui dixit tibi: Tolle grabatum tuum et ambula?

.ві. Въпросишѧ же й: Къто ѥсть чловѣкъ, рекый тебѣ: Въꙁьми ѡдръ твой, и ходи;

13. Is autem, qui sanus fuerat effectus, nesciebat, quis esset: Jesus enim declinavit a turba constituta in loco.

.гі. Исцѣлѣвый же невѣдѣаше, къто ѥсть· Іисоусъ бо оуклони сѧ народоу сѫштоу на мѣстѣ.

14. Postea invenit eum Jesus in templo, et dixit illi: Ecce sanus factus es: jam noli peccare, ne deterius tibi aliquid contingat.

.ді. Потомъ же Іисоусъ ѡбрѣте й въ црькъви, и рече ѥмоу: Се цѣлъ ѥси· къ томоу не съгрѣшай, да не горе ти чьто бѫдеть.

15. Abiit ille homo et nuntiavit Judaeis, quia Jesus esset, qui fecit eum sanum.

.еі. Иде же тъ чловѣкъ и повѣда Июдеомъ, ꙗко Іисоусъ ѥсть, иже и сътвори цѣла.

16. Propterea prosequebantur Judaei Jesum (et quaerebant eum interficere) quia haec faciebat in sabbato.

.ѕі. Сего ради гонѣахѫ Іисоуса Июдеи, (и искаахѫ оубити й) ꙁаниѥ си творѣаше въ сѫботѫ.

17. Jesus autem respondit eis: Pater meus usque modo operatur, et ego operor.

.ꙁі. Іисоусъ же ѡтъвѣшта имъ: Ѡтьць мой до селѣ дѣлаѥть, и аꙁъ дѣлаѭ.

18. Propterea ergo magis quaerebant eum Judaei interficere, quia non solum solvebat sabbatum, sed et patrem suum dicebat Deum, aequalem se faciens Deo.

.иі. Сего же ради паче искаахѫ ѥго Июдеи оубити, ꙗко не тъкъмо раꙁорѣаше сѫботѫ, нъ и ѡтьца своѥго глаголааше Бога, равьнъ сѧ творѧ Богоу.

19. Respondit itaque Jesus, et dixit eis: Amen, amen dico vobis, non potest Filius a se facere quidquam, nisi quod viderit Patrem facientem; quaecumque enim ille fecerit, haec et Filius similiter facit.

.ѳі. Ѡтъвѣшта же Іисоусъ и рече имъ: Аминъ, аминъ глаголѭ вамъ, не можеть Сынъ творити ѡ себѣ ничьсоже, аште не ѥже видить Ѡтьца творѧшта· ꙗже бо ѡнъ творить, си и Сынъ такожде творить.

20. *Ὁ γαρ Πατηρ φιλεῖ τον υἱον, και παντα δεικνυσιν αὐτῷ, ἁ αὐτος ποιεῖ· και μειζονα τουτων δειξει αὐτῷ ἐργα, ἱνα ὑμεῖς θαυμαζητε.*

21. *Ὥσπερ γαρ ὁ Πατηρ ἐγειρει τους νεκρους και ζωοποιεῖ, οὑτω και ὁ υἱος οὑς θελει ζωοποιεῖ.*

22. *Οὐδε γαρ ὁ Πατηρ κρινει οὐδενα, ἀλλα την κρισιν πᾶσαν δεδωκε τῷ υἱῷ·*

23. *ἱνα παντες τιμῶσι τον υἱον, καθως τιμῶσι τον Πατερα. Ὁ μη τιμῶν τον υἱον, οὐ τιμᾷ τον Πατερα τον πεμψαντα αὐτον.*

24. *Ἀμην, ἀμην λεγω ὑμῖν, ὁτι ὁ τον λογον μου ἀκουων και πιστευων τῷ πεμψαντι με, ἐχει ζωην αἰωνιον· και εἰς κρισιν οὐκ ἐρχεται, αλλα μεταβεβηκεν ἐκ τοῦ θανατου εἰς την ζωην.*

25. *Ἀμην, ἀμην λεγω ὑμῖν, ὁτι ἐρχεται ὡρα και νῦν ἐστιν, ὁτε οἱ νεκροι ἀκουσονται τῆς φωνῆς τοῦ υἱοῦ τοῦ Θεοῦ, και οἱ ἀκουσαντες ζησονται.*

26. *Ὥσπερ γαρ ὁ Πατηρ ἐχει ζωην ἐν ἑαυτῷ, οὑτως ἐδωκε και τῷ υἱῷ ζωην ἐχειν ἐν ἑαυτῷ·*

27. *και ἐξουσιαν ἐδωκεν αὐτῷ και κρισιν ποιεῖν, ὁτι υἱος ἀνθρωπου ἐστιν.*

28. *Μη θαυμαζετε τοῦτο· ὁτι ἐρχεται ὡρα, ἐν ᾗ παντες οἱ ἐν τοῖς μνημειοις ἀκουσονται τῆς φωνῆς αὐτοῦ,*

29. *και ἐκπορευσονται οἱ τα ἀγαθα ποιησαντες εἰς ἀναστασιν ζωῆς, οἱ δε τα φαῦλα πραξαντες εἰς ἀναστασιν κρισεως.*

30. *Οὐ δυναμαι ἐγω ποιεῖν ἀπ' ἐμαυτοῦ οὐδεν καθως ἀκουω, κρινω· και ἡ κρισις ἡ ἐμη δικαια ἐστιν, ὁτι οὐ ζητω το θελημα το ἐμον, ἀλλα το θελημα τοῦ πεμψαντος με Πατρος.*

31. *Ἐαν ἐγω μαρτυρω περι ἐμαυτοῦ, ἡ μαρτυρια μου οὐκ ἐστιν ἀληθης.*

32. *Ἀλλος ἐστιν ὁ μαρτυρῶν περι ἐμοῦ, και οἰδα ὁτι ἀληθης ἐστιν ἡ μαρτυρια, ἡν μαρτυρεῖ περι ἐμοῦ.*

20. Pater enim diligit Filium, et omnia demonstrat ei, quae ipse facit: et majora his demonstrabit ei opera, ut vos miremini.

.к. Отьць бо любить Сꙑна, и вьсѧ показаѥть ѥмоу, ꙗже самъ творить· и больша сихъ покажеть ѥмоу дѣла, да вꙑ чюдите сѧ.

21. Sicut enim Pater suscitat mortuos et vivificat sic et Filius quos vult, vivificat.

.ка. Ꙗко бо Отьць въскрѣшаѥть мрътвꙑѩ и живить, такожде и Сꙑнъ, ꙗже хоштеть, живить.

22. Neque enim Pater judicat quemquam, sed judicium omne dedit Filio,

.кв. Отьць бо не сѫдить никомоуже, нъ сѫдъ вьсь дастъ Сꙑнови,

23. ut omnes honorificent Filium, sicut honorificant Patrem; qui non honorificat Filium, non honorificat Patrem, qui misit illum.

.кг. да вьси чьтѫть Сꙑна, ꙗкоже чьтѫть Отьца· иже не чьтеть Сꙑна, не чьтеть Отьца, иже ѝ посъла.

24. Amen, amen dico vobis, quia qui verbum meum audit, et credit ei, qui misit me, habet vitam aeternam, et in judicium non venit, sed transit a morte in vitam.

.кд. Аминь, аминь глаголѭ вамъ, ꙗко слоушаѩй словесе моѥго и вѣрѫ ѥмлѩй посълавъшоуоумоу мѧ, имать животъ вѣчьнꙑй, и на сѫдъ не приидеть, нъ прѣидеть ѿтъ съмръти въ животъ.

25. Amen, amen, dico vobis, quia venit hora et nunc est, quando mortui audient vocem Filii Dei, et qui audierint, vivent.

.ке. Аминь, аминь глаголѭ вамъ, ꙗко грѧдеть година и нꙑнѣ ѥсть, ѥгда мрътвии оуслꙑшѧть гласъ Сꙑна Божиꙗ, и слꙑшавъшеи оживѫть.

26. Sicut enim Pater habet vitam in semetipso, sic dedit et Filio vitam habere in semetipso,

.кѕ. Ꙗкоже бо Отьць имать животъ въ себѣ, тако дастъ и Сꙑнови животъ имѣти въ себѣ,

27. et potestatem dedit ei et judicium facere, quia Filius hominis est.

.кꙁ. и ѡбласть дастъ ѥмоу и сѫдъ творити, ꙗко Сꙑнъ чловѣчьскъ ѥсть.

28. Nolite mirari hoc, quia venit hora, in qua omnes, qui in monumentis sunt, audient vocem Filii Dei,

.ки. Не дивите сѧ семоу, ꙗко грѧдеть година, въ ньже вьси сѫштеи въ гробѣхъ оуслꙑшѧть гласъ Сꙑна Божиꙗ,

29. et procedent, qui bona fecerunt, in resurrectionem vitae, qui vero mala egerunt, in resurrectionem judicii.

.кѳ. и изидѫть сътворьшии благаꙗ въ въскрѣшениѥ живота, а сътворьшии ꙁълаꙗ въ въскрѣшениѥ сѫда.

30. Non possum ego a me ipso facere quidquam: sicut audio, judico, et judicium meum justum est, quia non quaero voluntatem meam, sed voluntatem Ejus, qui misit me.

.л. Не могѫ азъ ѡ себѣ творити ничьсоже· ꙗко слꙑшѫ, сѫждѫ, и сѫдъ мой правьдьнъ ѥсть, ꙗко не иштѫ волѩ моѥѩ, нъ волѩ посълавъшаго мѧ.

31. Si ego testimonium perhibeo de me, testimonium meum non est verum;

.ла. Аште азъ съвѣдѣтельствоуѭ ѡ мънѣ, съвѣдѣтельство моѥ нѣсть истиньно·

32. alius est, qui testimonium perhibet de me, et scio, quia verum est testimonium, quod perhibet de me.

.лв. инъ ѥсть съвѣдѣтельствоуѩй ѡ мънѣ, и вѣмь ꙗко истиньно ѥсть съвѣдѣтельство, ѥже съвѣдѣтельствоуѥть ѡ мънѣ.

33. *'Υμεῖς ἀπεσταλκατε προς 'Ιωαννην, και μεμαρτυρηκε τῇ ἀληθειᾳ·*

34 *'Εγω δε ού παρα ἀνθρωπου την μαρτυριαν λαμβανω, ἀλλα ταῦτα λεγω, ἱνα ὑμεῖς σωθῆτε.*

35. *'Εκεινος ἠν ὁ λυχνος ὁ καιομενος και φαινων· ὑμεις δε ἠθελησατε ἀγαλλιασθῆναι προς ὡραν ἐν τῷ φωτι αὐτοῦ.*

36. *'Εγω δε ἐχω την μαρτυριαν μειζω τοῦ 'Ιωαννου· τα γαρ ἐργα ἁ ἐδωκε μοι ὁ Πατηρ, ἱνα τελειωσω αὐτα, αὐτα τα ἐργα, ἁ ἐγω ποιῶ, μαρτυρεῖ περι ἐμοῦ, ὁτι ὁ Πατηρ με ἀπεσταλκε·*

37. *και ὁ πεμψας με Πατηρ αὐτος μεμαρτυρηκε περι ἐμοῦ. Οὐτε φωνην αὐτοῦ ἀκηκοατε πωποτε, οὐτε εἶδος αὐτοῦ ἑωρακατε.*

38. *Και τον λογον αὐτοῦ οὐκ ἐχετε μενοντα ἐν ὑμῖν, ὁτι ὁν ἀπεστειλεν ἐκεῖνος, τουτῳ ὑμεῖς οὐ πιστευετε.*

39. *'Ερευνᾶτε τας γραφας, ὁτι ὑμεῖς δοκεῖτε ἐν αὐταῖς ζωην αἰωνιον ἐχειν· και ἐκειναι εἰσιν αἱ μαρτυροῦσαι περι ἐμοῦ·*

40. *και οὐ θελετε ἐλθεῖν προς με, ἱνα ζωην ἐχητε.*

41. *Δοξαν παρα ἀνθρωπων οὐ λαμβανω·*

42. *ἀλλ' ἐγνωκα ὑμᾶς, ὁτι την ἀγαπην τοῦ Θεοῦ οὐκ ἐχετε ἐν ἑαυτοῖς.*

43. *'Εγω ἐληλυθα ἐν τῷ ὀνοματι τοῦ Πατρος μου, και οὐ λαμβανετε με· ἐαν ἀλλος ἐλθῃ ἐν τῷ ὀνοματι τῷ ἰδιῳ, ἐκεῖνον ληψεσθε.*

44. *Πῶς δυνασθε ὑμεῖς πιστεῦσαι, δοξαν παρα ἀλληλων λαμβανοντες, και την δοξαν την παρα τοῦ μονου Θεοῦ οὐ ζητεῖτε;*

45. *Οὐ δοκεῖτε ὁτι ἐγω κατηγορησω ὑμῶν προς τον Πατερα· ἐστιν ὁ κατηγορῶν ὑμῶν, Μωσῆς, εἰς ὁν ὑμεῖς ἠλπικατε.*

46. *Εἰ γαρ ἐπιστευετε Μωσῇ, ἐπιστευετε ἀν ἐμοι· περι γαρ ἐμοῦ ἐκεῖνος ἐγραψεν.*

47. *Εἰ δε τοῖς ἐκεινοῦ γραμμασιν οὐ πιστευετε, πῶς τοῖς ἐμοῖς ῥημασι πιστευσετε;*

33. Vos misistis ad Joannem, et testimonium perhibuit veritati:

.лг. Вы посъласте къ Іѡаноу и съвѣдѣтельствова ѡ истинѣ·

34. ego autem non ab homine testimonium accipio, sed haec dico, ut vos salvi sitis.

.лд. азъ же не ѿтъ чловѣка съвѣдѣтельство приємлѭ, нъ си глаголѭ, да вы съпасени бѫдете.

35. Ille erat lucerna ardens et lucens, vos autem voluistis exultare ad horam in luce ejus.

.ле. Ѡнъ бѣ свѣтильникъ горѧй и свьтай, вы же хотѣсте възрадовати сѧ въ годинѫ свьтѣнию єго.

36. Ego autem habeo testimonium majus Joanne: opera enim, quae dedit mihi Pater, ut perficiam ea, ipsa opera, quae ego facio, testimonium perhibent de me, quia Pater me misit.

.лѕ. Азъ же имамь съвѣдѣтельство болє Іоанова· дѣла бо, ꙗже дастъ мънѣ Ѡтьць, да съвръшѫ ꙗ, та дѣла, ꙗже творѭ, съвѣдѣтельствоуѭть ѡ мънѣ, ꙗко Ѡтьць мѧ посъла.

37. Et qui misit me Pater, ipse testimonium perhibuit de me: neque vocem Ejus unquam audistis, neque speciem Ejus vidistis;

.лз. И посълавый мѧ Ѡтьць, тъ съвѣдѣтельствова ѡ мънѣ· ни гласа Єго никъдеже слышасте, ни видѣниꙗ Єго видѣсте,

38. et verbum Ejus non habetis in vobis manens: quia quem misit ille, huic vos non creditis.

.ли. и словесе Єго не имате прѣбываѭшта въ васъ· зание, єгоже тъ посъла, семоу вы вѣры не ємлєте.

39. Scrutamini scripturas, quia vos putatis in ipsis vitam aeternam habere, et illae sunt, quae testimonium perhibent de me:

.лѳ. Испытайте кънигъи, ꙗко вы мьните въ нихъ имѣти животъ вѣчьный· и ты сѫть съвѣдѣтельствоуѭшта ѡ мънѣ·

40. et non vultis venire ad me, ut vitam habeatis.

.м. и не хоштете прїити къ мънѣ, да животъ имате.

41. Claritatem ab hominibus non accipio:

.ма. Славы ѿть чловѣкъ не приємлѭ·

42. sed cognovi vos, quia dilectionem Dei non habetis in vobis.

.мв. нъ разоумѣхъ вы, ꙗко любъве Божиꙗ не имате въ себѣ.

43. Ego veni in nomine Patris mei, et non accipitis me: si alius venerit in nomine suo, illum accipietis.

.мг. Азъ прїидохъ въ имѧ Ѡтьца моєго, и не приємлєте мене· аште инъ прїидеть въ имѧ своє, того прїимете.

44. Quomodo potestis vos credere, qui gloriam ab invicem accipitis et gloriam, quae a solo est Deo, non quaeritis?

.мд. Како можете вы вѣровати, славѫ дроугъ ѿтъ дроуга приємлѭште, и славы, ꙗже ѿтъ єдиного єсть Бога, не иштете;

45. Nolite putare, quia ego accusaturus sum vos apud Patrem: est, qui accusat vos, Moyses, in quo vos speratis.

.ме. Не мьните, ꙗко азъ на вы рекѫ къ Ѡтьцоу· єсть иже на вы глаголєть, Моѷсей, на нєгоже вы оупъваєте.

46. Si enim crederetis Moysi, crederetis forsitan et mihi: de me enim ille scripsit.

.мѕ. Аште бо бысте вѣровали Моѷсеови, вѣровали бысте и мънѣ· ѡ мънѣ бо тъ писа.

47. Si autem illius litteris non creditis, quomodo meis verbis credetis?

.мз. Аште ли того кънигамъ вѣры не ємлєте, како моимъ глаголомъ вѣрѫ имете;

*Κεφ. VI.*

1. *Μετα ταῦτα ἀπῆλθεν ὁ Ἰησοῦς περαν τῆς θαλασσης τῆς Γαλιλαιας, τῆς Τιβεριαδος·*

2. *και ἠκολουθει αὐτῷ ὀχλος πολυς, ὁτι ἑωρων αὐτοῦ τα σημεῖα ἁ ἐποιει ἐπι τῶν ἀσθενουντων.*

3. *Ἀνῆλθε δε εἰς το ὀρος ὁ Ἰησοῦς, και ἐκεῖ ἐκαθητο μετα των μαθητῶν αὐτοῦ.*

4. *Ἠν δε ἐγγυς το Πασχα, ἡ ἑορτη τῶν Ἰουδαιων.*

5. *Ἐπαρας οὐν ὁ Ἰησοῦς τους ὀφθαλμους και θεασαμενος, ὁτι πολυς ὀχλος ἐρχεται προς αὐτον, λεγει προς τον Φιλιππον· Ποθεν ἀγορασομεν ἀρτους, ἱνα φαγωσιν οὑτοι;*

6. *Τοῦτο δε ἐλεγε, πειραζων αὐτον· αὐτος γαρ ᾔδει, τι ἐμελλε ποιεῖν.*

7. *Ἀπεκριθη αὐτῷ Φιλιππος· Διακοσιων δηναριων ἀρτοι οὐκ ἀρκοῦσιν αὐτοῖς, ἱνα ἑκαστος αὐτῶν βραχυ τι λαβῃ.*

8. *Λεγει αὐτῷ εἰς ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ, Ἀνδρεας ὁ ἀδελφος Σιμωνος Πετρου·*

9. *Ἐστι παιδαριον ἐν ὡδε, ὁ ἐχει πεντε ἀρτους κριθινους και δυο ὀψαρια· ἀλλα ταῦτα τι ἐστιν εἰς τοσουτους;*

10. *Εἰπε δε ὁ Ἰησοῦς· Ποιησατε τους ἀνθρωπους ἀναπεσεῖν. Ἠν δε χορτος πολυς ἐν τῷ τοπῳ. Ἀνεπεσον οὐν οἱ ἀνδρες τον ἀριθμον ὡσει πεντακισχιλιοι.*

11. *Ἐλαβε δε τους ἀρτους ὁ Ἰησοῦς, και εὐχαριστησας διεδωκε τοῖς μαθηταῖς, οἱ δε μαθηται τοῖς ἀνακειμενοις· ὁμοιως και ἐκ τῶν ὀψαριων, ὁσον ἠθελον.*

12. *Ὡς δε ἐνεπλησθησαν, λεγει τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· Συναγαγετε τα περισσευσαντα κλασματα, ἱνα μη τι ἀποληται.*

13. *Συνηγαγον οὐν και ἐγεμισαν δωδεκα κοφινους κλασματων ἐκ τῶν πεντε ἀρτων τῶν κριθινων, ἁ ἐπερισσευσε τοῖς βεβρωκοσιν.*

14. *Οἱ οὐν ἀνθρωποι ἰδοντες ὁ ἐποιησε σημεῖον ὁ Ἰησοῦς, ἐλεγον· Ὁτι οὑτος ἐστιν*

## Cap. VI.

1. Post haec abiit Jesus trans mare Galilaeae, quod est Tiberiadis:

2. et sequebatur eum multitudo magna, quia videbant signa, quae faciebat super his, qui infirmabantur.

3. Subiit ergo in montem Jesus et ibi sedebat cum discipulis suis.

4. Erat autem proximum Pascha, dies festus Judaeorum.

5. Cum sublevasset ergo oculos Jesus et vidisset, quia multitudo maxima venit ad eum, dicit ad Philippum: Unde ememus panes, ut manducent hi?

6. Hoc autem dicebat, tentans eum: ipse enim sciebat, quid esset facturus.

7. Respondit ei Philippus: Ducentorum denariorum panes non sufficiunt eis, ut unusquisque modicum quid accipiat.

8. Dicit ei unus ex discipulis ejus, Andreas, frater Simonis Petri:

9. Est puer unus hic, qui habet quinque panes hordeaceos et duos pisces: sed haec quid sunt inter tantos?

10. Dicit ergo Jesus: Facite homines discumbere. Erat autem foenum multum in loco. Discubuerunt ergo viri numero quasi quinque millia.

11. Accepit ergo panes Jesus, et cum gratias egisset, distribuit discumbentibus, similiter et ex piscibus, quantum volebant.

12. Ut autem impleti sunt, dixit discipulis suis: Colligite, quae superaverunt fragmenta, ne pereant.

13. Collegerunt ergo et impleverunt duodecim cophinos fragmentorum ex quinque panibus hordeaceis, quae superfuerunt his, qui manducaverant.

14. Illi ergo homines cum vidissent, quod Jesus fecerat signum, dicebant,

## Глава .ѕ.

.а. По семь иде Іисоусъ нѧ ѡнъ полъ мориꙗ Галилейскѧ, ѥже ѥсть Тивериꙗдьскоѥ·

.в. и по нѥмь идѣаше народъ мъногъ, ꙗко видѣахѫ ѕнамениꙗ, ꙗже творѣаше на недѫжьнынхъ.

.г. Възиде же нѧ горѫ Іисоусъ, и тоу сѣдѣаше съ оучениkы своими.

.д. Бѣ же близъ Пасха, праѕдьникъ Июдейскъ.

.є. Възведъ же ѡчи Іисоусъ и видѣвъ, ꙗко народъ мъногъ идеть къ нѥмоу, глагола Филиппови: Чимь коупимъ хлѣбъи, да ѣдꙗть си;

.ѕ. Се же глаголлаше, искоушаꙗ й· самъ бо вѣдѣаше, чьто хотѣ сътворити.

.ꙁ. Ѿтъвѣшта ѥмоу Филиппъ: Дъвѣма сътома сърeбрьникъ хлѣби не довьлѣꙗть имъ, да къжьдо мало чьто прiиметь.

.и. Глагола ѥмоу ѥдинъ ѿтъ оученикъ ѥго, Андрей, братъ Симона Петра:

.ѳ. Ѥсть ѿтроучишть сьде ѥдинъ, иже имать пꙗть хлѣбъ ꙗчьменьнъ и дъвѣ рꙑбѣ· нъ си чьто сѫть селикоу народоу;

.і. Рече же Іисоусъ: Сътворите чловѣкъи възлешти. Бѣ же трава мънога нѧ мѣстѣ. Възлеже оубо мѫжь числъмь ꙗко пꙗть тысѫщь.

.аі. Приꙗтъ же хлѣбъи Іисоусъ, и хвалѫ въздавъ, дастъ възлежаштiимъ, такожде и ѿтъ рꙑбоу, ѥлико хотѣахѫ.

.ві. И ꙗко насꙑтиша сѧ, глагола оученикомъ своимъ: Съберѣте иѕбꙑтъкъи оукроухъ, да не погꙑбнеть ничьтоже.

.гі. Събьраша же и напълниша дъва на десꙗте коша оукроухъ ѿтъ пꙗти хлѣбъ ꙗчьменьнꙑихъ, иже иѕбꙑша ѣдъшiимъ.

.ді. Чловѣци же видѣвъше ѕнамениѥ, ѥже сътвори Іисоусъ, глаголлахѫ, ꙗко сь

*ἀληθῶς ὁ προφητης ὁ ἐρχομενος εἰς τον κοσμον.*

15. *'Ιησοῦς οὐν γνους, ὅτι μελλουσιν ἐρχεσθαι και ἁρπαζειν αὐτον, ἱνα ποιησωσιν αὐτον βασιλεα, ἀνεχωρησε παλιν εἰς το ὀρος αὐτος μονος.*

16. *'Ως δε ὀψια ἐγενετο, κατεβησαν οἱ μαθηται αὐτοῦ ἐπι την θαλασσαν,*

17. *και ἐμβαντες εἰς το πλοῖον, ἠρχοντο περαν τῆς θαλασσης εἰς Καπερναουμ.*

*Και σκοτια ἠδη ἐγεγονει, και οὐκ ἐληλυθει προς αὐτους ὁ 'Ιησοῦς.*

18. *'Η δε θαλασσα ἀνεμου μεγαλου πνεοντος διηγειρετο.*

19. *'Εληλακοτες οὐν ὡς σταδιους εἰκοσιπεντε ἡ τριακοντα, θεωροῦσι τον 'Ιησοῦν περιπατοῦντα ἐπι τῆς θαλασσης, και ἐγγυς τοῦ πλοιου γινομενον· και ἐφοβηθησαν.*

20. *'Ο δε λεγει αὐτοῖς· 'Εγω εἰμι· μη φοβεῖσθε.*

21. *'Ηθελον οὐν λαβεῖν αὐτον εἰς το πλοῖον. Και εὐθεως το πλοῖον ἐγενετο ἐπι τῆς γῆς, εἰς ἡν ὑπῆγον.*

22. *Τῇ ἐπαυριον ὁ ὀχλος ὁ ἑστηκως περαν τῆς θαλασσης, ἰδων ὁτι πλοιαριον ἀλλο οὐκ ἠν ἐκεῖ εἰ μη ἑν ἐκεῖνο, εἰς ὁ ἐνεβησαν οἱ μαθηται αὐτοῦ, και ὁτι οὐ συνεισῆλθε τοῖς μαθηταις αὐτοῦ ὁ 'Ιησους εἰς το πλοιαριον, ἀλλα μονοι οἱ μαθηται αὐτοῦ ἀπῆλθον,*

23. *ἀλλα δε ἠλθε πλοιαρια ἐκ Τιβεριαδος ἐγγυς τοῦ τοπου, ὁπου ἐφαγον τον ἀρτον, εὐχαριστησαντος τοῦ Κυριου·*

24. *ὁτε οὐν εἰδεν ὁ ὀχλος, ὁτι 'Ιησοῦς οὐκ ἐστιν ἐκεῖ οὐδε οἱ μαθηται αὐτοῦ, ἐνεβησαν και αὐτοι εἰς τα πλοῖα, και ἠλθον εἰς Καπερναουμ, ζητοῦντες τον 'Ιησοῦν.*

25. *Και εὑροντες αὐτον περαν τῆς θαλασσης, εἰπον αὐτῷ· 'Ραββι, ποτε ὡδε γεγονας;*

26. *'Απεκριθη αὐτοῖς ὁ 'Ιησοῦς, και εἰπεν· 'Αμην, ἀμην λεγω ὑμῖν, ζητεῖτε με, οὐχ ὁτι εἰδετε σημεῖα, ἀλλ' ὁτι ἐφαγετε ἐκ τῶν ἀρτων και ἐχορτασθητε.*

27. *'Εργαζεσθε μη την βρῶσιν την ἀπολλυμενην, ἀλλα την βρῶσιν την μενουσαν εἰς*

quia hic est vere propheta, qui venturus est in mundum.

ѥсть въ истинѫ пророкъ градый въ миръ.

15. Jesus ergo cum cognovisset, quia venturi essent, ut raperent eum et facerent eum regem, fugit iterum in montem ipse solus.

.еі. Інсоусъ же разоумѣвъ, ꙗко хотѧть
приити да въсхытѧть й и сътворѧть й
царꙗ, ѡтиде пакы въ горѫ ѥдинъ.

16. Ut autem sero factum est, descenderunt discipuli ejus ad mare,.

.ѕі. И ꙗко поздѣ бысть, сънидоша
оученици ѥго на морѥ,

17. et cum ascendissent navem, venerunt trans mare in Capharnaum. Et tenebrae jam factae erant, et non venerat ad eos Jesus.

.зі. и вълѣзъше въ корабль ѣдѣахѫ на
ѡнъ полъ морꙗ въ Кафаръиаоумъ. И тьма
абиѥ бысть, и не оу бѣ пришьлъ къ нимъ
Иисоусъ.

18. Mare autem vento magno flante exsurgebat.

.иі. Морѥ же вѣтроу великоу дыха-
ѭштоу въстаꙗше.

19. Cum remigassent ergo quasi stadia viginti quinque aut triginta, vident Jesum ambulantem super mare et proximum navi fieri, et timuerunt.

.ѳі. Гребъше же ꙗко дъвадесати и пѧть
или тридесати стадіи (попьрищь) оузьрѣша
Інсоуса ходѧшта по морю и близъ ко-
раблꙗ бывъша, и оубоꙗша сѧ.

20. Ille autem dicit eis: Ego sum, nolite timere.

.к. Ѡнъ же глагола имъ: Азъ ѥсмь,
не бойте сѧ.

21. Voluerunt ergo accipere eum in navem, et statim fuit navis ad terram, in quam ibant.

.ка. Хотѣша же приѩти й въ корабль,
и абиѥ бысть корабль на земли, въ
нѭже ѣдѣахѫ.

22. Altera die turba, quae stabat trans mare, vidit quia navicula alia non erat ibi, nisi una, et quia non introisset cum discipulis suis Jesus in navem, sed soli discipuli ejus abiissent;

.кв. Въ оутрѣи же дьнь народъ, иже
стоꙗаше ѡб ѡнъ полъ морꙗ, видѣ, ꙗко
кораблꙗ иного не бѣ тоу, тъкъмо ѥдинъ,
и ꙗко не въниде съ оученикы своими
Інсоусъ въ корабль, нъ ѥдини оученици
ѥго въидоша·

23. aliae vero supervenerunt naves a Tiberiade juxta locum, ubi manducaverant panem gratias agente Domino:

.кг. и инии пріидоша корабли ѡтъ Ти-
вериꙗды близъ мѣста, идеже ѣдоша хлѣбъ
хвалѫ въздавъшоу Господоу·

24. cum ergo vidisset turba, quia Jesus non esset ibi, neque discipuli ejus, ascenderunt naviculas et venerunt Capharnaum, quaerentes Jesum.

.кд. ѥгда же видѣша народи, ꙗко Ін-
соуса не бысть тоу, ни оученикъ ѥго,
вълѣзоша сами въ кораблꙗ и пріидоша
въ Кафаръиаоумъ, иштѫште Інсоуса.

25. Et cum invenissent eum trans mare, dixerunt ei: Rabbi, quando huc venisti?

.ке. И ѡбрѣтъше й ѡб ѡнъ полъ морꙗ,
рекоша ѥмоу: Рав'ви, къгда сѣмо пріиде;

26. Respondit eis Jesus, et dixit: Amen, amen dico vobis, quaeritis me, non quia vidistis signa, sed quia manducastis ex panibus, et saturati estis.

.кѕ. Ѡтъвѣшта имъ Інсоусъ и рече:
Аминъ, аминъ глаголѭ вамъ, иштете мене,
не ꙗко видѣсте знамениꙗ, нъ ꙗко ѣдосте
ѡтъ хлѣбъ, и насытисте сѧ.

27. Operamini non cibum, qui perit, sed qui permanet in vitam aeternam,

.кз. Дѣлайте не брашьно гыбнѫштеѥ,
нъ брашьно прѣбываѭштеѥ въ животъ

ζωην αἰωνιον, ἡν ὁ νἱος τοῦ ἀνθρωπου ὑμῖν δωσει· τοῦτον γαρ ὁ Πατηρ ἐσφραγισεν ὁ Θεος.

28. Εἶπον οὐν προς αὐτον· Τι ποιῶμεν, ἱνα ἐργαζωμεθα τα ἐργα τοῦ Θεοῦ;

29. Ἀπεκριθη ὁ Ἰησοῦς και εἰπεν αὐτοῖς· Τοῦτο ἐστι το ἐργον τοῦ Θεοῦ, ἱνα πιστευσητε εἰς ὁν ἀπεστειλεν ἐκεῖνος.

30. Εἶπον οὐν αὐτῷ· Τι οὐν ποιεῖς συ σημεῖον, ἱνα ἰδωμεν και πιστευσωμεν σοι; τι ἐργαζῃ;

31. Οἱ πατερες ἡμῶν το μαννα ἐφαγον ἐν τῇ ἐρημῳ, καθως ἐστι γεγραμμενον· Ἀρτον ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἐδωκεν αὐτοῖς φαγεῖν.

32. Εἶπεν οὐν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀμην ἀμην λεγω ὑμῖν· Οὐ Μωσῆς δεδωκεν ὑμῖν τον ἀρτον ἐκ τοῦ οὐρανοῦ· ἀλλ' ὁ Πατηρ μου διδωσιν ὑμῖν τον ἀρτον ἐκ τοῦ οὐρανοῦ τον ἀληθινον.

33. Ὁ γαρ ἀρτος τοῦ Θεοῦ ἐστιν ὁ καταβαινων ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, και ζωην διδους τῷ κοσμῳ.

34. Εἶπον οὐν προς αὐτον· Κυριε, παντοτε δος ἡμῖν τον ἀρτον τοῦτον.

35. Εἶπε δε αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐγω εἰμι ὁ ἀρτος τῆς ζωης· ὁ ἐρχομενος προς με οὐ μη πεινασῃ, και ὁ πιστευων εἰς ἐμε οὐ μη διψησῃ πωποτε.

36. Ἀλλ' εἶπον ὑμῖν, ὁτι και ἑωρακατε με, και οὐ πιστευετε.

37. Πᾶν ὁ διδωσι μοι ὁ Πατηρ, προς ἐμε ἡξει· και τον ἐρχομενον προς με οὐ μη ἐκβαλω ἐξω.

38. Ὁτι καταβεβηκα ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, οὐχ ἱνα ποιῶ το θελημα το ἐμον, ἀλλα το θελημα τοῦ πεμψαντος με.

39. Τοῦτο δε ἐστι το θελημα τοῦ πεμψαντος με Πατρος, ἱνα πᾶν ὁ δεδωκε μοι, μη ἀπολεσω ἐξ αὐτοῦ, ἀλλα ἀναστησω αὐτο ἐν τῇ ἐσχατῃ ἡμερᾳ.

40. Τοῦτο δέ ἐστι το θελημα τοῦ πεμψαντος με, ἱνα πᾶς ὁ θεωρῶν τον υἱον και πιστευων εἰς αὐτον ἐχῃ ζωην αἰωνιον, και ἀναστησω αὐτον ἐγω τῇ ἐσχατῃ ἡμερᾳ.

[illegible]

quem Filius hominis vobis dabit: hunc enim Pater signavit Deus.

28. Dixerunt ergo ad eum: Quid faciemus, ut operemur opera Dei?

29. Respondit Jesus et dixit eis: Hoc est opus Dei, ut credatis in eum, quem misit Ille.

30. Dixerunt ergo ei: Quod ergo tu facis signum, ut videamus et credamus tibi? Quid operaris?

31. Patres nostri manducaverunt manna in deserto, sicut scriptum est: Panem de coelo dedit eis manducare.

32. Dixit ergo eis Jesus: Amen amen dico vobis, non Moyses dedit vobis panem de coelo, sed Pater meus dat vobis panem de coelo verum.

33. Panis enim Dei est, qui descendit de coelo, et dat vitam mundo.

34. Dixerunt ergo ad eum: Domine, semper da nobis panem hunc.

35. Dixit autem eis Jesus: Ego sum panis vitae: qui venit ad me, non esuriet, et qui credit in me, non sitiet unquam.

36. Sed dixi vobis, quia et vidistis me, et non creditis.

37. Omne quod dat mihi Pater, ad me veniet, et eum, qui venit ad me, non ejiciam foras,

38. quia descendi de coelo, non ut faciam voluntatem meam, sed voluntatem ejus, qui misit me.

39. Haec est autem voluntas ejus qui misit me Patris, ut omne, quod dedit mihi, non perdam ex eo, sed resuscitem illud in novissimo die.

40. Haec est autem voluntas Patris mei, qui misit me, ut omnis, qui videt Filium, et credit in eum, habeat vitam aeternam, et ego resuscitabo eum in novissimo die.

вѣчьный, ѥже Сынъ чловѣчьскый дасть вамъ· сего бо Ѡтьць знамена Богъ.

.кн. Рекошѧ же къ нѥмоу: Чьто сътворимъ, да дѣлаѥмъ дѣла Божиꙗ;

.кѳ. Ѡтъвѣшта Іисоусъ и рече имъ: Се ѥсть дѣло Божиѥ, да вѣроуѥте въ тъ, ѥгоже посъла Ѡнъ.

.л. Рекошѧ же ѥмоу: Коѥ оубо ты твориши знамениѥ, да видимъ и вѣрѫ имемъ тебѣ; Чьто дѣлаѥши;

.ла. Ѡтьци наши ѣдошѧ маньнѫ въ поустыни, ꙗкоже ѥсть писано: Хлѣбъ съ небесе дастъ имъ ѣсти.

.лв. Рече же имъ Іисоусъ: Аминъ, аминъ глаголѭ вамъ, не Мѡусей дастъ вамъ хлѣбъ съ небесе, нъ Ѡтьць мой даѥть вамъ хлѣбъ истиньный съ небесе.

.лг. Хлѣбъ бо Божій ѥсть съходѧй съ небесе и дашй животъ вьсемоу мироу.

.лд. Рекошѧ же къ нѥмоу: Господи, вьсегда даждь намъ хлѣбъ сь.

.ле Рече же имъ Іисоусъ: Азъ ѥсмь хлѣбъ животьный· грѧдый къ мънѣ, не имать вълзалъкати сѧ, и вѣроуѭй въ мѧ, не имать въждадати сѧ никъгдаже.

.лѕ. Нъ рекохъ вамъ, ꙗко и видѣсте мѧ, и не вѣроуѥте.

.лз. Вьсе ѥже дастъ мънѣ Ѡтьць, къ мънѣ прїидеть, и грѧдѫштаго къ мънѣ не иждѣнѫ вънъ,

.ли. ꙗко сънидохъ съ небесе, да не творѭ волѭ моѭ, нъ волѭ посълавъшаго мѧ.

.лѳ. Се же ѥсть волꙗ посълавъшаго мѧ Ѡтьца, да вьсе ѥже дастъ мънѣ Ѡтьць, не погоублѭ ѡтъ нѥго, нъ въскрѣшѫ ѥ въ послѣдьний дьнь.

.м. Се же ѥсть волꙗ Ѡтьца моѥго посълавъшаго мѧ, да вьсꙗкъ видѧи Сына и вѣроуѭй въ нь имать животъ вѣчьный, и азъ въскрѣшѫ й въ послѣдьний дьнь.

41. *'Εγογγυζον οὐν οἱ 'Ιουδαῖοι περι αὐτοῦ, ὁτι εἰπεν· 'Εγω εἰμι ὁ ἀρτος ὁ καταβας ἐκ τοῦ οὐρανοῦ·*

42. *και ἐλεγον· Οὐχ οὑτος ἐστιν 'Ιησοῦς ὁ υἱος 'Ιωσηφ, οὑ ἡμεῖς οἰδαμεν τον πατερα και την μητερα; Πῶς οὐν λεγει οὑτος· 'Οτι ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καταβεβηκα;*

43. *'Απεκριθη οὐν ὁ 'Ιησοῦς και εἰπεν αὐτοῖς· Μη γογγυζετε μετ' ἀλληλων.*

44. *Οὐδεις δυναται ἐλθεῖν προς με, ἐαν μη ὁ Πατηρ ὁ πεμψας με ἑλκυσῃ αὐτον, και ἐγω ἀναστησω αὐτον τῇ ἐσχατῃ ἡμερᾳ.*

45. *'Εστι γεγραμμενον ἐν τοῖς προφηταις· „Και ἐσονται παντες διδακτοι τοῦ Θεοῦ." Πᾶς οὐν ὁ ἀκουσας παρα τοῦ Πατρος και μαθων, ἐρχεται προς με·*

46. *οὐχ ὁτι τον Πατερα τις ἑωρακεν, εἰ μη ὁ ὢν παρα τοῦ Θεοῦ, οὑτος ἑωρακε τον Πατερα.*

47. *'Αμην ἀμην λεγω ὑμῖν· 'Ο πιστευων εἰς ἐμε ἐχει ζωην αἰωνιον.*

48. *'Εγω εἰμι ὁ ἀρτος τῆς ζωῆς.*

49. *Οἱ πατερες ὑμων ἐφαγον το μαννα ἐν τῇ ἐρημῳ και ἀπεθανον·*

50. *οὑτος ἐστιν ὁ ἀρτος ὁ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καταβαινων, ἱνα τις ἐξ αὐτοῦ φαγῃ, και μη ἀποθανῃ.*

51. *'Εγω εἰμι ὁ ἀρτος ὁ ζῶν, ὁ ἐκ τοῦ ουρανοῦ καταβας· ἐαν τις φαγῃ ἐκ τουτου τοῦ ἀρτου, ζησεται εἰς τον αἰῶνα. Και ὁ ἀρτος δε ὃν ἐγω δωσω, ἡ σαρξ μου ἐστιν, ἣν ἐγω δωσω ὑπερ τῆς τοῦ κοσμου ζωῆς.*

52. *'Εμαχοντο οὐν προς ἀλληλους οἱ 'Ιουδαῖοι, λεγοντες· Πῶς δυναται οὑτος ἡμῖν δοῦναι την σαρκα φαγεῖν;*

53. *Εἰπεν οὐν αὐτοῖς ὁ 'Ιησους· 'Αμην, ἀμην λεγω ὑμῖν· 'Εαν μη φαγητε την σαρκα τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρωπου, και πιητε αὐτοῦ το αἱμα, οὐκ ἐχετε ζωην ἐν ἑαυτοῖς.*

54. *'Ο τρωγων μου την σαρκα και πινων μου το αἱμα, ἐχει ζωην αἰωνιον, και ἐγω ἀναστησω αὐτον τῇ ἐσχατῃ ἡμερᾳ.*

41. Murmurabant ergo Judaei de illo, quia dixisset: Ego sum panis, qui de coelo descendi;

42. et dicebant: Nonne hic est Jesus, filius Joseph, cujus nos novimus patrem et matrem? quomodo ergo dicit hic: Quia de coelo descendi?

43. Respondit ergo Jesus et dixit eis: Nolite murmurare in invicem.

44. Nemo potest venire ad me, nisi Pater, qui misit me, traxerit eum, et ego resuscitabo eum in novissimo die.

45. Est scriptum in Prophetis: Et erunt omnes docibiles Dei. Omnis qui audivit a Patre, et didicit, venit ad me.

46. Non quia Patrem vidit quisquam, nisi is, qui est a Deo, hic vidit Patrem.

47. Amen, amen dico vobis, qui credit in me, habet vitam aeternam.

48. Ego sum panis vitae.

49. Patres vestri manducaverunt manna in deserto, et mortui sunt:

50. hic est panis de coelo descendens, ut si quis ex ipso manducaverit, non moriatur.

51. Ego sum panis vivus, qui de coelo descendi:

52. si quis manducaverit ex hoc pane, vivet in aeternum: et panis, quem ego dabo, caro mea est pro mundi vita.

53. Litigabant ergo Judaei ad invicem, dicentes: Quo modo potest hic nobis carnem suam dare ad manducandum?

54. Dixit ergo eis Jesus: Amen, amen dico vobis, nisi manducaveritis carnem Filii hominis, et biberitis ejus sanguinem, non habebitis vitam in vobis.

55. Qui manducat meam carnem et bibit meum sanguinem, habet vitam aeternam, et ego resuscitabo eum in novissimo die.

.ма. Ръпътаахѫ же Июдеи ѡ нѥмь, ꙗко рече: Азъ ѥсмь хлѣбъ, сьшьдꙑй съ небесе,

.мв. и глаголаахѫ: Не сь ли ѥсть Іисоусъ, сꙑнъ Иосифовъ, ѥмоуже мꙑ знаѥмъ ѿтьца и матерь; како оубо сь глаголѥть: Ꙗко съ небесе сънидохъ;

.мг. Ѿтъвѣшта же Іисоусъ, и рече имъ: Не ръпъштѣте междоу собоѭ.

.мд. Никътоже не можеть прiити къ мънѣ, аште не Ѿтьць посълавꙑй мѧ привлѣчеть ѥго, и азъ въскрѣшѫ й къ послѣдьнiй дьнь.

.ме. Ѥсть писано въ Пророцѣхъ: И бѫдѫть вьси оучени Богъмь. Вьсꙗкъ слꙑшавъ ѿтъ Ѿтьца и навꙑкъ прiидеть къ мънѣ.

.мѕ. Не ꙗко Ѿтьца видѣлъ ѥсть къто, тъкъмо сꙑй ѿтъ Бога, сь видѣ Ѿтьца.

.мз. Аминъ, аминъ глаголѭ вамъ, вѣроуѩй въ мѧ имать животъ вѣчьнꙑй.

.ми. Азъ ѥсмь хлѣбъ животьнꙑй.

.мѳ. Ѿтьци ваши ѣдоша маньнѫ въ поустꙑни и оумьрѣшѧ·

.н. сь ѥсть хлѣбъ съходѧй съ небесе, да аште къто ѿтъ нѥго ѣсть, не оумьреть.

.на. Азъ ѥсмь хлѣбъ живꙑй, сьшьдꙑй съ небесе·

.нв. аште къто сънѣсть ѿтъ хлѣба сего, живъ бѫдеть въ вѣкъ· хлѣбъ бо, иже азъ дамь, плъть моꙗ ѥсть за животъ вьсего мира.

.нг. Пьрѣахѫ же сѧ Июдеи междоу собоѭ глаголѭште: Како можеть сь плъть своѭ дати намъ ѣсти;

.нд. Рече же имъ Іисоусъ: Аминъ, аминъ, глаголѭ вамъ, аште не ѣсте плъти Сꙑна чловѣчьскааго и пиѥте кръве ѥго, не имате имѣти живота въ себѣ.

.не. Ѣдꙑй моѭ плъть и пиѩй моѭ кръвь, имать животъ вѣчьнꙑй, и азъ въскрѣшѫ й въ послѣдьнiй дьнь.

55. 'Η γαρ σαρξ μου ἀληθως ἐστι βρωσις, και το αἱμα μου ἀληθως ἐστι ποσις.

56. Ὀ τρωγων μου την σαρκα και πινων μου το αἱμα ἐν ἐμοι μενει, κἀγω ἐν αὐτῷ.

57. Καθως ἀπεστειλε με ὁ ζῶν Πατηρ, κἀγω ζῶ δια τον Πατερα· και ὁ τρωγων με, κἀκεινος ζησεται δι' ἐμε.

58. Οὑτος ἐστιν ὁ ἀρτος ὁ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καταβας· οὐ καθως ἐφαγον οἱ πατερες ὑμῶν το μαννα, και ἀπεθανον· ὁ τρωγων τουτον τον ἀρτον ζησεται εἰς τον αἰῶνα.

59. Ταῦτα εἰπεν ἐν συναγωγῇ διδασκων ἐν Καπερναουμ.

60. Πολλοι οὐν ἀκουσαντες ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ εἰπον· Σκληρος ἐστιν οὑτος ὁ λογος· τις δυναται αὐτοῦ ἀκουειν;

61. Εἰδως δε ὁ 'Ιησοῦς ἐν ἑαυτῷ, ὁτι γογγυζουσι περι τουτου οἱ μαθηται αὐτοῦ, εἰπεν αὐτοῖς· Τοῦτο ὑμᾶς σκανδαλιζει;

62. 'Εαν οὐν θεωρῆτε τον υἱον τοῦ ἀνθρωπου ἀναβαινοντα, ὁπου ἠν το προτερον;

63 Το πνεῦμα ἐστι το ζωοποιοῦν, ἡ σαρξ οὐκ ὠφελεῖ οὐδεν· τα ῥηματα ἁ ἐγω λαλω ὑμῖν, πνεῦμα ἐστι και ζωη ἐστιν.

64. 'Αλλ' εἰσιν ἐξ ὑμῶν τινες, οἱ οὐ πιστευουσιν. 'Ηδει γαρ ἐξ ἀρχῆς ὁ 'Ιησοῦς, τινες εἰσιν οἱ μη πιστευοντες, και τις ἐστιν ὁ παραδωσων αὐτον.

65. Και ἐλεγε· Δια τοῦτο εἰρηκα ὑμῖν, ὁτι οὐδεις δυναται ἐλθεῖν προς με, ἐαν με ᾐ δεδομενον αὐτῷ ἐκ τοῦ Πατρος μου.

66. 'Εκ τουτου πολλοι ἀπῆλθον τῶν μαθητῶν αὐτοῦ εἰς τα ὀπισω, και οὐκετι μετ' αὐτοῦ περιεπατουν.

67. Εἰπεν οὐν ὁ 'Ιησοῦς τοῖς δωδεκα· Μη και ὑμεῖς θελετε ὑπαγειν;

68. 'Απεκριθη οὐν αὐτῷ Σιμων Πετρος· Κυριε, προς τινα ἀπελευσομεθα; 'Ρηματα ζωῆς αἰωνιου ἐχεις·

| | |
|---|---|
| 56. Caro enim mea vere est cibus, et sanguis meus vere est potus. | .нѕ. Плъть бо моꙗ истиньнѡ ѥсть брашьно, и кръвь моꙗ истиньнѡ ѥсть пиво. |
| 57. Qui manducat meam carnem et bibit meum sanguinem, in me manet et ego in illo. | .нз. Ѣдꙑй моѭ плъть и пиꙗй моѭ кръвь въ мънѣ прѣбꙑваѥть, и азъ въ нѥмь. |
| 58. Sicut misit me vivens Pater et ego vivo propter Patrem, et qui manducat me, et ipse vivet propter me. | .ни. Ꙗкоже посъла мѧ живꙑй Ѡтьць, и азъ живѫ Ѡтьцꙗ ради, и ѣдꙑй мѧ, и тъ живъ бѫдеть мене ради. |
| 59. Hic est panis, qui de coelo descendit, non sicut manducaverunt patres vestri manna et mortui sunt: qui manducat hunc panem, vivet in aeternum. | .нѳ. Сь ѥсть хлѣбъ съшьдꙑй съ небесе, не ꙗкоже ѣдоша ѡтьци ваши маньнѫ, и оумьрѣша· ѣдꙑй хлѣбъ сь, живъ бѫдеть въ вѣкъ. |
| 60. Haec dixit in synagoga, docens in Capharnaum. | .ѯ. Си рече на съборишти, оуча въ Кафарънаоумѣ. |
| 61. Multi ergo audientes ex discipulis ejus dixerunt: Durus est hic sermo, quis potest eum audire? | .ѯа. Мъноѕи оубо ѿтъ оученикъ ѥго слꙑшавъше рекоша: Жестоко ѥсть слово се· къто можеть ѥго слꙑшати; |
| 62. Sciens autem Jesus apud semet ipsum, quia murmurarent de hoc discipuli ejus, dixit eis: Hoc vos scandalizat? | .ѯв. Вѣдꙑ же Ісоусъ въ себѣ, ꙗко ръпъштѫть ѡ семь оученици ѥго, рече имъ: Се ли вꙑ блазнить; |
| 63. Si ergo videritis Filium hominis ascendentem ubi erat prius? | .ѯг. Аште оубо оузьрите Сꙑна чловѣчьскаго въсходѧшта, идеже бѣ прѣжде; |
| 64. Spiritus est, qui vivificat, caro non potest quidquam: verba, quae ego locutus sum vobis, spiritus et vita sunt. | .ѯд. Доухъ ѥсть, иже живить, ѡтъ плъти нѣсть польѕа никоѥѩже· глаголи, ꙗже азъ глаголахъ вамъ, доухъ и животъ сѫть. |
| 65. Sed sunt quidam ex vobis, qui non credunt. Sciebat enim ab initio Jesus, qui essent non credentes et quis traditurus esset eum. | .ѯе. Нъ сѫть ѡтъ васъ дроуѕии, иже не вѣроуѭть. Вѣдѣаше бо испръва Ісоусъ, къто сѫть не вѣроуѭштеи, и къто ѥсть хотѧй прѣдати й. |
| 66. Et dicebat: Propterea dixi vobis, quia nemo potest venire ad me, nisi fuerit ei datum a Patre meo. | .ѯѕ. И глаголааше: Сего ради рекохъ вамъ, ꙗко никътоже не можеть прїити къ мънѣ, аште не бѫдеть дано ѥмоу ѡтъ Ѡтьцꙗ моѥго. |
| 67. Ex hoc multi discipulorum ejus abierunt retro, et jam non cum illo ambulabant. | .ѯз. Ѡтъ сего мъноѕи ѡтъ оученикъ ѥго идоша въспать, и къ томоу не хождаахѫ съ нимь. |
| 68. Dixit ergo Jesus ad duodecim: Numquid et vos vultis abire? | .ѯи. Рече же Ісоусъ ѡбѣма на десѧте: Ѥда и вꙑ хоштете ити; |
| 69. Respondit ergo ei Simon Petrus: Domine, ad quem ibimus? Verba vitae aeternae habes: | .ѯѳ Ѡтвѣшта же ѥмоу Симонъ Петръ: Господи, къ комоу идемъ; Глаголꙑ живота вѣчьнааго имаши· |

69. και ἡμεῖς πεπιστευκαμεν και ἐγνωκαμεν, ὁτι συ εἶ ὁ Χριστος, ὁ υἱος τοῦ Θεοῦ τοῦ ζῶντος.

70. Ἀπεκριθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Οὐκ ἐγω ὑμᾶς τους δωδεκα ἐξελεξαμην, και ἐξ ὑμῶν εἷς διαβολος ἐστιν;

71. Ἐλεγε δε τον Ἰουδαν Σιμωνος Ἰσκαριωτην· οὗτος γαρ ἡμελλεν αὐτον παραδιδοναι, εἷς ὤν ἐκ τῶν δωδεκα.

## Κεφ. VII.

1. Και περιεπατει ὁ Ἰησοῦς μετα ταῦτα ἐν τῇ Γαλιλαιᾳ· οὐ γαρ ἤθελεν ἐν τῇ Ἰουδαιᾳ περιπατεῖν, ὁτι ἐζητουν αὐτον οἱ Ἰουδαῖοι ἀποκτεῖναι.

2. Ἦν δε ἐγγυς ἡ ἑορτη τῶν Ἰουδαιων, ἡ σκηνοπηγια.

3. Εἶπον οὖν προς αὐτον οἱ ἀδελφοι αὐτοῦ· Μεταβηθι ἐντεῦθεν, και ὑπαγε εἰς την Ἰουδαιαν, ἱνα και οἱ μαθηται σου θεωρησωσι τα ἐργα σου, ἁ ποιεῖς·

4. οὐδεις γαρ ἐν κρυπτῷ τι ποιεῖ, και ζητει αὐτος ἐν παῤῥησιᾳ εἶναι· εἰ ταῦτα ποιεῖς, φανερωσον σεαυτον τῷ κοσμῳ.

5. Οὐδε γαρ οἱ ἀδελφοι αὐτοῦ ἐπιστευον εἰς αὐτον.

6. Λεγει οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ὁ καιρος ὁ ἐμος οὔπω παρεστιν· ὁ δε καιρος ὁ ὑμετερος παντοτε ἐστιν ἑτοιμος.

7. Οὐ δυναται ὁ κοσμος μισεῖν ὑμᾶς· ἐμε δε μισεῖ, ὁτι ἐγω μαρτυρῶ περι αὐτοῦ, ὁτι τα ἐργα αὐτοῦ πονηρα ἐστιν.

8. Ὑμεῖς ἀναβητε εἰς την ἑορτην ταυτην· ἐγω οὔπω ἀναβαινω εἰς την ἑορτην ταυτην, ὁτι ὁ καιρος ὁ ἐμος οὔπω πεπληρωται.

9. Ταῦτα δε εἰπων αὐτοῖς, ἐμεινεν ἐν τῇ Γαλιλαιᾳ.

10. Ὡς δε ἀνεβησαν οἱ ἀδελφοι αὐτοῦ, τοτε και αὐτος ἀνεβη εἰς την ἑορτην, οὐ φανερῶς, ἀλλ' ὡς ἐν κρυπτῷ.

11. Οἱ οὖν Ἰουδαιοῖ ἐζητουν αὐτον ἐν τῇ ἑορτῇ, και ἐλεγον· Ποῦ ἐστιν ἐκεῖνος;

70. et nos credidimus, et cognovimus, quia tu es Christus, filius Dei.

.о. и мы вѣровахомъ и познахомъ, ꙗко ты ѥси Христосъ, Сынъ Божій.

71. Respondit eis Jesus: Nonne ego vos duodecim elegi? Et ex vobis unus diabolus est.

.оа. Ѿтъвѣшта имъ Іисоусъ: Не азъ ли васъ дъва на десѧте избърахъ; И ѿтъ васъ ѥдинъ диꙗволъ ѥсть.

72. Dicebat autem Judam Simonis Scariotis: hic enim erat traditurus eum, cum esset unus ex duodecim.

.ов. Глаголааше же Июдѫ Симоновѧ Искариотѣнина· сь бо хотѣаше прѣдати й, ѥдинъ сꙑи ѿтъ ѡбою на десѧте.

## Cap. VII.

## Глава .ꙁ.

1. Post haec autem ambulabat Jesus in Galilaeam: non enim volebat in Judaeam ambulare, quia quaerebant eum Judaei interficere.

.а. Но сихъ же хождааше Іисоусъ въ Галилеи· не хотѣаше бо къ Июдеи ходити, ꙗко искаахѫ ѥго Июдеи оубити.

2. Erat autem in proximo dies festus Judaeorum, scenopegia.

.в. Бѣ же близъ праздьникъ Июдейскъ, скинопигиꙗ.

3. Dixerunt autem ad eum fratres ejus: Transi hinc et vade in Judaeam, ut et discipuli tui videant opera tua, quae facis:

.г. Рекошѧ же къ нѥмоу братиꙗ ѥго: Нрѣиди ѿтъ сѫдоу и иди къ Июдеѭ, да и оученици твои видѧть дѣла твоꙗ, ꙗже твориши·

4. nemo quippe in occulto aliquid facit et quaerit ipse in palam esse: si haec facis, manifesta te ipsum mundo.

.д. никътоже бо ничьсоже въ таинѣ творить, и иштеть самъ ѣвѣ быти· аште си твориши, ѣви сѧ вьсемоу мироу.

5. Neque enim fratres ejus credebant in eum.

.е. Ни братиꙗ бо ѥго вѣроваахѫ въ нѥго.

6. Dicit ergo eis Jesus: Tempus meum nondum advenit, tempus autem vestrum semper est paratum.

.ѕ. Глагола же имъ Іисоусъ: Врѣмѧ моѥ не оу прiиде, а врѣмѧ ваше вьсегда ѥсть готово.

7. Non potest mundus odisse vos, me autem odit, quia ego testimonium perhibeo de illo, quia opera ejus mala sunt.

.ꙁ. Не можетъ миръ ненавидѣти васъ· мене же пенавидить, ꙗко азъ съвѣдѣтельствоуѭ ѡ нѥмь, ꙗко дѣла ѥго зъла сѫть.

8. Vos ascendite ad diem festum hunc; ego non ascendo ad diem festum istum, quia meum tempus nondum impletum est.

.и. Възидѣте вы въ праздьникъ сь· азъ не възидѫ въ праздьникъ сь, ꙗко врѣмѧ моѥ не оу приближи сѧ.

9. Haec cum dixisset, ipse mansit in Galilaea.

.ѳ. Си рекъ ѡста самъ въ Галилеи.

10. Ut autem ascenderunt fratres ejus, tunc et ipse ascendit ad diem festum, non manifeste sed quasi in occulto.

.і. Ѥгда же възидошѧ братиꙗ ѥго, тъгда и самъ възиде въ праздьникъ, не ѣвѣ, нъ ꙗко ѡтай.

11. Judaei ergo quaerebant eum in die festo, et dicebant: Ubi est ille?

.аі. Июдеи же искаахѫ ѥго въ праздьникъ, и глаголаахѫ: Къде ѥсть ѡнь;

12. *Και γογγυσμος πολυς περι αὐτοῦ ἠν ἐν τοῖς ὀχλοις. Οἱ μεν ἐλεγον· Ὁτι ἀγαθος ἐστιν· ἀλλοι δε ἐλεγον· Οὐ, ἀλλα πλανᾶ τον ὀχλον.*

13. *Οὐδεις μεντοι παῤῥησια ἐλαλει περι αὐτοῦ, δια τον φοβον τῶν Ἰουδαιων.*

14. *Ἠδη δε τῆς ἑορτης μεσουσης, ἀνεβη ὁ Ἰησοῦς εἰς το ἱερον, και ἐδιδασκε.*

15. *Και ἐθαυμαζον οἱ Ἰουδαῖοι, λεγοντες· Πῶς οὑτος γραμματα οἰδε, μη μεμαθηκως;*

16. *Ἀπεκριθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς και εἰπεν· Ἡ ἐμη διδαχη οὐκ ἐστιν ἐμη, ἀλλα τοῦ πεμψαντος με.*

17. *Ἐαν τις θελη το θελημα αὐτοῦ ποιεῖν, γνωσεται περι τῆς διδαχῆς, ποτερον ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐστιν, ἡ ἐγω ἀπ' ἐμαυτοῦ λαλῶ.*

18. *Ὁ ἀφ' ἑαυτοῦ λαλῶν την δοξαν την ἰδιαν ζητεῖ· ὁ δε ζητῶν την δοξαν τοῦ πεμψαντος αὐτον, οὑτος ἀληθης ἐστι, και ἀδικια ἐν αὐτῷ ουκ ἐστιν.*

19. *Οὐ Μωσῆς δεδωκεν ὑμῖν τον νομον, και οὐδεις ἐξ ὑμῶν ποιεῖ τον νομον; Τι με ζητεῖτε ἀποκτεῖναι;*

20. *Ἀπεκριθη ὁ ὀχλος και εἰπε· Δαιμονιον ἐχεις· τις σε ζητεῖ ἀποκτεῖναι;*

21. *Ἀπεκριθη ὁ Ἰησοῦς και εἰπεν αὐτοῖς· Ἑν ἐργον ἐποιησα, και παντες θαυμαζετε.*

22. *Δια τοῦτο Μωσῆς δεδωκεν ὑμῖν την περιτομην, (οὐχ ὁτι ἐκ τοῦ Μωσεως ἐστιν, ἀλλ' ἐκ τῶν πατερων), και ἐν σαββατῳ περιτεμνετε ἀνθρωπον.*

23. *Εἰ περιτομην λαμβανει ἀνθρωπος ἐν σαββατῳ, ἱνα μη λυθῇ ὁ νομος Μωσεως, ἐμοι χολᾶτε οτι ὁλον ἀνθρωπον ὑγιῆ ἐποιησα ἐν σαββατῳ;*

24. *Μη κρινετε κατ' ὀψιν, ἀλλα την δικαιαν κρισιν κρινατε.*

25. *Ἐλεγον οὐν τινες ἐκ τῶν Ἱεροσολυμιτῶν· Οὐχ οὑτος ἐστιν ὁν ζητοῦσιν ἀποκτεῖναι;*

12. Et murmur multus de eo erat
in turba. Quidam enim dicebant, quia
bonus est; alii autem dicebant: Non,
sed seducit turbas.

.вı. И рьпътъ мъногъ бѣ ѡ нѥмь въ
народѣ. Ѡви бо глаголаахѫ, ꙗко благъ
ѥсть· инии же глаголаахѫ· Ни, нъ льстить
народъı.

13. Nemo tamen palam loquebatur
de illo propter metum Judaeorum.

.гı. Никъıйже оубо ꙗвѣ не глаголааше
ѡ нѥмь страха ради Июдейскааго.

14. Jam autem die festo mediante
ascendit Jesus in templum, et docebat.

.дı. Абиѥ же въ прѣполовлѥниѥ праздь-
ника възиде Іисоусъ въ црькъвь и оучааше.

15. Et mirabantur Judaei, dicentes:
Quomodo hic litteras scit, cum non di-
dicerit?

.еı. И дивлꙗахѫ сѧ Июдеи глаголѭште:
Како сь оумѣѥть кънигъı, не оучивъ сѧ;

16. Respondit eis Jesus et dixit: Mea
doctrina non est mea, sed ejus, qui
misit me.

.ѕı. Ѿвѣшта Іисоусъ и рече имъ:
Моѥ оучениѥ нѣсть моѥ, нъ посълавъша-
аго мѧ.

17. Si quis voluerit voluntatem ejus
facere, cognoscet de doctrina, utrum
ex Deo sit, an ego a me ipso loquar.

.зı. Аште къто хоштеть волѭ ѥго тво-
рити, разоумѣѥть ѡ оучении, ѥда ѡтъ Бога
ѥсть, или азъ ѡ себѣ глаголѭ.

18. Qui a semet ipso loquitur, gloriam
propriam quaerit: qui autem quaerit
gloriam ejus, qui misit illum, hic verax
est, et injustitia in illo non est.

.иı. Глаголѩй ѡ себѣ, славы своѥѩ
иштеть· а иштай славы посълавъшааго й,
сь истиньнъ ѥсть и неправьдъı нѣсть въ
нѥмь.

19. Nonne Moyses dedit vobis legem?
et nemo ex vobis facit legem.

.ѳı. Не Моѵсей ли дастъ вамъ законъ;
и никътоже ѡтъ васъ не творить закона·

20. Quid me quaeritis interficere?
Respondit turba et dixit: Daemonium
habes: quis te quaerit interficere?

.к. Чьто мене иштете оубити; Ѿвѣ-
шта народъ и рече: Бѣсъ имаши· къто
тебе иштеть оубити;

21. Respondit Jesus et dixit eis:
Unum opus feci, et omnes miramini.

.ка. Ѿвѣшта Іисоусъ и рече имъ:
Ѥдино дѣло сътворихъ, и вьси дивите сѧ.

22. Propterea Moyses dedit vobis
circumcisionem, (non quia ex Moyse
est, sed ex patribus), et in sabbato cir-
cumciditis hominem.

.кв. Сего ради Моѵсей дастъ вамъ ѡбрѣ-
заниѥ, (не ꙗко ѡтъ Моѵсеꙗ ѥсть нъ ѡтъ
ѡтьць), и въ сѫботѫ ѡбрѣзаѥте чловѣка.

23. Si circumcisionem accipit homo
in sabbato, ut non solvatur lex Moysi,
mihi indignamini, quia totum hominem
sanum feci in sabbato?

.кг. Аште ѡбрѣзаниѥ приѥмлѥть чло-
вѣкъ въ сѫботѫ, да не разорить сѧ за-
конъ Моѵсеовъ, на мѧ ли гнѣваѥте сѧ,
ꙗко вьсего чловѣка съдрава сътворихъ
въ сѫботѫ;

24. Nolite judicare secundum faciem,
sed justum judicium judicate.

.кд. Не сѫдите на лице, нъ правьдьнъıй
сѫдъ сѫдите.

25. Dicebant ergo quidam ex Hiero-
solymis: Nonne hic est, quem quae-
runt interficere?

.ке. Глаголаахѫ же ѥтери ѡтъ Иѥроу-
салимлꙗнъ: Не сь ли ѥсть, ѥгоже иштѫть
оубити;

26. *Και ἰδε, παῤῥησιᾳ λαλεῖ, και οὐδεν αὐτῷ λεγουσι· μη πότε ἀληθῶς ἐγνωσαν οἱ ἀρχοντες, ὁτι οὑτος ἐστιν ὁ Χριστος;*

27. *Ἀλλα τοῦτον οἰδαμεν, ποθεν ἐστιν· ὁ δε Χριστος ὁταν ἐρχεται, οὐδεις γινωσκει ποθεν ἐστιν.*

28. *Ἐκραξεν οὐν ἐν τῷ ἱερῷ διδασκων ὁ Ἰησοῦς, και λεγων· Κάμε οἰδατε, και οἰδατε, ποθεν εἰμι· και ἀπ' ἐμαυτοῦ οὐκ ἐληλυθα, ἀλλ' ἐστιν ἀληθινος ὁ πεμψας με, ὁν ὑμεῖς οὐκ οἰδατε·*

29. *Ἐγω οἰδα αὐτον, ὁτι παρ' αὐτοῦ εἰμι, κἀκεῖνος με ἀπεστειλεν.*

30. *Ἐζητουν οὐν αὐτον πιασαι· και οὐδεις ἐπεβαλεν ἐπ' αὐτον την χεῖρα, ὁτι οὐπω ἐληλυθει ἡ ὡρα αὐτου.*

31. *Πολλοι δε ἐκ τοῦ ὀχλου ἐπιστευσαν εἰς αὐτον, και ἐλεγον· Ὁτι ὁ Χριστος ὁταν ἐλθῃ, μητι πλειονα σημεῖα τουτων ποιησει, ὡν οὑτος ἐποιησεν;*

32. *Ἠκουσαν οἱ Φαρισαῖοι τοῦ ὀχλου γογγυζοντος περι αὐτοῦ ταῦτα· και ἀπεστειλαν οἱ Φαρισαῖοι και οἱ ἀρχιερεῖς ὑπηρετας, ἱνα πιασωσιν αὐτον.*

33. *Εἰπεν οὐν ὁ Ἰησοῦς· Ἐτι μικρον χρονον μεθ' ὑμῶν εἰμι, και ὑπαγω προς τον πεμψαντα με.*

34. *Ζητησετε με, και οὐχ εὑρησετε· και ὁπου εἰμι ἐγω, ὑμεῖς ου δυνασθε ἐλθεῖν.*

35. *Εἰπον οὐν οἱ Ἰουδαῖοι προς ἑαυτους· Ποῦ οὑτος μελλει πορευεσθαι, ὁτι ἡμεῖς οὐχ εὑρησομεν αὐτον; Μη εἰς την διασποραν τῶν Ἑλληνων μελλει πορευεσθαι, και διδασκειν τους Ἑλληνας;*

36. *Τις ἐστιν οὑτος ὁ λογος, ὁν εἰπε· Ζητησετε με, και οὐχ εὑρησετε· και ὁπου εἰμι ἐγω, ὑμεῖς οὐ δυνασθε ἐλθεῖν;*

37. *Ἐν δε τῇ ἐσχατῃ ἡμερᾳ τῇ μεγαλῃ τῆς ἑορτῆς εἱστηκει ὁ Ἰησοῦς και ἐκραξε λεγων· Ἐαν τις διψᾷ, ἐρχεσθω προς με και πινετω.*

38. *ὁ πιστευων εἰς ἐμε, καθως εἰπεν ἡ γραφη, ποταμοι ἐκ τῆς κοιλιας αὐτοῦ ῥευσουσιν ὑδατος ζῶντος.*

26. Et ecce! palam loquitur, et nihil ei dicunt: num quid vere cognoverunt principes, quia hic est Christus?

.кѕ. И се, не ѡбиноушѧ сѧ глаголѥть, и ничьсоже ѥмоу не глаголѭть· ѥда како раꙁоумѣшѧ кънѧѕи, ꙗко сь ѥсть Христосъ;

27. Sed hunc scimus, unde sit; Christus autem, cum venerit, nemo scit, unde sit.

.кꙁ. Нъ сего вѣмъ, ѡтъ кѫдоу ѥсть· а Христосъ ѥгда прїидеть, никътоже не вѣсть, ѡтъ кѫдоу бѫдеть.

28. Clamabat ergo docens in templo Jesus, et dicens: Et me scitis, et unde sim, scitis: et a me ipso non veni, sed est verus, qui misit me, quem vos nescitis;

.кн. Въꙁъваaше же Їисоусъ въ црькъви оучѧ, и глаголѧ: И мене вѣсте, и вѣсте, ѡтъ кѫдоу ѥсмь· и ѡ себѣ не прїидохъ, нъ ѥсть истиньнъ посълавꙑй мѧ, ѥгоже вꙑ не вѣсте·

29. ego scio eum, quia ab ipso sum, et ipse me misit.

.кѳ.. аꙁъ ѝ вѣмь, ꙗко ѡтъ нѥго ѥсмь, и тъ мѧ посъла.

30. Quaerebant ergo eum apprehendere, et nemo misit in illum manus, quia nondum venerat hora ejus.

.л. Искаахѫ же Июдеи ѩти ѝ, и никътоже не въꙁложи рѫкоу на нь, ꙗко не оу бѣ пришьла годниа ѥго.

31. De turba autem multi crediderunt in eum, et dicebant: Christus cum venerit, numquid plura signa faciet, quam quae hic facit?

.ла. Ѡтъ народа же мъноѕи вѣроваша въ нь, и глаголаахѫ: Ꙗко ѥгда Христосъ прїидеть, ѥда больша ꙁнамениꙗ сътворить, неже сь творить;

32. Audierunt Pharisaei turbam murmurantem de illo haec, et miserunt principes et Pharisaei ministros, ut apprehenderent eum.

.лв. Слꙑшаша же Фарисеи народъ ръпъштѫшть ѡ нѥмь си, и посълаша архиѥреи и Фарисеи слоугꙑ, да имѫть ѝ.

33. Dixit ergo Jesus: Adhuc modicum tempus vobiscum sum, et vado ad eum, qui misit me.

.лг. Рече же Їисоусъ: Ѥште мало врѣмѧ съ вами ѥсмь, и идѫ къ посълавъшоуоумоу мѧ.

34. Quaeretis me et non invenietis, et ubi sum ego, vos non potestis venire.

.лд. Поиштете мене и не ѡбрѧштете, и идеже ѥсмь аꙁъ, вꙑ не можете прїити.

35. Dixerunt ergo Judaei ad se ipsos: Quo hic iturus est, quia non inveniemus eum? Numquid in dispersionem gentium iturus est et docturus gentes?

.лє. Рекошѧ же Июдеи къ себѣ сами: Камо сь хоштеть ити, ꙗко мꙑ не ѡбрѧштемъ ѥго; Ѥда въ раꙁсѣꙗние Ѥлиньскоѥ хоштеть ити и оучити Ѥлинꙑ;

36. Quis est hic sermo, quem dixit: Quaeretis me et non invenietis; et ubi sum ego, vos non potestis venire?

.лѕ. Чьто ѥсть слово се, ѥже рече: Въꙁиштете мене и не ѡбрѧштете, и идеже ѥсмь аꙁъ, вꙑ не можете прїити;

37. In novissimo autem die magno festivitatis stabat Jesus, et clamabat, dicens: Si quis sitit, veniat ad me, et bibat.

.лꙁ. Въ послѣдьнїй же дьнь великꙑй праꙁдьника стоꙗаше Їисоусъ и ꙁъваaше глаголѧ: Аште къто жѧждеть, да прїидеть къ мънѣ и пиѥть.

38. Qui credit in me, sicut dicit Scriptura, flumina de ventre ejus fluent aquae vivae.

.лн. Вѣроуѩй въ мѧ, ꙗкоже глаголѭть Кънигꙑ, рѣкꙑ ѡтъ ребръ ѥго истекѫть водꙑ живꙑ.

39. Τοῦτο δε εἶπε περι τοῦ Πνευματος, οὗ ἐμελλον λαμβανειν οἱ πιστευοντες εἰς αὐτον· οὔπω γαρ ἦν Πνεῦμα Ἅγιον, ὅτι ὁ Ἰησοῦς οὐδεπω ἐδοξασθη.

[illegible]

40. Πολλοι οὖν ἐκ τοῦ ὄχλου ἀκουσαντες τον λογον ἐλεγον· Οὗτος ἐστιν ἀληθῶς ὁ προφητης.

[illegible]

41. Ἄλλοι ἐλεγον· Οὗτος ἐστιν ὁ Χριστος. Ἄλλοι δε ἐλεγον· Μη γαρ ἐκ τῆς Γαλιλαιας ὁ Χριστος ἐρχεται;

[illegible]

42. Οὐχι ἡ γραφη εἰπεν, ὅτι ἐκ τοῦ σπερματος Δαυιδ, και ἀπο Βηθλεεμ τῆς κωμης, ὅπου ἦν Δαυιδ, ὁ Χριστος ἐρχεται;

[illegible]

43. Σχισμα οὖν ἐν τῷ ὄχλῳ ἐγενετο δἰ αὐτον.

[illegible]

44. Τινες δε ἤθελον ἐξ αὐτῶν πιασαι αὐτον· ἀλλ' οὐδεις ἐπεβαλεν ἐπ' αὐτον τας χεῖρας.

[illegible]

45. Ἦλθον οὖν οἱ ὑπηρεται προς τους ἀρχιερεῖς και Φαρισαιους· και εἶπον αὐτοῖς ἐκεῖνοι· Διατι οὐκ ἠγαγετε αὐτον;

[illegible]

46. Ἀπεκριθησαν οἱ ὑπηρεται· Οὐδεποτε οὕτως ἐλαλησεν ἀνθρωπος, ὡς οὗτος ὁ ανθρωπος.

[illegible]

47. Ἀπεκριθησαν οὖν αὐτοῖς οἱ Φαρισαῖοι· Μη και ὑμεῖς πεπλανησθε;

[illegible]

48. Μη τις ἐκ τῶν ἀρχοντων ἐπιστευσεν εἰς αὐτον, ἢ ἐκ τῶν Φαρισαιων;

[illegible]

49. Ἀλλ' ὁ ὄχλος οὗτος, ὁ μη γινωσκων τον νομον· ἐπικαταρατοι εἰσιν.

[illegible]

50. Λεγει Νικοδημος προς αὐτους, ὁ ἐλθὼν νυκτος προς αὐτον, εἷς ὢν ἐξ αὐτῶν·

[illegible]

51. Μη ὁ νομος ἡμῶν κρινει τον ἀνθρωπον, ἐαν μη ἀκουσῃ παρ' αὐτοῦ προτερον, και γνῷ τι ποιεῖ;

[illegible]

52. Ἀπεκριθησαν και εἶπον αὐτῷ· Μη και συ ἐκ τῆς Γαλιλαιας εἶ; ἐρευνησον και ἴδε, ὅτι προφητης ἐκ τῆς Γαλιλαιας οὐκ ἐγηγερται.

[illegible]

53. Και ἐπορευθη ἕκαστος εἰς την οἶκον αὐτοῦ.

[illegible]

| | |
|---|---|
| 39. Hoc autem dixit de Spiritu, quem accepturi erant credentes in eum: nondum enim erat Spiritus datus, quia Jesus nondum fuerat glorificatus. | .лѳ. Се же рече ѡ Доусѣ, иже хотѣахѫ прїимати вѣроуѭштеи въ него· не оу бо бѣ Доухъ святый данъ, ꙗко Іисоусъ не оу бѣ прославленъ. |
| 40. Ex illa ergo turba cum audissent hos sermones ejus, dicebant: Hic est vere Propheta. | .м. Ѡтъ народа же того слышавъшеи словеса си, глаголаахѫ: Сь ѥсть въ истинѫ Пророкъ. |
| 41. Alii dicebant: Hic est Christus; quidam autem dicebant: Numquid a Galilaea Christus venit? | .ма. Инии глаголаахѫ: Сь ѥсть Христосъ· дроуѕии же глаголаахѫ: Ѥда ѿтъ Галилеѩ Христосъ прїидеть; |
| 42. Nonne Scriptura dicit, quia ex semine David et de Bethleem castello, ubi erat David, venit Christus? | .мв. Не Кънигы ли рекоша, ꙗко ѿтъ сѣмене Давидова, и ѿтъ Виѳлеомьскаго градьца, идеже бѣ Давидъ, прїидеть Христосъ; |
| 43. Dissensio itaque facta est in turba propter eum. | .мг. Распьрꙗ же бысть въ народѣ ѥго ради. |
| 44. Quidam autem ex ipsis volebant apprehendere eum, sed nemo misit super illum manus. | .мд. Ѥтери же ѿтъ нихъ хотѣахѫ ꙗти й, нъ никътоже не въꙁложи на нь рѫкоу. |
| 45. Venerunt ergo ministri ad Pontifices et Pharisaeos, et dixerunt eis illi: Quare non adduxistis eum? | .ме. Прїидоша же слоугы къ архиѥреомъ и Фарисеомъ, и рекоша имъ ѡни: По что не приведосте ѥго; |
| 46. Responderunt ministri: Nunquam sic locutus est homo, sicut hic homo. | .мѕ. Ѿтъвѣшташа сдоугы: Николиже не глаголалъ ѥсть тако чловѣкъ, ꙗко сь чловѣкъ. |
| 47. Responderunt ergo eis Pharisaei: Numquid et vos seducti estis? | .мꙁ. Ѿтъвѣшташа же имъ Фарисеи: Ѥда и вы прѣльштени бысте; |
| 48. Numquid aliquis ex principibus credidit in eum, aut ex Pharisaeis? | .ми. Ѥда къто ѿтъ кънѩѕь вѣрова въ нь, или ѿтъ Фарисеи; |
| 49. Sed turba haec, quae non novit legem: maledicti sunt. | .мѳ. Нъ народъ сь, иже не вѣсть ꙁакона· проклати сѫть. |
| 50. Dixit Nicodemus ad eos, ille, qui venit ad eum nocte, qui unus erat ex ipsis: | .н. Глагола Никодимъ къ нимъ, пришьдый къ немоу ноштиѭ, ѥдинъ сыи ѿтъ нихъ: |
| 51. Numquid lex nostra judicat hominem, nisi audierit ab ipso prius et cognoverit, quid faciat? | .на. Ѥда ꙁаконъ нашь сѫдить чловѣкоу, аште не слышить ѿтъ него прѣжде и раꙁоумѣѥть, чьто творить; |
| 52. Responderunt et dixerunt ei: Numquid et tu Galilaeus es? Scrutare et vide, quia a Galilaea Propheta non surgit. | .нв. Ѿтъвѣшташа и рекоша ѥмоу: Ѥда и ты ѿтъ Галилеѩ ѥси; Испытай и виждь, ꙗко ѿтъ Галилеѩ пророкъ не приходить. |
| 53. Et reversi sunt unus quisque in domum suam. | .нг. И иде къждо въ домъ свой. |

## Κεφ. VIII.

1. Ἰησοῦς δε ἐπορευθη εἰς το ὀρος τῶν ἐλαιῶν.

2. Ορθρου δε παλιν παρεγενετο εἰς το ἱερον, και πᾶς ὁ λαος ἠρχετο προς αὐτον, και καθισας ἐδιδασκεν αὐτους.

3. Ἀγουσι δε οἱ γραμματεῖς και οἱ Φαρισαῖοι γυναῖκα ἐν μοιχειᾳ κατειλημμενην, και στησαντες αὐτην ἐν μεσῳ

4. λεγουσιν αὐτῷ· Διδασκαλε, αὑτη ἡ γυνη κατειληφθη ἐπ' αὐτοφωρῷ μοιχευομενη·

5. ἐν δε τῷ νομῳ Μωσῆς ἡμῖν ἐνετειλατο τας τοιαυτας λιθοβολεῖσθαι· συ οὐν τι λεγεις;

6. Τοῦτο δε ἐλεγον πειραζοντες αὐτον, ἱνα ἐχωσι κατηγορεῖν αὐτοῦ. Ὁ δε Ἰησοῦς κατω κυψας τῷ δακτυλῳ ἐγραφεν εἰς την γῆν.

7. Ὡς δε ἐπεμενον ἐρωτῶντες αὐτον, ανακυψας εἰπε προς αὐτους· Ὁ ἀναμαρτητος ὑμῶν πρῶτος τον λιθον ἐπ' αυτῇ βαλετω.

8. Και παλιν κατω κυψας ἐγραφεν εἰς την γῆν.

9. Οἱ δε ἀκουσαντες και ὑπο τῆς συνειδησεως ἐλεγχομενοι ἐξηρχοντο εἱς καθ' εἱς, ἀρχαμενοι ἀπο τῶν πρεσβιτερων ἑως τῶν ἐσχατων, και κατελειφθη μονος ὁ Ἰησοῦς και ἡ γυνη ἐν μεσῳ ἑστῶσα.

10. Ἀνακυψας δε ὁ Ἰησοῦς και μηδενα θεασαμενος πλην τῆς γυναικος εἰπεν αὐτῇ· Ἡ γυνη, ποῦ εἰσιν ἐκεῖνοι οἱ κατηγοροι σου; οὐδεις σε κατεκρινεν;

11. Ἡ δε εἰπεν· Οὐδεις, Κυριε. Εἰπε δε αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Οὐδε ἐγω σε κατακρινω· πορευου και μηκετι ἁμαρτανε.

12. Παλιν οὐν ὁ Ἰησοῦς αὐτοῖς ἐλαλησε λεγων· Ἐγω εἰμι το φῶς τοῦ κοσμου· ὁ ἀκολουθῶν ἐμοι οὐ μη περιπατησει ἐν τῇ σκοτιᾳ, ἀλλ' ἑξει το φῶς τῆς ζωῆς.

13. Εἰπον οὐν αὐτῷ οἱ Φαρισαῖοι· Συ περι σεαύτοῦ μαρτυρεῖς· ἡ μαρτυρια σου οὐκ ἐστιν ἀληθης.

## Caput VIII.

1. Jesus autem perrexit in montem Oliveti.

2. Et diluculo iterum facto venit in templum, et omnis populus venit ad eum, et sedens docebat eos.

3. Adducunt autem scribae et Pharisaei mulierem in adulterio deprehensam; et statuerunt eam in medio,

4. et dixerunt ei: Magister, haec mulier modo deprehensa est in adulterio;

5. in lege autem Moyses mandavit nobis hujusmodi lapidare: tu ergo quid dicis?

6. Haec autem dicebant, tentantes eum, ut possent accusare eum. Jesus autem inclinans se deorsum, digito scribebat in terra.

7. Cum autem perseverarent interrogantes eum, erexit se et dixit eis: Qui sine peccato est vestrum, primus in illam lapidem mittat.

8. Et iterum se inclinans scribebat in terra.

9. Audientes autem unus post unum exibant incipientes a senioribus, et remansit solus et mulier stans in medio.

10. Erigens autem se Jesus dixit ei: Mulier, ubi sunt accusatores tui? Nemo te condemnavit?

11. Quae dixit: Nemo, Domine. Dixit autem Jesus: Nec ego te condemnabo: vade et amplius jam noli peccare.

12. Iterum ergo locutus est eis Jesus, dicens: Ego sum lux mundi: qui sequitur me, non ambulabit in tenebris, sed habebit lucem vitae.

13. Dixerunt ergo ei Pharisaei: Tu de te ipso testimonium perhibes: testimonium tuum non est verum.

## Глава .и.

.а. Іисоусъ же иде къ горѫ Єлеонь-скѫѭ.

.в. Оутро же пакы пріиде въ цръкъвь, и вьси людиѥ идѣахѫ къ нѥмоу, и сѣдъ оучааше ѩ.

.г. Приведоша же кънижьници и Фарисеи женѫ въ прѣлюбодѣяніи ѩтѫ· и поставиша ѭ по срѣдѣ,

.д. и глаголаша ѥмоу: Оучителю, си жена ѩта ѥсть нынѣ въ прѣлюбодѣяніи·

.є. а въ законѣ намъ Моусей заповѣдѣ, таковъіѩ камениѥмь побивати· ты же что глаголѥши;

.ѕ. Си же рекоша искоушаѭште и̂, да бы имѣли что на нь глаголати. Іисоусъ же низъ поклонь сѧ, пръстъмь писааше на земли.

.з. Ꙗко же прилежаахѫ въпрашаѭште и̂, въсклони сѧ и рече имъ: Иже ѡтъ васъ безъ грѣха ѥсть, прѣжде връѕи камень на нѭ.

.и. И пакы поклонь сѧ писааше на земли.

.ѳ. Слышавъше же исхождаахѫ ѥдинъ по ѥдиномоу начьнъше ѡтъ старьць, и ѡста ѥдинъ Іисоусь и жена стоѩшти по срѣдѣ.

.і. Въсклонивъ же сѧ Іисоусъ, рече ѥи: Жено, къде сѫть, иже на тѧваждаахѫ; Никътоже ли тебе не ѡсѫди;

.аі. Ѡна же рече: Никътоже, Господи. Рече же Іисоусъ: Ни азъ тебе ѡсѫждѫ· иди и ѡтъ селѣ не съгрѣшай къ томоу.

.ві. Пакы же имъ рече Іисоусъ глаголѧ: Азъ ѥсмь свѣтъ вьсемоу мироу· ходѧй по мънѣ, не имать ходити въ тьмѣ, нъ имѣти имать свѣтъ жизни.

.гі. Рекоша же ѥмоу Фарисеи: Ты ѡ себѣ самъ съвѣдѣтельствоуѥши· съвѣдѣтельство твоѥ нѣсть истиньно.

14. Ἀπεκριθη Ἰησοῦς και εἰπεν αὐτοῖς· Κἀν ἐγω μαρτυρῶ περι ἐμαυτοῦ, ἀληθης ἐστιν ἡ μαρτυρια μου· ὁτι οἰδα, ποθεν ἦλθον, και ποῦ ὑπαγω· ὑμεῖς δε οὐκ οἰδατε, ποθεν ἐρχομαι, και ποῦ ὑπαγω.

15. Ὑμεῖς κατα την σαρκα κρινετε· ἐγω οὐ κρινω οὐδενα.

16. Και ἐαν κρινω δε ἐγω, ἡ κρισις ἡ ἐμη ἀληθης ἐστιν· ὁτι μονος οὐκ εἰμι, ἀλλ' ἐγω και ὁ πεμψας με Πατηρ.

17. Και ἐν τῷ νομῳ δε τῳ ὑμετερῳ γεγραπται, ὁτι δυο ἀνθρωπων ἡ μαρτυρια ἀληθης ἐστιν.

18. Ἐγω εἰμι ὁ μαρτυρῶν περι ἐμαυτοῦ, και μαρτυρεῖ περι ἐμοῦ ὁ πεμψας με Πατηρ.

19. Ἐλεγον οὐν αὐτῷ· Ποῦ ἐστιν ὁ πατηρ σου; Ἀπεκριθη ὁ Ἰησοῦς· Οὐτε ἐμε οἰδατε, οὐτε τον Πατερα μου· εἰ ἐμε ᾐδειτε, και τον Πατερα μου ᾐδειτε ἀν.

20. Ταῦτα τα ῥηματα ἐλαλησεν ὁ Ἰησοῦς ἐν τῷ γαζοφυλακιῳ, διδασκων ἐν τῷ ἱερῷ· και οὐδεις ἐπιασεν αὐτον, ὁτι οὐπω ἐληλυθει ἡ ὡρα αὐτοῦ.

21. Εἰπεν οὐν παλιν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐγω ὑπαγω, και ζητησετε με, και ἐν τῇ ἁμαρτιᾳ ὑμῶν ἀποθανεῖσθε· ὁπου ἐγω ὑπαγω, ὑμεῖς οὐ δυνασθε ἐλθεῖν.

22. Ἐλεγον οὐν οἱ Ἰουδαῖοι· Μητι αποκτενεῖ ἑαυτον, ὁτι λεγει· Ὁπου ἐγω ὑπαγω, ὑμεῖς οὐ δυνασθε ἐλθεῖν;

23. Και εἰπεν αὐτοῖς· Ὑμεῖς ἐκ τῶν κατω ἐστε, ἐγω ἐκ τῶν ἀνω εἰμι· ὑμεῖς ἐκ τοῦ κοσμου τουτου ἐστε, ἐγω οὐκ εἰμι ἐκ τοῦ κοσμου τουτου.

24. Εἰπον οὐν ὑμῖν ὁτι ἀποθανεῖσθε ἐν ταῖς ἁμαρτιαις ὑμῶν· ἐαν γαρ μη πιστευσητε, ὁτι ἐγω εἰμι, ἀποθανεῖσθε ἐν ταῖς ἁμαρτιαις ὑμῶν.

25. Ἐλεγον οὐν αὐτῷ· Συ τις ει; Και εἰπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Την ἀρχην, ὁτι και λαλῶ ὑμῖν.

26. Πολλα εχω περι ὑμῶν λαλεῖν και κρινειν· ἀλλ' ὁ πεμψας με ἀληθης ἐστι,

[illegible]

14. Respondit Jesus, et dixit eis: Etsi ego testimonium perhibeo de me ipso, verum est testimonium meum. quia scio, unde veni et quo vado: vos autem nescitis, unde venio aut quo vado.

.ді. Ѿтъвѣшта Іисоусъ и рече имъ: Аште и аꙁъ съвѣдѣтельствоуѭ ѡ мънѣ самомь, съвѣдѣтельство моѥ истиньно ѥсть, ꙗко вѣмь, ѡтъ кѫдоу прїидохъ, и камо идѫ· вы же не вѣсте, ѡтъ кѫдоу градѫ, и камо идѫ.

15. Vos secundum carnem judicatis, ego non judico quemquam;

.еі. Вы по плъти сѫдите, аꙁъ не сѫждѫ никомоуже:

16. et si judico ego, judicium meum verum est; quia solus non sum, sed ego et qui misit me, Pater.

.ѕі. и аште ли сѫждѫ аꙁъ, сѫдъ мой истиньнъ ѥсть, ꙗко ѥдинъ нѣсмь, нъ аꙁъ и посълавый мѧ Ѡтьць.

17. Et in lege vestra scriptum est: quia duorum hominum testimonium verum est.

.ꙁі. Въ ꙁаконѣ же вашемь писано ѥсть· ꙗко дъвою человѣкоу съвѣдѣтельство истиньно ѥсть.

18. Ego sum, qui testimonium perhibeo de me ipso, et testimonium perhibet de me, qui misit me Pater.

.иі. Аꙁъ ѥсмь, съвѣдѣтельствоуѩй ѡ мънѣ самомь, и съвѣдѣтельствоуѥть ѡ мънѣ посълавый мѧ Ѡтьць.

19. Dicebant ergo ei: Ubi est pater tuus? Respondit Jesus: Neque me scitis, neque Patrem meum: si me sciretis, forsitan et Patrem meum sciretis.

.ѳі. Глаголаахѫ же ѥмоу: Къде ѥсть ѡтьць твой; Ѡтъвѣшта Іисоусъ: Ни мене вѣсте, ни Ѡтьца моѥго· аште мѧ бысте вѣдѣли, и Ѡтьца моѥго бысте вѣдѣли.

20. Haec verba locutus est in gazophylacio, docens in templo, et nemo apprehendit eum, quia necdum venerat hora ejus.

.к. Сиꙗ глаголъи гдагола Іисоусъ въ гаꙁофѵлакіи, оуча въ цръкъви· и никътоже не ѩтъ ѥго, ꙗко не оу бѣ пришьла година ѥго.

21. Dixit ergo iterum eis Jesus: Ego vado, et quaeretis me, et in peccato vestro moriemini: quo ego vado, vos non potestis venire.

.ка. Рече же имъ пакы Іисоусъ: Аꙁъ идѫ, и въꙁиштете мене, и въ грѣсѣ вашемь оумьрете· ꙗко ꙗможе аꙁъ идѫ, вы не можете прїити.

22. Dicebant ergo Judaei: Numquid interficiet semet ipsum, quia dicit: Quo ego vado, vos non potestis venire?

.кв. Глаголаахѫ же Іюдеи: Ѥда сѧ самъ оубиѥть, ꙗко глаголѥть: Ꙗможе аꙁъ идѫ, вы неможете прїити;

23. Et dicebat eis: Vos de deorsum estis, ego de supernis sum; vos de mundo hoc estis, ego non sum de hoc mundo.

.кг. И глаголааше имъ: Вы ѡтъ нижьніихъ ѥсте, аꙁъ ѡтъ вышьніихъ ѥсмь· вы ѡтъ сего мира ѥсте, аꙁъ нѣсмь ѡтъ сего мира.

24. Dixi ergo vobis, quia moriemini in peccatis vestris: si enim non credideritis, quia ego sum, moriemini in peccato vestro.

.кд. Рекохъ оубо вамъ, ꙗко оумьрете въ грѣсѣхъ вашихъ· аште бо вѣры не имете, ꙗко аꙁъ ѥсмь, оумьрете въ грѣсѣ вашемь.

25. Dicebant ergo ei: Tu quis es? Dixit eis Jesus: Principium, qui et loquor vobis.

.ке. Глаголаахѫ же ѥмоу: Ты къто ѥси; И рече имъ Іисоусъ: Начатъкъ, иже и глаголѭ вамъ.

26. Multa habeo de vobis loqui et judicare: sed qui misit me, verax est,

.кѕ. Мъного имамь ѡ васъ глаголати и сѫдити· нъ посълавый мѧ истиньнъ ѥсть,

*κἀγω ἁ ἠκουσα παρ' αὐτοῦ, ταῦτα λεγω εἰς τον κοσμον.*

27. *Και οὐκ ἐγνωσαν ὁτι τον Πατερα αὐτοῖς ἐλεγεν.*

28. *Εἰπεν οὐν αὐτοῖς ὁ 'Ιησοῦς· Οταν ὑψωσητε τον υἱον τοῦ ἀνθρωπου, τοτε γνωσεσθε ὁτι ἐγω εἰμι· και ἀπ' ἐμαυτοῦ ποιῶ οὐδεν, αλλα καθως εδιδαξε με ὁ Πατηρ μου, ταῦτα λαλῶ.*

29. *Και ὁ πεμψας με μετ' ἐμοῦ ἐστιν· οὐκ ἀφῆκε με μονον ὁ Πατηρ, ὁτι ἐγω τα ἀρεστα αὐτῷ ποιῶ παντοτε.*

30. *Ταῦτα αὐτοῦ λαλοῦντος πολλοι ἐπιστευσαν εἰς αὐτον.*

31. *'Ελεγεν οὐν ὁ 'Ιησοῦς προς τους πεπιστευκοτας αὐτῷ 'Ιουδαιους· 'Εαν ὑμεῖς μεινητε ἐν τῷ λογῳ τῷ ἐμῷ, ἀληθως μαθηται μου ἐστε,*

32. *και γνωσεσθε την ἀληθειαν, και ἡ ἀληθεια ἐλευθερωσει ὑμᾶς.*

33. *'Απεκριθησαν αὐτῷ· Σπερμα 'Αβρααμ ἐσμεν, και οὐδενι δεδουλευκαμεν πωποτε· πῶς συ λεγεις· Ότι ἐλευθεροι γενησεσθε;*

34. *'Απεκριθη αὐτοῖς ὁ 'Ιησοῦς· 'Αμην, αμην λεγω ὑμῖν, ὁτι πᾶς ὁ ποιῶν την ἁμαρτιαν δοῦλος ἐστι τῆς ἁμαρτιας.*

35. *Ὁ δε δοῦλος οὐ μενει ἐν τῇ οἰκιᾳ εἰς τον αἰῶνα· ὁ υἱος μενει εἰς τον αἰῶνα.*

36. *'Εαν οὐν ὁ υἱος ὑμᾶς ἐλευθερωσῃ, ὀντως ἐλευθεροι ἐσεσθε.*

37. *Οἰδα ὁτι σπερμα 'Αβρααμ ἐστε· ἀλλα ζητεῖτε με ἀποκτεῖναι, ὁτι ὁ λογος ὁ ἐμος οὐ χωρεῖ ἐν ὑμῖν.*

38. *'Εγω ὁ ἑωρακα παρα τῷ Πατρι μου, λαλῶ· και ὑμεῖς οὐν ὁ ἑωρακατε παρα τῷ πατρι ὑμῶν ποιεῖτε.*

39. *'Απεκριθησαν και εἰπον αὐτῷ· Ὁ πατηρ ἡμῶν 'Αβρααμ ἐστι. Λεγει αὐτοις ὁ 'Ιησοῦς· Εἰ τεκνα τοῦ 'Αβρααμ ἠτε, τα ἐργα τοῦ 'Αβρααμ ἐποιεῖτε ἀν.*

40. *Νῦν δε ζητεῖτε με ἀποκτεῖναι, ἀνθρωπον, ὁς την ἀληθειαν ὑμῖν λελαληκα, ἡν*

et ego, quae audivi ab eo, haec loquor in mundo.

и азъ, ꙗже слышахъ ѡтъ нѥго, си глаголѭ въ вьсемь мирѣ.

27. Et non cognoverunt, quia Patrem ejus dicebat Deum.

.кз. И не разоумѣша, ꙗко Ѡтьца своѥго глаголааше Бога.

28. Dixit ergo eis Jesus: Cum exaltaveritis Filium hominis, tunc cognoscetis, quia ego sum, et a me ipso facio nihil, sed sicut docuit me Pater, haec loquor.

.ки. Рече же имъ Іисоусъ: Ѥгда възнесете Сына чловѣчьскааго, тъгда разоумѣѥте, ꙗко азъ ѥсмь, и ѡ себѣ ничьсоже не творѭ, нъ ꙗкоже наоучи ма Ѡтьць, си глаголѭ.

29. Et qui me misit, mecum est: non reliquit me solum, quia ego quae placita sunt ei, facio semper.

.кѳ. И посълавъй ма съ мъноѭ ѥсть· не ѡстави мене ѥдиного, ꙗко азъ оугодьна ѥмоу творѭ вьсегда.

30. Haec illo loquente multi crediderunt in eum.

.л. Си глаголѭштоу ѥмоу мъноѕи вѣроваша въ нѥго.

31. Dicebat ergo Jesus ad eos, qui crediderunt ei Judaeos: Si vos manseritis in sermone meo, vere discipuli mei eritis,

.ла. Глаголааше же Іисоусъ къ вѣровавъшиимъ въ нь Июдеомъ: Аште вы прѣбѫдете въ словеси моѥмь, въ истинѫ оучєници мои бѫдете,

32. et cognoscetis veritatem, et veritas liberabit vos.

.лв. и разоумѣѥте истинѫ, и истина свободить вы.

33. Responderunt ei: Semen Abrahae sumus, et nemini servivimus unquam: quomodo tu dicis: Liberi eritis?

.лг. Ѡтъвѣшташа ѥмоу: Сѣмѧ Авраамле ѥсмъ, и никомоуже не работахомъ николиже· како ты глаголѥши: Ꙗко свободь бѫдете;

34. Respondit eis Jesus: Amen, amen dico vobis, quia omnis, qui facit peccatum, servus est peccati.

.лд. Ѡтъвѣшта имъ Іисоусъ: Аминь, аминь глаголѭ вамъ, ꙗко вьсꙗкъ творѧй грѣхъ, рабъ ѥсть грѣхоу.

35. Servus autem non manet in domo in aeternum, filius manet in aeternum.

.лє. А рабъ не прѣбываѥть въ домоу въ вѣкъ· сынъ же прѣбываѥть въ вѣкъ.

36. Si ergo filius vos liberaverit, vere liberi eritis.

.лѕ. Аште бо сынъ свободить вы, въ истинѫ свободь бѫдете.

37. Scio, quia filii Abrahae estis; sed quaeritis me interficere, quia sermo meus non capit in vobis.

.лз. Вѣмь, ꙗко сѣмѧ Авраамле ѥсте· нъ иштете мене оубити, ꙗко слово моѥ не въмѣштаѥть сѧ въ васъ.

38. Ego quod vidi apud Patrem meum, loquor: et vos quae vidistis apud patrem vestrum facitis.

.ли. Азъ ѥже видѣхъ оу Ѡтьца моѥго, глаголѭ· и вы оубо, ѥже видѣсте оу ѡтьца вашего, творите.

39. Responderunt et dixerunt ei: Pater noster Abraham est. Dicit eis Jesus: Si filii Abrahae estis, opera Abrahae facite!

.лѳ. Ѡтъвѣшташа и рекоша ѥмоу: Ѡтьць нашь Авраамъ ѥсть. Глагола имъ Іисоусъ: Аште чада Авраамлꙗ ѥсте, дѣла Авраамлꙗ творите.

40. Nunc autem quaeritis me interficere, hominem, qui veritatem vobis

.м. Нынѣ же иштете мене оубити, чловѣка, иже истинѫ вамъ глаголахъ, ѥже

*ἠκουσα παρα τοῦ Θεοῦ· τοῦτο Ἀβρααμ οὐκ ἐποιησεν.*

41. *Ὑμεῖς ποιεῖτε τα ἐργα του πατρος ὑμῶν. Εἰπον οὐν αὐτῷ· Ἡμεῖς ἐκ πορνειας οὐ γεγεννημεθα· ἑνα πατερα ἐχομεν, τον Θεον.*

42. *Εἰπεν οὐν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Εἰ ὁ Θεος πατηρ ὑμῶν ἠν, ἠγαπᾶτε ἀν ἐμε· ἐγω γαρ ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐξηλθον και ἡκω· οὐδε γαρ ἀπ' ἐμαυτοῦ ἐληλυθα, ἀλλ' ἐκεῖνος με ἀπεστειλε.*

43. *Διατι την λαλιαν την ἐμην οὐ γινωσκετε; ὁτι οὐ δυνασθε ἀκουειν τον λογον τον ἐμον.*

44. *Ὑμεῖς ἐκ πατρος τοῦ διαβολου ἐστε, και τας ἐπιθυμιας τοῦ πατρος ὑμῶν θελετε ποιεῖν. Ἐκεῖνος ἀνθρωποκτονος ἠν ἀπ' ἀρχῆς, και ἐν τῇ ἀληθειᾳ οὐχ ἑστηκεν, ὁτι οὐκ ἐστιν ἀληθεια ἐν αὐτῷ. Ὁταν λαλῇ το ψεῦδος, ἐκ τῶν ἰδιων λαλεῖ· ὁτι ψευστης ἐστι και ὁ πατηρ αὐτοῦ.*

45. *Ἐγω δε ὁτι την ἀληθειαν λεγω, οὐ πιστευετε μοι.*

46. *Τις ἐξ ὑμῶν ἐλεγχει με περι ἀμαρτιας; Εἰ δε ἀληθειαν λεγω, διατι ὑμεῖς οὐ πιστευετε μοι;*

47. *Ὁ ὠν ἐκ τοῦ Θεοῦ τα ῥηματα τοῦ Θεοῦ ἀκουει· δια τοῦτο ὑμεῖς οὐκ ἀκουετε, ὁτι ἐκ τοῦ Θεοῦ οὐκ ἐστε.*

48. *Ἀπεκριθησαν οὐν οἱ Ἰουδαῖοι, και εἰπον αὐτῷ· Οὐ καλῶς λεγομεν ἡμεῖς, ὁτι Σαμαρειτης εἰ συ, και δαιμονιον ἐχεις;*

49. *Ἀπεκριθη Ἰησοῦς· Ἐγω δαιμονιον οὐκ ἐχω, ἀλλα τιμῶ τον Πατερα μου, και ὑμεῖς ἀτιμαζετε με.*

50. *Ἐγω δε οὐ ζητῶ την δοξαν μου· ἐστιν ὁ ζητῶν και κρινων.*

51. *Ἀμην ἀμην λεγω ὑμῖν, ἐαν τις τον λογον τον ἐμον τηρηση, θανατον οὐ μη θεωρηση εἰς τον αἰῶνα.*

52. *Εἰπον οὐν αὐτῷ οἱ Ἰουδαῖοι· Νῦν ἐγνωκαμεν, ὁτι δαιμονιον ἐχεις. Ἀβρααμ ἀπεθανε και οἱ προφῆται, και συ λεγεις· Ἐαν τις τον λογον μου τηρηση, οὐ μη γευσεται θανατου εἰς τον αἰῶνα.*

locutus sum, quam audivi a Deo; hoc Abraham non fecit.

41. Vos facitis opera patris vestri. Dixerunt itaque ei: Nos ex fornicatione non sumus nati: unum patrem habemus, Deum.

42. Dixit ergo eis Jesus: Si Deus pater vester esset, diligeretis utique me; ego enim ex Deo processi et veni: neque enim a me ipso veni, sed ille me misit.

43. Quare loquelam meam non cognoscitis? Quia non potestis audire sermonem meum.

44. Vos ex patre diabolo estis, et desideria patris vestri vultis facere. Ille homicida erat ab initio, et in veritate non stetit; quia non est veritas in eo: cum loquitur mendacium, ex propriis loquitur, quia mendax est et pater ejus.

45. Ego autem si veritatem dico, non creditis mihi.

46. Quis ex vobis arguet me de peccato? Si veritatem dico vobis, quare non creditis mihi?

47. Qui ex Deo est, verba Dei audit: propterea vos non auditis, quia ex Deo non estis.

48. Responderunt ergo Judaei et dixerunt ei: Nonne bene dicimus nos, quia Samaritanus es tu, et daemonium habes?

49. Respondit Jesus: Ego daemonium non habeo, sed honorifico Patrem meum, et vos inhonorastis me.

50. Ego autem non quaero gloriam meam; est qui quaerat et judicet.

51. Amen amen dico vobis: Si quis sermonem meum servaverit, mortem non videbit in aeternum.

52. Dixerunt ergo Judaei: Nunc cognovimus, quia daemonium habes. Abraham mortuus est, et Prophetae; et tu dicis: Si quis sermonem meum servaverit, non gustabit mortem in aeternum.

слышахъ отъ Бога· сего Авраамъ нѣсть творилъ.

.ма. Вы творите дѣла отьца вашего. Рекоша же ѥмоу: Мы отъ любодѣяния нѣсмъ рождени, мы ѥдиного отьца имамъ, Бога.

.мв. Рече же имъ Іисоусъ: Аще Богъ отьць вашь бы былъ, любили ма бысте· азъ бо отъ Бога изидохъ, и приидохъ· не о себѣ бо приидохъ, нъ тъ ма посъла.

.мг. Но что бесѣды моѥя не разоумѣѥте; Яко не можете слышати словесе моѥго.

.мд. Вы отъ отьца диявола ѥсте и похоти отьца вашего хощете творити. Онъ человѣкооубийца бѣ испрьва, и въ истинѣ не стояше, яко нѣсть истины въ немь· ѥгда глаголѥть лъжѫ, отъ своихъ глаголѥть, яко лъжь ѥсть и отьць ѥго.

.ме. Азъ же, зане истинѫ глаголѭ, не ѥмлѥте вѣры мънѣ.

.мѕ. Къто отъ васъ обличить ма о грѣсѣ; Аще истинѫ глаголѭ вамъ, по что не ѥмлѥте вѣры мънѣ;

.мз. Иже отъ Бога ѥсть, глаголъ Божиихъ послоушаѥть· сего ради вы не послоушаѥте, яко отъ Бога нѣсте.

.ми. Отъвѣщаша же Июдеи и рекоша ѥмоу: Не добрѣ ли глаголѥмъ мы, яко Самарянинъ ѥси ты, и бѣсъ имаши;

.мѳ. Отъвѣща Іисоусъ: Азъ бѣса не имамь, нъ чьтѫ Отьца моѥго и вы не чьтосте мене.

.н. Азъ же не ищѫ славы моѥя· ѥсть ищай и сѫдяй.

.на. Аминь аминь глаголѭ вамъ: Аще къто слово моѥ съблюдеть, съмрьти не имать видѣти въ вѣкъ.

.нв. Рекоша же ѥмоу Июдеи: Нынѣ разоумѣхомъ, яко бѣсъ имаши. Авраамъ оумьрѣтъ, и Пророци· и ты глаголѥши: Яко аще къто слово моѥ съблюдеть, не имать вкоусити съмрьти въ вѣкъ.

53. *Μη συ μειζων εἰ τοῦ πατρος ἡμῶν Ἀβρααμ, ὁστις ἀπεθανε, και οἱ προφῆται ἀπεθανον· τινα σεαυτον συ ποιεις;*

54. *Ἀπεκριθη Ἰησοῦς· Ἐαν ἐγω δοξαζω ἐμαυτον, ἡ δοξα μου οὐδεν ἐστιν· ἐστιν ὁ Πατηρ μου ὁ δοξαζων με, ὁν ὑμεῖς λεγετε, ὁτι Θεος ὑμων ἐστιν,*

55. *και οὐκ ἐγνωκατε αὐτον, ἐγω δε οἰδα αὐτον. Και ἐαν εἰπω, ὁτι οὐκ οἰδα αὐτον, ἐσομαι ὁμοιος ὑμῶν ψευστης· ἀλλ' οἰδα αὐτον, και τον λογον αὐτοῦ τηρῶ.*

56. *Ἀβρααμ ὁ πατηρ ὑμῶν ἠγαλλιασατο, ἱνα ἰδῃ την ἡμεραν την ἐμην· και εἰδε και ἐχαρη.*

57. *Εἰπον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι προς αὐτον· Πεντηκοντα ἐτη οὐπω ἐχεις, και Ἀβρααμ ἑωρακας;*

58. *Εἰπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀμην ἀμην λεγω ὑμῖν· Πριν Ἀβρααμ γενεσθαι, ἐγω εἰμι.*

59. *Ἠραν οὖν λιθους ἱνα βαλωσιν ἐπ' αὐτον· Ἰησοῦς δε ἐκρυβη και ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ ἱεροῦ, διελθων δια μεσου αὐτῶν· και παρῆγεν οὑτως.*

## *Κεφ. IX.*

1. *Και παραγων εἰδεν ἀνθρωπον τυφλον ἐκ γενετῆς.*

2. *Και ἠρωτησαν αὐτον οἱ μαθηται αὐτοῦ, λεγοντες· Ῥαββι, τις ἡμαρτεν, οὑτος ἡ οἱ γονεῖς αὐτοῦ, ἱνα τυφλος γεννηθῇ;*

3. *Ἀπεκριθη ὁ Ἰησοῦς· Οὐτε οὑτος ἡμαρτεν, οὐτε οἱ γονεῖς αὐτοῦ· ἀλλ' ἱνα φανερωθῇ τα ἐργα τοῦ Θεοῦ ἐν αὐτῷ.*

4. *Ἐμε δεῖ ἐργαζεσθαι τα ἐργα τοῦ πεμψαντος με ἑως ἡμερα ἐστιν· ἐρχεται νυξ, ὁτε οὐδεις δυναται ἐργαζεσθαι.*

5. *Ὁταν ἐν τῷ κοσμῳ ὦ, φῶς εἰμι τοῦ κοσμου.*

6. *Ταῦτα εἰπων ἐπτυσε χαμαι, και ἐποιησε πηλον ἐκ τοῦ πτυσματος, και ἐπεχρισε τον πηλον ἐπι τους ὀφθαλμους τοῦ τυφλοῦ,*

53. Numquid tu major es patre nostro Abraham, qui mortuus est? et Prophetae mortui sunt. Quem te ipsum facis?

54. Respondit Jesus: Si ego glorifico me ipsum, gloria mea nihil est; est Pater meus, qui glorificat me, quem vos dicitis, quia Deus vester est,

55. et non cognovistis eum; ego autem novi eum. Et si dixero, quia non scio eum, ero similis vobis mendax; sed scio eum, et sermonem ejus servo.

56. Abraham pater vester exultavit, ut videret diem meum: vidit et gavisus est.

57. Dixerunt ergo Judaei ad eum: Quinquaginta annos nondum habes, et Abraham vidisti?

58. Dicit eis Jesus: Amen amen dico vobis, antequam Abraham fieret, ego sum.

59. Tulerunt ergo lapides, ut jacerent in eum; Jesus autem abscondit se, et exivit de templo.

.мг. Ѥда ты болій ѥси ѿтъца нашего Авраама, иже оумьрѣтъ и Пророци оумьрѣша. Кого сѧ самъ твориши;

.мд. Ѿтъвѣшта Іисоусъ: Аште же азъ славлѭ сѧ самъ, слава моꙗ ничьтоже ѥсть· ѥсть Ѿтьць мой славѧй мѧ, ѥгоже вы глаголѥте, ꙗко Богъ вашь ѥсть,

.ме. и не познасте ѥго· азъ же вѣмь й. И аште рекѫ, ꙗко не вѣмь ѥго, бѫдѫ подобьнъ вамъ лъжь· нъ вѣмь й, и слово ѥго съблюдаѭ.

.мѕ. Авраамъ, ѿтьць вашь, радъ бы былъ, да бы видѣлъ дьнь мой· и видѣ и възрадова сѧ.

.мз. Рекошѧ же Июдеи къ нѥмоу: Пѧтидесѧтъ лѣтъ не оу имаши, и Авраама ли ѥси видѣлъ;

.мн. Рече имъ Іисоусъ: Аминъ, аминъ глаголѭ вамъ; Прѣжде даже не бысть Авраамъ, азъ ѥсмь.

.мѳ. Възѧшѧ же камениѥ, да врьгѫть на нь· Іисоусъ же съкры сѧ и изиде изъ цръкъве.

## Caput IX.

1. Et praeteriens Jesus vidit hominem caecum a nativitate.

2. Et interrogaverunt eum discipuli ejus: Rabbi, quis peccavit, hic, aut parentes ejus, ut caecus nasceretur?

3. Respondit Jesus: Neque hic peccavit, neque parentes ejus; sed ut manifestentur opera Dei in illo.

4. Me oportet operari opera ejus, qui misit me, donec dies est; venit nox, quando nemo potest operari.

5. Quamdiu sum in mundo, lux sum mundi.

6. Haec cum dixisset, exspuit in terram, et fecit lutum ex sputo, et linivit lutum super oculos ejus,

## Глава .ѳ.

.а. И мимоиды Іисоусъ видѣ чловѣка слѣпа ѿть рождьства.

.в. И въпросишѧ й оученици ѥго глаголѭште: Рав'ви, къто съгрѣши, сь ли или родителꙗ ѥго, да слѣпъ роди сѧ;

.г. Ѿтъвѣшта Іисоусъ: Ни сь съгрѣши, ни родителꙗ ѥго· нъ да ꙗвѧть сѧ дѣла Божиꙗ на нѥмь.

.д. Мънѣ подобаѥть дѣлати дѣла посълавъшааго мѧ, доньдеже дьнь ѥсть· пріидеть ношть, ѥгда никътоже не можеть дѣлати.

.є. Ѥгда же въ мирѣ ѥсмь, свѣтъ ѥсмь мироу.

.ѕ. Си рекъ плинѫ на землѭ и сътвори брьниѥ ѿтъ плюновениꙗ, и помаза ѥмоу ѡчи брьниѥмь,

7. και είπεν αύτῷ· Ὕπαγε, νιψαι είς την κολυμβηθραν τοῦ Σιλωαμ (ὁ έρμηνευεται· Ἀπεσταλμενος). Ἀπῆλθεν οὐν και ένιψατο, και ἦλθε βλεπων.

8. Οἱ οὐν γειτονες, και οἱ θεωροῦντες αὐτον το προτερον, ὁτι τυφλος ἦν, έλεγον· Οὐχ οὑτος έστιν ὁ καθημενος και προσαιτῶν;

9. Ἀλλοι έλεγον· Ὁτι οὑτος έστιν· ἀλλοι δε· Ὁτι ὁμοιος αὐτῷ έστιν. Ἐκεινος έλεγεν· Ὁτι έγω είμι.

10. Ἐλεγον οὐν αὐτῷ· Πῶς ἀνεῳχθησαν σου οἱ ὀφθαλμοί;

11. Ἀπεκριθη έκεινος και είπεν· Ἀνθρωπος λεγομενος Ἰησοῦς πηλον έποιησε, και έπεχρισε μου τους ὀφθαλμους, και είπε μοι· Ὕπαγε είς την κολυμβηθραν τοῦ Σιλωαμ, και νιψαι. Ἀπελθων δε και νιψαμενος ἀνεβλεψα.

12. Εἰπον οὐν αὐτῷ· Ποῦ έστιν έκεῖνος; λεγει· Οὐκ οἰδα.

13. Ἀγουσιν αὐτον προς τους Φαρισαιους, τον ποτε τυφλον.

14. Ἦν δε σαββατον, ὁτε τον πηλον έποιησεν ὁ Ἰησοῦς, και ἀνεῳξεν αὐτοῦ τους ὀφθαλμους.

15. Παλιν οὐν ἠρωτων αὐτον και οἱ Φαρισαῖοι, πῶς ἀνεβλεψεν. Ὁ δε είπεν αὐτοῖς· Πηλον έπεθηκεν έπι τους ὀφθαλμους μου, και ένιψαμην και βλεπω.

16. Ἐλεγον οὐν έκ τῶν Φαρισαιων τινες· Οὑτος ὁ ἀνθρωπος οὐκ έστι παρα τοῦ Θεοῦ, ὁτι το σαββατον οὐ τηρεῖ. Ἀλλοι έλεγον· Πῶς δυναται ἀνθρωπος ἁμαρτωλος τοιαῦτα σημεῖα ποιεῖν; Και σχισμα ἦν έν αὐτοῖς.

17. Λεγουσι τῷ τυφλῷ παλιν· Συ τι λεγεις περι αὐτοῦ, ὁτι ἠνοιξε σου τους ὀφθαλμους; Ὁ δε είπεν· Ὁτι προφητης έστιν.

18. Οὐκ έπιστευσαν οὐν οἱ Ἰουδαῖοι περι αὐτοῦ, ὁτι τυφλος ἦν και ἀνεβλεψεν, έως ὁτου έφωνησαν τους γονεῖς αὐτοῦ τοῦ ἀναβλεψαντος,

19. και ἠρωτησαν αὐτους λεγοντες· Οὑτος έστιν ὁ υἱος ὑμῶν, ὁν ὑμεῖς λεγετε, ὁτι τυ-

7. et dixit ei: Vade, lava in natatoria Siloë (quod interpretatur Missus). Abiit ergo et lavit, et venit videns.

.з. и рече ємоу: Иди, оумый сѧ въ кѫпѣли Силоамьстѣ, (єже съказаєть сѧ: Посъланъ). Шьдъ же оумы сѧ и приде видѧ.

8. Itaque vicini, et qui viderant eum prius, quia mendicus erat, dicebant: Nonne hic est, qui sedebat et mendicabat?

.и. Сѫсѣди же и иже й бѣхѫ видѣли прѣжде, ѩко проситель бѣ, глаголаахѫ: Не сь ли єсть сѣдѧй и просѧй;

Alii dicebant: Quia hic est.

Дроугыи же глаголаахѫ: Ѩко сь єсть.

9. Alii autem: Nequaquam, sed similis est ei. Ille vero dicebat: Quia ego sum.

.ѳ. А инии глаголаахѫ: Ни, нъ подобьнъ єсть ємоу. Онъ же глаголааше: Ѩко азъ єсмь.

10. Dicebant ergo ei: Quomodo aperti sunt tibi oculi?

.і. Глаголаахѫ же ємоу: Како ти сѧ отъвръзоста очи;

11. Respondit: Ille homo, qui dicitur Jesus, lutum fecit, et unxit oculos meos, et dixit mihi: Vade ad natatoria Siloë, et lava. Et abii et lavi, et video.

.аі. Отъвѣшта онъ: Човѣкъ нарицаємый Іисоусъ, брѣние сътвори, и помаза очи мои, и рече ми: Иди въ кѫпѣль Силоамлѭ и оумый сѧ· Шьдъ же и оумывъ сѧ прозьрѣхъ.

12. Et dixerunt ei: Ubi est ille? Ait: Nescio.

.ві. Рекоша же ємоу: Къде єсть сь; Глагола: Не вѣмь.

13. Adducunt eum ad Pharisaeos, qui caecus fuerat.

.гі. Ведоша же й къ Фарисеомъ, иже бѣ иногда слѣпъ.

14. Erat autem sabbatum, quando lutum fecit Jesus, et aperuit oculos ejus.

.ді. Бѣ же сѫбота, єгда сътвори брѣние Іисоусъ и отъвръзе ємоу очи.

15. Iterum ergo interrogabant eum Pharisaei, quomodo vidisset. Ille autem dixit eis: Lutum mihi posuit super oculos, et lavi, et video.

.еі. Пакы же въпрашаахѫ й Фарисеи, како прозьрѣ. Онъ же рече имъ: Брѣние положи мънѣ на очи, и оумыхъ сѧ и виждѫ.

16. Dicebant ergo ex Pharisaeis quidam: Non est hic homo a Deo, qui sabbatum non custodit. Alii autem dicebant: Quomodo potest homo peccator haec signa facere? Et schisma erat inter eos.

.ѕі. Глаголаахѫ же єдини отъ Фарисеи: Нѣсть сь човѣкъ отъ Бога, ѩко сѫботы не хранить. Дроузии же глаголаахѫ: Како можеть човѣкъ грѣшьнъ сица знамениѩ творити; И бѣ распьрѩ въ нихъ.

17. Dicunt ergo caeco iterum: Tu quid dicis de illo, qui aperuit oculos tuos? Ille autem dixit: Quia Propheta est!

.зі. Глаголаша же слѣпьцоу пакы: Ты чьто глаголєши о нємь, ѩко отъвръзе очи твои; Онъ же рече: Ѩко Пророкъ єсть.

18. Non crediderunt ergo Judaei de illo, quia caecus fuisset, et vidisset, donec vocaverunt parentes ejus, qui viderat,

.иі. Не ѩша же вѣры Іюдеи о нємь, ѩко бѣ слѣпъ и прозьрѣ, доньдеже възгласиша родителѩ того прозьрѣвъшааго,

19. Et interrogaverunt eos, dicentes: Hic est filius vester, quem vos dicitis,

.ѳі. и въпросиша ѩ, глаголѭште: Сь ли єсть сынъ ваю, єгоже вы глаголєта,

*φλος ἐγεννηθη· πῶς οὐν ἀρτι βλεπει;*

20. *'Απεκριθησαν αὐτοῖς οἱ γονεῖς αὐτοῦ και εἰπον· Οἰδαμεν, ὁτι οὑτος ἐστιν ὁ υἱος ἡμῶν και ὁτι τυφλος ἐγεννηθη·*

21. *πῶς δε νῦν βλεπει, οὐκ οἰδαμεν· ἡ τις ἠνοιξεν αὐτοῦ τους ὀφθαλμους, ἡμεῖς οὐκ οἰδαμεν· αὐτον ἐρωτησατε, ἡλικιαν ἐχει· αὐτος περι ἑαυτοῦ λαλησει.*

22. *Ταῦτα εἰπον οἱ γονεῖς αὐτοῦ, ὁτι ἐφοβοῦντο τους 'Ιουδαιους. 'Ηδη γαρ συνετεθειντο οἱ 'Ιουδαῖοι, ἱνα ἐαν τις αὐτον ὁμολογηση Χριστον, ἀπο συναγωγος γενηται.*

23. *Δια τοῦτο οἱ γονεῖς αὐτοῦ εἰπον· Ὁτι ἡλικιαν ἐχει, αὐτον ἐρωτησατε.*

24. *'Εφωνησαν οὐν ἐκ δευτερου τον ἀνθρωπον ὃς ἠν τυφλος, και εἰπον αὐτῷ· Δος δοξαν τῷ Θεῷ· ἡμεῖς οἰδαμεν, ὁτι ὁ ἀνθρωπος οὑτος ἁμαρτωλος ἐστιν.*

25. *'Απεκριθη οὐν ἐκεῖνος και εἰπεν· Εἰ ἁμαρτωλος ἐστιν, οὐκ οἰδα· ἑν οἰδα, ὁτι τυφλος ὠν ἀρτι βλεπω.*

26. *Εἰπον δε αὐτῷ παλιν· Τι ἐποιησε σοι; πῶς ἠνοιξε σου τους ὀφθαλμους;*

27. *'Απεκριθη αὐτοῖς· Εἰπον ὑμῖν ἠδη, και ἠκουσατε· τι παλιν θελετε ἀκουειν; μη και ὑμεῖς θελετε αὐτοῦ μαθηται γενεσθαι;*

28. *'Ελοιδορησαν οὐν αὐτον και εἰπον· Συ εἰ μαθητης ἐκεινου· ἡμεῖς δε τοῦ Μωσεως ἐσμεν μαθηται.*

29. *'Ημεῖς οἰδαμεν ὁτι Μωσῇ λελαληκεν ὁ Θεος· τοῦτον δε οὐκ οἰδαμεν ποθεν ἐστιν.*

30. *'Απεκριθη ὁ ἀνθρωπος και εἰπεν αὐτοῖς· 'Εν γαρ τουτῳ θαυμαστον ἐστιν, ὁτι ὑμεῖς οὐκ οἰδατε, ποθεν ἐστι, και ἀνεωξε μου τους ὀφθαλμους.*

31. *Οἰδαμεν δε, ὁτι ἁμαρτωλῶν ὁ Θεος οὐκ ἀκουει· ἀλλ' ἐαν τις θεοσεβης ῇ, και το θελημα αὐτοῦ ποιῇ, τουτου ἀκουει.*

32. *'Εκ τοῦ αἰῶνος οὐκ ἠκουσθη, ὁτι ἠνοιξε τις ὀφθαλμους τυφλοῦ γεγεννημενου.*

%Ꮽ+%9Ꮽ3W+, Ꭺ>9 ᏘᏵᎪᏁ6 Ᏼ9Ꮽ8 Ꮨ€· >++9 ᏰᏣ9 Ꮲ6ᎢᏢᎪ Ꮜ8Ꮽ8W6;

.8. ᏫW6ᏌᎪШW+ᏘW3 Ꭲ∰6 Ᏼ9Ꮽ8W3ᏵᎪ 3%9 Ꭲ ᏏᎪᏘW3· ᏌᎪᏌᎪ, Ꭺ>9 Ꮨ6 3ᏘW6 Ꮨ6ᎢᏢ6 Ꮲ+Ꮧ Ꭲ Ꭺ>9 ᏘᏵᎪᏁ6 Ᏼ9Ꮽ8 Ꮨ€·

.8+. >++9 ᏃᏣ Ꮲ6ᎢᏢᎪ Ꮜ8Ꮽ8W6, Ꮲ9 ᏌᎪᏌᎪ· Ꮽ8 >6W9 3∰Ᏸ ᏇW6ᏌᏏ6ᏕᏁ3 Ꮔ48, ᏌᎪ Ꮲ9 ᏌᎪᏌᎪ· Ꮨ+∰9%9 Ꮜ6ᏁᏏ9Ꮨ8W3, Ꮜ6ᏕᏏ+ᏘW6 Ꭲ∰+W6· Ꮨ+∰6 Ꮻ Ꮨ3ᏣᎪ Ꮽ+ %Ꮽ+%9Ꮽ3W6.

.8Ꮳ. Ꮘ8V3 ᏏᎪᏘW3 Ᏼ9Ꮽ8W3ᏵᎪ 3%9 Ꭺ>9 Ꮳ3Ꭺ+Ш3W3 Ꮨ€ ᏃᏢᏵ38. ᏰᏃ3 Ꮳ9 Ꮨ€ ᏣᎪ+Ꮟ9Ꮛ Ꮨ6Ꮽ3Ꮓ8Ꮽ8 ᏃᏢᏵ38, Ꮽ+ +ШW3 >6W9 8 ᎢᏘᏁ9-ᏌᎪᏘW6 ᏏᏏ8ᏘW+, ᏇW6Ꮽ3ᏛᏎ3Ꮲ6 Ꮨ6Ꮲ6∰8ШW+ Ꮳ3ᏛᏵ3W6.

.8Ꮜ. Ꮘ3%9 Ꮟ+Ꮽ8 Ᏼ9Ꮽ8W3ᏵᎪ 3%9 ᏏᎪᏘW3· Ꭺ>9 Ꮜ6ᏕᏏ+ᏘW6 Ꭲ∰+W6, Ꮨ+∰9%9 Ꮜ6ᏁᏏ9-Ꮨ8W3.

.8%. Ꮜ6Ꮥ%Ꮽ+Ꮨ8Ш€ Ꮓ3 Ꮜ6W9Ꮟ8V3Ꮬ€ ᏎᏵ9-ᏌᎪ>+, ᎢᏃ3 ᏣᎪ ᏘᏵᎪᏁ6, Ꭲ ᏏᎪШ€ 3∰Ᏸ· ᏅᏯ+ᏃᏵ6 ᏘᏵ+Ꮜ3Ꮛ Ꮳ9%Ᏸ· ∰6Ꭲ ᏌᎪ∰6, Ꭺ>9 ᏎᏵ9ᏌᎪ>6 Ꮨ6 %ᏏᎪШ6Ꮲ6 3ᏘW6.

.8Ꮽ. ᏫW6ᏌᎪШW+ Ꮓ3 ᏇᏢ6 Ꭲ Ꮟ9Ꮞ3· +ШW3 %ᏏᎪШ6Ꮲ8>6 3ᏘW6, Ꮲ9 ᏌᎪ∰6· 3Ꮽ8Ꮲ9 ᏌᎪ∰6, Ꭺ>9 ᏘᏵᎪᏁ6 ᏣᎪᏏ6, Ꮲ6ᎢᏢᎪ Ꮓ3 Ꮜ8ᏃᏵ3Ꮛ.

.83. ᏏᎪШ€ Ꮓ3 3∰Ᏸ Ꮁ+>6Ꭲ· Ꮚ6W9 Ꮨ6WᏌ9-Ꮟ8 W3ᏣᎪ; >++9 ᏇW6ᏌᏏ6ᏕᏁ3 Ꮔ48 WᏌ98;

.8Ꮓ. ᏫW6ᏌᎪШW+ Ꭲ∰6· ᏏᎪᏏ6 Ꮜ+∰6 ᏰᏃ3, Ꭲ ᏘᏵ6ᎢШ+ᏘW3· Ꮞ6W9 Ꮁ+>6Ꭲ Ꮟ9ШW3W3 ᏘᏵ6ᎢШ+W8; 3Ꮽ+ Ꭲ Ꮜ6Ꭲ Ꮟ9ШW3W3 3%9 ᏰᏎ3Ꮲ8V8 Ꮳ6ᎢW8;

.8Ꮾ. ᏫᏢ8 Ꮓ3 Ᏸ>9Ꮟ8Ш€ 8 Ꭲ ᏏᎪШ€· W6Ꭲ ᏰᏎ3Ꮲ8>6 3Ꮨ8 W9%9· ∰6Ꭲ Ꮓ3 ᏜᏇᏘ99Ꮜ8 3Ꮨ∰6 ᏰᏎ3Ꮲ8V8.

.8Ꮽ. Ꮬ6Ꭲ ᏌᎪ∰6, Ꭺ>9 ᏜᏇᏘ99Ꮜ8 %Ꮽ+-%9Ꮽ+ Ꮳ9%6· Ꮨ3%9 Ꮓ3 Ꮲ9 ᏌᎪ∰6, ᏇW6 >3ᏛᏵᏰ 3ᏘW6.

.Ꮇ. ᏫW6ᏌᎪШW+ ᏎᏵ9ᏌᎪ>6 Ꭲ Ꮟ9Ꮞ3 Ꭲ∰6· Ꮻ Ꮨ3∰6 ᏰᏣ9 Ꮽ8Ꮜ6Ꮲ9 3ᏘW6, Ꭺ>9 Ꮜ6Ꭲ Ꮲ9 ᏌᎪᏘW3, ᏇW6 >3ᏛᏵᏰ 3ᏘW6, Ꭲ ᏇW6ᏌᏏ6ᏕᏁ3 Ꮔ48 ∰98.

.Ꮇ+. ᏌᎪ∰6 Ꮓ3, Ꭺ>9 %ᏏᎪШ6Ꮲ8>6 Ꮳ9%6 Ꮲ9 Ꮁ9ᏘᏵᏰШ+3W6· Ꮲ6 +ШW3 >6W9 Ꮳ9%9-Ꮞ6W6V6 3ᏘW6, Ꭲ Ꮜ9ᏵᏬ€ 3%9 WᏌ9Ꮟ8W6, W9%9 Ꮁ9ᏘᏵᏰШ+3W6.

.ᏇᏣ. ᏫW6 ᏌᎪ>+ ᏢᎪᏘW6 ᏘᏵ6ᎢШ+Ꮲ9, Ꭺ>9 ᏇW6ᏌᏏ6ᏕᏁ3 >6W9 Ꮔ48 ᏘᏵᎪᏁᏰ Ꮟ9ᏃᏵ3ᏢᏰ.

quia caecus natus est: quomodo ergo nunc videt?

ꙗко слѣпъ роди сѧ· како оубо нынѣ видить;

20. Responderunt eis parentes ejus et dixerunt: Scimus, quia hic est filius noster, et quia caecus natus est:

.к. Ѡтъвѣштаста имъ родителꙗ ѥго и рекоста: Вѣвѣ, ꙗко сь ѥсть сынъ наю, и ꙗко слѣпъ роди сѧ·

21. quomodo autem nunc videat, nescimus; aut quis ejus aperuit oculos, nos nescimus; ipsum interrogate: aetatem habet, ipse de se loquatur.

.ка. Како же нынѣ видить, не вѣвѣ· или кто ѥмоу ѡтъвръзе ѡчи, вѣ не вѣвѣ· самого въпросите: възрастъ имать, самъ ѡ себѣ да глаголеть.

22. Haec dixerunt parentes ejus, quoniam timebant Judaeos; jam enim conspiraverant Judaei, ut si quis eum confiteretur esse Christum, extra synagogam fieret.

.кв. Си рекоста родителꙗ ѥго, ꙗко боꙗста сѧ Июдеи· оуже бо бѣхѫ сѧ съложили Июдеи, да аште й кто исповѣсть Христа, ѡтълѫченъ съборишта бѫдеть.

23. Propterea parentes ejus dixerunt: Quia aetatem habet, ipsum interrogate.

.кг. Сего ради родителꙗ ѥго рекоста: Ꙗко възрастъ имать, самого въпросите.

24. Vocaverunt ergo rursum hominem, qui fuerat caecus, et dixerunt ei: Da gloriam Deo. Nos scimus, quia hic homo peccator est.

.кд. Възъваша же второѥ чловѣка, иже бѣ слѣпъ, и рекоша ѥмоу: Даждь славѫ Богоу: мы вѣмъ, ꙗко чловѣкъ сь грѣшьникъ ѥсть.

25. Dixit ergo eis ille: Si peccator est, nescio; unum scio, quia caecus cum essem, modo video.

.ке. Ѡтъвѣшта же ѡнъ: Аште грѣшьникъ ѥсть, не вѣмь· ѥдино вѣмь, ꙗко слѣпъ бѣхъ, нынѣ же виждѫ.

26. Dixerunt ergo illi: Quid fecit tibi? quomodo aperuit tibi oculos?

.кѕ. Рекоша же ѥмоу: Чьто сътвори тебѣ; Како ѡтъвръзе ѡчи твои;

27. Respondit eis: Dixi vobis jam, et audistis; quid iterum vultis audire? Numquid et vos vultis discipuli ejus fieri?

.кз. Ѡтъвѣшта имъ: Рекохъ вамъ оуже, и слышасте· чьто ѥште хоштете слышати; Ѥда и вы хоштете оученици ѥго быти;

28. Maledixerunt ergo ei, et dixerunt: Tu discipulus illius sis; nos autem Moysi disciputi sumus.

.ки. Ѡни же оукориша й и рекоша ѥмоу· Ты оученикъ того бѫди· мы же Моисеови оученици ѥсмъ.

29. Nos scimus, quia Moysi locutus est Deus; hunc autem nescimus, unde sit.

.кѳ. Мы вѣмъ, ꙗко Моисеови глагола Богъ: сего же не вѣмъ, ѡтъ кѫдоу ѥсть.

30. Respondit ille homo, et dixit eis: In hoc enim mirabile est, quia vos nescitis, unde sit, et aperuit meos oculos.

.л. Ѡтъвѣшта чловѣкъ тъ и рече имъ: Ѡ семь бо дивьно ѥсть, ꙗко вы не вѣсте, ѡтъ кѫдоу ѥсть, и ѡтъвръзе ѡчи мои.

31. Scimus autem, quia peccatores Deus non audit; sed si quis Dei cultor est, et voluntatem ejus facit, hunc exaudit.

.ла. Вѣмъ же, ꙗко грѣшьникъ Богъ не послоушаѥть· нъ аште кто богочьтьць ѥсть, и волѭ ѥго творить, того послоушаѥть.

32. A saeculo non est auditum, quia quis aperuit oculos caeci nati:

.лв. Ѡтъ вѣкѧ нѣсть слышано, ꙗко ѡтъвръзе кто ѡчи слѣпоу рожденоу:

33. *Εἰ μη ἡν οὑτος παρα Θεοῦ, οὐκ ἠδυνατο ποιεῖν οὐδεν.*

34. *Ἀπεκριθησαν και εἰπον αὐτῳ· Ἐν ἁμαρτιαις συ ἐγεννηθης ὁλος και συ διδασκεις ἡμᾶς; και ἐξεβαλον αὐτον ἐξω.*

35. *Ἠκουσεν ὁ Ἰησοῦς ὁτι ἐξεβαλον αὐτον ἐξω· και εὑρων αὐτον, εἰπεν αὐτῳ· Συ πιστευεις εἰς τον υἱον τοῦ Θεοῦ;*

36. *Ἀπεκριθη ἐκεῖνος και εἰπε· Τις ἐστι, Κυριε, ἱνα πιστευσω εἰς αὐτον;*

37. *Εἰπε δε αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Και ἑωρακας αὐτον και ὁ λαλῶν μετα σοῦ ἐκεῖνος ἐστιν.*

38. *Ὁ δε ἐφη· Πιστευω, Κυριε· και προςεκυνησεν αὐτῳ.*

39. *Και εἰπεν ὁ Ἰησοῦς· Εἰς κρῖμα ἐγω εἰς τον κοσμον τοῦτον ἠλθον, ἱνα οἱ μη βλεποντες βλεπωσι, και οἱ βλεποντες τυφλοι γενωνται.*

40. *Και ἠκουσαν ἐκ τῶν Φαρισαιων ταῦτα οἱ οντες μετ' αὐτοῦ και εἰπον αὐτῷ· Μη και ἡμεῖς τυφλοι ἐσμεν;*

41. *Εἰπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Εἰ τυφλοι ἠτε, οὐκ ἀν εἰχετε ἁμαρτιαν· νῦν δε λεγετε· Ὁτι βλεπομεν· ἡ οὐν ἁμαρτια ὑμῶν μενει.*

## Κεφ. Χ.

1. *Ἀμην ἀμην λεγω ὑμῖν· Ὁ μη εἰςερχομενος δια της θυρας εἰς την αὐλην τῶν προβατων, ἀλλα ἀναβαινων ἀλλαχοθεν, ἐκεῖνος κλεπτης ἐστι και λῃστης.*

2. *Ὁ δε εἰςερχομενος δια τῆς θυρας ποιμην ἐστι τῶν προβατων.*

3. *Τουτῳ ὁ θυρωρος ἀνοιγει, και τα προβατα τῆς φωνῆς αὐτοῦ ἀκουει, και τα ἰδια προβατα καλεῖ κατ' ὀνομα, και ἐξαγει αὐτα.*

4. *Και ὁταν τα ἰδια προβατα ἐκβαλῃ, ἐμπροσθεν αὐτῶν πορευεται· και τα προβατα αὐτῷ ἀκολουθεῖ, ὁτι οἰδασι την φωνῆν αὐτοῦ.*

5. *Ἀλλοτριῳ δε οὐ μη ἀκολουθησωσιν, ἀλλα φευξονται ἀπ' αὐτοῦ· ὁτι οὐκ οἰδασι τῶν αλλοτριων την φωνην.*

6. *Ταυτην την παροιμιαν εἰπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησους· ἐκεῖνοι δε οὐκ ἐγνωσαν τινα ἠν ἁ ἐλαλει αυτοῖς.*

33. nisi esset hic a Deo, non poterat facere quidquam.

34. Responderunt et dixerunt ei: In peccatis natus es totus, et tu doces nos? Et ejecerunt eum foras.

35. Audivit Jesus, quia ejecerunt eum foras; et cum invenisset eum, dixit ei: Tu credis in Filium Dei?

36. Respondit ille et dixit: Quis est, Domine, ut credam in eum?

37. Et dixit ei Jesus: Et vidisti eum, et qui loquitur tecum, ipse est.

38. At ille ait: Credo, Domine! et procidens adoravit eum.

39. Et dixit Jesus: In judicium ego in hunc mundum veni, ut qui non vident, videant; et qui vident, caeci fiant.

40. Et audierunt quidam ex Pharisaeis, qui cum ipso erant, et dixerunt ei: Numquid et nos caeci sumus?

41. Dixit eis Jesus: Si caeci essetis, non haberetis peccatum; nunc vero dicitis: Quia videmus: peccatum vestrum manet.

.лг. аште сь не бы ѡтъ Бога былъ, не моглъ бы творити ничьсоже.

.лд. Ѡтъвѣшташа и рекоша юмоу: Бъ грѣсѣхъ родилъ сѧ юси вьсь, и ты ли нъи оучиши; и изгънаша й вънъ.

.лє. Слыша же Іисоусъ, юко изгънаша й вънъ, и ѡбрѣтъ й рече юмоу: Ты вѣроуюши ли въ Сынъ Божій;

.лѕ. Ѡтъвѣшта ѡнъ и рече: Къто юсть, Господи, да вѣроуѭ въ нь;

.лз. Рече же юмоу Іисоусъ: И видѣлъ й юси, и глаголѭй съ тобоѭ, тъ юсть.

.ли. Ѡнъ же рече: Вѣроуѭ, Господи! и поклони сѧ юмоу.

.лѳ. И рече Іисоусъ: На сѫдъ азъ въ миръ сь пріидохъ, да не видѧштеи видѧть, и видѧштеи слѣпи бѫдѫть.

.м. Слышаша же се ютери ѡтъ Фарисеи сѫштіихъ съ нимь и рекоша юмоу: Юда и мы слѣпи юсмъ;

.ма. Рече имъ Іисоусъ: Аште бысте слѣпи были, не бысте имѣли грѣха· нынѣ же глаголюте, юко видимъ· и грѣхъ вашь прѣбываютъ.

## Caput X.

1. Amen, amen dico vobis: Qui non intrat per ostium in ovile ovium, sed ascendit aliunde, ille fur est et latro.

2. Qui autem intrat per ostium, pastor est ovium.

3. Huic ostiarius aperit et oves vocem ejus audiunt, et proprias oves vocat nominatim, et educit eas.

4. Et cum proprias oves emiserit, ante eas vadit; et oves illum sequuntur, quia sciunt vocem ejus.

5. Alienum autem non sequuntur, sed fugiunt ab eo; quia non noverunt vocem alienorum.

6. Hoc proverbium dixit eis Jesus; illi autem non cognoverunt, quid loqueretur eis.

## Глава .і.

.а. Аминъ, аминъ глаголѭ вамъ: Не въходѧй двьрьми въ дворъ ѡвьчій, нъ прѣлазѧй инѫдоу, тать юсть и разбойникъ.

.в. а въходѧй двьрьми, пастырь юсть ѡвьцамъ.

.г. Семоу вратарь ѡтъврьзаютъ и ѡвьцѧ гласъ юго слышать, и своѩ ѡвьцѧ глашаютъ по имени, и изводить ѩ.

.д. И югда своѩ ѡвьцѧ изведеть, прѣдъ ними ходить· и ѡвьцѧ по нюмь идѫть, юко вѣдѧть гласъ юго.

.є. По штоуждемь же не идѫть, нъ бѣжѧть ѡтъ нюго· юко не знаѭть гласа штоуждіихъ.

.ѕ. Сиѭ притъчѫ рече имъ Іисоусъ· ѡни же не разоумѣша, чьто глаголааше имъ.

7. *Εἰπεν οὐν παλιν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀμην ἀμην λεγω ὑμῖν, ὁτι ἐγω εἰμι ἡ θυρα τῶν προβατων.*

8. *Παντες ὁσοι προ ἐμοῦ ἠλθον, κλεπται εἰσι και λησται· ἀλλ' οὐκ ἠκουσαν αὐτῶν τα προβατα.*

9. *Ἐγω εἰμι ἡ θυρα· δι' ἐμοῦ ἐαν τις εἰσελθῃ, σωθησεται, και εἰςελευσεται και ἐξελευσεται, και νομην εὑρησει.*

10. *Ὁ κλεπτης οὐκ ἐρχεται, εἰ μη ἱνα κλεψῃ και θυσῃ και ἀπολεσῃ· ἐγω ἠλθον, ἱνα ζωην ἐχωσι και περισσον ἐχωσιν.*

11. *Ἐγω εἰμι ὁ ποιμην ὁ καλος. Ὁ ποιμην ὁ καλος την ψυχην αὐτοῦ τιθησιν ὑπερ τῶν προβατων.*

12. *Ὁ μισθωτος δε, και οὐκ ὠν ποιμην, οὑ οὐκ εἰσι τα προβατα ἰδια, θεωρεῖ τον λυκον ἐρχομενον, και ἀφιησι τα προβατα, και φευγει· και ὁ λυκος ἁρπαζει αὐτα, και σκορπιζει τα προβατα.*

13. *Ὁ δε μισθωτος φευγει, ὁτι μισθωτος ἐστι, και οὐ μελει αὐτῷ περι των προβατων.*

14. *Ἐγω εἰμι ὁ ποιμην ὁ καλος· και γινωσκω τα ἐμα, και γινωσκουσι με τα ἐμα.*

15. *Καθως γινωσκει με ὁ Πατηρ, κἀγω γινωσκω τον Πατερα· και την ψυχην μου τιθημι ὑπερ τῶν προβατων.*

16. *Και ἀλλα προβατα ἐχω, ἁ οὐκ ἐστιν ἐκ τῆς αὐλῆς ταυτης· κἀκεῖνα με δεῖ ἀγαγεῖν, και τῆς φωνῆς μου ἀκουσουσι· και γενησεται μια ποιμνη, εἱς ποιμην.*

17. *Δια τοῦτο ὁ Πατηρ με ἀγαπᾷ, ὁτι ἐγω τιθημι την ψυχην μου, ἱνα παλιν λαβω αὐτην.*

18. *Οὐδεις αἰρει αὐτην ἀπ' ἐμοῦ, ἀλλ' ἐγω τιθημι αὐτην ἀπ' ἐμαυτοῦ. Ἐξουσιαν ἐχω θεῖναι αὐτην, και ἐξουσιαν ἐχω παλιν λαβεῖν αὐτην. Ταυτην την ἐντολην ἐλαβον παρα τοῦ Πατρος μου.*

19. *Σχισμα οὐν παλιν ἐγενετο ἐν τοῖς Ἰουδαιοις δια τους λογους τουτους.*

20. *Ἐλεγον δε πολλοι ἐξ αὐτῶν· Δαιμονιον ἐχει και μαινεται· τι αὐτοῦ ἀκουετε;*

7. Dixit ergo eis iterum Jesus: Amen, amen dico vobis: Quia ego sum ostium ovium.

8. Omnes, quotquot venerunt, fures sunt et latrones, et non audierunt eos oves.

9. Ego sum ostium! per me si quis introierit, salvabitur; et ingredietur et egredietur, et pascua inveniet.

10. Fur non venit, nisi ut furetur, et mactet et perdat; ego veni, ut vitam habeant et abundantius habeant.

11. Ego sum pastor bonus! Bonus pastor animam suam dat pro ovibus suis;

12. mercenarius autem, et qui non est pastor, cujus non sunt oves propriae, videt lupum venientem et dimittit oves, et fugit; et lupus rapit et dispergit oves;

13. mercenarius autem fugit, quia mercenarius est, et non pertinet ad eum de ovibus.

14. Ego sum pastor bonus; et cognosco meas, et cognoscunt me meae.

15. Sicut novit me Pater, et ego agnosco Patrem; et animam meam pono pro ovibus meis.

16. Et alias oves habeo, quae non sunt ex hoc ovili; et illas oportet me adducere, et vocem meam audient, et fiet unum ovile et unus pastor.

17. Propterea me diligit Pater, quia ego pono animam meam, ut iterum sumam eam.

18. Nemo tollit eam a me; sed ego pono eam a me ipso, et potestatem habeo ponendi eam, et potestatem habeo iterum sumendi eam; hoc mandatum accepi a Patre meo.

19. Dissensio iterum facta est inter Judaeos propter sermones hos.

20. Dicebant autem multi ex ipsis: Daemonium habet et insanit! quid eum auditis?

.з. Рече же имъ пакы Інсоусъ: Аминь, аминь глаголѭ вамъ: Ꙗко азъ ѥсмь дверь ѡвьцамъ.

.и. Вьси, ѥлико ихъ пріиде прѣжде мене, татиѥ сѫть и разбойници, и не послоушаша ихъ ѡвьцѧ.

.ѳ. Азъ ѥсмь дверь· мъноѭ аште къто вънидеть, съпасеть сѧ· и вънидеть, и изидеть и пажить ѡбраштеть.

.і. Тать не приходить, нъ да оукрадеть и оубиѥть и погоубить· азъ же пріидохъ, да животь имѫть и лише имѫть.

.аі. Азъ ѥсмь пастырь добрый. Добрый пастырь доушѫ своѭ полагаѥть за ѡвьцѧ своѩ.

.ві. а наимьникъ, и иже нѣсть пастырь, ѥмоуже не сѫть ѡвьцѧ своѩ, видить влька градѫшта, и ѡставлѩѥть ѡвьцѧ и бѣгаѥть· и влькъ расхытить и распѫдить ѡвьцѧ.

.гі. а наимьникъ бѣжить, ꙗко наимьникъ ѥсть, и не брѣжеть ѡ ѡвьцахъ.

.ді. Азъ ѥсмь пастырь добрый· и знаѭ моѩ и знаѭть мѧ моѩ.

.єі. Ꙗкоже знаѥть мѧ Ѡтьць, и азъ знаѭ Ѡтьца, и доушѫ моѭ полагаѭ за ѡвьцѧ моѩ.

.ѕі. И инъи ѡвьцѧ имамь, ꙗже не сѫть ѡтъ двора сего· и тъи ми подобаѥть привести, и гласъ мой оуслышать, и бѫдеть ѥдино стадо и ѥдинъ пастырь.

.зі. Сего ради любить мѧ Ѡтьць, ꙗко азъ полагаѭ доушѫ моѭ, да пакы пріимѫ ѭ.

.иі. Никътоже не възьметь ѥѩ ѡтъ мене· нъ азъ полагаѭ ѭ ѡ себѣ, и ѡбласть имамь положити ѭ, и ѡбласть имамь пакы приѩти ѭ· сиѭ заповѣдь приѩхъ ѡтъ Ѡтьца моѥго.

.ѳі. Распьрѧ же пакы бысть въ Иоудеихъ за словеса си.

.к. Глаголаахѫ же мънози ѡтъ нихъ: Бѣсъ имать и неистовъ ѥсть· чьто ѥго послоушаѥте;

21. *Ἀλλοι ἐλεγον· Ταῦτα τα ῥηματα οὐκ ἐστι δαιμονιζομενου· μη δαιμονιον δυναται τυφλῶν ὀφθαλμους ἀνοιγειν;*

22. *Ἐγενετο δε τοτε τα ἐγκαινια ἐν τοῖς Ἱεροσολυμοις και χειμῶν ἡν.*

23. *Και περιεπατει ὁ Ἰησοῦς ἐν τῷ ἱερῷ ἐν τῇ στοᾷ τοῦ Σολομῶντος.*

24. *Ἐκυκλωσαν οὐν αὐτον οἱ Ἰουδαῖοι, και ἐλεγον αὐτῷ· Ἑως ποτε την ψυχην ἡμῶν αἰρεις; Εἰ συ εἶ ὁ Χριστος, εἰπε ἡμῖν παῤῥησιᾳ.*

25. *Ἀπεκριθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Εἰπον ὑμῖν, και οὐ πιστευετε. Τα ἐργα, ἁ ἐγω ποιῶ ἐν τῷ ὀνοματι τοῦ Πατρος μου, ταῦτα μαρτυρεῖ περι ἐμοῦ.*

26. *Ἀλλ' ὑμεῖς οὐ πιστευετε· οὐ γαρ ἐστε ἐκ τῶν προβατων τῶν ἐμῶν, καθως εἰπον ὑμῖν.*

27. *Τα προβατα τα ἐμα τῆς φωνῆς μου ἀκουει, κἀγω γινωσκω αὐτα και ἀκολουθουσι μοι,*

28. *κἀγω ζωην αἰωνιον διδωμι αὐτοῖς· και οὐ μη ἀπολωνται εἰς τον αἰῶνα, και οὐχ ἁρπασει τις αὐτα ἐκ τῆς χειρος μου.*

29. *Ὁ Πατηρ μου, ὁς δεδωκε μοι, μειζων παντων ἐστι· και οὐδεις δυναται ἁρπαζειν ἐκ τῆς χειρος τοῦ Πατρος μου.*

30. *Ἐγω και ὁ Πατηρ ἑν ἐσμεν.*

31. *Ἐβαστασαν οὐν παλιν λιθους οἱ Ἰουδαῖοι, ἱνα λιθασωσιν αὐτον.*

32. *Ἀπεκριθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Πολλα καλα ἐργα ἐδειξα ὑμῖν ἐκ τοῦ Πατρος μου· δια ποῖον αὐτῶν ἐργον λιθαζετε με;*

33. *Ἀπεκριθησαν αὐτῷ οἱ Ἰουδαῖοι λεγοντες· Περι καλοῦ ἐργου οὐ λιθαζομεν σε, ἀλλα περι βλασφημιας, και ὁτι συ ἀνθρωπος ὢν ποιεῖς σεαυτον Θεον.*

34. *Ἀπεκριθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Οὐκ ἐστι γεγραμμενον ἐν τῷ νομῳ ὑμων· Ὁτι Ἐγω εἰπα, θεοι ἐστε;*

35. *Εἰ ἐκεινους εἰπε θεους, προς οὓς ὁ λογος τοῦ Θεοῦ ἐγενετο, (και οὐ δυναται λυθῆναι ἡ γραφη·)*

21. Alii dicebant: Haec verba non sunt daemonium habentis! numquid daemonium potest caecorum oculos aperire?

.ка. Нии глаголаахѫ: Си глаголи не сѫть бѣсьноуѭштаато са· єда бѣсъ можеть слѣпомъ ѡчи ѡтъврѣсти;

22. Facta sunt autem Encaenia in Hierosolymis, et hiems erat.

.кв. Быша же тъгда Скаштения въ Иєроусолумѣхъ, и ʒима бѣ.

23. Et ambulabat Jesus in templo, in porticu Salomonis.

.кг. И хождааше Інсоусъ въ цръкъви, въ притворѣ Соломоуни.

24. Circumdederunt ergo eum Judaei, et dicebant ei: Quousque animam nostram tollis? Si tu es Christus, dic nobis palam.

.кд. Ѡбидоша же й Июдеи и глаголаахѫ ємоу: До колѣ доуша наша въʒемлєши; Аште ты єси Христосъ, рьци намъ не ѡбиноуѩ са.

25. Respondit eis Jesus: Loquor vobis, et non creditis. Opera, quae ego facio in nomine Patris mei, haec testimonium perhibent de me:

.ке. Ѡтъвѣшта имъ Інсоусъ: Глаголѭ вамъ, и не вѣроуєте. Дѣла, яже азъ творѭ въ имѧ Ѡтьца моєго, та съвѣдѣтельствоуѭть ѡ мънѣ·

26. sed vos non creditis, quia non estis ex ovibus meis.

.кѕ. нъ вы не вѣроуєте· яко нѣсте ѡтъ ѡвьць моихъ.

27. Oves meae vocem meam audiunt, et ego cognosco eas, et sequuntur me;

.кʒ. Ѡвьца моѩ гласа моєго послоушаѭть, и азъ ʒнаѭ ѩ, и по мънѣ идѫть·

28. et ego vitam aeternam do eis; et non peribunt in aeternum, et non rapiet eas quisquam de manu mea.

.ки. и азъ животъ вѣчьный даѭ имъ· и не погыбнѫть въ вѣкъ, и не въсхытить ихъ никътоже ѡтъ рѫкы моєѩ.

29. Pater meus, quod dedit mihi, majus omnibus est; et nemo potest rapere de manu Patris mei.

.кѳ. Ѡтьць мой, єже дастъ мънѣ, болє вьсего єсть, и никътоже не можеть въсхытити ѡтъ рѫкы Ѡтьца моєго.

30. Ego et Pater unum sumus.

.л. Азъ и Ѡтьць єдино єсвѣ.

31. Sustulerunt ergo lapides Judaei, ut lapidarent eum.

.ла. Въʒаша же камениє Июдеи, да й побиѭть.

32. Respondit eis Jesus: Multa bona opera ostendi vobis ex Patre meo, propter quod eorum opus me lapidatis?

.лв. Ѡтъвѣшта имъ Інсоусъ: Мънога дѣла добра ѩвихъ вамъ ѡтъ Ѡтьца моєго, ʒа коє ихъ (дѣло) камениє на мѧ мештете;

33. Responderunt ei Judaei: De bono opere non lapidamus te, sed de blasphemia; et quia tu, homo cum sis, facis te ipsum Deum.

.лг. Ѡтъвѣшташа ємоу Июдеи, глаголѭште: Ѡ добрѣ дѣлѣ каменима не мештемъ на тѧ, нъ ѡ власфимии, яко ты чловѣкъ сы твориши са самъ Богъ.

34. Respondit eis Jesus: Nonne scriptum est in lege vestra: »quia Ego dixi, dii estis«?

.лд. Ѡтъвѣшта имъ Інсоусъ: Нѣсть ли писано въ ʒаконѣ вашемь: яко азъ рекохъ, боѕи єсте;

35. Si illos dixit deos, ad quos sermo Dei factus est, et non potest solvi Scriptura:

.ле. Аште ѡнъи нарече богъи, къ нимъже бысть слово Божиє, и не могѫть раʒорити са Кънигы·

36. ὄν ὁ Πατηρ ἡγιασε και ἀπεστειλεν εἰς τον κοσμον, ὑμεῖς λεγετε· Ὅτι βλασφημεῖς, ὅτι εἶπον· Υἱος τοῦ Θεοῦ εἰμι;

37. Εἰ οὐ ποιῶ τα ἐργα του Πατρος μου, μη πιστευετε μοι·

38. εἰ δε ποιῶ, κἀν ἐμοι μη πιστευητε, τοῖς ἐργοις πιστευσατε· ἱνα γνῶτε και πιστευσητε, ὅτι ἐν ἐμοι ὁ Πατηρ, κἀγω ἐν αὐτῷ.

39. Ἐζητουν οὖν παλιν αὐτον πιασαι· και ἐξῆλθεν ἐκ τῆς χειρος αὐτῶν.

40. Και ἀπῆλθε παλιν περαν τοῦ Ἰορδανου, εἰς τον τοπον, ὅπου ἦν Ἰωαννης το πρῶτον βαπτιζων· και ἐμεινεν ἐκεῖ.

41. Και πολλοι ἦλθον προς αὐτον, και ἐλεγον· Ὅτι Ἰωαννης μεν σημεῖον ἐποιησεν οὐδεν· παντα δε ὅσα εἶπεν Ἰωαννης περι τουτου, ἀληθῆ ἦν.

42. Και ἐπιστευσαν πολλοι ἐκεῖ εἰς αὐτον.

## Κεφ. XI.

1. Ἦν δε τις ἀσθενῶν Λαζαρος ἀπο Βηθανιας, ἐκ τῆς κωμης Μαριας και Μαρθας τῆς ἀδελφῆς αὐτῆς.

2. Ἦν δε Μαρια ἡ ἀλειψασα τον Κυριον μυρῳ, και ἐκμαξασα τους ποδας αὐτοῦ ταῖς θριξιν αὐτῆς, ἧς ὁ ἀδελφος Λαζαρος ἠσθενει.

3. Ἀπεστειλαν οὖν αἱ ἀδελφαι προς αὐτον, λεγουσαι· Κυριε, ἰδε, ὃν φιλεῖς, ἀσθενεῖ.

4. Ἀκουσας δε ὁ Ἰησοῦς εἶπεν· Αὑτη ἡ ἀσθενεια οὐκ ἐστι προς θανατον, ἀλλ' ὑπερ τῆς δοξης τοῦ Θεοῦ, ἱνα δοξασθῇ ὁ υἱος τοῦ Θεοῦ δι' αὐτῆς.

5. Ἠγαπα δε ὁ Ἰησοῦς την Μαρθαν και την ἀδελφην αὐτῆς και τον Λαζαρον.

6. Ὡς οὖν ἠκουσεν, ὅτι ἀσθενεῖ, τοτε μεν ἐμεινεν ἐν ᾧ ἦν τοπῳ δυο ἡμερας.

7. Ἐπειτα μετα τοῦτο λεγει τοῖς μαθηταῖς· Ἀγωμεν εἰς την Ἰουδαιαν παλιν.

36. quem Pater sanctificavit et misit in mundum, vos dicitis: Quia blasphemas, quia dixi: Filius Dei sum!

.лѕ. ѥгоже Ѿтьць свати и посъла въ вьсь миръ, вы глаголѥте, ꙗко власфимисаѥши, ꙁанѥ рекохъ: Сынъ Божій ѥсмь.

37. Si non facio opera Patris mei, nolite credere mihi;

.лꙁ. Аште не творѭ дѣлъ Ѿтьцꙗ моѥго, не имѣте ми вѣры·

38. si autem facio: etsi mihi non vultis credere, operibus credite; ut cognoscatis et credatis, quia Pater in me est, et ego in Patre.

.ли. аште ли же творѭ· аште и мънѣ вѣры не ѥмлѥте, дѣломъ моимъ вѣрѫ имѣте, да раꙁоумѣѥте и вѣроуѥте, ꙗко въ мънѣ Ѿтьць, и азъ въ Ѿтьци.

39. Quaerebant ergo eum apprehendere: et exivit de manibus eorum.

.лѳ. Искаахѫ же ѥго пакы ꙗти· и иꙁиде ѿтъ рѫкоу ихъ.

40. Et abiit iterum trans Jordanem, in eum locum, ubi erat Joannes baptizans primum et mansit illic.

.м. И иде пакы на онъ полъ Иорьданꙗ, на мѣсто, идеже бѣ Иоанъ прѣжде крьста и прѣбыстъ тоу.

41. Et multi venerunt ad eum et dicebant: Quia Joannes quidem signum fecit nullum:

.ма. И мъноꙁи приидоша къ нѥмоу и глаголаахѫ: Ꙗко Иоанъ оубо ꙁнамениꙗ не сътвори ни ѥдиногоже·

42. omnia autem, quaecumque dixit Joannes de hoc, vera erant. Et multi crediderunt in eum.

.мв. а вьсе, ѥлико рече Иоанъ ѡ семь, истина бѣ. И мъноꙁи вѣроваша въ нѥго.

## Cap. XI.

## Глава .аі.

1. Erat autem quidam languens Lazarus a Bethania, de castello Mariae et Marthae sororis ejus.

.а. Бѣ же ѥдинъ болꙗ Лаꙁарь ѿтъ Виѳаниꙗ, градьца Маріина и Марѳы, сестры ѥꙗ.

2. (Maria autem erat, quae unxit Dominum unguento, et extersit pedes ejus capillis suis, cujus frater Lazarus infirmabatur.)

.в. (Бѣ же Мариꙗ помаꙁавъшиꙗ Господа мѵръмь, и ѿтьръши ноꙁѣ ѥго власы своими, ѥꙗже братъ Лаꙁарь болѣаше.)

3. Miserunt ergo sorores ejus ad eum, dicentes: Domine, ecce, quem amas, infirmatur.

.г. Посъластѣ же сестрѣ ѥго къ нѥмоу, глаголѭшти: Господи, се, ѥгоже любиши, болить.

4. Audiens autem Jesus dixit eis: Infirmitas haec non est ad mortem, sed pro gloria Dei, ut glorificetur Filius Dei per eam.

д. Слышавъ же Иисоусъ, рече имъ: Си болѣꙁнь нѣсть къ съмръти, нъ къ славѣ Божіи, да прославить сѧ Сынъ Божій ѥѭ.

5. Diligebat autem Jesus Martham, et sororem ejus Mariam et Lazarum.

.є. Люблѣаше же Іисоусъ Марѳѫ и сестрѫ ѥꙗ Мариѭ и Лаꙁара.

6. Ut ergo audivit, quia infirmabatur, tunc quidem mansit in eodem loco duobus diebus.

.ѕ. Ѥгда же слыша, ꙗко болить, тъгда (оубо) прѣбыстъ, на нѥмьже бѣ мѣстѣ, дъва дьни.

7. Deinde post haec dixit discipulis suis: Eamus in Judaeam iterum!

.ꙁ. По томь же глагола оученикомъ своимъ: Идѣмъ въ Июдеѭ пакы.

8. *Λεγουσιν αὐτῷ οἱ μαθηται· Ῥαββι, νῦν ἐζητουν σε λιθασαι οἱ Ἰουδαῖοι, και παλιν ὑπαγεις ἐκεῖ;*

[illegible]

9. *Ἀπεκριθη ὁ Ἰησοῦς· Οὐχι δωδεκα εἰσιν ὡραι τῆς ἡμερας; ἐαν τις περιπατῇ ἐν τῇ ἡμερα, οὐ προσκοπτει, ὁτι το φῶς τοῦ κοσμου τουτου βλεπει·*

[illegible]

10. *ἐαν δε τις περιπατῇ ἐν τῇ νυκτι προσκοπτει, ὁτι το φῶς οὐκ ἐστιν ἐν αὐτῷ.*

[illegible]

11. *Ταῦτα εἰπε, και μετα τοῦτο λεγει αὐτοῖς· Λαζαρος ὁ φιλος ἡμῶν κεκοιμηται· ἀλλα πορευομαι, ἱνα ἐξυπνισω αὐτον.*

[illegible]

12. *Εἰπον οὐν οἱ μαθηται αὐτοῦ· Κυριε, εἰ κεκοιμηται, σωθησεται.*

[illegible]

13. *Εἰρηκει δε ὁ Ἰησοῦς περι τοῦ θανατου αὐτοῦ· ἐκεῖνοι δε ἐδοξαν, ὁτι περι τῆς κοιμησεως τοῦ ὑπνου λεγει.*

[illegible]

14. *Τοτε οὐν εἰπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς παῤῥησια· Λαζαρος ἀπεθανε·*

[illegible]

15. *και χαιρω δι' ὑμᾶς, ἱνα πιστευσητε, ὁτι οὐκ ἡμην ἐκεῖ· ἀλλ' ἀγωμεν προς αὐτον.*

[illegible]

16. *Εἰπεν οὐν Θωμᾶς (ὁ λεγομενος Διδυμος) τοῖς συμμαθηταῖς· Ἀγωμεν και ἡμεῖς, ἱνα ἀποθανωμεν μετ' αὐτοῦ.*

[illegible]

17. *Ἐλθων οὐν ὁ Ἰησοῦς εὑρεν αὐτον τεσσαρας ἡμερας ἠδη ἐχοντα ἐν τῷ μνημειῳ.*

[illegible]

18. *Ἠν δε ἡ Βηθανια ἐγγυς τῶν Ἱεροσολυμων ὡς ἀπο σταδιων δεκαπεντε·*

[illegible]

19. *και πολλοι ἐκ τῶν Ἰουδαιων ἐληλυθεισαν προς τας (περι) Μαρθαν και Μαριαν, ἱνα παραμυθησωνται αὐτας περι τοῦ ἀδελφοῦ αὐτῶν.*

[illegible]

20. *Ἡ οὐν Μαρθα ὡς ἠκουσεν ὁτι ὁ Ἰησοῦς ἐρχεται, ὑπηντησεν αὐτῷ· Μαρια δε ἐν τῷ οἰκῳ ἐκαθεζετο.*

[illegible]

21. *Εἰπεν οὐν ἡ Μαρθα προς τον Ἰησοῦν· Κυριε, εἰ ἦς ὡδε, ὁ ἀδελφος μου οὐκ ἀν ἐτεθνηκει.*

[illegible]

22. *Ἀλλα και νῦν οἰδα, ὁτι ὁσα ἀν αἰτηση τον Θεον, δωσει σοι ὁ Θεος.*

[illegible]

23. *Λεγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Ἀναστησεται ὁ ἀδελφος σου.*

[illegible]

8. Dicunt ei discipuli: Rabbi, nunc quaerebant te Judaei lapidare, et iterum vadis illuc?

.и. Глаголаша ѥмоу оученици: Рав'ви, нынѣ искахѫ тебе камениѥмь побити Июдеи, и пакы ли идеши тамо;

9. Respondit Jesus: Nonne duodecim sunt horae diei? Si quis ambulaverit in die, non offendit, quia lucem hujus mundi videt;

.ѳ. Отвѣшта Іисоусъ: Не дъвѣ ли на десѧте годинѣ ѥстѣ въ дьни; Аште къто ходить въ дьне, не потъкнеть сѧ, ꙗко свѣтъ мира сего видить:

10. si autem ambulaverit in nocte, offendit, quia lux non est in eo.

.і. аште ли же ходить ноштиѭ, потъкнеть сѧ, ꙗко свѣта нѣсть въ нѥмь.

11. Haec ait et post haec dixit eis: Lazarus, amicus noster dormit; sed vado, ut a somno excitem eum.

.аі. Сице рече, и по семь глагола имъ: Лазарь, дроугъ нашь, оусъпе· нъ идѫ, да възбѫждѫ и҆.

12. Dixerunt ergo discipuli ejus: Domine, si dormit, salvus erit.

.ві. Рекошѧ же оученици ѥго: Господи, аште оусъпе, съпасенъ бѫдеть.

13. Dixerat autem Jesus de morte ejus; illi autem putaverunt, quia de dormitione somni diceret.

.гі. Рече же Іисоусъ о съмръти ѥго, они же мьнѣшѧ, ꙗко о оусъпении съноу глаголѥть.

14. Tunc ergo dixit eis Jesus manifeste: Lazarus mortuus est!

.ді. Тъгда же рече имъ Іисоусъ не обиноуѩ сѧ: Лазарь оумьрѣть.

15. Et gaudeo propter vos, ut credatis, quoniam non eram ibi. Sed eamus ad eum!

.еі. И радоуѭ сѧ васъ ради, да вѣрѫ имете, ꙗко не бѣхъ тоу· нъ идѣмъ къ нѥмоу.

16. Dixit ergo Thomas, qui dicitur Didymus, ad condiscipulos: Eamus et nos, ut moriamur cum eo.

.ѕі. Рече же Ѳома, нарицаѥмый Близньць, къ съоученикомъ: Идѣмъ и мы, да оумьремъ съ нимь.

17. Venit itaque Jesus: et invenit eum quatuor dies jam in monumento habentem.

.зі. Пришьдъ же Іисоусъ въ Виѳаниѭ обрѣте и҆ четыри дьни оуже имѫшта въ гробѣ.

18. (Erat autem Bethania juxta Hierosolymam quasi stadiis quindecim.)

.иі. (Бѣ же Виѳаниꙗ близъ Иѥроусалима ꙗко пѧть на десѧте попьришть.)

19. Multi autem ex Judaeis venerant ad Martham et Mariam, ut consolarentur eas de fratre suo.

.ѳі. Мънози же отъ Июдеи бѣахѫ пришьли къ Марѳѣ и Марии, да оутѣшать и о братѣ ѥю.

20. Martha ergo, ut audivit, quia Jesus venit, occurrit illi: Maria autem domi sedebat.

.к. Марѳа же, ѥгда оуслыша, ꙗко Іисоусъ грѧдеть, сърѣте и҆· а Мариꙗ дома сѣдѣаше.

21. Dixit ergo Martha ad Jesum: Domine, si fuisses hic, frater meus non fuisset mortuus;

.ка. Рече же Марѳа къ Іисоусови: Господи, аште бы сьде былъ, не бы братъ мой оумьрьлъ:

22. sed et nunc scio, quia, quaecumque poposceris a Deo, dabit tibi Deus.

.кв. нъ и нынѣ вѣмь, ꙗко ѥгоже колижьдо просиши оу Бога, дасть тебѣ Богъ.

23. Dicit illi Jesus: Resurget frater tuus.

.кг. Глагола ѥй Іисоусъ: Въскрьснеть братъ твой.

24. Λεγει αὐτῷ Μαρθα· Οἶδα ὅτι ἀναστησεται ἐν τῇ ἀναστασει ἐν τῇ ἐσχατῃ ἡμερᾳ.

25. Εἶπεν αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγω εἰμι ἡ ἀναστασις και ἡ ζωη· ὁ πιστευων εἰς ἐμε, κἀν ἀποθανῃ, ζησεται·

26. και πᾶς ὁ ζῶν και πιστευων εἰς ἐμε, οὐ μη ἀποθανῃ εἰς τον αἰῶνα. Πιστευεις τοῦτο;

27. Λεγει αὐτῷ· Ναι, Κυριε· ἐγω πεπιστευκα, ὅτι συ εἶ ὁ Χριστος, ὁ υἱος τοῦ Θεοῦ, ὁ εἰς τον κοσμον ἐρχομενος.

28. Και ταῦτα εἰποῦσα ἀπῆλθε, και ἐφωνησε Μαριαν την ἀδελφην αὐτῆς λαθρα, εἰποῦσα· Ὁ διδασκαλος παρεστι και φωνεῖ σε.

29. Ἐκεινη ὡς ἤκουσεν, ἐγειρεται ταχυ και ἐρχεται προς αὐτον.

30. Οὔπω δε ἐληλυθει ὁ Ἰησοῦς εἰς την κωμην, ἀλλ' ἦν ἐν τῷ τοπῳ ὅπου ὑπηντησεν αὐτῷ ἡ Μαρθα.

31. Οἱ οὖν Ἰουδαῖοι οἱ ὄντες μετ' αὐτῆς ἐν τῇ οἰκιᾳ και παραμυθουμενοι αὐτην, ἰδοντες την Μαριαν ὅτι ταχεως ἀνεστη και ἐξῆλθεν, ἠκολουθησαν αὐτῇ, λεγοντες· Ὅτι ὑπαγει εἰς το μνημεῖον, ἵνα κλαυσῃ ἐκεῖ.

32. Ἡ οὖν Μαρια ὡς ἦλθεν ὅπου ἦν ὁ Ἰησοῦς, ἰδοῦσα αὐτον, ἐπεσεν εἰς τους ποδας αὐτοῦ, λεγουσα αὐτῷ· Κυριε, εἰ ἧς ὧδε, οὐκ ἂν ἀπεθανε μου ὁ ἀδελφος.

33. Ἰησοῦς οὖν ὡς εἶδεν αὐτην κλαιουσαν, και τους συνελθοντας αὐτῇ Ἰουδαιους κλαιοντας, ἐνεβριμησατο τῷ πνευματι, και ἐταραξεν ἑαυτον,

34. και εἶπεν· Ποῦ τεθεικατε αὐτον; Λεγουσιν αὐτῷ· Κυριε, ἐρχου και ἰδε.

35. Ἐδακρυσεν ὁ Ἰησους.

36. Ἐλεγον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι· Ἰδε πῶς ἐφιλεῖ αὐτον.

37. Τινες δε ἐξ αὐτῶν εἶπον· Οὐκ ἠδυνατο οὗτος ὁ ἀνοιξας τους ὀφθαλμους τοῦ τυφλοῦ, ποιῆσαι ἵνα και οὗτος μη ἀποθανῃ;

38. Ἰησοῦς οὖν, παλιν ἐμβριμωμενος ἐν ἑαυτῷ ἐρχεται εἰς το μνημεῖον. Ἦν δε σπηλαιον, και λιθος ἐπεκειτο ἐπ' αὐτῷ.

.ⰻⰳ. ⰳⰾⰰⰳⱁⰾⰰ ⰵⰿⱆ ⰿⰰⱃⱏⱅⰰ· ⰲⱑⰿⱐ ⱑⰽⱁ ⰲⱏⱄⰽⱃⱐⱄⱀⰵⱅⱏ ⰲⱏ ⰲⱏⱄⰽⱃⱑⱎⰵⱀⱐⰵ ⰲⱏ ⱂⱁⱄⰾⱑⰴⱐⱀⰹⰻ ⰴⱐⱀⱐ.

.ⰻⰴ. ⱃⰵⱍⰵ ⰵⰻ Ⰺⱄⱆⱄⱏ· ⰰⰸⱏ ⰵⱄⰿⱐ ⰲⱏⱄⰽⱃⱑⱎⰵⱀⱐⰵ ⰹ ⰶⰻⰲⱁⱅⱏ· ⰲⱑⱃⱆⰵⱔⰻ ⰲⱏ ⰿⱔ, ⰰⱎⱅⰵ ⰹ ⱆⰿⱏⱃⰵⱅⱏ, ⱁⰶⰻⰲⰵⱅⱏ·

.ⰻⰵ. ⰹ ⰲⱐⱄⱑⰽⱏ ⰶⰻⰲⱏⰻ ⰹ ⰲⱑⱃⱆⰵⱔⰻ ⰲⱏ ⰿⱔ ⱀⰵ ⱆⰿⱏⱃⰵⱅⱏ ⰲⱏ ⰲⱑⰽⱏ. Ⰺⰿⰰⱎⰻ ⰾⰻ ⰲⱑⱃⱘ ⱄⰵⰿⱆ;

.ⰻⰶ. ⰳⰾⰰⰳⱁⰾⰰ ⰵⰿⱆ· ⰵⰻ, ⰳⱁⱄⱂⱁⰴⰻ· ⰰⰸⱏ ⰲⱑⱃⱁⰲⰰⱈⱏ, ⱑⰽⱁ ⱅⱏⰻ ⰵⱄⰻ ⱈⱃⰻⱄⱅⱁⱄⱏ, ⱄⱏⰻⱀⱏ ⰱⱁⰶⰻⰹ ⰳⱃⱔⰴⱏⰻ ⰲⱏ ⰲⱐⱄⱐ ⰿⰻⱃⱏ.

.ⰻⰷ. Ⰺ ⱄⰵ ⱃⰵⰽⱎⰻ ⰹⰴⰵ ⰹ ⱂⱏⰸⰲⰰ ⰿⰰⱃⰹⱙ ⱄⰵⱄⱅⱃⱘ ⱄⰲⱁⱙ ⱅⰰⰻ, ⱃⰵⰽⱎⰻ· Ⱆⱍⰻⱅⰵⰾⱐ ⱄⰵ ⰵⱄⱅⱏ, ⰹ ⰸⱁⰲⰵⱅⱏ ⱅⱔ.

.ⰻⰸ. Ⱁⱀⰰ ⰶⰵ ⱑⰽⱁ ⱆⱄⰾⱏⰻⱎⰰ, ⰲⱏⱄⱅⰰ ⰵⱔⰴⱃⱁ ⰹ ⰹⰴⰵ ⰽⱏ ⱀⰵⰿⱆ.

.ⰼ. ⱀⰵ ⱆ ⰱⱁ ⰱⱑ Ⰺⱄⱆⱄⱏ ⱂⱃⰹⱎⱐⰾⱏ ⰲⱏ ⰲⱐⱄⱐ, ⱀⱁ ⰱⱑ ⱀⰰ ⰿⱑⱄⱅⱑ ⰵⱎⱅⰵ, ⰹⰴⰵⰶⰵ ⱄⱏⱃⱑⱅⰵ ⰻ ⰿⰰⱃⱏⱅⰰ.

.ⰼⰰ. Ⰺⱆⰴⰵⰻ ⰶⰵ ⱄⱘⱎⱅⰵⰻ ⱄⱏ ⱀⰵⱙ ⰲⱏ ⰴⱁⰿⱆ ⰹ ⱆⱅⱑⱎⰰⱙⱎⱅⰵ ⱙ, ⰲⰻⰴⱑⰲⱎⰵ ⰿⰰⱃⰹⱙ, ⱑⰽⱁ ⰵⱔⰴⱃⱁ ⰲⱏⱄⱅⰰ ⰹ ⰹⰸⰹⰴⰵ, ⱂⱁ ⱀⰵⰻ ⰹⰴⱘ, ⰳⰾⰰⰳⱁⰾⱙⱎⱅⰵ· ⱑⰽⱁ ⰹⰴⰵⱅⱏ ⱀⰰ ⰳⱃⱁⰱⱏ, ⰴⰰ ⱂⰾⰰⱍⰵⱅⱏ ⱄⱔ ⱅⱆ.

.ⰼⰱ. Ⰿⰰⱃⰹⱑ ⰶⰵ, ⱑⰽⱁ ⱂⱃⰹⰴⰵ ⰹⰴⰵⰶⰵ ⰱⱑ Ⰺⱄⱆⱄⱏ, ⰲⰻⰴⱑⰲⱎⰻ ⰻ ⱂⰰⰴⰵ ⰵⰿⱆ ⱀⰰ ⱀⱁⰳⱆ, ⰳⰾⰰⰳⱁⰾⱙⱎⱅⰻ ⰵⰿⱆ· ⰳⱁⱄⱂⱁⰴⰻ, ⰰⱎⱅⰵ ⰱⱏⰻ ⰱⱏⰻⰾⱏ ⰸⰴⰵ, ⱀⰵ ⰱⱏⰻ ⰿⱁⰻ ⰱⱃⰰⱅⱃⱏ ⱆⰿⱃⱑⰾⱏ.

.ⰼⰲ. Ⰺⱄⱆⱄⱏ ⰶⰵ ⱑⰽⱁ ⰲⰻⰴⱑ ⱙ ⱂⰾⰰⱍⱘ-ⱎⱅⱘ ⱄⱔ ⰹ ⱂⱃⰹⱎⱏⰴⱏⱎⱔⱔ ⱄⱏ ⱀⰵⱙ Ⰺⱆ-ⰴⰵⱔ ⱂⰾⰰⱍⱘⱎⱅⱔ ⱄⱔ, ⰸⰰⱂⱃⱑⱅⰻ ⰴⱆⱈⱆ ⰹ ⰲⱏⰸⰿⱔⱅⰵ ⱄⱔ ⱄⰰⰿⱏ,

.ⰼⰳ. ⰹ ⱃⰵⱍⰵ· ⰽⱏⰴⰵ ⱂⱁⰾⱁⰶⰻⱄⱅⰵ ⰻ; ⰳⰾⰰ-ⰳⱁⰾⰰⱎⰵ ⰵⰿⱆ· ⰳⱁⱄⱂⱁⰴⰻ, ⰹⰴⰻ ⰹ ⰲⰻⰶⰴⱐ.

.ⰼⰴ. Ⰺ ⱂⱃⱁⱄⰾⱏⰸⰻ ⱄⱔ Ⰺⱄⱆⱄⱏ.

.ⰼⰵ. ⰳⰾⰰⰳⱁⰾⰰⰰⱎⰵ ⰶⰵ Ⰺⱆⰴⰵⰻ· ⰲⰻⰶⰴⱐ, ⰽⰰⰽⱁ ⰾⱓⰱⰾⱑⰰⱎⰵ ⰻ.

.ⰼⰶ. Ⰵⱅⰵⱃⰻ ⰶⰵ ⱁⱅⱏ ⱀⰻⱈⱏ ⱃⱑⱎⱔ· ⱀⰵ ⰿⱁⰶⰰⰰⱎⰵ ⰾⰻ ⱄⰵ ⱁⱅⰲⱃⱏⰸⰻⰲⱏⰻ ⱁⱍⰻ ⱄⰾⱑ-ⱂⱆⱆⰿⱆ, ⱄⱏⱅⰲⱁⱃⰻⱅⰻ, ⰴⰰ ⰹ ⱄⱐ ⱀⰵ ⱆⰿⱃⰵⱅⱏ;

.ⰼⰷ. Ⰺⱄⱆⱄⱏ ⰶⰵ ⱂⰰⰽⱏⰻ ⱂⱃⱑⱅⱔ ⰲⱏ ⱄⰵⰱⱑ ⱂⱃⰹⰴⰵ ⰽⱏ ⰳⱃⱁⰱⱆ. ⰱⱑ ⰶⰵ ⱂⰵⱎⱅⰵ, ⰹ ⰽⰰ-ⰿⰵⱀⱐ ⱀⰰⰾⰵⰶⰰⰰⱎⰵ ⱀⰰ ⱀⰵⰻ.

24. Dicit ei Martha: Scio. quia resurget in resurrectione in novissimo die.

.кд. Глагола ѥмоу Марѳа: Вѣмь, ꙗко въскрьснеть въ въскрѣшеннѥ въ послѣдьнїй дьнь.

25. Dixit ei Jesus: Ego sum resurrectio et vita: qui credit in me, etiam si mortuus fuerit, vivet;

.ке. Рече ѥй Іисоусъ: Азъ ѥсмь въскрѣшеннѥ и животъ· вѣроущїй въ мѧ, аще и оумьреть, оживеть·

26. et omnis, qui vivit et credit in me, non morietur in aeternum. Credis hoc?

.кѕ. и вьсꙗкъ живай и вѣроущїй въ мѧ, не оумьреть въ вѣкъ. Ѥмлѥши ли вѣрѫ семоу;

27. Ait illi: Utique, Domine! ego credidi, quia tu es Christus, Filius Dei vivi, qui in hunc mundum venisti.

.кꙁ. Глагола ѥмоу: Ѥй Господи, азъ вѣровахъ, ꙗко ты ѥси Христосъ, Сынъ Бога живаго, градый въ миръ сь.

28. Et cum haec dixisset, abiit et vocavit Mariam, sororem suam silentio, dicens: Magister adest, et vocat te.

.ки. И се рекъши, иде и приꙁъва Марнѭ, сестрѫ своѭ ѡтай, рекъши: Оучитель се ѥсть, и ꙁоветь тѧ.

29. Illa, ut audivit, surgit cito, et venit ad eum.

.кѳ. Ѡна же ꙗко оуслыша, въста скоро, и иде къ нѥмоу.

30. Nondum enim venerat Jesus in castellum; sed erat adhuc in illo loco, ubi occurrerat ei Martha.

.л. Не оу бо бѣ пришьлъ Іисоусъ въ вьсь, нъ бѣ на мѣстѣ ѥще, идеже сърѣте й Марѳа.

31. Judaei ergo, qui erant cum ea in domo, et consolabantur eam, cum vidissent Mariam, quia cito surrexit et exiit, secuti sunt eam dicentes: Quia vadit ad monumentum, ut ploret ibi.

.ла. Июдеи же сѫщеи съ нѥѭ въ домоу и оутѣшаѭщеи ѭ, видѣвъше Марнѭ, ꙗко скоро въста и иꙁиде, по нѥй идоша, глаголѭще: Ꙗко идеть на гробъ, да плачеть сѧ тоу.

32. Maria ergo, cum venisset, ubi erat Jesus, videns eum, cecidit ad pedes ejus et dixit ei: Domine, si fuisses hic, non esset mortuus frater meus.

.лв. Мариꙗ же ꙗко прїиде, идеже бѣ Іисоусъ, видѣвъши й, паде ѥмоу на ногоу и глагола ѥмоу: Госноди, аще бы былъ сьде, не бы оумьрьлъ братъ мой.

33. Jesus ergo, ut vidit eam plorantem, et Judaeos, qui venerant cum ea, plorantes, infremuit spiritu, et turbavit se ipsum,

.лг. Іисоусъ оубо, ꙗко видѣ ѭ плачѫщѫ сѧ, и пришьдъшаꙗ съ нѥѭ Июдеꙗ плачѫща сѧ, ꙁапрѣти доухоу, и въꙁмѧти сѧ самъ,

34. et dixit: Ubi posuistis eum? Dicunt ei: Domine, veni et vide.

.лд. и рече: Къде положисте й; Глаголаша ѥмоу: Господи, прїиди и виждь.

35. Et lacrymatus est Jesus.

.ле. И просльꙁи сѧ Іисоусъ.

36. Dixerunt ergo Judaei: Ecce, quomodo amabat eum.

.лѕ. Глаголаахѫ же Июдеи: Виждь, како люблѣаше й.

37. Quidam autem ex ipsis dixerunt: Non poterat hic, qui aperuit oculos caeci nati, facere, ut hic non moreretur?

.лꙁ. Ѥтери же ѿтъ нихъ рекоша: Не можааше ли сь, ѿтвръꙁый ѡчи слѣпьцоу сътворити, да и сь не оумьреть;

38. Jesus ergo rursum fremens in semet ipso, venit ad monumentum. Erat autem spelunca, et lapis superpositus erat ei.

.ли. Іисоусъ же пакы прѣта въ себѣ прїиде къ гробоу. Бѣ же пещера, и камень лежааше на нѥй.

39. *Λεγει ὁ 'Ιησοῦς· Ἀρατε τον λιθον. Λεγει αὐτῷ ἡ ἀδελφη τοῦ τεθνηκοτος Μαρθα· Κυριε, ἠδη ὀζει· τεταρταῖος γαρ ἐστιν.*

40. *Λεγει αὐτῇ ὁ 'Ιησοῦς· Οὐκ εἰπον σοι, ὁτι ἐαν πιστευσῃς, ὀψει την δοξαν τοῦ Θεοῦ;*

41. *Ἠραν οὐν τον λιθον, οὑ ἠν ὁ τεθνηκως κειμενος. Ὁ δε 'Ιησοῦς ἠρε τους ὀφθαλμους ἀνω, και εἰπε· Πατερ, εὐχαριστῶ σοι, ὁτι ἠκουσας μου.*

42. *Ἐγω δε ᾐδειν ὁτι παντοτε μου ἀκουεις· ἀλλα δια τον ὀχλον τον περιεστῶτα εἰπον, ἱνα πιστευσωσιν, ὁτι συ με ἀπεστειλας.*

43 *Και ταῦτα εἰπων, φωνῇ μεγαλῃ ἐκραυγασε· Λαζαρε, δευρο ἐξω.*

44. *Και ἐξῆλθεν ὁ τεθνηκως, δεδεμενος τους ποδας και τας χεῖρας κειριαις, και ἡ ὀψις αὐτοῦ σουδαριῳ περιεδεδετο. Λεγει αὐτοῖς ὁ 'Ιησοῦς· Λυσατε αὐτον, και ἀφετε ὑπαγειν.*

45. *Πολλοι οὐν ἐκ των 'Ιουδαιων οἱ ἐλθοντες προς την Μαριαν, και θεασαμενοι ὁ ἐποιησεν ὁ 'Ιησοῦς, ἐπιστευσαν εἰς αὐτον.*

46. *Τινες δε ἐξ αὐτῶν ἀπῆλθον προς τους Φαρισαιους και εἰπον αὐτοῖς, ἁ ἐποιησεν ὁ 'Ιησοῦς.*

47. *Συνηγαγον οὐν οἱ αρχιερεῖς και οἱ Φαρισαῖοι συνεδριον, και ἐλεγον· Τι ποιοῦμεν; ὁτι οὑτος ὁ ἀνθρωπος πολλα σημεῖα ποιεῖ.*

48. *Ἐαν ἀφῶμεν αὐτον οὑτω, παντες πιστευσουσιν εἰς αὐτον· και ἐλευσονται οἱ 'Ρωμαῖοι, και ἀροῦσιν ἡμῶν και τον τοπον και το ἐθνος.*

49. *Εἱς δε τις ἐξ αὐτῶν Καϊαφας, ἀρχιερευς ὠν τοῦ ἐνιαυτοῦ ἐκεινου, εἰπεν αὐτοῖς· 'Υμεῖς οὐκ οἰδατε οὐδεν·*

50. *οὐδε διαλογιζεσθε, ὁτι συμφερει ἡμῖν, ἱνα εἱς ἀνθρωπος ἀποθανῃ ὑπερ τοῦ λαοῦ, και μη ὁλον το ἐθνος ἀποληται.*

51. *Τοῦτο δε ἀφ' ἑαυτοῦ οὐκ εἰπεν, ἀλλα ἀρχιερευς ὠν τοῦ ἐνιαυτοῦ ἐκεινου, προεφητευσεν ὁτι ἐμελλεν ὁ 'Ιησοῦς ἀποθνησκειν ὑπερ τοῦ ἐθνους·*

39. Ait Jesus: Tollite lapidem! Dicit ei Martha, soror ejus, qui mortuus fuerat; Domine, jam foetet, quadriduanus enim est.

40. Dicit ei Jesus: Nonne dixi tibi, quoniam si credideris, videbis gloriam Dei?

41. Tulerunt ergo lapidem: Jesus autem elevatis sursum oculis, dixit: Pater, gratias ago tibi, quoniam audisti me.

42. Ego autem sciebam, quia semper me audis, sed propter populum, qui circumstat, dixi: ut credant, quia tu me misisti.

43. Haec cum dixisset, voce magna clamavit: Lazare, veni foras!

44. Et statim prodiit, qui fuerat mortuus, ligatus pedes et manus institis, et facies illius sudario erat ligata. Dixit eis Jesus: Solvite eum, et sinite abire.

45. Multi ergo ex Judaeis, qùi venerant ad Mariam et Martham, et viderant, quae fecit Jesus, crediderunt in eum.

46. Quidam autem ex ipsis abierunt ad Pharisaeos, et dixerunt eis, quae fecit Jesus.

47. Collegerunt ergo Pontifices et Pharisaei concilium, et dicebant: Quid facimus, quia hic homo multa signa facit?

48. Si dimittimus eum sic, omnes credent in eum; et venient Romani et tollent nostrum locum et gentem.

49. Unus autem ex ipsis, Caiphas nomine, cum esset pontifex anni illius, dixit eis: Vos nescitis quidquam,

50 nec cogitatis, quia expedit vobis, ut unus moriatur homo pro populo, et non tota gens pereat.

51. Hoc autem a semet ipso non dixit, sed cum esset pontifex anni illius prophetavit, quod Jesus moriturus erat pro gente;

.лѳ. Глагола же Іисоусъ: Въꙁьмѣте камень!. Глагола ѥмоу сестра оумьрьшааго Марѳа: Господи, оуже смрьдить, четврьдьневьнъ бо ѥсть.

.м. Глагола ѥй Іисоусъ: Не рекохъ ли ти, ꙗко аште вѣроуѥши, оуꙁьриши славѫ Божиѭ;

.ма. Въꙁѧша же камень· Іисоусъ же въꙁведъ ѡчи горѣ, рече: Ѡтьче, хвалѫ тебѣ въꙁдаѭ, ꙗко оуслыша мѧ.

.мв. Аꙁъ же вѣдѣахъ, ꙗко вьсегда мене послоушаѥши· нъ народа ради стоѩштааго ѡкрьсть рекохъ, да вѣрѫ имѫть, ꙗко ты мѧ посъла.

.мг. И се рекъ гласъмь великъмь въꙁъва: Лаꙁаре, гради вънъ!

.мд. И абиѥ иꙁиде оумьрый, ѡбаꙁанъ ногамꙑ и рѫкама оукроѥмь, и лице ѥго оуброусъмь ѡбаꙁано. И глагола имъ Іисоусъ: Раꙁрѣшите й, и недѣйте ѥго ити.

.ме. Мъноꙁи же ѡтъ Июдеи пришьдъше къ Марии, и видѣвъше, ѥже сътвори Іисоусъ, вѣроваша въ нѥго.

.мѕ. Ѥтери же ѡтъ нихъ идоша къ Фарисеомъ и рекоша имъ, ѥже сътвори Іисоусъ.

.мꙁ. Събьраша же архиѥреи и Фарисеи съборъ, и глаголаахѫ: Чьто сътворимъ, ꙗко чловѣкъ сь ꙁнамениѩ мъного творить;

.мн. Аште ѡставимъ й тако, вьси вѣрѫ имѫть въ нь· и прїидѫть Римлꙗне, и въꙁьмѫть и мѣсто и ꙗꙁыкъ нашь.

.мѳ. Ѥдинъ же ѡтъ нихъ Каиꙗфа именьмь, архиѥрей сы лѣтоу томоу, рече имъ: Вы не вѣсте ничьсоже,

.н. ни помышлꙗѥте, ꙗко оуниѥ ѥсть вамъ, да ѥдинъ чловѣкъ оумьреть ꙁа люди, а не вьсь ꙗꙁыкъ погыбнеть.

.на. Сего же ѡ себѣ не рече: нъ архиѥрей сы лѣтоу томоу прорече, ꙗко хотѣаше Іисоусъ оумьрѣти ꙁа люди·

52. και οὐχ ὑπερ τοῦ ἐθνους μονον, ἀλλ' ἵνα και τα τεκνα τοῦ Θεοῦ τα διεσκορπισμενα συναγαγη εἰς ἑν.

53. Ἀπ' ἐκεινης οὐν τῆς ἡμερας συνεβουλευσαντο, ἵνα ἀποκτεινωσιν αὐτον.

54. Ἰησοῦς οὐν οὐκετι παῤῥησια περιεπατει ἐν τοῖς Ἰουδαιοις, ἀλλα ἀπῆλθεν ἐκεῖθεν εἰς την χωραν ἐγγυς τῆς ἐρημου, εἰς Ἐφραϊμ λεγομενην πολιν, κἀκεῖ διετριβε μετα τῶν μαθητῶν αὐτοῦ.

55. Ἦν δε ἐγγυς το Πασχα τῶν Ἰουδαιων και ἀνεβησαν πολλοι εἰς Ἱεροσολυμα ἐκ της χωρας προ τοῦ Πασχα, ἵνα ἁγνισωσιν ἑαυτους.

56. Ἐζητουν οὐν τον Ἰησοῦν, και ἐλεγον μετ' ἀλληλων ἐν τῷ ἱερῷ ἑστηκοτες· Τι δοκεῖ ὑμῖν, ὁτι οὐ μη ἐλθῃ εἰς την ἑορτην;

57. Δεδωκεισαν δε και οἱ ἀρχιερεῖς και οἱ Φαρισαῖοι ἐντολην, ἵνα ἐαν τις γνῷ ποῦ ἐστι, μηνυσῃ, ὁπως πιασωσιν αὐτον.

## Κεφ. XII.

1. Ὁ οὐν Ἰησοῦς προ ἓξ ἡμερων τοῦ Πασχα ἦλθεν εἰς Βηθανιαν, ὁπου ἦν Λαζαρος ὁ τεθνηκως, ὃν ἠγειρεν ἐκ νεκρῶν.

2. Ἐποιησαν οὐν αὐτῷ δεῖπνον ἐκεῖ, και ἡ Μαρθα διηκονει· ὁ δε Λαζαρος εἷς ἦν τῶν συνανακειμενων αὐτῷ.

3. Ἡ οὐν Μαρια λαβουσα λιτραν μυρου ναρδου πιστικῆς πολυτιμου, ἤλειψε τους ποδας τοῦ Ἰησοῦ, και ἐξεμαξε ταῖς θριξιν αὐτῆς τους ποδας αὐτου· ἡ δε οἰκια ἐπληρωθη ἐκ τῆς ὀσμῆς τοῦ μυρου.

4. Λεγει οὐν εἷς ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ, Ἰουδας Σιμωνος Ἰσκαριωτης, ὁ μελλων αὐτον παραδιδοναι·

5. Διατι τοῦτο το μυρον οὐκ ἐπραθη τριακοσιων δηναριων, και ἐδοθη πτωχοῖς;

6. Εἶπε δε τοῦτο, οὐχ ὁτι περι τῶν πτωχῶν ἐμελεν αὐτῷ, ἀλλα ὁτι κλεπτης ἦν, και το γλωσσοκομον εἶχε, και τα βαλλομενα ἐβασταζεν.

.ⰾⰱ. ⰹ ⱀⰵ ⱅⱏⰽⱏⰿⱁ ⰸⰰ ⰾⱓⰴⰻ, ⱀⱏ ⰹ ⰴⰰ ⱍⱔⰴⰰ ⰱⱁⰶⰻⱑ ⱃⰰⱄⱅⱁⱍⰵⱀⰰ ⱄⱏⰱⰵⱃⰵⱅⱏ ⰲⱏ ⰵⰴⰻⱀⱁ.

.ⰾⰲ. Ⱁⱅⱏ ⱅⱁⰳⱁ ⰶⰵ ⰴⱏⱀⰵ ⱄⱏⰲⱑⱎⱅⰰⱎⱔ, ⰴⰰ ⰻ ⰱⱁⱔ ⱆⰱⰻⰾⰻ.

.ⰾⰳ. Ⰺⱄⱆⱄⱏ ⰶⰵ ⰽⱏ ⱅⱁⰿⱆ ⱀⰵ ⱑⰲⱑ ⱈⱁⰶⰴⰰⰰⱎⰵ ⰲⱏ Ⰺⱓⰴⰵⰻⱈⱏ, ⱀⱏ ⰹⰴⰵ ⱁⱅⱏ ⱅⱁⱔⰴⱆ ⰲⱏ ⱄⱅⱃⰰⱀⱁⱔ ⰱⰾⰻⰸⱏ ⱂⱆⱄⱅⱏⰹⱀⰵⱔ ⰲⱏ ⰳⱃⰰⰴⱏ ⱀⰰⱃⰻⱌⰰⰵⰿⱏⰹⰻ Ⰵⱇⱃⰵⰿⱏ, ⰹ ⱅⱆ ⰶⰻⰲⱑⰰⱎⰵ ⱄⱏ ⱆⱍⰵⱀⰻⰽⱏⰹ ⱄⰲⱁⰻⰿⰻ.

.ⰾⰴ. Ⰱⱑ ⰶⰵ ⰱⰾⰻⰸⱏ Ⱂⰰⱄⱈⰰ Ⰺⱓⰴⰵⰻⱄⰽⰰ· ⰹ ⰲⱏⰸⰹⰴⱁⱔ ⰿⱏⱀⱁⰸⰻ ⰲⱏ Ⰺⰵⱃⱆⱄⰰⰾⰻⰿⱏ ⱁⱅⱏ ⱄⱅⱃⰰⱀⱏⰹ ⱂⱃⱑⰶⰴⰵ Ⱂⰰⱄⱈⱏⰹ, ⰴⰰ ⱁⱍⰻⱄⱅⱔⱅⱏ ⱄⱔ.

.ⰾⰵ. Ⰺⱄⰽⰰⰰⱈⱁⱔ ⰶⰵ Ⰺⱄⱆⱄⰰ, ⰹ ⰳⰾⰰⰳⱁⰾⰰⰰⱈⱁⱔ ⰽⱏ ⱄⰵⰱⱑ ⰲⱏ ⱌⱃⱏⰽⱏⰲⰵ ⱄⱅⱁⰵⱔⱎⱅⰵ· Ⱍⱏⱅⱁ ⱄⱔ ⰿⱏⱀⰻⱅⱏ ⰲⰰⰿⱏ, ⱑⰽⱁ ⱀⰵ ⰹⰿⰰⱅⱏ ⰾⰻ ⱂⱃⰻⰹⱅⰻ ⰲⱏ ⱂⱃⰰⰸⰴⱏⱀⰻⰽⱏ;

.ⰾⰶ. Ⰴⰰⱎⱔ ⰱⱁ ⰰⱃⱈⰻⰵⱃⰵⰻ ⰹ Ⱇⰰⱃⰻⱄⰵⰻ ⰸⰰⱂⱁⰲⱑⰴⱏ, ⰴⰰ ⰰⱎⱅⰵ ⰽⱏⱅⱁ ⱁⱎⱅⱓⱅⰻⱅⱏ, ⰽⱏⰴⰵ ⰱⱁⱔⰴⰵⱅⱏ, ⱂⱁⰲⱑⱄⱅⱏ, ⰴⰰ ⰹⰿⱁⱔⱅⱏ ⰻ.

## Ⰳⰾ. .ⰱⰹ.

.ⰰ. Ⰺⱄⱆⱄⱏ ⰶⰵ ⱂⱃⱑⰶⰴⰵ ⱎⰵⱄⱅⰻ ⰴⱏⱀⱏ Ⱂⰰⱄⱈⱏⰹ ⱂⱃⰻⰹⰴⰵ ⰲⱏ Ⰲⰻⱚⰰⱀⰻⱙ, ⰹⰴⰵⰶⰵ ⰱⱑ Ⰾⰰⰸⰰⱃⱏ ⱆⰿⱏⱃⱏⰹⰻ, ⰵⰳⱁⰶⰵ ⰲⱏⱄⰽⱃⱑⱄⰻ ⱁⱅⱏ ⰿⱃⱏⱅⰲⱏⰹⰻⱈⱏ.

.ⰱ. Ⱄⱏⱅⰲⱁⱃⰻⱎⱔ ⰶⰵ ⰵⰿⱆ ⰲⰵⱍⰵⱃⱙ ⱅⱆ, ⰹ Ⰿⰰⱃⱏⱚⰰ ⱄⰾⱆⰶⰰⰰⱎⰵ· Ⰾⰰⰸⰰⱃⱏ ⰶⰵ ⰵⰴⰻⱀⱏ ⰱⱑ ⱁⱅⱏ ⰲⱏⰸⰾⰵⰶⱔⱎⱅⰹⰻⱈⱏ ⱄⱏ ⱀⰻⰿⱏ.

.ⰲ. Ⰿⰰⱃⰻⱑ ⰶⰵ ⱂⱃⰻⰹⰿⱏⱎⰻ ⰾⰻⰲⱃⱁⱔ ⱈⱃⰻⰷⰿⱏⰹ ⱀⰰⱃⱏⰴⰰ ⱂⰻⱄⱅⰻⰽⰻⰵⱔ ⰿⱏⱀⱁⰳⱁⱌⱑⱀⱏⱀⱏⰹ ⱂⱁⰿⰰⰸⰰ ⱀⱁⰸⱑ Ⰺⱄⱆⱄⱁⰲⱑ ⰹ ⱁⱅⱏⱃⰵ ⰲⰾⰰⱄⱏⰹ ⱄⰲⱁⰻⰿⰻ ⱀⱁⰸⱑ ⰵⰳⱁ· ⱈⱃⰰⰿⰻⱀⰰ ⰶⰵ ⰹⱄⱂⰾⱏⱀⰻ ⱄⱔ ⱁⱅⱏ ⰲⱁⱀⱔ ⱈⱃⰻⰷⰿⱏⱀⱏⰹⰵⱔ.

.ⰳ. Ⰳⰾⰰⰳⱁⰾⰰ ⰶⰵ ⰵⰴⰻⱀⱏ ⱁⱅⱏ ⱆⱍⰵⱀⰻⰽⱏ ⰵⰳⱁ, Ⰺⱓⰴⰰ Ⱄⰻⰿⱁⱀⱏ Ⰺⱄⰽⰰⱃⰻⱁⱅⱏⱄⰽⱏⰹⰻ, ⰹⰶⰵ ⰻ ⱈⱁⱅⱑⰰⱎⰵ ⱂⱃⱑⰴⰰⱅⰻ·

.ⰴ. Ⱍⱏⱄⱁ ⱃⰰⰴⰻ ⱈⱃⰻⰷⰿⰰ ⱄⰻ ⱀⰵ ⱂⱃⱁⰴⰰⱀⰰ ⰱⱏⰹⱄⱅⱏ ⱀⰰ ⱅⱃⱏⱈⱏ ⱄⱏⱅⱑⱈⱏ ⱂⱑⱀⱔⰷⱏ, ⰹ ⰴⰰⱀⱁ ⱀⰻⱎⱅⰹⰻⰿⱏ;

.ⰵ. Ⱄⰵ ⰶⰵ ⱃⰵⱍⰵ, ⱀⰵ ⱑⰽⱁ ⱁ ⱀⰻⱎⱅⰹⰻⱈⱏ ⱂⰵⱍⰰⰰⱎⰵ ⱄⱔ, ⱀⱏ ⱑⰽⱁ ⱅⰰⱅⱏ ⰱⱑ, ⰹ ⰽⱁⰲⱏⱍⰵⰶⱏⱌⱏ ⰹⰿⱏⰹ ⰲⱏⰿⱑⱅⰰⰵⰿⰰⰰ ⱀⱁⱎⰰⰰⱎⰵ.

52. et non tantum pro gente, sed ut filios Dei, qui erant dispersi, congregaret in unum.

53. Ab illo ergo die cogitaverunt, ut interficerent eum.

54. Jesus ergo jam non in palam ambulabat apud Judaeos, sed abiit in regionem juxta desertum, in civitatem, quae dicitur Ephrem, et ibi morabatur cum discipulis suis.

55. Proximum autem erat Pascha Judaeorum; et ascenderunt multi Hierosolymam de regione ante Pascha, ut sanctificarent se ipsos.

56. Quaerebant ergo Jesum, et colloquebantur ad invicem, in templo stantes: Quid putatis, quia non venit ad diem festum? Dederant autem pontifices et Pharisaei mandatum, ut si quis cognoverit, ubi sit, indicet, ut apprehendant eum.

.нв. И не тъкъмо ꙁа люди, нъ да и чада Божиꙗ расточенаꙗ съберетъ въ ѥдино.

.нг. Ѿтъ того же дьне съвѣшташа, да й быша оубили.

.нд. Іисоусъ же къ томоу не ѣвѣ хождаше въ Июдеихъ, нъ иде ѿтъ тѫдоу въ странѫ близъ поустыниꙗ, въ градъ, нарицаѥмый Єфремъ, и тоу живѣаше съ оученикы своими.

.не. Бѣ же близъ Пасха Июдейска· и въꙁидоша мънoѕи въ Иѥроусалимъ ѿтъ страны прѣжде Пасхы, да ѿчистать сꙗ.

.нѕ Искаахѫ же Іисоуса и глаголаахѫ къ себѣ въ цръкъви стоꙗште: Чьто сꙗ мьнитъ вамъ, ꙗко не приходитъ въ праꙁдьникъ;

Даша бо архиѥреи и Фарисеи ꙁаповѣдь, да аште къто ѿштютитъ, къде бѫдетъ, повѣсть, да имѫтъ й.

## Caput XII.

1. Jesus ergo ante sex dies Paschae venit Bethaniam, ubi Lazarus fuerat mortuus, quem suscitavit Jesus.

2. Fecerunt autem ei coenam ibi, et Martha ministrabat, Lazarus vero unus erat ex discumbentibus cum eo.

3. Maria ergo accepit libram unguenti nardi pistici, pretiosi, et unxit pedes Jesu, et extersit pedes ejus capillis suis; et domus impleta est ex odore unguenti.

4. Dixit ergo unus ex discipulis ejus, Judas Iscariotes, qui erat eum traditurus:

5. Quare hoc unguentum non vaeniit trecentis denariis, et datum est egenis?

6. Dixit autem hoc, non quia de egenis pertinebat ad eum, sed quia fur erat, et loculos habens ea, quae mittebantur, portabat.

## Глава .ві.

.а. Іисоусъ же прѣжде шести дьнъ Пасхы прıиде въ Виѳанииѫ, идеже бѣ Лаꙁаръ оумьрый, ѥгоже въскрѣси ѿтъ мрътвыихъ.

.в. Сътвориша же ѥмоу вечерѭ тоу, и Маръѳа слоужааше, Лаꙁаръ же ѥдинъ бѣ ѿтъ въꙁлежаштıихъ съ нимь.

.г. Мариꙗ же прıимъши литрѫ мура нарьда пистикиꙗ мъногоцѣньны помаꙁа ноѕѣ Іисоусовѣ, и ѿтьре власы своими ноѕѣ ѥго· храмина же наплъни сꙗ ѿтъ воньꙗ мурьныꙗ.

.д. Глагола же ѥдинъ ѿтъ оученикъ ѥго Июда Искариотьскый, иже хотѣаше прѣдати й:

.є. Чьсо ради муро се не продано бысть на трьхъ сътѣхъ сърeбрьникъ, и дано инштıимъ;

.ѕ. Се же рече не ꙗко ѡ ништıихъ печааше сꙗ, нъ ꙗко тать бѣ и скриницѫ имы въмѣтаѥмаꙗ ношааше.

7. Εἶπεν οὖν ὁ Ἰησοῦς· Ἄφες αὐτην· ἵνα εἰς την ἡμεραν τοῦ ἐνταφιασμοῦ μου τηρηση αὐτο.

[illegible]

8. Τους πτωχους γαρ παντοτε ἔχετε μεθ' ἑαυτῶν, ἐμε δε οὐ παντοτε ἔχετε.

[illegible]

9. Ἔγνω οὖν ὀχλος πολυς ἐκ τῶν Ἰουδαιων ὅτι ἐκει ἐστι· και ἦλθον οὐ δια τον Ἰησοῦν μονον, ἀλλ' ἵνα και τον Λαζαρον ἰδωσιν, ὃν ἤγειρεν ἐκ νεκρῶν.

[illegible]

10. Ἐβουλευσαντο δε οἱ ἀρχιερεῖς, ἵνα και τον Λαζαρον ἀποκτεινωσιν·

[illegible]

11. ὅτι πολλοι δι' αὐτον ὑπῆγον των Ἰουδαιων και ἐπιστευον εἰς τον Ἰησοῦν.

[illegible]

12. Τῇ ἐπαυριον ὀχλος πολυς ὁ ἐλθων εἰς την ἑορτην, ἀκουσαντες ὅτι ἐρχεται ὁ Ἰησοῦς εἰς Ἱεροσολυμα,

[illegible]

13. ἔλαβον τα βαΐα τῶν φοινικων, και ἐξῆλθον εἰς ὑπαντησιν αὐτῷ, και ἔκραζον· Ὡσαννα, εὐλογημενος ὁ ἐρχομενος ἐν ὀνοματι Κυριου, ὁ βασιλευς τοῦ Ἰσραηλ.

[illegible]

14. Εὑρων δε ὁ Ἰησοῦς ὀναριον ἐκαθισεν ἐπ' αὐτο, καθως ἐστι γεγραμμενον·

[illegible]

15. „Μη φοβοῦ, θυγατερ Σιων· ἰδου ὁ βασιλευς σου ἐρχεται, καθημενος ἐπι πῶλον ὀνου.“

[illegible]

16. Ταῦτα δε οὐκ ἔγνωσαν οἱ μαθηται αὐτοῦ το πρῶτον· ἀλλ' ὅτε ἐδοξασθη ὁ Ἰησοῦς, τοτε ἐμνησθησαν ὅτι ταῦτα ἦν ἐπ' αὐτῷ γεγραμμενα, και ταῦτα ἐποιησαν αὐτῷ.

[illegible]

17. Ἐμαρτυρει οὖν ὁ ὀχλος ὁ ὢν μετ' αὐτοῦ, ὅτε τον Λαζαρον ἐφωνησεν ἐκ τοῦ μνημειου, και ἤγειρεν αὐτον ἐκ νεκρῶν·

[illegible]

18. δια τοῦτο και ὑπηντησεν αὐτῷ ὁ ὀχλος, ὅτι ἤκουσαν τοῦτο αὐτον πεποιηκεναι το σημεῖον.

[illegible]

19. Οἱ οὖν Φαρισαῖοι εἶπον προς ἑαυτους· Θεωρεῖτε ὅτι οὐκ ὠφελεῖτε οὐδεν· ἰδε ὁ κοσμος ὀπισω αὐτοῦ ἀπῆλθεν.

[illegible]

20. Ἦσαν δε τινες Ἕλληνες ἐκ τῶν ἀναβαινοντων, ἵνα προσκυνησωσιν ἐν τῇ ἑορτῇ·

[illegible]

7. Dixit ergo Jesus: Sinite illam, ut in diem sepulturae meae servet illud.

.ꙁ. Рече же Іисоусъ: Не дѣйте ѭ, да въ дьнь погребениꙗ моѥго съблюдеть ѥ.

8. Pauperes enim semper habebitis vobiscum; me autem non semper habetis.

.и. Ништаꙗ бо вьсегда съ собоѭ имате, а мене не вьсегда имате.

9. Cognovit ergo turba multa ex Judaeis, quia illic erat; et venerunt non propter Jesum tantum, sed ut Lazarum viderent, quem suscitavit a mortuis.

.ѳ. Раꙁоумѣ же народъ мъногъ ѿтъ Июдеи, ꙗко тоу ѥсть· и приидоша не Іисоуса ради тъкъмо, нъ да и Лаꙁара видѧть, ѥгоже въскрѣси ѿтъ мрътвыихъ.

10. Cogitaverunt autem principes sacerdotum, ut et Lazarum interficerent;

.і. Съвѣщаташа же архиѥреи, да и Лаꙁара оубиѭть·

11. quia multi propter illum abibant ex Judaeis, et credebant in Jesum.

.аі. ꙗко мъноѕи ѥго ради идѣахѫ ѿтъ Июдеи, и вѣроваахѫ въ Іисоуса.

12. In crastinum autem turba multa, quae venerat ad diem festum, cum audissent, quia venit Jesus Hierosolymam,

.ві. Въ оутрѣй же дьнь народъ мъногъ пришьдꙑй въ праꙁдьникъ, слꙑшавъше, ꙗко Іисоусъ идеть въ Иѥроусалимъ,

13. acceperunt ramos palmarum, et processerunt obviam ei, et clamabant: Hosanna, benedictus, qui venit in nomine Domini, Rex Israël!

.гі. приѩша вѣꙗ ѿтъ Финикъ и иꙁидоша противѫ ѥмоу и ꙁъваахѫ глаголѭще: Ѡсана, благословлѥнъ градꙑй въ имѧ Господьнѥ, Царь Иꙁраилѥвъ.

14. Et invenit Jesus asellum, et sedit super eum, sicut scriptum est:

.ді. Ѡбрѣть же Іисоусъ ѡсьлѧ, въсѣде на нѥ, ꙗкоже ѥсть писано:

15. »Noli timere, filia Sion, ecce rex tuus venit sedens super pullum asinae.«

.еі. „Не бой сѧ, дъшти Сионова· се цѣсарь твой градеть сѣдѧ на жрѣбѧти ѡсьли.“

16. Haec non cognoverunt discipuli ejus primum; sed quando glorificatus est Jesus, tunc recordati sunt, quia haec erant scripta de eo, et haec fecerunt ei.

.ѕі. Сихъ же не раꙁоумѣша оученици ѥго прѣжде· нъ ѥгда прослави сѧ Іисоусъ, тъгда помѧнѫша, ꙗко си бѣша ѡ нѥмь писана, и си сътвориша ѥмоу.

17. Testimonium ergo perhibebat turba, quae erat cum eo, quando Lazarum vocavit de monumento et suscitavit eum a mortuis:

.ꙁі. Съвѣдѣтельствоваше же народъ, иже бѣ съ нимь, ѥгда Лаꙁара възгласи ѿтъ гроба и въскрѣси ѝ ѿтъ мрътвыихъ:

18. propterea et obviam venit ei turba, quia audierunt eum fecisse hoc signum.

.иі. сего ради и противѫ иꙁиде ѥмоу народъ, ꙗко слꙑшаша ѝ сътворьша се ꙁнамениѥ.

19. Pharisaei ergo dixerunt ad semet ipsos: Videtis, quia nihil proficimus. Ecce, mundus totus post eum abiit.

.ѳі. Фарисеи же рекоша къ себѣ: Видите, ꙗко никакоже польꙁа ѥсть. Се, вьсь миръ по нѥмь иде.

20. Erant autem quidam Gentiles ex his, qui ascenderant, ut adorarent in die festo.

.к. Бѣахѫ же Ѥлини нѣции ѿтъ въшьдъшиихъ, да поклонѧть сѧ въ праꙁдьникъ.

21. οὗτοι οὖν προσῆλθον Φιλιππῳ τῷ ἀπο Βηθσαϊδα τῆς Γαλιλαιας, και ἠρωτων αὐτον λεγοντες· Κυριε, θελομεν τον Ἰησοῦν ἰδεῖν.

22. Ἐρχεται Φιλιππος και λεγει τῷ Ἀνδρεᾳ· και παλιν Ἀνδρεας και Φιλιππος λεγουσι τῷ Ἰησοῦ.

23. Ὁ δε Ἰησοῦς ἀπεκρινατο αὐτοῖς, λεγων· Ἐληλυθεν ἡ ὡρα ἱνα δοξασθῇ ὁ υἱος τοῦ ἀνθρωπου.

24. Ἀμην, ἀμην λεγω ὑμῖν· Ἐαν μη ὁ κοκκος τοῦ σιτου πεσων εἰς την γῆν ἀποθανῃ, αὐτος μονος μενει· ἐαν δε ἀποθανῃ, πολυν καρπον φερει.

25. Ὁ φιλων την ψυχην αὐτοῦ ἀπολεσει αὐτην και ὁ μισῶν την ψυχην αὐτοῦ ἐν τῷ κοσμῳ τουτῳ, εἰς ζωην αἰωνιον φυλαξει αὐτην.

26. Ἐαν ἐμοι διακονῇ τις, ἐμοι ἀκολουθειτω· και ὁπου εἰμι ἐγω, ἐκεῖ και ὁ διακονος ὁ ἐμος ἐσται· και ἐαν τις ἐμοι διακονῇ, τιμησει αὐτον ὁ Πατηρ.

27. Νῦν ἡ ψυχη μου τεταρακται· και τι εἰπω; Πατερ, σῶσον με ἐκ τῆς ὡρας ταυτης· ἀλλα δια τοῦτο ἦλθον εἰς την ὡραν ταυτην.

28. Πατερ, δοξασον σου το ὀνομα. Ἠλθεν οὖν φωνη ἐκ τοῦ οὐρανοῦ· Και ἐδοξασα και παλιν δοξασω.

29. Ὁ οὖν ὀχλος ὁ ἑστως και ἀκουσας ἐλεγε βροντην γεγονεναι· ἀλλοι ἐλεγον· Ἀγγελος αὐτῷ λελαληκεν.

30. Ἀπεκριθη ὁ Ἰησοῦς και εἰπεν· Οὐ δι' ἐμε αὐτη ἡ φωνῆ γεγονεν, ἀλλα δι' ὑμᾶς.

31. Νῦν κρισις ἐστι τοῦ κοσμου τουτου· νῦν ὁ ἀρχων τοῦ κοσμου τουτου ἐκβληθησεται ἐξω·

32. κἀγω ἐαν ὑψωθῶ ἐκ τῆς γῆς, παντας ἑλκυσω προς ἐμαυτον.

33. Τοῦτο δε ἐλεγε, σημαινων ποιῳ θανατῳ ἠμελλεν ἀποθνησκειν.

34. Ἀπεκριθη αὐτῷ ὁ ὀχλος· Ἡμεις ἠκουσαμεν ἐκ τοῦ νομου, ὁτι ὁ Χριστος μενει

[illegible]

21. Hi ergo accesserunt ad Philippum, qui erat a Bethsaida Galilaeae, et rogabant eum, dicentes: Domine! volumus Jesum videre.

.ка. Си же пристѫпиша къ Филипоу, иже бѣ ѡтъ Видъсаиды Галилейскыѩ, и молѣахѫ ѥ, глаголѭште: Господи, хоштемъ Iисоуса видѣти.

22. Venit Philippus et dicit Andreae; Andreas rursum et Philippus dixerunt Jesu.

.кв. Прiиде Филипъ и глагола Андреови· Андрей же пакы и Филипъ глаголаста Iисоусови.

23. Jesus autem respondit eis, dicens: Venit hora, ut clarificetur Filius hominis.

.кг. Iисоусъ же ѡтъвѣшта има, глаголѩ: Прiиде година, да прославить сѧ Сынъ чловѣчьскый.

24. Amen, amen dico vobis, nisi granum frumenti cadens in terram mortuum fuerit,

.кд. Аминь, аминь глаголѭ вамъ, аште ꙁрьно пьшеничьно падъ въ ꙁемли не оумьреть,

25. ipsum solum manet; si autem mortuum fuerit, multum fructum affert. Qui amat animam suam, perdet eam; et qui odit animam suam in hoc mundo, in vitam aeternam custodit eam.

.ке. то ѥдино прѣбываѥть· аште ли оумьреть, мъногъ плодъ сътворить. Любай доушѫ своѭ погоубить ѭ· и ненавидѧй доуша своѥѩ въ мирѣ семь, въ животъ вѣчьный съхранить ѭ.

26. Si quis mihi ministrat, me sequatur; et ubi sum ego, illic et minister meus erit; si quis mihi ministraverit, honorificabit eum Pater meus.

.кѕ. Аште къто мънѣ слоужить, по мънѣ да ходить· и идеже ѥсмь аꙁъ, тоу и слоуга мой бѫдеть: аште къто мънѣ послоужить, почьтеть ѥ Ѡтьць мой.

27. Nunc anima mea turbata est: Et quid dicam? Pater, salvifica me ex hac hora! Sed propterea veni in horam hanc.

.кꙁ. Нынѣ доуша моѩ въꙁмѧтѧ сѧ. И чьто рекѫ; Ѡтьче, съпаси мѧ ѡтъ годины сеѩ! Нъ сего ради прiидохъ на годинѫ сиѭ.

28. Pater, clarifica nomen tuum! Venit ergo vox de coelo: Et clarificavi, et iterum clarificabo.

.ки. Ѡтьче, прослави имѧ твоѥ. Прiиде же гласъ съ небесе: И прославихъ, и пакы прославлѭ.

29. Turba ergo, quae stabat et audierat, dicebat, tonitruum esse factum. Alii dicebant: Angelus ei locutus est.

.кѳ. Народъ же стоѩ и слышавъ, глаголааше: Громъ бысть. Инии глаголаахѫ: Анъгелъ глагола ѥмоу.

30. Respondit Jesus, et dixit: Non propter me haec vox venit, sed propter vos.

.л. Ѡтъвѣшта Iисоусъ, и рече: Не мене ради гласъ сь бысть, нъ васъ ради.

31. Nunc judicium est mundi: non princeps hujus mundi ejicietur foras.

.ла. Нынѣ сѫдъ ѥсть мироу вьсемоу· нынѣ кънѧꙁь мира сего иꙁгънанъ бѫдеть вънъ.

32. Et ego si exaltatus fuero a terra, omnia traham ad me ipsum.

.лв. И аꙁъ аште вънесенъ бѫдѫ ѡтъ ꙁемлѩ, вьсѩ привлѣкѫ къ себѣ.

33. (Hoc autem dicebat, significans, qua morte esset moriturus.)

.лг. (Се же глаголааше, ꙁнаменаѩ, коѥѭ съмрътиѭ хотѣаше оумьрѣти.)

34. Respondit ei turba: Nos audivimus ex lege, quia Christus manet in

.лд. Ѡтъвѣшта ѥмоу народъ: Мы слышахомъ ѡтъ ꙁакона, ꙗко Христосъ прѣ-

εἰς τον αἰῶνα· και πῶς συ λεγεις· Ὅτι δεῖ ὑψωθῆναι τον υἱον τοῦ ἀνθρωπου; Τις ἐστιν οὗτος ὁ υἱος τοῦ ἀνθρωπου;

35. Εἰπεν οὐν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐτι μικρον χρονον το φῶς μεθ' ὑμῶν ἐστιν. Περιπατεῖτε ἑως το φῶς ἐχετε, ἱνα μη σκοτια ὑμᾶς καταλαβῃ· και ὁ περιπατῶν ἐν τῇ σκοτιᾳ οὐκ οἰδε ποῦ ὑπαγει.

36. Ἑως το φῶς ἐχετε, πιστευετε εἰς το φῶς, ἱνα υἱοι φωτος γενησθε. Ταῦτα ἐλαλησεν ὁ Ἰησοῦς, και ἀπελθων ἐκρυβη ἀπ' αὐτῶν.

37. Τοσαῦτα δε αὐτοῦ σημεῖα πεποιηκοτος ἐμπροσθεν αὐτῶν, οὐκ ἐπιστευον εἰς αὐτον·

38. ἱνα ὁ λογος Ἡσαΐου τοῦ προφητου πληρωθῇ, ὁν εἰπε· „Κυριε, τις ἐπιστευσε τῇ ἀκοῇ ἡμῶν; και ὁ βραχιων Κυριου τινι ἀπεκαλυφθη;“

39. Δια τοῦτο οὐκ ἠδυναντο πιστευειν, ὁτι παλιν εἰπεν Ἡσαΐας·

40. „Τετυφλωκεν αὐτῶν τους ὀφθαλμους, και πεπωρωκεν αὐτῶν την καρδιαν· ἱνα μη ἰδωσι τοῖς ὀφθαλμοῖς, και νοησωσι τῇ καρδιᾳ και ἐπιστραφῶσι και ἰασομαι αὐτους.“

41. Ταῦτα εἰπεν Ἡσαΐας, ὁτε εἰδε την δοξαν αὐτοῦ, και ἐλαλησε περι αὐτοῦ.

42. Ὁμως μεντοι και ἐκ τῶν ἀρχοντων πολλοι ἐπιστευσαν εἰς αὐτον· ἀλλα δια τους Φαρισαιους οὐχ ὡμολογουν, ἱνα μη ἀποσυναγωγοι γεγωνται·

43. ἠγαπησαν γαρ την δοξαν τῶν ἀνθρωπων μᾶλλον ὑπερ την δοξαν τοῦ Θεοῦ.

44. Ἰησοῦς δε ἐκραξε και εἰπεν· Ὁ πιστευων εἰς ἐμε, οὐ πιστευει εἰς ἐμε, ἀλλ' εἰς τον πεμψαντα με·

45. και ὁ θεωρῶν ἐμε θεωρεῖ τον πεμψαντα με.

46. Ἐγω φῶς εἰς τον κοσμον ἐληλυθα, ἱνα πᾶς ὁ πιστευων εἰς ἐμε ἐν τῇ σκοτιᾳ μη μεινῃ.

47. Και ἐαν τις μου ἀκουσῃ τῶν ῥηματων και μη φυλαξῃ, ἐγω οὐ κρινω αὐτον· οὐ γαρ ἦλθον, ἱνα κρινω τον κοσμον, ἀλλ' ἱνα σωσω τον κοσμον.

[illegible]

aeternum; et quomodo tu dicis: Oportet exaltari Filium hominis? Quis est iste Filius hominis?

35. Dixit ergo eis Jesus: Adhuc modicum lumen in vobis est.

Ambulate, dum lucem habetis, ut non vos tenebrae comprehendant; et qui ambulat in tenebris, nescit, quo vadat.

36. Dum lucem habetis, credite in lucem, ut filii lucis sitis. Haec locutus est Jesus, et abiit et abscondit se ab eis.

37. Cum autem tanta signa fecisset coram eis, non credebant in eum:

38. ut sermo Isaiae Prophetae impleretur, quem dixit: »Domine, quis credidit auditui nostro? et brachium Domini cui revelatum est?«

39. Propterea non poterant credere, quia iterum dixit Isaias:

40. »Excaecavit oculos eorum, et induravit cor eorum, ut non videant oculis, et non intelligant corde, et convertantur, et sanem eos.«

41. Haec dixit Isaias, quando vidit gloriam ejus, et locutus est de eo.

42. Verum tamen et ex principibus multi crediderunt in eum; sed propter Pharisaeos non confitebantur, ut a synagoga non ejicerentur.

43. Dilexerunt enim gloriam hominum magis, quam gloriam Dei.

44. Jesus autem clamavit, et dixit: Qui credit in me, non credit in me, sed in eum, qui misit me.

45. Et qui videt me, videt eum, qui misit me.

46. Ego lux in mundum veni, ut omnis, qui credit in me, in tenebris non maneat.

47. Et si quis audierit verba mea, et non custodierit, ego non judico eum; non enim veni, ut judicem mundum, sed ut salvificem mundum.

бывлѥть въ вѣкъ· и како ты глаголѥши· Въꙁнести сѧ подобаѥть Сынѹ чловѣчьскоуоумоу; Къто ѥсть сь Сынъ чловѣчьскый;

.лє. Рече же имъ Іисоусъ: Ѥште въ мало врѣмѧ свѣтъ въ васъ ѥсть.

Ходите, доньдеже свѣтъ имате, да тьма васъ не иметь· и ходѧй въ тьмѣ не вѣсть, камо идеть.

.лѕ. Доньдеже свѣтъ имате, вѣроуйте въ свѣтъ, да сынове свѣта бѫдете. Си глагола Іисоусъ, и шьдъ съкры сѧ ѿтъ нихъ.

.лꙁ. Толика же ꙁнаменим сътворьшоу ѥмоу прѣдъ ними, не вѣроваахѫ въ нь·

.лн. да събѫдеть сѧ слово Исаим Пророка, ѥже рече: Господи, къто вѣрова слоухоу нашемоу; и мышьца Господьнѩ комоу ѿтъкры сѧ;

.лѳ. Сего ради не можаахѫ вѣровати, ꙗко пакы рече Исаим:

.м. „Ѿслѣпи ѡчи ихъ, и ѡкаменилъ ѥсть срьдьце ихъ, да не видѧть ѡчима, и не раꙁоумѣѭть срьдьцьмь и ѡбратѧть сѧ, и исцѣлѭ ѩ.“

.ма. Си же рече Исаим, ѥгда видѣ славѫ ѥго, и глагола ѡ нѥмь.

.мв. Ѿбаче оубо и ѿтъ кънѧꙁь мъноѕи вѣроваша въ нь· нъ Фарисеи ради не исповѣдаахѫ, да не иꙁ съборишта иꙁгънани бѫдѫть.

.мг. Въꙁлюбиша бо паче славѫ чловѣчьскѫ, неже славѫ Божиѭ.

.мд. Іисоусъ же въꙁъва и рече: Вѣроуѩй въ мѧ, не вѣроуѥть въ мѧ, нъ въ посълавъшаего мѧ.

.мє. И видѧй мѧ видить посълавъшаего мѧ.

.мѕ. Аꙁъ свѣтъ въ вьсь миръ приидохъ, да вьсѣкъ вѣроуѩй въ мѧ, въ тьмѣ не прѣбѫдеть.

.мꙁ. И аште къто оуслышить глаголъи моѩ, и не съхранить ихъ, аꙁъ не сѫждѫ ѥмоу· не приидохъ бо, да сѫждѫ мироу, нъ да съпасѫ миръ.

48. Ὁ ἀθετῶν ἐμε και μη λαμβανων τα ῥηματα μου, ἐχει τον κρινοντα αὐτον· ὁ λογος, ὃν ἐλαλησα, ἐκεῖνος κρινεῖ αὐτον ἐν τῇ ἐσχατῃ ἡμερᾳ.

49. Ὁτι ἐγω ἐξ ἐμαυτοῦ οὐκ ἐλαλησα· ἀλλ' ὁ πεμψας με Πατηρ, αὐτος μοι ἐντολην ἐδωκε, τι εἰπω και τι λαλησω·

50. και οἰδα, ὁτι ἡ ἐντολη αὐτοῦ ζωη αἰωνιος ἐστιν. Ἁ οὐν λαλῶ ἐγω, καθως εἰρηκε μοι ὁ Πατηρ, οὑτω λαλῶ.

## Κεφ. XIII.

## [illegible]

1. Προ δε τῆς ἑορτῆς τοῦ Πασχα, εἰδως ὁ Ἰησοῦς, ὁτι ἐληλυθεν αὐτοῦ ἡ ὡρα ἱνα μεταβῇ ἐκ τοῦ κοσμου τουτου προς τον Πατερα, ἀγαπησας τους ἰδιους τους ἐν τῳ κοσμῳ, εἰς τελος ἠγαπησεν αὐτους.

2. Και δειπνου γενομενου, τοῦ διαβολου ἠδη βεβληκοτος εἰς την καρδιαν Ἰουδα Σιμωνος Ἰσκαριωτου, ἱνα αὐτον παραδῷ,

3. εἰδως ὁ Ἰησοῦς ὁτι παντα δεδωκεν αὐτῷ ὁ Πατηρ εἰς τας χεῖρας, και ὁτι ἀπο Θεοῦ ἐξῆλθε και προς τον Θεον ὑπαγει,

4. ἐγειρεται ἐκ τοῦ δειπνου, και τιθησι τα ἱματια, και λαβων λεντιον διεζωσεν ἑαυτον·

5. εἰτα βαλλει ὑδωρ εἰς τον νιπτῆρα και ἠρξατο νιπτειν τους ποδας τῶν μαθητῶν, και ἐκμασσειν τῳ λεντιῳ ᾧ ἠν διεζωσμενος.

6. Ἐρχεται οὐν προς Σιμωνα Πετρον· και λεγει αὐτῷ ἐκεῖνος· Κυριε, συ μου νιπτεις τους ποδας;

7. Ἀπεκριθη Ἰησοῦς και εἰπεν αὐτῷ· Ὁ ἐγω ποιῶ, συ οὐκ οἰδας ἀρτι, γνωσῃ δε μετα ταῦτα.

8. Λεγει αὐτῷ Πετρος· Οὐ μη νιψῃς τους ποδας μου εἰς τον αἰῶνα. Ἀπεκριθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἐαν μη νιψω σε, οὐκ ἐχεις μερος μετ' ἐμοῦ.

9. Λεγει αὐτῷ Σιμων Πετρος· Κυριε, μη τους ποδας μου μονον, ἀλλα και τας χεῖρας και την κεφαλην.

48. Qui spernit me et non accipit
verba mea, habet, qui judicet eum.
Sermo, quem locutus sum, ille judicabit
eum in novissimo die.
49. Quia ego ex me ipso non sum
locutus, sed qui misit me, Pater, ipse
mihi mandatum dedit, quid dicam et
quid loquar;
50. et scio, quia mandatum ejus vita
aeterna est. Quae ergo ego loquor, si-
cut dixit mihi Pater, sic loquor.

.мн. Ѡтъмѣтаѩй сѧ мене и не при-
ѥмлѩй глаголъ моихъ, имать сѫдѩштааго
ѥмоу. Слово, ѥже глаголахъ, то сѫдить
ѥмоу въ послѣдьнїй дьнь.
.мѳ. Ꙗко аꙁъ ѡ себѣ не глаголахъ, нъ
посълавый мѧ Ѡтьць, тъ мънѣ ꙁаповѣдь
дастъ, чьто рекѫ, и чьто въꙁглаголѭ,
.н. и вѣмь, ꙗко ꙁаповѣдь ѥго животъ
вѣчьный ѥсть. Ꙗже оубо аꙁъ глаголѭ,
ꙗкоже рече мънѣ Ѡтьць, тако глаголѭ.

## Caput XIII.

## Глава .гі.

1. Ante diem festum Paschae, sciens
Jesus, quia venit hora ejus, ut transeat
ex hoc mundo ad Patrem: cum dile-
xisset suos, qui erant in mundo, in finem
dilexit eos.
2. Et coena facta, cum diabolus jam
misisset in cor, ut traderet eum Judas
Simonis Iscariotae,
3. sciens, quia omnia dedit ei Pater
in manus, et quia a Deo exivit, et ad
Deum vadit;
4. surgit a coena, et ponit vestimenta
sua; et cum accepisset linteum, prae-
cinxit se;
5. deinde mittit aquam in pelvim, et
coepit lavare pedes discipulorum, et ex-
tergere linteo, quo erat praecinctus.
6. Venit ergo ad Simonem Petrum,
et dicit ei Petrus: Domine, tu mihi la-
vas pedes?
7. Respondit Jesus, et dixit ei: Quod
ego facio, tu nescis modo, scies autem
postea.
8. Dicit ei Petrus: Non lavabis mihi
pedes in aeternum. Respondit ei Jesus:
Si non lavero te, non habebis partem
mecum.
9. Dicit ei Simon Petrus: Domine,
non tantum pedes meos, sed et manus,
et caput.

.а. Прѣжде праꙁдьника Пасхы вѣды Ін-
соусъ, ꙗко прїиде ѥмоу година, да прѣ-
идеть ѡтъ мира сего къ Ѡтьцоу· въꙁлю-
бль своѩ сѫштаѩ въ вьсемь мирѣ, до
коньца въꙁлюби ѩ.
.в. И вечери бывъши, дїꙗволоу оуже
въложьшоу въ сръдьце Июдѣ Симоновоу
Искариотьскоуоумоу, да й прѣдасть,
.г. вѣды Інсоусъ, ꙗко вьсѩ дасть ѥмоу
Ѡтьць въ рѫцѣ, и ꙗко ѡтъ Бога иꙁиде,
и къ Богоу идеть·
.д. въставъ съ вечерѩ положи риꙁъи
своѩ· и прїимъ лентїй прѣпоꙗса сѧ·
.е. потомь же вълиꙗ водѫ въ оумыва-
льницѫ, и начатъ оумывати ногъи оуче-
никомъ и ѡтирати лентиѥмь, имьже бѣ
прѣпоꙗсанъ.
.ѕ. Прїиде же къ Симоноу Петроу· и
глагола ѥмоу тъ: Господи, ты ли мои
оумыѥши ноѕѣ;
.ꙁ. Ѡтъвѣшта Інсоусъ и рече ѥмоу:
Ѥже аꙁъ творѭ, ты не вѣси нынѣ, ра-
ꙁоумѣѥши же по сихъ.
.и. Глагола ѥмоу Петръ: Не оумыѥши
ногоу моѥю въ вѣкъ. Ѡтъвѣшта ѥмоу
Інсоусъ: Аште не оумыѭ тебе, не имаши
части съ мъноѭ.
.ѳ. Глагола ѥмоу Симонъ Петръ: Го-
споди, не ноѕѣ мои тъкъмо, нъ и рѫцѣ
и главѫ.

10. *Λεγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὁ λελουμενος οὐ χρειαν ἐχει ἢ τους ποδας νιψασθαι, ἀλλ' ἐστι καθαρος ὁλος· και ὑμεῖς καθαροι ἐστε, ἀλλ' οὐχι παντες.*

[illegible]

11. *Ἠιδει γαρ τον παραδιδοντα αὐτον· δια τοῦτο εἰπεν· Οὐχι παντες καθαροι ἐστε.*

[illegible]

12. *Ὅτε οὖν ἐνιψε τους ποδας αὐτῶν και ἐλαβε τα ἱματια αὐτοῦ, ἀναπεσων παλιν εἰπεν αὐτοῖς· Γινωσκετε, τι πεποιηκα ὑμῖν;*

[illegible]

13. *Ὑμεῖς φωνεῖτε με· Ὁ διδασκαλος, και Ὁ κυριος· και καλῶς λεγετε· εἰμι γαρ.*

[illegible]

14. *Εἰ οὖν ἐγω ἐνιψα ὑμῶν τους ποδας, ὁ κυριος και ὁ διδασκαλος, και ὑμεῖς ὀφειλετε ἀλληλων νιπτειν τους ποδας.*

[illegible]

15. *Ὑποδειγμα γαρ ἐδωκα ὑμῖν, ἱνα καθως ἐγω ἐποιησα ὑμῖν, και ὑμεῖς ποιῆτε.*

[illegible]

16. *Ἀμην ἀμην λεγω ὑμῖν· Οὐκ ἐστι δοῦλος μειζων του κυριου αὐτοῦ, οὐδε ἀποστολος μειζων τοῦ πεμψαντος αὐτον.*

[illegible]

17. *Εἰ ταῦτα οἰδατε, μακαριοι ἐστε, ἐαν ποιῆτε αὐτα.*

[illegible]

18. *Οὐ περι παντων ὑμῶν λεγω· ἐγω οἰδα, οὓς ἐξελεξαμην· ἀλλ' ἱνα ἡ γραφη πληρωθῇ· „Ὁ τρωγων μετ' ἐμοῦ τον ἀρτον ἐπῆρεν ἐπ' ἐμε την πτερναν αὐτοῦ.“*

[illegible]

19. *Ἀπ' ἀρτι λεγω ὑμῖν προ τοῦ γενεσθαι, ἱνα, ὁταν γενηται, πιστευσητε, ὁτι ἐγω εἰμι.*

[illegible]

20. *Ἀμην ἀμην λεγω ὑμῖν· Ὁ λαμβανων ἐαν τινα πεμψω ἐμε λαμβανει· ὁ δε ἐμε λαμβανων λαμβανει τον πεμψαντα με.*

[illegible]

21. *Ταῦτα εἰπων ὁ Ἰησοῦς ἐταραχθη τῷ πνευματι, και ἐμαρτυρησε και εἰπεν· Ἀμην ἀμην λεγω ὑμῖν, ὁτι εἱς ἐξ ὑμῶν παραδωσει με.*

[illegible]

22. *Ἐβλεπον οὖν εἰς ἀλληλους οἱ μαθηται, ἀπορουμενοι περι τινος λεγει.*

[illegible]

23. *Ἠν δε ἀνακειμενος εἱς τῶν μαθητῶν αὐτου ἐν τῷ κολπῳ τοῦ Ἰησοῦ, ὁν ἠγαπα ὁ Ἰησοῦς.*

[illegible]

10. Dicit ei Jesus: Qui lotus est, non indiget, nisi ut pedes lavet, sed est mundus totus. Et vos mundi estis, sed non omnes.

.і. Глаголѧ юмоу Інсоусъ: Измъвеный не трѣбоують, тъкъмо ноѕѣ оумыти, юсть бо вьсь чисть. И вы чисти юсте, нъ не вьси.

11. Sciebat enim, quisnam esset, qui traderet eum; propterea dixit: Non estis mundi omnes.

.аі. Вѣдѣаше бо прѣдаѭштаего ѝ· сего ради рече: Ꙗко не вьси чисти юсте.

12. Postquam ergo lavit pedes eorum, et accepit vestimenta sua, cum recubuisset iterum, dixit eis: Scitis, quid fecerim vobis?

.ві. Югда же оумы ноѕѣ ихъ, и приѩтъ ризъи своѩ, възлегъ пакы рече имъ: Вѣсте ли, чьто сътворихъ вамъ;

13. Vos vocatis me Magister et Domine, et bene dicitis; sum etenim.

.гі. Вы глашаюте мѧ Оучитель и Господь· и добрѣ глаголюте: Юсмь бо.

14. Si ergo ego lavi pedes vestros, Dominus et Magister, et vos debetis alter alterius lavare pedes.

.ді. Аште оубо азъ оумыхъ вамъ ноѕѣ, Господь и Оучитель, и вы длъжьни юсте гроугъ дроугоу оумывати ноѕѣ.

15. Exemplum enim dedi vobis, ut quemadmodum ego feci vobis, ita et vos faciatis.

.еі. Образъ бо дахъ вамъ, да ѩкоже азъ сътворихъ вамъ, и вы творите.

16. Amen, amen dico vobis: Non est servus major domino suo; neque apostolus major est eo, qui misit illum.

.ѕі. Аминъ, аминъ глаголѭ вамъ: Нѣсть рабъ болїй господинѧ своюго, ни апостолъ (сълъ) болїй посълавъшаего ѝ.

17. Si haec scitis, beati eritis, si feceritis ea.

.зі. Аште си вѣсте, блажени юсте, аште творите ѩ.

18. Non de omnibus vobis dico: ego scio, quos elegerim, sed ut adimpleatur Scriptura: »Qui manducat mecum panem, levabit contra me calcaneum suum.«

.иі. Не ѡ вьсѣхъ васъ глаголѭ· азъ бо вѣмь, ѩже избърахъ, нъ да сѫбѫдѫть сѧ Кънигы: „Ꙗко ѣдый съ мъноѭ хлѣбъ, въздвигнеть на мѧ пѧтѫ своѭ.“

19. Amodo dico vobis, priusquam fiat; ut cum factum fuerit, credatis, quia ego sum.

.ѳі. Отъ селѣ глаголѭ вамъ, прѣжде даже не бѫдеть· да югда бѫдеть, вѣрѫ имете, ѩко азъ юсмь.

20. Amen, amen dico vobis: Qui accipit, si quem misero, me accipit; qui autem me accipit, accipit eum, qui me misit.

.к. Аминъ, аминъ, глаголѭ вамъ: Приемлѧй аште кого посълѭ, мене приемлють· а приемлѧй мене приемлють посълавъшаего мѧ.

21. Cum haec dixisset Jesus, turbatus est spiritu: et protestatus est, et dixit: Amen, amen dico vobis: Quia unus ex vobis tradet me.

.ка. Си рекъ Інсоусъ възмѧти сѧ доухъмь· и съвѣдѣтельствова и рече: Аминъ, аминъ глаголѭ вамъ, ѩко юдинъ отъ васъ прѣдасть мѧ.

22. Aspiciebant ergo ad invicem discipuli, haesitantes, de quo diceret.

.кв. Съзираахѫ же сѧ междоу собоѭ оученици, не домышлѣѭште сѧ, ѡ комь глаголють.

23. Erat ergo recumbens unus ex discipulis ejus in sinu Jesu, quem diligebat Jesus.

.кг. Бѣ же възлежа юдинъ отъ оученикъ юго на лонѣ Інсоусовѣ, югоже любѣаше Інсоусъ.

24. *Νευει οὐν τουτῳ Σιμων Πετρος πυθεσθαι, τις ἀν εἰη περι οὑ λεγει.*

25. *'Επιπεσων δε ἐκεῖνος ἐπι το στῆθος τοῦ 'Ιησοῦ λεγει αὐτῷ· Κυριε, τις ἐστιν;*

26. *'Αποκρινεται ὁ 'Ιησοῦς· 'Εκεῖνος ἐστιν, ᾧ ἐγω βαψας το ψωμιον ἐπιδωσω. Και ἐμβαψας το ψωμιον, διδωσιν 'Ιουδᾳ Σιμωνος 'Ισκαριωτῃ.*

27. *Και μετα το ψωμιον τοτε εἰςῆλθεν εἰς ἐκεῖνον ὁ σατανᾶς. Λεγει οὐν αὐτῷ ὁ 'Ιησοῦς· 'Ο ποιεῖς, ποιησον ταχιον.*

28. *Τοῦτο δε οὐδεις ἐγνω τῶν ἀνακειμενων προς τι εἰπεν αὐτῷ·*

29. *τινες γαρ ἐδοκουν, ἐπει το γλωσσοκομον εἰχεν ὁ 'Ιουδας, ὁτι λεγει αὐτῷ ὁ 'Ιησους· 'Αγαρασον ὡν χρειαν ἐχομεν εἰς την ἑορτην· ἡ τοῖς πτωχοῖς ἱνα τι δῷ.*

30. *Λαβων οὐν το ψωμιον ἐκεῖνος εὐθεως ἐξῆλθεν· ἠν δε νυξ.*

31. *'Οτε οὐν ἐξῆλθε, λεγει ὁ Ιησοῦς· Νυν ἐδοξασθη ὁ υἱος τοῦ ἀνθρωπου, και ὁ Θεος ἐδοξασθη ἐν αὐτῷ.*

32. *Εἰ ὁ Θεος ἐδοξασθη ἐν αὐτῷ, και ὁ Θεος δοξασει αὐτον ἐν ἑαυτῷ, και εὐθυς δοξασει αὐτον.*

33. *Τεκνια, ἐτι μικρον μεθ' ὑμῶν εἰμι. Ζητησετε με, και καθως εἰπον τοῖς 'Ιουδαιοις· 'Οτι ὁπου ὑπαγω ἐγω, ὑμεῖς οὐ δυνασθε ἐλθεῖν, και ὑμῖν λεγω ἀρτι.*

34. *'Εντολην καινην διδωμι ὑμῖν, ἱνα ἀγαπᾶτε ἀλληλους· καθως ἠγαπησα ὑμᾶς, ἱνα και ὑμεῖς ἀγαπᾶτε ἀλληλους.*

35. *'Εν τουτῳ γνωσονται παντες ὁτι ἐμοι μαθηται ἐστε, ἐαν ἀγαπην ἐχητε ἐν ἀλληλοις.*

36. *Λεγει αὐτῷ Σιμων Πετρος· Κυριε, ποῦ ὑπαγεις; 'Απεκριθη αὐτῷ ὁ 'Ιησοῦς· 'Οπου ὑπαγω, οὐ δυνασαι μοι νῦν ἀκολουθῆσαι· ὑστερον δε ἀκολουθησεις μοι.*

24. Innuit ergo huic Simon Petrus, et dixit ei: Quis est, de quo dicit?

.кд. Поманѫ же семоу Симонъ Петръ, и рече ємоу: Къто ѥсть, ѡ нѥмьже глаголѥть;

25. Itaque cum recubuisset ille supra pectus Jesu, dixit ei: Domine, quis est?

.ке. Нападъ же тъ на пръси Іисоусовъи глагола ѥмоу: Господи, къто ѥсть;

26. Respondit Jesus: Ille est, cui ego intinctum panem porrexero. Et cum intinxisset panem, dedit Judae Simonis Iscariotae.

.кѕ. Ѡтъвѣшта Іисоусъ: Тъ ѥсть, ѥмоуже азъ ѡмочь хлѣбъ подамь. И ѡмочивъ хлѣбъ дастъ Июдѣ Симоновоу Искариотѣниноу.

27. Et post buccellam, introivit in eum satanas. Et dixit ei Jesus: Quod facis, fac citius!

.кз. И по хлѣбѣ, вънидє въ нь сотона. Глагола же ѥмоу Іисоусъ: Ѥже твориши, сътвори скорѣѥ.

28. Hoc autem nemo scivit discumbentium; ad quid dixerit ei:

.ки. Сего же никътоже не разоумѣ възлежаштіихъ, чьсо ради рече ѥмоу·

29. quidam enim putabant, quia loculos habebat Judas, quod dixisset ei Jesus: Eme ea, quae opus sunt nobis ad diem festum; aut egenis ut aliquid daret.

.кѳ. нѣціи бо мьнѣахѫ, понѥже скриницѫ имѣаше Июда, ꙗко глагола ѥмоу Іисоусъ: Коупи, ихъже трѣбоуѥмъ на праздьникъ, или ништіимъ да нѣчьто дасть.

30. Cum ergo accepisset ille buccellam, exivit continuo; erat autem nox.

.л. Приѥмъ же ѡнъ хлѣбъ изиде абиѥ· бѣ же ношть.

31. Cum ergo exisset, dixit Jesus: Nunc clarificatus est Filius hominis, et Deus clarificatus est in eo.

.ла. Ѥгда же изиде, глагола Іисоусъ: Нынѣ прослави сѧ Сынъ чловѣчьскый, и Богъ прослави сѧ ѡ нѥмь.

32. Si Deus clarificatus est in eo, et Deus clarificabit eum in semet ipso; et continuo clarificabit eum.

.лв. Аште Богъ прослави сѧ ѡ нѥмь, и Богъ прославить й въ себѣ, и абиѥ прославить й.

33. Filioli, adhuc modicum vobiscum sum. Quaeretis me, et sicut dixi Judaeis: Quo ego vado, vos non potestis venire: et vobis dico modo.

.лг. Чадьца, ѥште мало съ вами ѥсмь. Възиштете мене, и ꙗкоже рекохъ Июдеомъ· Ꙗможе азъ идѫ, вы не можете прінти· и вамъ глаголѭ нынѣ.

34. Mandatum novum do vobis: Ut diligatis invicem, sicut dilexi vos, ut et vos diligatis invicem.

.лд. Заповѣдь новѫ даѭ вамъ: Да любите дроугъ дроуга, ꙗкоже възлюбихъ вън, да и вы любите дроугъ дроуга.

35. In hoc cognoscent omnes, quia discipuli mei estis, si dilectionem habueritis ad invicem.

.ле. Ѡ семь разоумѣѭть вьси, ꙗко мои оучєници ѥсте, аште любъвь имате междоу собоѭ.

36. Dicit ei Simon Petrus: Domine, quo vadis? Respondit Jesus: Quo ego vado, non potes me modo sequi; sequeris autem postea.

.лѕ. Глагола ѥмоу Симонъ Петръ: Господи, камо идеши; Ѡтъвѣшта ѥмоу Іисоусъ: Ꙗможе азъ идѫ, ты не можеши нынѣ по мънѣ ити· послѣдь же по мънѣ идеши.

37. *Λεγει αὐτῷ ὁ Πετρος· Κυριε, διατι οὐ δυναμαι σοι ἀκολουθῆσαι ἀρτι; την ψυχην μου ὑπερ σοῦ θησω.*

[illegible]

38. *Ἀπεκριθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Την ψυχην σου ὑπερ ἐμοῦ θησεις; Ἀμην ἀμην λεγω σοι· Οὐ μη ἀλεκτωρ φωνησει, ἑως οὗ ἀπαρνησῃ με τρις.*

[illegible]

## *Κεφ. XIV.*

[illegible]

1. *Μη ταρασσεσθω ὑμῶν ἡ καρδια· πιστευετε εἰς τον Θεον, και εἰς ἐμε πιστευετε.*

[illegible]

2. *Ἐν τῇ οἰκιᾳ τοῦ Πατρος μου μοναι πολλαι εἰσιν· εἰ δε μη, εἰπον ἀν ὑμῖν. Πορευομαι ἑτοιμασαι τοπον ὑμῖν.*

[illegible]

3. *Και ἐαν πορευθῶ και ἑτοιμασω ὑμῖν τοπον, παλιν ἐρχομαι και παραληψομαι ὑμᾶς προς ἐμαυτον· ἱνα, ὁπου εἰμι ἐγω, και ὑμεῖς ἦτε.*

[illegible]

4. *Και ὁπου ἐγω ὑπαγω οἰδατε, και την ὁδον οἰδατε.*

[illegible]

5. *Λεγει αὐτῷ Θωμᾶς· Κυριε, οὐκ οἰδαμεν ποῦ ὑπαγεις· και πῶς δυναμεθα την ὁδον εἰδεναι;*

[illegible]

6. *Λεγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγω εἰμι ἡ ὁδος και ἡ ἀληθεια και ἡ ζωη· οὐδεις ἐρχεται προς τον Πατερα, εἰ μη δι' ἐμοῦ.*

[illegible]

7. *Εἰ ἐγνωκειτε με, και τον Πατερα μου ἐγνωκειτε ἀν· και ἀπ' ἀρτι γινωσκετε αὐτον, και ἑωρακατε αὐτον.*

[illegible]

8. *Λεγει αὐτῷ Φιλιππος· Κυριε, δεῖξον ἡμῖν τον Πατερα, και ἀρκεῖ ἡμῖν.*

[illegible]

9. *Λεγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Τοσοῦτον χρονον μεθ' ὑμῶν εἰμι, και οὐκ ἐγνωκας με Φιλιππε; Ὁ ἑωρακως ἐμε, ἑωρακε τον Πατερα· και πῶς συ λεγεις· Δειξον ἡμῖν τον Πατερα;*

[illegible]

10. *Οὐ πιστευεις ὁτι ἐγω ἐν τῷ Πατρι, και ὁ Πατηρ ἐν ἐμοι ἐστι; Τα ῥηματα, ἁ ἐγω λαλῶ ὑμῖν, ἀπ' ἐμαυτοῦ οὐ λαλῶ· ὁ δε Πατηρ ὁ ἐν ἐμοι μενων οὑτος ποιεῖ τα ἐργα.*

[illegible]

37. Dicit ei Petrus: Quare non possum te sequi modo? animam meam pro te ponam.

.лꙁ. Глагола юмоу Петръ: По чьто не могѫ нынѣ по тебѣ ити; доушѭ моѭ ꙁа тѧ положѫ.

38. Respondit ei Jesus: Animam tuam pro me pones? Amen, amen dico tibi: Non cantabit gallus, donec ter me neges.

.ли. Ѿтъвѣшта юмоу Інсоусъ: Доушѫ ли своѭ ꙁа мѧ положиши; Аминъ, аминъ глаголѭ тебѣ: Не възгласить коуръ, доньдеже ѿтъвръжеши сѧ мене трикраты.

## Caput XIV.

## Глава .ді.

1. Non turbetur cor vestrum. Creditis in Deum, et in me credite.

.а. Да не съмѫштаѭть сѧ срьдьце ваше· вѣроуюте въ Бога, и въ мѧ вѣроуйте.

2. In domo Patris mei mansiones multae sunt. Si quo minus, dixissem vobis; quia vado parare vobis locum.

.в. Въ домоу Ѿтьца моюго ѡбители мъногы сѫть. Аште ли же ни, реклъ быхъ вамъ· ꙗко идѫ оуготоватъ мѣста вамъ.

3. Et si abiero et praeparavero vobis locum, iterum venio et accipiam vos ad me ipsum, ut, ubi sum ego, et vos sitis.

.г. И аште идѫ и оуготовлѭ мѣсто вамъ, пакы приидѫ, и поимѫ вы къ себѣ, да, идеже юсмь аꙁъ, и вы бѫдете.

4. Et quo ego vado, scitis, et viam scitis.

.д. И ꙗможе аꙁъ идѫ, вѣсте, и пѫть вѣсте.

5. Dixit ei Thomas: Domine! nescimus, quo vadis; et quomodo possumus viam scire?

.е. Глагола юмоу Ѳома: Господи, не вѣмъ, камо идеши: и како пѫть можемъ вѣдѣти;

6. Dicit ei Jesus: Ego sum via et veritas et vita. Nemo venit ad Patrem, nisi per me.

.ѕ. Глагола юмоу Інсоусъ: Аꙁъ юсмь пѫть, и истина и животъ. Никътоже не приидеть къ Ѿтьцоу, тъкъмо мъноѭ.

7. Si cognovissetis me, et Patrem meum utique cognovissetis; et amodo cognoscetis eum, et vidistis eum.

.ꙁ. Аште мѧ бысте ꙁнали, и Ѿтьца моюго ꙁнали бысте оубо· и ѿтъ селѣ поꙁнаюте й, и видѣсте й.

8. Dicit ei Philippus: Domine! ostende nobis Patrem, et sufficit nobis.

.и. Глагола юмоу Филипъ: Господи, покажи намъ Ѿтьца, и довьлють намъ.

9. Dicit ei Jesus: Tanto tempore vobiscum sum et non cognovistis me? Philippe, qui videt me, videt et Patrem. Quomodo tu dicis: Ostende nobis Patrem?

.ѳ. Глагола юмоу Інсоусъ: Толико врѣма съ вами юсмь, и не поꙁнасте мене; Филипе, видѧй мѧ, видить и Ѿтьца· и како ты глаголюши: Покажи намъ Ѿтьца;

10. Non creditis, quia ego in Patre, et Pater in me est? Verba, quae ego loquor vobis, a me ipso non loquor; Pater autem in me manens, ipse facit opera.

.і. Не вѣроуюте ли, ꙗко аꙁъ въ Ѿтьци, и Ѿтьць въ мънѣ юсть; Глаголы, ꙗже аꙁъ глаголѭ вамъ, ѿ себѣ не глаголѭ· Ѿтьць же прѣбываѧй въ мънѣ, тъ творить дѣла.

11. Πιστευετε μοι ὅτι ἐγω ἐν τῷ Πατρι, και ὁ Πατηρ ἐν ἐμοι ἐστιν· εἰ δε μη, δια τα ἐργα αὐτα πιστευετε μοι.

12 Ἀμην ἀμην λεγω ὑμῖν· Ὁ πιστευων εἰς ἐμε, τα ἐργα ἁ ἐγω ποιῶ κακεῖνος ποιησει, και μειζονα τουτων ποιησει· ὅτι ἐγω προς τον Πατερα μου πορευομαι.

13. Και ὁ τι ἀν αἰτησετε ἐν τῷ ὀνοματι μου, τοῦτο ποιησω· ἱνα δοξασθῇ ὁ Πατηρ ἐν τῷ υἱῷ.

14. Ἐαν τι αἰτησητε ἐν τῷ ὀνοματι μου, ἐγω ποιησω.

15. Ἐαν ἀγαπᾶτε με, τας ἐντολας τας ἐμας τηρησατε.

16. Και ἐγω ἐρωτησω τον Πατερα, και ἀλλον Παρακλητον δωσει ὑμῖν, ἱνα μενῃ μεθ' ὑμῶν εἰς τον αἰῶνα,

17. το Πνεῦμα τῆς ἀληθειας, ὁ ὁ κοσμος οὐ δυναται λαβεῖν, ὅτι οὐ θεωρεῖ αὐτο, οὐδε γινωσκει αὐτο· ὑμεῖς δε γινωσκετε αὐτο, ὅτι παρ' ὑμῖν μενει, και ἐν ὑμῖν ἐσται.

18. Οὐκ ἀφησω ὑμᾶς ὀρφανους· ἐρχομαι προς ὑμᾶς.

19. Ἐτι μικρον και ὁ κοσμος με οὐκετι θεωρεῖ· ὑμεῖς δε θεωρεῖτε με, ὅτι ἐγω ζῶ, και ὑμεῖς ζησεσθε.

20. Ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμερᾳ γνωσεσθε ὑμεῖς, ὅτι ἐγω ἐν τῷ Πατρι μου, και ὑμεῖς ἐν ἐμοι, κἀγω ἐν ὑμῖν.

21. Ὁ ἐχων τας ἐντολας μου και τηρῶν αὐτας, ἐκεῖνος ἐστιν ὁ ἀγαπῶν με· ὁ δε ἀγαπῶν με ἀγαπηθησεται ὑπο του Πατρος μου· και ἐγω ἀγαπησω αὐτον, και ἐμφανισω αὐτῷ ἐμαὐτον.

22. Λεγει αὐτῷ Ἰουδας οὐχ ὁ Ἰσκαριωτης· Κυριε, τι γεγονεν, ὅτι ἡμῖν μελλεις ἐμφανιζειν σεαυτον, και οὐχι τῷ κοσμῳ;

23. Ἀπεκριθη ὁ Ἰησοῦς και εἶπεν αὐτῷ· Ἐαν τις ἀγαπᾷ με, τον λογον μου τηρησει, και ὁ Πατηρ μου ἀγαπησει αὐτον, και προς αὐτον ἐλευσομεθα, και μονην παρ' αὐτῷ ποιησομεν.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

11. Non creditis, quia ego in Patre, et Pater in me est?

12. Alioquin propter opera ipsa credite. Amen, amen, dico vobis: Qui credit in me, opera, quae ego facio, et ipse faciet, et majora horum faciet; quia ego ad Patrem vado.

13. Et quodcumque petieritis Patrem in nomine meo, hoc faciam: ut glorificetur Pater in Filio.

14. Si quid petieritis me in nomine meo, hoc faciam.

15. Si diligitis me, mandata mea servate.

16. Et ego rogabo Patrem, et alium Paracletum dabit vobis, ut maneat vobiscum in aeternum,

17. Spiritum veritatis, quem mundus non potest accipere, quia non videt eum, nec scit eum. Vos autem cognoscetis eum, quia apud vos manebit, et in vobis erit.

18. Non relinquam vos orphanos: veniam ad vos.

19. Adhuc modicum, et mundus me jam non videt. Vos autem videtis me, quia ego vivo et vos vivetis.

20. In illo die vos cognoscetis, quia ego sum in Patre meo, et vos in me, et ego in vobis.

21. Qui habet mandata mea, et servat ea, ille est, qui diligit me. Qui autem diligit me, diligetur a Patre meo; et ego diligam eum, et manifestabo ei me ipsum.

22. Dicit ei Judas, non ille Iscariotes: Domine, quid factum est, quia manifestaturus es nobis te ipsum, et non mundo?

23. Respondit Jesus, et dixit ei: Si quis diligit me, sermonem meum servabit, et Pater meus diliget eum, et ad eum veniemus, et mansionem apud eum faciemus;

.аі. Не вѣроуѥте ли, ꙗко аꙁъ въ Ѡтьци, и Ѡтьць въ мънѣ ѥсть;

.ві. Аште ли же ни, ꙁа та дѣла вѣрѫ ѥмлѣте ми. Аминъ, аминъ глаголѭ вамъ: Вѣроуѭй въ мѧ дѣла, ꙗже аꙁъ творѭ, и тъ сътворить, и больша сихъ сътворить· ꙗко аꙁъ къ Ѡтьцоу идѫ.

.гі. И ѥгоже колижьдо просите ѡтъ Ѡтьца въ имѧ моѥ, то сътворѭ, да прославить сѧ Ѡтьць ѡ Сыноу.

.ді. И аште чьсо просите въ имѧ моѥ, то сътворѭ.

.еі. Аште любите мѧ, ꙁаповѣди моѩ съблюдѣте.

.ѕі. И аꙁъ оумолѭ Ѡтьца, и иного Параклита (оувѣтьника) дасть вамъ, да бѫдеть съ вами въ вѣкъ,

.ꙁі. Доуха истины, ѥгоже вьсь миръ не можеть приꙗти, ꙗко не видить ѥго, ни ꙁнаѥть ѥго. Вы же ꙁнаѥте й, ꙗко съ вами прѣбываѥть и въ васъ бѫдеть.

.иі. Не ѡставлѭ васъ сиръ· прїидѫ къ вамъ.

.ѳі. Ѥште мало, и миръ мене къ томоу не видить. Вы же видите мѧ, ꙗко аꙁъ живѫ, и вы живи бѫдете.

.к. Въ тъ дьнь раꙁоумѣѥте вы, ꙗко аꙁъ въ Ѡтьци моѥмь, и вы въ мънѣ, и аꙁъ въ васъ.

.ка. Имѣꙗй ꙁаповѣди моѩ, и съблюдаѩй ѩ, тъ ѥсть любѧй мѧ. А любѧй мѧ, въꙁлюбленъ бѫдеть Ѡтьцьмь моимь, и аꙁъ въꙁлюблѭ й, и ꙗвлѭ сѧ ѥмоу самъ.

.кв. Глагола ѥмоу Июда, не тъ Искариотѣнинъ: Господи, чьто бысть, ꙗко намъ ꙗвити сѧ хоштеши, а не вьсемоу мироу;

.кг. Ѡтъвѣшта Іисоусъ, и рече ѥмоу: Аште къто любить мѧ, слово моѥ съблюдеть, и Ѡтьць мой въꙁлюбить й, и къ нѥмоу идевѣ, и ѡбитель оу нѥго сътворивѣ·

24. Ὁ μη ἀγαπῶν με τους λογους μου οὐ τηρεῖ· και ὁ λογος ὃν ἀκουετε οὐκ ἐστιν ἐμος, ἀλλα τοῦ πεμψαντος με Πατρος.

25. Ταῦτα λελαληκα ὑμῖν παρ' ὑμῖν μενων·

26. ὁ δε Παρακλητος το Πνεῦμα το Ἅγιον, ὁ πεμψει ὁ Πατηρ ἐν τῷ ὀνοματι μου, ἐκεῖνος ὑμᾶς διδαξει παντα, και ὑπομνησει ὑμᾶς παντα ἁ εἶπον ὑμῖν.

27. Εἰρηνην ἀφιημι ὑμῖν, εἰρηνην την ἐμην διδομι ὑμῖν· οὐ καθως ὁ κοσμος διδωσιν, ἐγω διδωμι ὑμῖν. Μη ταρασσεσθω ὑμῶν ἡ καρδια μηδε δειλιατω.

28. Ἠκουσατε ὅτι ἐγω εἶπον ὑμῖν· Ὑπαγω και ἐρχομαι προς ὑμᾶς. Εἰ ἠγαπᾶτε με, ἐχαρητε ἀν ὅτι εἶπον· Πορευομαι προς τον Πατερα· ὅτι ὁ Πατηρ μου μειζων μου ἐστιν.

29. Και νῦν εἴρηκα ὑμῖν πριν γενεσθαι· ἱνα ὅταν γενηται, πιστευσητε.

30. Οὐκ ἐτι πολλα λαλησω μεθ' ὑμῶν· ἐρχεται γαρ ὁ τοῦ κοσμου τουτου ἀρχων, και ἐν ἐμοι οὐκ ἐχει οὐδεν·

31. ἀλλ' ἱνα γνῷ ὁ κοσμος, ὅτι ἀγαπῶ τον Πατερα, και καθως ἐνετειλατο μοι ὁ Πατηρ, οὑτω ποιῶ. Ἐγειρεσθε, ἀγωμεν ἐντεῦθεν.

## Κεφ. XV.

1. Ἐγω εἰμι ἡ ἀμπελος ἡ ἀληθινη, και ὁ Πατηρ μου ὁ γεωργος ἐστιν.

2. Πᾶν κλῆμα ἐν ἐμοι μη φερον καρπον, αἰρει αὐτο· και πᾶν το καρπον φερον καθαιρει αὐτο, ἱνα πλειονα καρπον φερῃ.

3. Ἠδη ὑμεῖς καθαροι ἐστε δια τον λογον, ὃν λελαληκα ὑμῖν.

4. Μεινατε ἐν ἐμοι, κἀγω ἐν ὑμῖν. Καθως το κλῆμα οὐ δυναται καρπον φερειν ἀφ' ἑαυτοῦ, ἐαν μη μεινῃ ἐν τῇ ἀμπελῳ· οὑτως οὐδε ὑμεῖς, ἐαν μη ἐν ἐμοι μεινητε.

[illegible]

24. qui non diligit me, sermones meos non servat. Et sermo, quem audistis, non est meus, sed Ejus, qui misit me, Patris.

.кд. а не любѧй мене, словесъ моихъ не съблюдаѥть. И слово, ѥже слышасте, нѣсть моѥ, нъ посълавшаꙗго мѧ Отьцѧ.

25. Haec loquutus sum vobis, apud vos manens;

.ке. Си глаголахъ вамъ, съ вами прѣбываѭ·

26. Paracletus autem Spiritus sanctus, quem mittet Pater in nomine meo, ille vos docebit omnia, et suggeret vobis omnia, quaecumque dixero vobis.

.кѕ. Параклитъ же, Доухъ свѧтый, ѥгоже посълѥть Отьць въ имѧ моѥ, тъ вы наоучить вьсемоу, и въспомѧнеть вамъ вьсе, ѥлико рекохъ вамъ.

27. Pacem relinquo vobis, pacem meam do vobis; non quomodo mundus dat, ego do vobis. Non turbetur cor vestrum, neque formidet.

.кз. Миръ оставлꙗѭ вамъ, миръ мой даѭ вамъ· не ꙗкоже вьсь миръ даѥть, азъ даѭ вамъ. Да не съмѫштаѥть сѧ срьдьце ваше, ни оустрашаѥть.

28. Audistis, quia ego dixi vobis: Vado, et venio ad vos. Si diligeretis me, gauderetis utique, quia vado ad Patrem, quia Pater major me est.

.ки. Слышасте, ꙗко азъ рекохъ вамъ: Идѫ, и приидѫ къ вамъ. Аште бысте любили мѧ, възрадовали сѧ бысте оубо, ꙗко идѫ къ Отьцоу, ꙗко Отьць болій мене ѥсть.

29. Et nunc dixi vobis, prius, quam fiat, ut cum factum fuerit, credatis.

.кѳ. И нынѣ рекохъ вамъ, прѣжде даже не бѫдеть, да ѥгда бѫдеть, вѣрѫ имете.

30. Jam non multa loquar vobiscum: venit enim princeps mundi hujus, et in me non habet quidquam.

.л. Оуже не мъного възглаголѭ съ вами· градеть бо сего мира кънѧзь, и въ мънѣ не имать ничьсоже.

31. Sed ut cognoscat mundus, quia diligo Patrem, et sicut mandatum dedit mihi Pater, sic facio. Surgite, eamus hinc!

.лі. Нъ да разоумѣѥть миръ, ꙗко люблѭ Отьцѧ, и ꙗкоже заповѣда мънѣ Отьць, тако творѭ. Въстанѣте, идѣмъ отъ сѫдоу.

## Caput XV.

## Глава .еі.

1. Ego sum vitis vera, et Pater meus agricola est.

.а. Азъ ѥсмь лоза истиньнаꙗ, и Отьць мой дѣлатель ѥсть.

2. Omnem palmitem in me non ferentem fructum, tollet eum; et omnem, qui fert fructum, purgabit eum, ut fructum plus afferat.

.в. Вьсꙗкѫ розгѫ, о мънѣ не творѧштѫѭ плода, изьметь ѭ· и вьсꙗкѫ творѧштѫѭ плодъ, отрѣбить ѭ, да плодъ болій сътворить.

3. Jam vos mundi estis propter sermonem, quem locutus sum vobis.

.г. Оуже вы чисти ѥсте за слово, ѥже глаголахъ вамъ.

4. Manete in me, et ego in vobis. Sicut palmes non potest ferre fructum a semet ipso, nisi manserit in vite: sic nec vos, nisi in me manseritis.

.д. Бѫдѣте въ мънѣ, и азъ въ васъ. Ꙗкоже бо розга не можеть плода творити о себѣ, аште не бѫдеть на лозѣ, тако ни вы, аште не прѣбѫдете въ мънѣ.

5. Ἐγω εἰμι ἡ ἀμπελος, ὑμεῖς τα κληματα. Ὁ μενων ἐν ἐμοι, κἀγω ἐν αὐτῷ, οὑτος φερει καρπον πολυν· ὁτι χωρις ἐμοῦ οὐ δυνασθε ποιεῖν οὐδεν.

6. Ἐαν μη τις μεινη ἐν ἐμοι, ἐβληθη ἐξω ὡς το κλῆμα, και ἐξηρανθη, και συναγουσιν αὐτα και εἰς πῦρ βαλλουσι, και καιεται.

7. Ἐαν μεινητε ἐν ἐμοι, και τα ῥηματα μου ἐν ὑμῖν μεινῃ, ὁ ἐαν θελητε αἰτησεσθε, και γενησεται ὑμῖν.

8. Ἐν τουτῷ ἐδοξασθη ὁ Πατηρ μου, ἱνα καρπον πολυν φερητε· και γενησεσθε ἐμοι μαθηται.

9. Καθως ἠγαπησε με ὁ Πατηρ, κἀγω ἠγαπησα ὑμᾶς· μεινατε ἐν τῇ ἀγαπῃ τῇ ἐμῇ.

10. Ἐαν τας ἐντολας μου τηρησητε, μενεῖτε ἐν τῇ ἀγαπῃ μου· καθως ἐγω τας ἐντολας τοῦ Πατρος μου τετηρηκα, και μενω αὐτοῦ ἐν τῇ ἀγαπῃ.

11. Ταῦτα λελαληκα ὑμῖν, ἱνα ἡ χαρα ἡ ἐμη ἐν ὑμῖν μεινῃ, και ἡ χαρα ὑμῶν πληρωθῇ.

12. Αὑτη ἐστιν ἡ ἐντολη ἡ ἐμη, ἱνα ἀγαπᾶτε ἀλληλους, καθως ἠγαπησα ὑμᾶς.

13. Μειζονα ταυτης ἀγαπην οὐδεις ἐχει, ἱνα τις την ψυχην αὐτοῦ θῇ ὑπερ τῶν φιλων αὐτοῦ.

14. Ὑμεῖς φιλοι μου ἐστε, ἐαν ποιῆτε, ὁσα ἐγω ἐντελλομαι ὑμῖν.

15. Οὐκετι ὑμᾶς λεγω δουλους, ὁτι ὁ δοῦλος οὐκ οἰδε, τι ποιεῖ αὐτοῦ ὁ κυριος· ὑμᾶς δε εἰρηκα φιλους, ὁτι παντα ἁ ἠκουσα παρα τοῦ Πατρος μου ἐγνωρισα ὑμῖν.

16. Οὐχ ὑμεῖς με ἐξελεξασθε, ἀλλ' ἐγω ἐξελεξαμην ὑμᾶς και ἐθηκα ὑμᾶς, ἱνα ὑμεῖς ὑπαγητε και καρπον φερητε, και ὁ καρπος ὑμῶν μενῃ· ἱνα ὁ τι ἀν αἰτησητε τον Πατερα ἐν τῷ ὀνοματι μου, δῷ ὑμῖν.

17. Ταῦτα ἐντελλομαι ὑμῖν, ἱνα ἀγαπᾶτε ἀλληλους.

[illegible]

5. Ego sum vitis, vos palmites; qui manet in me, et ego in eo, hic fert fructum multum: quia sine me nihil potestis facere.

.є. Азъ ѥсмь лоза, а вы рожднѥ· иже бѫдеть въ мънѣ, и азъ въ нѥмь, тъ творить плодъ мъногъ· ꙗко безъ мене не можете сътворити ничьсоже.

6. Si quis in me non manserit, mittetur foras, sicut palmes, et arescet; et colligent eum, et in ignem mittent, et ardet.

.ѕ. Аште къто въ мънѣ не прѣбѫдеть, изврьжеть сѧ вънъ, ꙗко розга, и исъшеть· и съберѫть ѭ, и въ ѡгнь вьложѧть и съгорить.

7. Si manseritis in me, et verba mea in vobis manserint: quodcumque volueritis, petetis et fiet vobis.

.з. Аште прѣбѫдете въ мънѣ, и глаголи мои въ васъ прѣбѫдѫть: ѥмоуже колижьдо хоштете, просите, и бѫдеть вамъ.

8. In hoc clarificatus est Pater meus, ut fructum plurimum afferatis, et efficiamini mei discipuli.

.и. Ѡ семь прославить сѧ Ѡтьць мой, да плодъ мъногъ сътворите, и бѫдете мои оученици.

9. Sicut dilexit me Pater, et ego dilexi vos. Manete in dilectione mea.

.ѳ. Ꙗкоже възлюби мѧ Ѡтьць, и азъ възлюбихъ вꙑ. Бѫдѣте въ любъви моѥй.

10. Si praecepta mea servaveritis, manebitis in dilectione mea; sicut et ego Patris mei praecepta servavi, et maneo in Ejus dilectione.

.і. Аште заповѣди моꙗ съблюдете, прѣбѫдете въ любъви моѥй· ꙗкоже и азъ заповѣди Ѡтьца моѥго съблюдохъ, и прѣбꙑваѭ въ Ѥго любъви.

11. Haec locutus sum vobis, ut gaudium meum in vobis sit, et gaudium vestrum impleatur.

.аі. Си глаголахъ вамъ, да радость моꙗ въ васъ бѫдеть, и радость ваша напълнить сѧ.

12. Hoc est praeceptum meum, ut diligatis invicem, sicut dilexi vos.

.ві. Си же ѥсть заповѣдь моꙗ, да любите дроугъ дроуга, ꙗкоже азъ възлюбихъ вꙑ.

13. Majorem hac dilectionem nemo habet, ut animam suam ponat quis pro amicis suis.

.гі. Больша сеꙗ любъве никътоже не иматъ, да къто доушѫ своѭ положить за дроугꙑ своꙗ.

14. Vos amici mei estis, si feceritis, quae ego praecipio vobis.

.ді. Вꙑ дроузи мои ѥсте, аште творите, ѥлико азъ заповѣдаѭ вамъ.

15. Jam non dicam vos servos: quia servus nescit, quid faciat dominus ejus; vos autem dixi amicos, quia omnia, quaecumque audivi a Patre meo, nota feci vobis.

.еі. Оуже не глаголѭ васъ рабъ· рабъ бо не вѣсть, чьто творить господинъ ѥго· вꙑ же рекохъ дроугꙑ, ꙗко вьсе, ѥлико слꙑшахъ ѡтъ Ѡтьца моѥго, съказахъ вамъ.

16. Non vos me elegistis: sed ego elegi vos, et posui vos, ut eatis, et fructum afferatis, et fructus vester maneat; ut quodcumque petieritis Patrem in nomine meo, det vobis.

.ѕі. Не вꙑ мене избьрасте, нъ азъ избьрахъ вꙑ, и положихъ вꙑ, да идете и плодъ принесете, и плодъ вашь прѣбѫдеть· да ѥгоже колижьдо просите ѡтъ Ѡтьца въ имꙗ моѥ, дасть вамъ.

17. Haec mando vobis, ut diligatis invicem.

.зі. Си заповѣдаѭ вамъ, да любите дроугъ дроуга.

18. *Eἰ ὁ κοσμος ὑμᾶς μισεῖ, γινωσκετε ὁτι ἐμε πρῶτον ὑμῶν μεμισηκεν.*

19. *Eἰ ἐκ τοῦ κοσμου ἠτε, ὁ κοσμος ἀν το ἰδιον ἐφιλει· ὁτι δε ἐκ τοῦ κοσμου οὐκ ἐστε, ἀλλ' ἐγω ἐξελεξαμην ὑμᾶς ἐκ τοῦ κοσμου, δια τοῦτο μισεῖ ὑμᾶς ὁ κοσμος.*

20. *Μνημονευετε τοῦ λογου οὑ ἐγω εἰπον ὑμῖν. Οὐκ ἐστι δοῦλος μειζων τοῦ κυριου αὐτοῦ. Eἰ ἐμε ἐδιωξαν, και ὑμᾶς διωξουσιν· εἰ τον λογον μου ἐτηρησαν, και τον ὑμετερον τηρησουσιν.*

21. *'Αλλα ταῦτα παντα ποιησουσιν ὑμῖν δια το ὀνομα μου, ὁτι οὐκ οἰδασι τον πεμψαντα με.*

22. *Eἰ μη ἠλθον και ἐλαλησα αὐτοῖς, ἁμαρτιαν οὐκ εἰχον· νῦν δε προφασιν οὐκ ἐχουσι περι τῆς ἁμαρτιας αὐτῶν.*

23. *Ὁ ἐμε μισῶν και τον Πατερα μου μισεῖ.*

24. *Eἰ τα ἐργα μη ἐποιησα ἐν αὐτοῖς, ἁ οὐδεις ἀλλος πεποιηκεν, ἁμαρτιαν οὐκ εἰχον· νῦν δε και ἑωρακασι και μεμισηκασι και ἐμε και τον Πατερα μου.*

25. *'Αλλ' ἱνα πληρωθῇ ὁ λογος ὁ γεγραμμενος ἐν τῷ νομῳ αὐτῶν· „Ὁτι ἐμισησαν με δωρεαν."*

26. *Ὁταν δε ἐλθῃ ὁ Παρακλητος, ὁν ἐγω πεμψω ὑμῖν παρα τοῦ Πατρος, το Πνεῦμα τῆς ἀληθειας, ὁ παρα τοῦ Πατρος ἐκπορευεται, ἐκεῖνος μαρτυρησει περι ἐμοῦ·*

27. *και ὑμεῖς δε μαρτυρεῖτε, ὁτι ἀπ' ἀρχῆς μετ' ἐμοῦ ἐστε.*

[illegible]

## Κεφ. XVI.

1. *Ταῦτα λελαληκα ὑμῖν, ἱνα μη σκανδαλισθῆτε.*

2. *'Αποσυναγωγους ποιησουσιν ὑμᾶς· ἀλλ' ἐρχεται ὡρα, ἱνα πᾶς ὁ ἀποκτεινας ὑμᾶς δοξῃ λατρειαν προσφερειν τῷ Θεῷ.*

[illegible]

18. Si mundus vos odit, scitote, quia me priorem vobis odio habuit.

.иі. Аште миръ васъ ненавидить, вѣдите, ѩко мене прѣжде васъ възненавидѣ.

19. Si de mundo fuissetis, mundus, quod suum erat, diligeret; quia vero de mundo non estis, sed ego elegi vos de mundo, propterea odit vos mundus.

.ѳі. Аште ѿ мира бъсте были, миръ оубо своѥ любилъ бы· а ѩко ѿ мира нѣсте, нъ азъ изьбрахъ вы ѿ мира, сего ради ненавидитъ васъ миръ.

20. Mementote sermonis mei, quem ego dixi vobis: non est servus major domino suo. Si me persecuti sunt, et vos persequentur; si sermonem meum servaverunt, et vestrum servabunt.

.к. Помьните слово моѥ, ѥже азъ рекохъ вамъ: Нѣсть рабъ болій господина своѥго. Аште мѧ изгънаша, и вы ижденѫть· аште слово моѥ съблюдоша, и ваше съблюдѫть.

21. Sed haec omnia facient vobis propter nomen meum, quia nesciunt eum, qui misit me.

.ка. Нъ си вьсѩ сътворѧть вамъ за имѧ моѥ, ѩко не вѣдѧть посълавъшаго мѧ.

22. Si non venissem, et locutus fuissem eis, peccatum non haberent; nunc autem excusationem non habent de peccato suo.

.кв. Аште не быхъ пришьлъ и глаголалъ имъ, грѣха не быша имѣли· нынѣ же вины не имѫть ѡ грѣсѣ своѥмь.

23. Qui me odit, et Patrem meum odit.

.кг. Ненавидѧй мене, и Отьца моѥго ненавидить.

24. Si opera non fecissem in eis, quae nemo alius fecit, peccatum non haberent: nunc autem et viderunt, et oderunt et me et Patrem meum.

.кд. Аште дѣлъ не быхъ сътворилъ въ нихъ, ихъже никътоже инъ не сътвори, грѣха не быша имѣли· нынѣ же и видѣша и възненавидѣша и мене и Отьца моѥго.

25. Sed ut adimpleatur sermo, qui in lege eorum scriptus est: »Quia odio habuerunt me gratis.«

.ке. Нъ да събѫдеть сѧ слово писаноѥ въ законѣ ихъ: Ѩко възненавидѣша мѧ без оума.

26. Cum autem venerit Paracletus, quem ego mittam vobis a Patre, Spiritum veritatis, qui a Patre procedit, ille testimonium perhibebit de me:

.кѕ. Ѥгда же пріидеть Параклитъ (Оутѣшитель), ѥгоже азъ послѭ вамъ ѿ Отьца, Доуха истины, иже ѿ Отьца исходить, тъ имать съвѣдѣтельствовати ѡ мънѣ·

27. et vos testimonium perhibebitis, quia ab initio mecum estis.

.кз. и вы съвѣдѣтельствовати имате, ѩко искони съ мъноѭ ѥсте.

## Caput XVI.

## Глава .ѕі.

1. Haec locutus sum vobis, ut non scandalizemini.

.а. Се глаголахъ вамъ, да не съблазните сѧ.

2. Absque synagogis facient vos; sed venit hora, ut omnis, qui interficit vos, arbitretur se praestare Deo.

.в. Ѿ съборишть ижденѫть вы· нъ грѧдеть година, да вьсѩкъ, иже оубиѥть вы, мьнить сѧ слоужьбѫ приносити Богоу.

3. Και ταῦτα ποιησουσιν ὑμῖν, ὅτι οὐκ ἐγνωσαν τον Πατερα οὐδε ἐμε.

.Ⰲ. Ⰺ ⱄⰺ ⱄⱏⱅⰲⱁⱃⱔⱅⱏ ⰲⰰⰿⱏ, ⱑⰽⱁ ⱀⰵ ⱂⱁⰸⱀⰰⱎⱔ Ⱉⱅⱐⱌⰰ ⱀⰺ ⰿⰵⱀⰵ.

4. Ἀλλα ταῦτα λελαληκα ὑμῖν, ἱνα ὅταν ἔλθῃ ἡ ὡρα, μνημονευητε αὐτῶν, ὅτι ἐγω εἰπον ὑμῖν· ταῦτα δε ὑμῖν ἐξ ἀρχῆς οὐκ εἰπον, ὅτι μεθ' ὑμῶν ἠμην.

.Ⰳ. Ⱀⱏ ⱄⰺ ⰳⰾⰰⰳⱁⰾⰰⱈⱏ ⰲⰰⰿⱏ, ⰴⰰ ⰵⰳⰴⰰ ⱂⱃⰺⰹⰴⰵⱅⱏ ⰳⱁⰴⰺⱀⰰ, ⱂⱁⰿⱐⱀⰺⱅⰵ ⱄⰺ, ⱑⰽⱁ ⰰⰸⱏ ⱃⱑⱈⱏ ⰲⰰⰿⱏ· ⱄⰺⱈⱏ ⰶⰵ ⰲⰰⰿⱏ ⰺⰸⱂⱃⱏⰲⰰ ⱀⰵ ⱃⱑⱈⱏ, ⱑⰽⱁ ⱄⱏ ⰲⰰⰿⰺ ⰱⱑⰰⱈⱏ.

5. Νῦν δε ὑπαγω προς τον πεμψαντα με, και οὐδεις ἐξ ὑμῶν ἐρωτᾷ με· Ποῦ ὑπαγεις;

.Ⰴ. Ⱀⱏⰹⱀⱑ ⰶⰵ ⰹⰴⱆ ⰽⱏ ⱂⱁⱄⱏⰾⰰⰲⱏⱎⱆⰿⱆ ⰿⱔ, ⰹ ⱀⰺⰽⱏⱅⱁⰶⰵ ⱁⱅⱏ ⰲⰰⱄⱏ ⱀⰵ ⰲⱏⱂⱃⰰⱎⰰⰵⱅⱏ ⰿⰵⱀⰵ· Ⰽⰰⰿⱁ ⰹⰴⰵⱎⰺ;

6. Ἀλλ' ὅτι ταυτα λελαληκα ὑμῖν, ἡ λυπη πεπληρωκεν ὑμῶν την καρδιαν.

.Ⰵ. Ⱀⱏ ⱑⰽⱁ ⱄⰺ ⰳⰾⰰⰳⱁⰾⰰⱈⱏ ⰲⰰⰿⱏ, ⱄⰽⱃⱏⰱⱐ ⰹⱄⱂⰾⱏⱀⰺ ⱄⱃⱏⰴⱐⱌⰵ ⰲⰰⱎⰵ.

7. Ἀλλ' ἐγω την ἀληθειαν λεγω ὑμῖν, συμφερεῖ ὑμῖν, ἱνα ἐγω ἀπελθω. Ἐαν γαρ μη ἀπελθω, ὁ Παρακλητος οὐκ ἐλευσεται προς ὑμᾶς· ἐαν δε πορευθῶ, πεμψω αὐτον προς ὑμᾶς.

.Ⰶ. Ⱀⱏ ⰰⰸⱏ ⰹⱄⱅⰺⱀⱆ ⰳⰾⰰⰳⱁⰾⱓ ⰲⰰⰿⱏ, ⰾⱆⱍⱃⱑⰵ ⰵⱄⱅⰵ ⰲⰰⰿⱏ, ⰴⰰ ⰰⰸⱏ ⰹⰴⱆ. Ⰰⱎⱅⰵ ⰱⱁ ⱀⰵ ⰹⰴⱆ ⰰⰸⱏ, Ⱂⰰⱃⰰⰽⰾⰺⱅⱏ ⱀⰵ ⱂⱃⰺⰹⰴⰵⱅⱏ ⰽⱏ ⰲⰰⰿⱏ· ⰰⱎⱅⰵ ⰾⰺ ⰶⰵ ⰹⰴⱆ, ⱂⱁⱄⱏⰾⱓ ⰺ ⰽⱏ ⰲⰰⰿⱏ.

8. Και ἐλθων ἐκεῖνος ἐλεγξει τον κοσμον περι ἁμαρτιας και περι δικαιοσυνης και περι κρισεως.

.Ⰷ. Ⰺ ⱂⱃⰺⱎⰵⰴⱏ ⱁⱀⱏ ⱁⰱⰾⰺⱍⰺⱅⱏ ⰲⰵⱄⱐ ⰿⰺⱃⱏ ⱁ ⰳⱃⱑⱄⱑ, ⰹ ⱁ ⱂⱃⰰⰲⰵⰴⱑ ⰹ ⱁ ⱄⱆⰴⱑ.

9. Περι ἁμαρτιας μεν, ὅτι οὐ πιστευουσιν εἰς ἐμε·

.Ⰸ. Ⱉ ⰳⱃⱑⱄⱑ ⱆⰱⱁ, ⱑⰽⱁ ⱀⰵ ⰲⱑⱃⱆⱓⱅⱏ ⰲⱏ ⰿⱔ·

10. περι δικαιοσυνης δε, ὅτι προς τον Πατερα ὑπαγω, και οὐκ ἐτι θεωρεῖτε με·

.Ⰹ. Ⱉ ⱂⱃⰰⰲⰵⰴⱑ ⰶⰵ, ⱑⰽⱁ ⰽⱏ Ⱉⱅⱏⱌⱆ ⰹⰴⱆ, ⰹ ⰽⱏ ⱅⱁⰿⱆ ⱀⰵ ⰲⰺⰴⰺⱅⰵ ⰿⰵⱀⰵ·

11. περι δε κρισεως, ὅτι ὁ ἀρχων τοῦ κοσμου τουτου κεκριται.

.ⰀⰉ. Ⱉ ⱄⱆⰴⱑ ⰶⰵ, ⱑⰽⱁ ⰽⱏⱀⱔⰸⱐ ⰿⰺⱃⰰ ⱄⰵⰳⱁ ⱁⱄⱆⰶⰴⰵⱀⱏ ⰱⱏⰹⱄⱅⱏ.

12. Ἐτι πολλα ἐχω λεγειν ὑμῖν, ἀλλ' οὐ δυνασθε βασταζειν ἀρτι·

.ⰁⰉ. Ⰵⱎⱅⰵ ⰿⱀⱁⰳⱁ ⰹⰿⰰⰿⱏ ⰳⰾⰰⰳⱁⰾⰰⱅⰺ ⰲⰰⰿⱏ, ⱀⱏ ⱀⰵ ⰿⱁⰶⰵⱅⰵ ⱀⱁⱄⰺⱅⰺ ⱀⱏⰹⱀⱑ·

13. ὅταν δε ἐλθῃ ἐκεῖνος, το Πνεῦμα τῆς ἀληθειας, ὁδηγησει ὑμᾶς εἰς πᾶσαν την ἀληθειαν· οὐ γαρ λαλησει ἀφ' ἑαυτοῦ, ἀλλ' ὁσα ἀν ἀκουσῃ λαλησει, και τα ἐρχομενα ἀναγγελεῖ ὑμῖν.

.ⰂⰉ. Ⰵⰳⰴⰰ ⰶⰵ ⱂⱃⰺⰹⰴⰵⱅⱏ ⱁⱀⱏ, ⰴⱆⱈⱏ ⰹⱄⱅⰺⱀⱐⱀⱏⰹ, ⱀⰰⱄⱅⰰⰲⰺⱅⱏ ⰲⰰⱄ ⱀⰰ ⰲⱏⱄⱑⰽⱆ ⰹⱄⱅⰺⱀⱆ· ⱀⰵ ⱁ ⱄⰵⰱⱑ ⰱⱁ ⰳⰾⰰⰳⱁⰾⰰⱅⰺ ⰹⰿⰰⱅⱏ, ⱀⱏ ⰵⰾⰺⰽⱁ ⰰⱎⱅⰵ ⱆⱄⰾⱏⰹⱎⰺⱅⱏ, ⰳⰾⰰⰳⱁⰾⰰⱅⱏ ⰹⰿⰰⱅⱏ, ⰹ ⰳⱃⱔⰴⱆⱎⱅⰰⰰ ⰲⱏⰸⰲⱑⱄⱅⰺⱅⱏ ⰲⰰⰿⱏ.

14. Ἐκεῖνος ἐμε δοξασει, ὅτι ἐκ τοῦ ἐμοῦ ληψεται και ἀναγγελεῖ ὑμῖν.

.ⰃⰉ. Ⱉⱀⱏ ⰿⱔ ⱂⱃⰵⱄⰾⰰⰲⰺⱅⱏ, ⱑⰽⱁ ⱁⱅⱏ ⰿⱁⰵⰳⱁ ⱂⱃⰺⰹⰿⰵⱅⱏ ⰹ ⰲⱏⰸⰲⱑⱄⱅⰺⱅⱏ ⰲⰰⰿⱏ.

15. Παντα ὁσα ἐχει ὁ Πατηρ, ἐμα ἐστιν· δια τοῦτο εἰπον, ὅτι ἐκ τοῦ ἐμοῦ ληψεται, και ἀναγγελεῖ ὑμῖν.

.ⰄⰉ. Ⰲⱐⱄⱑ ⰵⰾⰺⰽⰰ ⰹⰿⰰⱅⱐ Ⱉⱅⱐⱌⱐ, ⰿⱁⱑ ⱄⱆⱅⱐ· ⱄⰵⰳⱁ ⱃⰰⰴⰺ ⱃⱑⱈⱏ, ⱑⰽⱁ ⱁⱅⱏ ⰿⱁⰵⰳⱁ ⱂⱃⰺⰹⰿⰵⱅⱏ, ⰹ ⰲⱏⰸⰲⱑⱄⱅⰺⱅⱏ ⰲⰰⰿⱏ.

16. Μικρον και οὐ θεωρεῖτε με, και παλιν μικρον, και ὀψεσθε με, ὅτι ἐγω ὑπαγω προς τον Πατερα.

.ⰅⰉ. Ⰲⱏ ⰿⰰⰾⱑ ⰹ ⰽⱏ ⱅⱁⰿⱆ ⱀⰵ ⰲⰺⰴⰺⱅⰵ ⰿⰵⱀⰵ, ⰹ ⱂⰰⰽⱏⰹ ⰲⱏ ⰿⰰⰾⱑ ⰹ ⱆⰸⱃⰺⱅⰵ ⰿⱔ, ⱑⰽⱁ ⰹⰴⱆ ⰽⱏ Ⱉⱅⱏⱌⱆ.

17. Εἰπον οὖν ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ προς ἀλληλους· Τι ἐστι τοῦτο, ὁ λεγει ἡμῖν· Μικρον και οὐ θεωρεῖτε, και παλιν μικρον

.ⰆⰉ. Ⱃⱑⱎⱔ ⰶⰵ ⱁⱅⱏ ⱆⱍⰵⱀⰺⰽⱏ ⰵⰳⱁ ⰽⱏ ⰴⱃⱆⰳⱆ· Ⱍⱐⱅⱁ ⰵⱄⱅⱐ ⱄⰵ, ⰵⰶⰵ ⰳⰾⰰⰳⱁⰾⱆⰵⱅⱏ ⱀⰰⰿⱏ· Ⰲⱏ ⰿⰰⰾⱑ ⰹ ⱀⰵ ⰲⰺⰴⰺⱅⰵ ⰿⰵⱀⰵ,

3. Et haec facient vobis, quia non noverunt Patrem, neque me.

.г. И си сътворꙗть вамъ, ꙗко не познаша Ѿтьца ни мене.

4. Sed haec locutus sum vobis, ut cum venerit hora eorum reminiscamini, quia ego dixi vobis.

.д. Нъ се глаголахъ вамъ, да ѥгда приидеть годинa, помьните сего, ꙗко азъ рекохъ вамъ.

5. Haec autem vobis ab initio non dixi, quia vobiscum eram. Et nunc vado ad eum, qui misit me, et nemo ex vobis interrogat me: Quo vadis?

.е. Сего же вамъ испръва не рекохъ, ꙗко съ вами бѣхъ. Нынѣ же идѫ къ посълавъшоуоумоу ма, и никътоже ѿтъ васъ не въпрашаѥть мене: Камо идеши;

6. Sed quia haec locutus sum vobis, tristitia implevit cor vestrum.

.ѕ. Нъ ꙗко се глаголахъ вамъ, скръбь наплъни сръдьце ваше.

7. Sed ego veritatem dico vobis: expedit vobis, ut ego vadam; si enim non abiero, Paracletus non veniet ad vos; si autem abiero, mittam eum ad vos.

.з. Нъ азъ истинѫ глаголѭ вамъ· оунѥ ѥсть вамъ, да азъ идѫ· аште бо не идѫ (азъ), Параклитъ не прїидеть къ вамъ· аште ли идѫ, посълѭ й къ вамъ.

8. Et cum venerit ille, arguet mundum de peccato, et de justitia, et de judicio.

.и. И пришьдъ ѡнъ, обличить весь миръ ѡ грѣсѣ, и ѡ правьдѣ, и ѡ сѫдѣ.

9. De peccato quidem, quia non crediderunt in me;

.ѳ. Ѡ грѣсѣ оубо, ꙗко не вѣроваша въ ма·

10. de justitia vero, quia ad Patrem vado, et jam non videbitis me;

.і. ѡ правьдѣ же, ꙗко къ Ѿтьцоу идѫ, и къ томоу не видите мене·

11. de judicio autem, quia princeps hujus mundi jam judicatus est.

.аі. ѡ сѫдѣ же, ꙗко кънѧзь мира сего ѡсѫжденъ бысть.

12. Adhuc multa habeo vobis dicere: sed non potestis portare modo.

.ві. Ѥште мъного имамь глаголати вамъ· нъ не можете носити нынѣ.

13. Cum autem venerit ille Spiritus veritatis, docebit vos omnem veritatem. Non enim loquetur a semet ipso, sed quaecumque audiet, loquetur, et quae ventura sunt, annuntiabit vobis.

.гі. Ѥгда же прїидеть ѡнъ Доухъ истиньный, наставить вы на вьсꙗкѫ истинѫ. Не ѡ себѣ бо глаголати иматъ, нъ ѥлико аште оуслышить, глаголати иматъ, и градѫштаꙗ възвѣстить вамъ.

14. Ille me clarificabit: quia de meo accipiet et annuntiabit vobis.

.ді. Ѡнъ ма прославить· ꙗко ѿтъ моѥго прїиметь и възвѣстить вамъ.

15. Omnia, quaecumque habet Pater, mea sunt. Propterea dixi: Quia de meo accipiet, et annuntiabit vobis.

.еі. Вьсе, ѥлико иматъ Ѿтьць, моѥ ѥсть. Сего ради рекохъ, ꙗко ѿтъ моѥго прїиметь и възвѣстить вамъ.

16. Modicum, et jam non videbitis me; et iterum modicum, et videbitis me, quia vado ad Patrem.

.ѕі. Въ малѣ, и къ томоу не видите мене, и пакы въ малѣ, и оузьрите ма· ꙗко идѫ къ Ѿтьцоу.

17. Dixerunt ergo ex discipulis ejus ad invicem: Quid est hoc, quod dicit nobis: Modicum, et non videbitis me;

.зі. Рекоша же оучениции ѥго къ себѣ: Чьто ѥсть се, ѥже глаголѥть намъ: Въ малѣ, и не видите мене· и пакы въ ма-

*και όψεσθε με; και· Ότι έγω ύπαγω προς τον Πατερα;*

18. *Έλεγον ούν· Τούτο τι έστιν ό λεγει, το μικρον; Ούκ οίδαμεν, τι λαλεῖ.*

19. *Έγνω ούν ό Ἰησοῦς, ότι ήθελον αύτον έρωτᾶν, και είπεν αύτοῖς· Περι τουτου ζητεῖτε μετ' άλληλων, ότι είπον· Μικρον και ού θεωρεῖτε με, και παλιν μικρον και όψεσθε με;*

20. *Άμην άμην λεγω ύμῖν, ότι κλαυσετε και θρηνησετε ύμεῖς, ό δε κοσμος χαρησεται· ύμεῖς δε λυπηθησεσθε, άλλ' ή λυπη ύμῶν εἰς χαραν γενησεται.*

21. *Ή γυνη όταν τικτῃ, λυπην έχει, ότι ἦλθεν ή ώρα αύτῆς· όταν δε γεννηση το παιδιον, ούκ έτι μνημονευει τῆς θλιψεως δια την χαραν, ότι έγεννηθη άνθρωπος εἰς τον κοσμον.*

22. *Και ύμεῖς ούν λυπην μεν νῦν έχετε· παλιν δε όψομαι ύμᾶς και χαρησεται ύμῶν ή καρδια, και την χαραν ύμῶν ούδεις αίρει άφ' ύμῶν.*

23. *Και έν έκεινῃ τῇ ήμερᾳ έμε ούκ έρωτησετε ούδεν. Άμην άμην λεγω ύμῖν, ότι όσα άν αίτησητε τον Πατερα έν τῷ όνοματι μου, δωσει ύμῖν.*

24. *Έως άρτι ούκ ῄτησατε ούδεν έν τῷ όνοματι μου· αίτεῖτε, και ληψεσθε, ίνα ή χαρα ύμῶν ᾖ πεπληρωμενη.*

25. *Ταῦτα έν παροιμιαις λελαληκα ύμῖν· άλλ' έρχεται ώρα, ότε ούκ έτι έν παροιμιαις λαλησω ύμῖν, άλλα παῤῥησιᾳ περι τοῦ Πατρος άναγγελῶ ύμῖν.*

26. *Έν έκεινῃ τῇ ήμερᾳ έν τῷ όνοματι μου αίτησεσθε· και ού λεγω ύμῖν, ότι έγω έρωτησω τον Πατερα περι ύμῶν·*

27. *αύτος γαρ ό Πατηρ φιλεῖ ύμᾶς, ότι ύμεῖς έμε πεφιληκατε, και πεπιστευκατε, ότι έγω παρα τοῦ Θεοῦ έξῆλθον.*

28. *Έξηλθον παρα τοῦ Πατρος, και έληλυθα εἰς τον κοσμον· παλιν άφιημι τον κοσμον, και πορευομαι προς τον Πατερα.*

[illegible]

et iterum modicum, et videbitis me; et quia vado ad Patrem?

18. Dicebant ergo: Quid est hoc, quod dicit modicum? nescimus, quid loquitur.

19. Cognovit autem Jesus, quia volebant eum interrogare, et dixit eis: De hoc quaeritis inter vos, quia dixi: Modicum, et non videbitis me, et iterum modicum, et videbitis me.

20. Amen, amen dico vobis: Quia plorabitis et flebitis vos, mundus autem gaudebit; vos autem contristabimini, sed tristitia vestra vertetur in gaudium.

21. Mulier cum parit, tristitiam habet, quia venit hora ejus; cum autem pepererit puerum, jam non meminit pressurae propter gaudium, quia natus est homo in mundum.

22. Et vos igitur nunc quidem tristitiam habetis; iterum autem videbo vos, et gaudebit cor vestrum, et gaudium vestrum nemo tollet a vobis.

23. Et in illo die me non rogabitis quidquam. Amen, amen dico vobis:

Si quid petieritis Patrem in nomine meo, dabit vobis.

24. Usque modo non petistis quidquam in nomine meo: petite et accipietis, ut gaudium vestrum sit plenum.

25. Haec in proverbiis locutus sum vobis; venit hora, cum jám non in proverbiis loquar vobis, sed palam de Patre annuntiabo vobis.

26. In illo die in nomine meo petetis; et non dico vobis, quia ego rogabo Patrem de vobis:

27. ipse enim Pater amat vos, quia vos me amastis, et credidistis, quia ego a Deo exivi.

28. Exivi a Patre, et veni in mundum; iterum relinquo mundum, et vado ad Patrem.

лѣ, и оуꙃьрите мѧ· и ꙗко идѫ къ Отъсоу;

.ні. Глаголаахѫ же: Чьто ѥсть се, ѥже глаголѥть, въ малѣ; не вѣмъ, чьто глаголѥть.

.ѳі. Раꙁоумѣ же Іисоусъ, ꙗко хотѣахѫ въпрашати и҆, и рече имъ: О семъ ли въпрашаѥте сѧ междоу собоѭ, ꙗко рекохъ: Въ малѣ, и не видите мене, и пакы въ малѣ, и оуꙃьрите мѧ.

.к. Аминъ аминъ глаголѭ вамъ: Ꙗко въсплачете сѧ и въꙁрыдаѥте вы, а миръ въꙁрадоуѥть сѧ· вы же печальни бѫдете, нъ печаль ваша на радость бѫдеть.

.ка. Жена ѥгда раждаѥть, печаль имать, ꙗко пріиде година ѥѩ· ѥгда же родить отроча, къ томоу не помьнить печали ꙁа радость, ꙗко роди сѧ чловѣкъ въ миръ.

.кв. И вы оубо нынѣ печальни ѥсте· пакы же оуꙃьрѭ вы, и въꙁрадоуѥть сѧ срьдьце ваше, и радости вашеѩ никътоже не въꙁьметь отъ васъ.

.кг. И въ тъ дьнь мене не въспросите ничьсоже. Аминъ, аминъ глаголѭ вамъ· Аще чьсо просите отъ Отьца въ имѧ моѥ, дасть вамъ.

.кд. До селѣ не просисте ничьсоже въ имѧ моѥ· просите и пріимете, да радость ваша наплънѥна бѫдеть.

.ке. Се въ притъчахъ глаголахъ вамъ· нъ градеть година, ѥгда къ томоу въ притъчахъ не въꙁглаголѭ вамъ, нъ не обиноуѩ сѧ о Отьци въꙁвѣштѫ вамъ.

.кѕ. Въ тъ дьнь въ имѧ моѥ въспросите· и не глаголѭ вамъ, ꙗко аꙁъ оумолѭ Отьцꙗ о васъ·

.кꙁ. самъ бо Отьць любить вы, ꙗко вы мене въꙁлюбисте, и вѣровасте, ꙗко аꙁъ отъ Бога иꙁидохъ.

.ки. Иꙁидохъ отъ Отьца и пріидохъ въ миръ· пакы оставлѭ миръ, и идѫ къ Отьцоу.

29. *Λεγουσιν αὐτῷ οἱ μαθηται αὐτοῦ· Ἰδε, νῦν παῤῥησιᾳ λαλεῖς, και παροιμιαν οὐδεμιαν λεγεις.*

30. *Νῦν οἰδαμεν, ὁτι οἰδας παντα, και οὐ χρειαν ἐχεις ἱνα τις σε ἐρωτᾷ· ἐν τουτῳ πιστευομεν, ὁτι ἀπο Θεοῦ ἐξῆλθες.*

31. *Ἀπεκριθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀρτι πιστευετε;*

32. *Ἰδου, ἐρχεται ὡρα και νῦν ἐληλυθεν, ἱνα σκορπισθῆτε ἑκαστος εἰς τα ἰδια, και ἐμε μονον ἀφῆτε· και οὐκ εἰμι μονος, ὁτι ὁ Πατηρ μετ' ἐμοῦ ἐστιν.*

33. *Τᾶυτα λελαληκα ὑμῖν, ἱνα ἐν ἐμοι εἰρηνην ἐχητε. Ἐν τῷ κοσμῳ θλιψιν ἑξετε· ἀλλα θαρσεῖτε, ἐγω νένικηκα τον κοσμον.*

## Κεφ. XVII.

1. *Ταῦτα ἐλαλησεν ὁ Ἰησοῦς και ἐπῆρε τους ὀφθαλμους αὐτοῦ εἰς τον οὐρανον, και εἰπε· Πατερ, ἐληλυθεν ἡ ὡρα· δοξασον σου τον υἱον, ἱνα και ὁ υἱος σου δοξασῃ σε.*

2. *Καθως ἐδωκας αὐτῷ ἐξουσιαν πασης σαρκος, ἱνα πᾶν ὁ δεδωκας αὐτῷ, δωσῃ αὐτοῖς ζωην αἰωνιον.*

3. *Αὑτη δε ἐστιν ἡ αἰωνιος ζωη, ἱνα γινωσκωσι σε τον μονον ἀληθινον Θεον, και ὁν ἀπεστειλας Ἰησοῦν Χριστον.*

4. *Ἐγω σε ἐδοξασα ἐπι τῆς γῆς· το ἐργον ἐτελειωσα ὁ δεδωκας μοι ἱνα ποιησω·*

5. *και νῦν δοξασον με συ, Πατερ, παρα σεαυτῷ τῇ δοξῃ ᾗ εἰχον προ τοῦ τον κοσμον εἰναι παρα σοι.*

6. *Ἐφανερωσα σου το ὀνομα τοῖς ἀνθρωποις, οὑς δεδωκας μοι ἐκ τοῦ κοσμου· σοι ἦσαν, και ἐμοι αὐτους δεδωκας· και τον λογον σου τετηρηκασιν.*

7. *Νῦν ἐγνωκαν ὁτι παντα ὁσα δεδωκας μοι, παρα σοῦ ἐστιν·*

8. *ὁτι τα ῥηματα ἁ δεδωκας μοι, δεδωκα αὐτοῖς· και αὐτοι ἐλαβον και ἐγνωσαν ἀλη-*

29. Dicunt ei discipuli ejus: Ecce, nunc palam loqueris, et proverbium nullum dicis.

.кѳ. Глаголаша ѥмоу оученици ѥго: Се, нынѣ не ѡбиноуѩ сѧ глаголѥши, и притъча никоѥѩже не речеши.

30. Nunc scimus, quia scis omnia, et non opus est tibi, ut quis te interroget; in hoc credimus, quia a Deo existi.

.л. Нынѣ вѣмъ, ꙗко вѣси вьсе, и не трѣбоуѥши, да къто тѧ въпрашаѥть· ѡ семь вѣроуѥмъ, ꙗко ѡтъ Бога изъшьлъ ѥси.

31. Respondit eis Jesus: Modo creditis?

.ла. Ѡтъвѣшта имъ Иисоусъ: Нынѣ ли вѣроуѥте;

32. Ecce, venit hora, et jam venit, ut dispergamini unusquisque in propria, et me solum relinquatis; et non sum solus, quia Pater mecum est.

.лв. Се, грѧдеть година и нынѣ прїиде, да разидете сѧ къжьдо въ своꙗ, и мене ѥдиного ѡставите: и нѣсмь ѥдинъ, ꙗко Ѡтьць съ мъноѭ ѥсть.

33. Haec locutus sum vobis, ut in me pacem habeatis. In mundo pressuram habebitis; sed confidite, ego vici mundum.

.лг. Си глаголахъ вамъ, да въ мънѣ миръ имате. Въ мирѣ скръбьни бѫдете· нъ дръзайте, азъ побѣдихъ вьсь миръ.

## Caput XVII.

## Глава .ӡі.

1. Haec locutus est Jesus, et sublevatis oculis in coelum dixit: Pater, venit hora, clarifica Filium tuum, ut Filius tuus clarificet te.

.а. Се глагола Іисоусъ, и възведъ ѡчи свои на небо рече: Ѡтьче, прїиде година, прослави Сына твоѥго, да и Сынъ твой прославить тѧ.

2. Sicut dedisti ei potestatem omnis carnis, ut omne, quod dedisti ei, det eis vitam aeternam.

.в. Ꙗкоже далъ ѥмоу ѥси власть на вьсꙗкои плъти, да вьсꙗко, ѥже ѥмоу ѥси далъ, дасть имъ животъ вѣчьный.

3. Haec est autem vita aeterna, ut cognoscant te, solum Deum verum, et quem misisti, Jesum Christum.

.г. Се же ѥсть животъ вѣчьный, да знаѭть тебе ѥдиного истиньнаго Бога, и ѥгоже посъла Іисоуса Христа.

4. Ego te clarificavi super terram; opus consummavi, quod dedisti mihi, ut faciam:

.д. Азъ прославихъ тѧ на земли· дѣло съвръшихъ, ѥже далъ ѥси мънѣ, да сътворѭ·

5. et nunc clarifica me tu, Pater! apud temet ipsum claritate, quam habui, prius quam mundus esset, apud te.

.е. и нынѣ прослави мѧ, ты Ѡтьче оу тебе самого славоѭ, ꙗже имѣхъ прѣжде даже не бысть миръ, оу тебе.

6. Manifestavi nomen tuum hominibus, quos dedisti mihi de mundo. Tui erant, et mihi eos dedisti, et sermonem tuum servaverunt.

.ѕ. Ѣвихъ имѧ твоѥ чловѣкомъ, ꙗже далъ ѥси мънѣ ѡтъ мира. Твои бѣша, и мънѣ ꙗ далъ ѥси, и слово Твоѥ съблюдоша.

7. Nunc cognoverunt, quia omnia, quae dedisti mihi, abs te sunt;

.ӡ. Нынѣ разоумѣша, ꙗко вьсꙗ, ѥлика далъ ѥси мънѣ, ѡтъ тебе сѫть·

8. quia verba, quae dedisti mihi, dedi eis; et ipsi acceperunt et cognoverunt

.и. ꙗко глаголы, ꙗже далъ ѥси мънѣ, дахъ имъ, и ти приѩша и разоумѣша

*θως, ὁτι παρα σοῦ ἐξῆλθον, και ἐπιστευσαν, ὁτι συ με ἀπεστειλας.*

9. *Ἐγω περι αὐτῶν ἐρωτῶ· οὐ περι τοῦ κοσμου ἐρωτῶ, ἀλλα περι ὡν δεδωκας μοι, ὁτι σοι εἰσιν.*

10. *Και τα ἐμα παντα σα ἐστι, και τα σα ἐμα· και δεδοξασμαι ἐν αὐτοῖς.*

11. *Και οὐκ ἐτι εἰμι ἐν τῷ κοσμῳ, και οὑτοι ἐν τῷ κοσμῳ εἰσι, και ἐγω προς σε ἐρχομαι. Πατερ ἁγιε, τηρησον αὐτους ἐν τῷ ὀνοματι σου, οὓς δεδωκας μοι, ἱνα ὦσιν ἑν, καθως ἡμεῖς.*

12. *Ὁτε ἡμην μετ' αὐτῶν ἐν τῷ κοσμῳ, ἐγω ἐτηρουν αὐτους ἐν τῷ ὀνοματι σου· οὓς δεδωκας μοι ἐφυλαξα, και οὐδεις ἐξ αὐτῶν ἀπωλετο, εἰ μη ὁ υἱος τῆς ἀπωλειας, ἱνα ἡ γραφη πληρωθῇ.*

13. *Νῦν δε προς σε ἐρχομαι και ταῦτα λαλῶ ἐν τῷ κοσμῳ, ἱνα ἐχωσι την χαραν την ἐμην πεπληρωμενην ἐν αὐτοῖς.*

14. *Ἐγω δεδωκα αὐτοῖς τον λογον σου, και ὁ κοσμος ἐμισησεν αὐτους, ὁτι οὐκ εἰσιν ἐκ τοῦ κοσμου, καθως ἐγω οὐκ εἰμι ἐκ τοῦ κοσμου.*

15. *Οὐκ ἐρωτῶ ἱνα ἀρῃς αὐτους ἐκ τοῦ κοσμου, ἀλλ' ἱνα τηρησῃς αὐτους ἐκ τοῦ πονηροῦ.*

16. *Ἐκ τοῦ κοσμου οὐκ εἰσι, καθως ἐγω ἐκ τοῦ κοσμου οὐκ εἰμι.*

17. *Ἁγιασον αὐτους ἐν τῇ ἀληθειᾳ σου· ὁ λογος ὁ σος ἀληθεια ἐστιν.*

18. *Καθως ἐμε ἀπεστειλας εἰς τον κοσμον, κἀγω ἀπεστειλα αὐτους εἰς τον κοσμον·*

19. *και ὑπερ αὐτῶν ἐγω ἁγιαζω ἐμαυτον, ἱνα και αὐτοι ὦσιν ἡγιασμενοι ἐν ἀληθειᾳ.*

20. *Οὐ περι τουτων δε ἐρωτῶ μονον, ἀλλα και περι τῶν πιστευσοντων δια τοῦ λογου αὐτῶν εἰς ἐμε·*

21. *ἱνα παντες ἑν ὦσι, καθως συ, Πατερ, ἐν ἐμοι κἀγω ἐν σοι, ἱνα και αὐτοι ἐν ἡμῖν ἑν ὦσιν· ἱνα ὁ κοσμος πιστευσῃ, ὁτι συ με ἀπεστειλας.*

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

vere, quia a te exivi, et crediderunt, quia tu me misisti.

въ истинѫ, ꙗко отъ тебе изидохъ, и вѣроваша, ꙗко ты мѧ посъла.

9. Ego pro eis rogo: non pro mundo rogo, sed pro his, quos dedisti mihi, quia tui sunt.

.ѳ. Азъ ѡ сихъ молѭ тѧ· не ѡ мирѣ молѭ, нъ ѡ тѣхъ, ѩже далъ єси мънѣ, ꙗко твои сѫть.

10. Et mea omnia tua sunt, et tua mea sunt: et clarificatus sum in eis.

.і. И моѩ вьсѩ твоѩ сѫть, и твоѩ моѩ сѫть, и прославихъ сѧ въ нихъ.

11. Et jam non sum in mundo, et hi in mundo sunt, et ego ad te venio. Pater sancte! serva eos in nomine tuo, quos dedisti mihi, ut sint unum, sicut et nos.

.аі. И къ томоу нѣсмь въ мирѣ, и си въ мирѣ сѫть, и азъ къ тебѣ грѧдѫ. Ѡтьче свѧтый, съблюди ѩ въ имѧ твоє, ѩже далъ єси мънѣ, да сѫть єдино, ꙗкоже и мы.

12. Quum essem cum eis, ego servabam eos in nomine tuo. Quos dedisti mihi, custodivi: et nemo ex eis periit, nisi filius perditionis, ut Scriptura impleatur.

.ві. Єгда бѣхъ съ ними, азъ съблюдаахъ ѩ въ имѧ твоє. Ѩже далъ єси мънѣ, съхраниxъ· и никътоже ѡтъ нихъ не погыбе, тъкъмо сынъ погыбѣльный, да събѫдѫть сѧ Кънигы.

13. Nunc autem ad te venio; et haec loquor in mundo, ut habeant gaudium meum impletum in semet ipsis.

.гі. Нынѣ же къ тебѣ грѧдѫ· и си глаголѭ въ вьсемь мирѣ, да имѫть радость моѭ испълънєнѫ въ себѣ.

14. Ego dedi eis sermonem tuum, et mundus eos odio habuit, quia non sunt de mundo, sicut et ego non sum de mundo.

.ді. Азъ дахъ имъ слово твоє, и вьсь миръ възненавидѣ ѩ, ꙗко не сѫть ѡтъ мира, ꙗкоже и азъ ѡтъ мира нѣсмь.

15. Non rogo, ut tollas eos de mundo, sed ut serves eos a malo.

.еі. Не молѭ, да възьмеши ѩ ѡтъ мира, нъ да съблюдеши ѩ ѡтъ неприꙗзни.

16. De mundo non sunt, sicut et ego non sum de mundo.

.ѕі. Ѡть мира не сѫть, ꙗкоже и азъ ѡтъ мира нѣсмь.

17. Sanctifica eos in veritate: sermo tuus veritas est.

.зі. Свѧти ѩ въ истинѫ· слово твоє истина єсть.

18. Sicut tu me misisti in mundum, et ego misi eos in mundum.

.иі. Ꙗкоже ты мѧ посъла въ миръ, и азъ посълахъ ѩ въ вьсь миръ.

19. Et pro eis ego sanctifico me ipsum: ut sint et ipsi sanctificati in veritate.

.ѳі. И за ниѩ азъ свѧштѫ сѧ самъ, да бѫдѫть и ти свѧштени въ истинѫ.

20. Non pro eis autem rogo tantum, sed et pro eis, qui credituri sunt per verbum eorum in me;

.к. Не ѡ сихъ же молѭ тъкъмо, нъ и ѡ вѣроуѭштіихъ словесьмь ихъ въ мѧ·

21. ut omnes unum sint, sicut tu Pater in me, et ego in te, ut et ipsi in nobis unum sint; ut credat mundus, quia tu me misisti.

.ка. да вьси єдино сѫть, ꙗкоже ты Ѡтьче, въ мънѣ, и азъ въ тебѣ, да и ти въ насъ єдино сѫть· да вѣрѫ иметь миръ, ꙗко ты мѧ посъла.

22. *Και ἐγω την δοξαν, ἡν δεδωκας μοι, δεδωκα αὐτοῖς, ἱνα ὦσιν ἑν, καθως ἡμεῖς ἑν ἐσμεν·*

23. *ἐγω ἐν αὐτοῖς, και συ ἐν ἐμοι, ἱνα ὦσι τετελειωμενοι εἰς ἑν, και ἱνα γινωσκη ὁ κοσμος, ὁτι συ με ἀπεστειλας, και ἠγαπησας αὐτους, καθως ἐμε ἠγαπησας.*

24. *Πατερ, οὓς δεδωκας μοι, θελω ἱνα ὁπου εἰμι ἐγω, κἀκεινοι ὦσι μετ' ἐμοῦ· ἱνα θεωρῶσι την δοξαν την ἐμην, ἡν ἐδωκας μοι, ὁτι ἠγαπησας με προ καταβολῆς κοσμου.*

25. *Πατερ δικαιε, και ὁ κοσμος σε οὐκ ἐγνω· ἐγω δε σε ἐγνων, και οὗτοι ἐγνωσαν, ὁτι συ με ἀπεστειλας·*

26. *και ἐγνωρισα αὐτοῖς το ὀνομα σου, και γνωρισω· ἱνα ἡ ἀγαπη, ἡν ἠγαπησας με, ἐν αὐτοῖς ᾖ, κἀγω ἐν αὐτοῖς.*

[illegible]

## *Κεφ. XVIII.*

[illegible]

1. *Ταῦτα εἰπων ὁ Ἰησοῦς ἐξῆλθε συν τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ περαν τοῦ χειμαῤῥου τῶν Κεδρων, ὁπου ἦν κῆπος, εἰς ὃν εισῆλθεν αὐτος και οἱ μαθηται αὐτοῦ.*

2. *Ἠιδει δε και Ἰουδας, ὁ παραδιδους αὐτον, τον τοπον· ὁτι πολλακις συνηχθη ὁ Ἰησοῦς ἐκεῖ μετα τῶν μαθητῶν αὐτοῦ.*

3. *Ὁ οὐν Ἰουδας λαβων την σπεῖραν και ἐκ τῶν ἀρχιερεων και Φαρισαιων ὑπηρετας, ἐρχεται ἐκεῖ μετα φανῶν και λαμπαδων και ὁπλων.*

4. *Ἰησοῦς οὐν εἰδως παντα τα ἐρχομενα ἐπ' αὐτον, ἐξελθων εἰπεν αὐτοῖς· Τινα ζητεῖτε;*

5. *Ἀπεκριθησαν αὐτῷ· Ἰησοῦν τον Ναζωραῖον. Λεγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐγω εἰμι. Εἱστηκει δε και Ἰουδας, ὁ παραδιδους αὐτον μετ' αὐτῶν.*

6. *Ὡς οὐν εἰπεν αὐτοῖς· Ὁτι ἐγω εἰμι, ἀπῆλθον εἰς τα ὀπισω και ἐπεσον χαμαι.*

7. *Παλιν οὐν αὐτους ἐπηρωτησε· Τινα ζητεῖτε; Οἱ δε εἰπον· Ἰησοῦν τον Ναζωραῖον.*

[illegible]

22. Et ego claritatem, quam dedisti mihi, dedi eis, ut sint unum, sicut et nos unum sumus:

.кв. И азъ славѫ, ѭже далъ ѥси мънѣ, дахъ имъ, да сѫть ѥдино, ꙗкоже и мы ѥдино ѥсвѣ·

23. ego in eis, et tu in me: ut sint consummati in unum, et cognoscat mundus, quia tu me misisti, et dilexisti eos, sicut et me dilexisti.

.кг. азъ въ нихъ, и ты въ мънѣ· да бѫдѫть съвръшени въ ѥдино, и да разоумѣѥть миръ, ꙗко ты мѧ посъла, и възлюбилъ ѩ ѥси, ꙗкоже и мѧ възлюбилъ ѥси.

24. Pater, quos dedisti mihi, volo, ut ubi sum ego, et illi sint mecum; ut videant claritatem meam, quam dedisti mihi; quia dilexisti me ante constitutionem mundi.

.кд. Отьче, ѩже далъ ѥси мънѣ, хоштѫ, да, идеже ѥсмь азъ, и ти бѫдѫть съ мъноѭ· да видѧть славѫ моѭ, ѭже далъ ѥси мънѣ· ꙗко възлюбилъ мѧ ѥси прѣжде съложениꙗ вьсего мира.

25. Pater juste! mundus te non cognovit; ego autem te cognovi, et hi cognoverunt, quia tu me misisti.

.ке. Отьче правьдьный! миръ тебе не позна· азъ же тѧ познахъ, и си познашѧ, ꙗко ты мѧ посъла.

26. Et notum feci eis nomen tuum, et notum faciam; ut dilectio, qua dilexisti me, in ipsis sit, et ego in ipsis.

.кѕ. И съказахъ имъ имѧ твоѥ, и съкажѫ, да любы, ѭже мѧ ѥси възлюбилъ, въ нихъ бѫдеть, и азъ въ нихъ.

## Caput XVIII.

## Глава .иі.

1. Haec cum dixisset Jesus, egressus est cum discipulis suis trans torrentem Cedron, ubi erat hortus, in quem intravit ipse et discipuli ejus.

.а. Се рекъ Іисоусъ, изиде съ оученикы своими на ѡнъ полъ потока Кедрьска, идеже бѣ врътъ, въ ньже вьниде самъ и оученици ѥго.

2. Sciebat autem et Judas, qui tradebat eum, locum; quia frequenter Jesus convenerat illuc cum discipulis suis.

.в. Вѣдѣаше же и Июда, иже ѝ прѣдаꙗше, мѣсто, ꙗко мъногашьды събираше сѧ тоу Іисоусъ съ оученикы своими.

3. Judas ergo cum accepisset cohortem, et a Pontificibus et Pharisaeis ministros, venit illuc cum laternis et facibus, et armis.

.г. Июда же пріимъ спирѫ, и ѿтъ архиѥрей и Фарисей слоугы пріиде тамо съ свѣтильникы, и съ свѣштами и съ ѡрѫжіи.

4. Jesus itaque sciens omnia, quae ventura erant super eum, processit et dixit eis: Quem quaeritis?

.д. Іисоусъ же вѣдꙑ вьсе идѫштеѥ на нь, изиде и рече имъ: Кого иштете;

5. Responderunt ei: Jesum Nazarenum. Dicit eis Jesus: Ego sum. Stabat autem et Judas, qui tradebat eum, cum ipsis.

.е. Отъвѣшташѧ ѥмоу: Іисоуса Назарѣнина. Глагола имъ Іисоусъ: Азъ ѥсмь. Стоꙗаше же и Июда, иже ѝ прѣдаꙗше, съ ними.

6. Ut ergo dixit eis: Ego sum, abierunt retrorsum, et ceciderunt in terram.

.ѕ. Ꙗко оубо рече имъ: Азъ ѥсмь, идоша въспѧть и падоша на земли.

7. Iterum ergo interrogavit eos: Quem quaeritis? Illi autem dixerunt: Jesum Nazarenum.

.з. Пакы же ѩ въпроси Іисоусъ: Кого иштете; Они же рекошѧ: Іисоуса Назарѣнина.

8. *Ἀπεκριθη ὁ Ἰησοῦς· Εἶπον ὑμῖν, ὅτι ἐγω εἰμι. Εἰ οὖν ἐμε ζητεῖτε, ἀφετε τουτους ὑπαγειν·*

9. *ἱνα πληρωθῇ ὁ λογος ὅν εἶπεν· Ὅτι οὓς δεδωκας μοι, οὐκ ἀπωλεσα ἐξ αὐτῶν οὐδενα.*

10. *Σιμων οὖν Πετρος, ἐχων μαχαιραν, εἵλκυσεν αὐτην, και ἐπαισε τον τοῦ ἀρχιερεως δοῦλον, και ἀπεκοψεν αὐτοῦ το ὠτιον το δεξιον. Ἠν δε ὀνομα τῷ δοῦλῳ Μαλχος.*

11. *Εἶπεν οὖν ὁ Ἰησοῦς τῷ Πετρῳ· Βαλε την μαχαιραν σου εἰς την θηκην. Το ποτηριον, ὁ δεδωκε μοι ὁ Πατηρ, οὐ μη πιω αὐτο;*

12. *Ἡ οὖν σπεῖρα και ὁ χιλιαρχος και οἱ ὑπηρεται τῶν Ἰουδαιων συνελαβον τον Ἰησοῦν και ἐδησαν αὐτον,*

13. *και ἀπηγαγον αὐτον προς Ἄνναν πρῶτον· ἦν γαρ πενθερος τοῦ Καϊαφα, ὃς ἦν ἀρχιερευς τοῦ ἐνιαυτοῦ ἐκεινου.*

14. *Ἠν δε Καϊαφας ὁ συμβουλευσας τοῖς Ἰουδαιοις, ὅτι συμφερει ἑνα ἀνθρωπον ἀπολεσθαι ὑπερ τοῦ λαοῦ.*

15. *Ἠκολουθει δε τῷ Ἰησοῦ Σιμων Πετρος, και ὁ ἀλλος μαθητης. Ὁ δε μαθητης ἐκεῖνος ἦν γνωστος τῷ ἀρχιερεῖ, και συνεισῆλθε τῷ Ἰησοῦ εἰς την αὐλην τοῦ ἀρχιερεως.*

16. *Ὁ δε Πετρος εἱστηκει προς τῇ θυρᾳ ἐξω. Ἐξῆλθεν οὖν ὁ μαθητης ὁ ἀλλος, ὃς ἦν γνωστος τῷ ἀρχιερεῖ, και εἶπε τῇ θυρωρῷ, και εἰςηγαγε τον Πετρον.*

17. *Λεγει οὖν ἡ παιδισκη ἡ θυρωρος τῷ Πετρῳ· Μη και συ ἐκ τῶν μαθητῶν εἶ τοῦ ἀνθρωπου τουτου; Λεγει ἐκεῖνος· Οὐκ εἰμι.*

18. *Εἱστηκεισαν δε οἱ δοῦλοι και οἱ ὑπηρεται ἀνθρακιαν πεποιηκοτες, ὅτι ψυχος ἦν, και ἐθερμαινοντο· ἦν δε μετ' αὐτῶν ὁ Πετρος ἑστως και θερμαινομενος.*

19. *Ὁ οὖν ἀρχιερευς ἠρωτησε τον Ἰησοῦν περι τῶν μαθητῶν αὐτοῦ και περι τῆς διδαχῆς αὐτοῦ.*

20. *Ἀπεκριθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγω παῤῥησιᾳ ἐλαλησα τῷ κοσμῳ· ἐγω παντοτε ἐδιδαξα ἐν τῇ συναγωγῇ και ἐν τῷ ἱερῷ, ὁπου παντες οἱ Ἰουδαῖοι συνερχονται, και ἐν κρυπτῷ ἐλαλησα οὐδεν.*

8. Respondit Jesus: Dixi vobis, quia ego sum; si ergo me quaeritis, sinite hos abire;

9. ut impleretur sermo, quem dixit: Quia »quos dedisti mihi, non perdidi ex eis quemquam«.

10. Simon ergo Petrus habens gladium, eduxit eum, et percussit pontificis servum, et abscidit auriculam ejus dexteram. Erat autem nomen servo Malchus.

11. Dixit ergo Jesus Petro: Mitte gladium tuum in vaginam. Calicem, quem dedit mihi Pater, non bibam illum?

12. Cohors ergo et tribunus et ministri Judaeorum comprehenderunt Jesum, et ligaverunt eum,

13. et adduxerunt eum ad Annam primum; erat enim socer Caiphae, qui erat pontifex anni illius.

14. Erat autem Caiphas, qui consilium dederat Judaeis: Quia expedit unum hominem mori pro populo.

15. Sequebatur autem Jesum Simon Petrus, et alius discipulus. Discipulus autem ille erat notus pontifici, et introivit cum Jesu in atrium pontificis.

16. Petrus autem stabat ad ostium foris. Exivit ergo discipulus alius, qui erat notus pontifici, et dixit ostiariae, et introduxit Petrum.

17. Dicit ergo Petro ancilla ostiaria: Numquid et tu ex discipulis es hominis istius? Dicit ille: Non sum.

18. Stabant autem servi et ministri ad prunas, quia frigus erat, et calefaciebant se; erat autem cum eis et Petrus stans et calefaciens se.

19. Pontifex ergo interrogavit Jesum de discipulis suis, et de doctrina ejus.

20. Respondit ei Jesus: Ego palam locutus sum mundo; ego semper docui in synagoga, et in templo, quo omnes Judaei conveniunt; et in occulto locutus sum nihil.

.и. Ѿтъвѣшта Іисоусъ: Рекохъ вамъ, ꙗко азъ ѥсмь· аште оубо мене иштете́, не дѣйте сихъ ити·

.ѳ. да събѫдеть сѧ слово, ѥже рече: Ꙗко ꙗже далъ ѥси мънѣ, не погоубихъ никогоже ѿтъ нихъ.

.і. Симонъ же Петръ, имѣꙗ ножь иꙁвлѣче ѝ, и оудари архиѥреова раба, и оурѣꙁа ѥмоу оухо десьноѥ. Бѣ же имꙗ рабоу томоу Мальхъ.

.аі. Рече же Іисоусъ Петрови: Възврати ножь свой въ ножьницѧ. Чашѫ, ꙗже дастъ мънѣ Ѿтьць, не имамь ли пити ѥꙗ;

.ві. Спира же и тысаштьникъ и слоугы Июдейскы ꙗшѧ Іисоуса, и съвѧꙁавъше

.гі. ведоша ѝ къ Аньнѣ прѣвѣѥ· бѣ бо тьсть Каиꙗфѣ, иже бѣ архиѥрей томь лѣтѣ.

.ді. Бѣ же Каиꙗфа давый съвѣтъ Июдеомъ: Ꙗко оунѥ ѥсть ѥдиномоу чловѣкоу оумьрѣти ꙁа люди.

.еі. По Іисоусѣ же идѣаше Симонъ Петръ, и дроугый оученикъ. Оученикъ же тъ бѣ ꙁнаѥмъ архиѥреови, и вънидe съ Іисоусъмь въ дворъ архиѥреовъ.

.ѕі. Петръ же стоꙗаше прѣдъ враты вънѣ. Иꙁиде же оученикъ тъ, иже бѣ ꙁнаѥмъ архиѥреови, и рече двьрьници, и въведе Петра.

.ꙁі. Глагола же раба двьрьница Петрови: Ѥда и ты ѿтъ оученикъ ѥси чловѣка сего; Глагола ѡнъ: Нѣсмь.

.иі. Стоꙗахѫ же раби и слоугы ѡгнь сътворьше, ꙗко ꙁима бѣ, и грѣахѫ сѧ· бѣ же съ ними и Петръ стоꙗ и грѣꙗ сѧ.

.ѳі. Архиѥрей же въпроси Іисоуса ѡ оученицѣхъ ѥго и ѡ оучениі ѥго.

.к. Ѿтъвѣшта ѥмоу Іисоусъ: Азъ не ѡбиноуꙗ сѧ глаголахъ вьсемоу мироу· азъ вьсегда оучихъ на съборишти и въ цръкъви, идеже вьси Иоудеи събираѭть сѧ· и ѿтай не глаголахъ ничьсоже.

21. Τι με ἐπερωτᾷς; Ἐπερωτησον τους ἀκηκοοτας, τι ἐλαλησα αὐτοῖς· ἰδε οὗτοι οἰδασιν, ἁ εἰπον ἐγω.

22. Ταῦτα δε αὐτοῦ εἰποντος εἷς τῶν ὑπηρετῶν παρεστηκως ἐδωκε ῥαπισμα τῷ Ἰησοῦ, εἰπων· Οὕτως ἀποκρινῃ τῷ ἀρχιερεῖ;

23. Ἀπεκριθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Εἰ κακῶς ἐλαλησα, μαρτυρησον περι τοῦ κακοῦ· εἰ δε καλῶς, τι με δερεις;

24. Ἀπεστειλεν αὐτον ὁ Ἀννας δεδεμενον προς Καϊαφαν τον ἀρχιερεα.

25. Ἦν δε Σιμων Πετρος ἑστως και θερμαινομενος· εἰπον οὖν αὐτῷ· Μη και συ ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ εἶ; Ἠρνησατο ἐκεῖνος, και εἰπεν· Οὐκ εἰμι.

26. Λεγει εἷς ἐκ τῶν δουλων τοῦ ἀρχιερεως, συγγενης ὢν οὗ ἀπεκοψε Πετρος το ὠτιον· Οὐκ ἐγω σε εἶδον ἐν τῷ κηπῳ μετ' αὐτοῦ;

27. Παλιν οὖν ἠρνησατο ὁ Πετρος, και εὐθεως ἀλεκτωρ ἐφωνησεν.

28. Ἀγουσιν οὖν τον Ἰησοῦν ἀπο τοῦ Καϊαφα εἰς το πραιτωριον. Ἦν δε πρωϊα· και αὐτοι οὐκ εἰσῆλθον εἰς το πραιτωριον, ἱνα μη μιανθῶσιν, ἀλλ' ἱνα φαγωσι το πασχα.

29. Ἐξῆλθεν οὖν ὁ Πιλατος προς αὐτους, και εἰπε· Τινα κατηγοριαν φερετε κατα τοῦ ἀνθρωπου τουτου;

30. Ἀπεκριθησαν και εἰπον αὐτῷ· Εἰ μη ἦν οὗτος κακοποιος, οὐκ ἂν σοι παρεδωκαμεν αὐτον.

31. Εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Πιλατος· Λαβετε αὐτον ὑμεῖς, και κατα τον νομον ὑμῶν κρινατε αὐτον. Εἶπον οὖν αὐτῷ οἱ Ἰουδαῖοι· Ἡμῖν οὐκ ἔξεστιν ἀποκτεῖναι οὐδενα·

32. ἱνα ὁ λογος τοῦ Ἰησοῦ πληρωθῇ, ὃν εἰπε σημαινων, ποιῳ θανατῳ ἤμελλεν ἀποθνησκειν.

33. Εἰςῆλθεν οὖν εἰς το πραιτωριον παλιν ὁ Πιλατος, και ἐφωνησε τον Ἰησοῦν, και εἰπεν αὐτῷ· Συ εἶ ὁ βασιλευς τῶν Ἰουδαιων;

34. Ἀπεκριθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἀφ' ἑαυτοῦ συ τοῦτο λεγεις, ἢ ἀλλοι σοι εἰπον περι ἐμοῦ;

.Ȣ+. ₰ѲѠƎ ƧЄ ƱѲГЬ+Ш+ƎШȢ; ƱѲГЬƎѮȢ ѮᏊѲƬШ+ƱѲШЄƎЄ, ѰѲѠƎ ᏍᏊ+ᏍƎᏊ+ЬѲ ƬƧѲ· ѮƎ ѮȢ ƱΔᏊЄѠѲ, ΔЖƎ ЬΔЬѲ +ᏊѲ.

.ȢⱢ. ѮȢ ЬƎЬѲШƳ ƎƧᏰ ƎᏊȢƤѲ ѺѠѲ ГЬΔᏊѲ-ѮѠƎЄШѠƬȢЬѲ ѮᏊᏰᏍѲ ᏰᏊ+ЬȢ ƱѲ Ꮚ+ƤȢѠƎЄ ⱲѮᏰѮ+, ЬƎЬѲ· Ѡ+ЬƎ ᏊȢ ѺѠѲƱΔШѠ+Ʊ+ƎШȢ +ЬЬȢƎЬƎƎƱȢ;

.ȢƱ. ѲѠѲƱΔШѠ+ ƎƧᏰ ⱲѮᏰѮѲ· +ШѠƎ ѰѲᏊΔ ᏍᏊ+ᏍƎᏊ+ЬѲ, ѮѲƱΔᏊΔѠƎᏊѲѮѠƱᏰȢ Ѻ ѰѲᏊΔ· +ШѠƎ ᏊȢ ᏊƎⱢЬΔ, ѰѲѠƎ ƧЄ ⱢȢƎШȢ;

.ȢᏍ. ГƎѮѲᏊ+ ЖƎ Ȣ +ƤѲƤ+ ѮѲƱЄᏊ+Ƥ+ ЬѲ Ɂ+Ȣ+ѲΔ +ЬЬȢƎЬƎƎƱȢ.

.ȢᏊ. ⱢΔ ЖƎ ѮȢƧƎƤѲ ГƎѠЬѲ ѮѠƎЄ Ƭ ᏍЬΔƎЄ ѮЄ· ЬΔШЄ ЖƎ ƎƧᏰ· ƎᏊ+ Ƭ ѠѲƬ ѺѠѲ ᏰѰƎƤȢЬѲ ƎᏍƎ ƎѮȢ; ѲƤѲ ЖƎ ѺѠѲƱЬѲЖƎ ѮЄ Ƭ ЬƎѰƎ· ƤΔѮƧѲ.

.ȢƎ. ᏍᏊ+ᏍƎᏊ+ ƎᏊȢƤѲ ѺѠѲ Ь+ⱢѲ +ЬЬȢƎ-ЬƎƎƱѲ, ƎЄЖȢЬ+ ѮѲȢ, ƎƧᏰЖƎ ᏰЬΔᏊ+ ГƎѠЬѲ ᏰЬƎ· ƤƎ +ᏊѲ ᏊȢ ѠƎⱢƎ ƱȢᏊΔЬѲ ƱѲ ƱЬѲѠΔ ѮѲ ƤȢƧѲ;

.ȢЖ. Г+ЬѲƬ ЖƎ ГƎѠЬѲ ѺѠѲƱЬѲЖƎ ѮЄ, Ƭ +ⱢѲƎ ЬᏰЬѲ ƱѲᏊᏍᏊ+ѮȢ.

.ȢѰ. ƱΔѮЄ ЖƎ ⱲѮᏰѮ+ ѺѠѲ Ɂ+Ȣ+Ѳ-ѲƬ ƱѲ ГЬƎѠƎЬѲ. ⱢΔ ЖƎ Ꮚ+ ᏰѠЬ+· Ƭ ѠȢ ƤƎ ƱѲƤƬᏊƎЄ ƱѲ ГЬƎѠƎЬѲ, Ꮚ+ ƤƎ ѺѮЬƱЬѲƤЄѠѲ ѮЄ, ƤѲ Ꮚ+ ΔᏊЄѠѲ Ƥ+ѮЬƎЄ.

.ȢᏊ. ⱲᏊƬᏊƎ ЖƎ ГȢᏊ+ѠѲ ЬѲ ƤȢƧѲ ƱѲƤѲ Ƭ ЬƎѰƎ· ɁƎЄѰЄ ЬΔѰѲ ГЬȢƤƎѮȢѠƎ Ƥ+ ѰᏊƎ-ƱΔЬ+ ѮƎᏍƎ;

.M. ѲѠѲƱΔШѠ+ШЄ ЖƎ Ƭ ЬΔШЄ ƎƧᏰ· +ШѠƎ ƤƎ ⱢȢ ⱢѲƬᏊѲ ѮѲ ѰѲᏊƎᏊΔȢ, ƤƎ ⱢȢƧѲ ГЬΔᏊ+ᏊȢ ƎᏍƎ ѠƎⱢΔ.

.M+. ЬƎѰƎ ЖƎ ƬƧѲ ГȢᏊ+ѠѲ· ГƎƬƧΔѠƎ Ȣ ƱѲƬ, Ƭ ГƎ Ꮚ+ЬƎƤᏰ Ʊ+ШƎƧᏰ ѮƎЄᏊȢѠƎ ƎƧᏰ. ЬΔШЄ ЖƎ ƎƧᏰ ⱲƳᏊƎȢ· Ƥ+ƧѲ ƤƎ ᏊƎѮѠƎȢѠѲ ᏰⱢȢѠȢ ƤȢЬƎᏍƎЖƎ·

.MⱢ. Ꮚ+ ѮᏊƎƱƎ ⱲѮᏰѮƎƱƎ ѮѲⱢƎЄᏊƎѠѲ ѮЄ, ƎЖƎ ЬƎѰƎ ЬᏊƎГᏊЄ, ЬƎƎѰЄ ѮѲƧЬѲѠȢѰЄ ЬƎѠΔ+ШƎ ᏰƧѲЬΔѠȢ.

.MƱ. ƱѲƤƬᏊƎ ЖƎ Г+ЬѲƬ ГȢᏊ+ѠѲ ƱѲ ГЬƎѠƎЬѲ, Ƭ ᏍᏊ+ѮȢ ⱲѮᏰѮ+ Ȣ ЬƎѰƎ ƎƧᏰ· ѠѲƬ ᏊȢ ƎѮȢ VΔѮ+ЬѲ ⱲƳᏊƎȢѮЬѲ;

.MᏍ. ѲѠѲƱΔШѠ+ ƎƧᏰ ⱲѮᏰѮѲ· Ѳ ѮƎⱢΔ ᏊȢ ѮƎ ᏍᏊ+ᏍƎᏊƎШȢ, ᏊȢ ƬƤȢ ѠƎⱢΔ ЬΔШЄ Ѻ ƧѲƤΔ;

21. Quid me interrogas? interroga eos, qui audierunt, quid locutus sim ipsis; ecce, hi sciunt, quae dixerim ego.

22. Haec autem cum dixisset, unus assistens ministrorum dedit alapam Jesu, dicens: Sic respondes pontifici?

23. Respondit ei Jesus: Si male locutus sum, testimonium perhibe de malo; si autem bene, quid me caedis?

24. Et misit eum Annas ligatum ad Caipham pontificem.

25. Erat autem Simon Petrus stans, et calefaciens se. Dixerunt ergo ei: Numquid et tu ex discipulis ejus es? Negavit ille, et dixit: Non sum.

26. Dicit ei unus ex servis pontificis, cognatus ejus, cujus abscidit Petrus auriculam: Nonne ego te vidi in horto cum illo?

27. Iterum ergo negavit Petrus; et statim gallus cantavit.

28. Adducunt ergo Jesum a Caipha in praetorium. Erat autem mane; et ipsi non introierunt in praetorium, ut non contaminarentur, sed ut manducarent pascha.

29. Exivit ergo Pilatus ad eos foras, et dixit: Quam accusationem affertis adversus hominem hunc?

30. Responderunt et dixerunt ei: Si non esset hic malefactor, non tibi tradidissemus eum.

31. Dixit ergo illis Pilatus: Accipite eum vos, et secundum legem vestram judicate eum. Dixerunt ergo ei Judaei: Nobis non licet interficere quemquam;

32. ut sermo Jesu impleretur, quem dixit, significans, qua morte esset moriturus.

33. Introivit ergo iterum in praetorium Pilatus, et vocavit Jesum et dixit ei: Tu es rex Judaeorum?

34. Respondit Jesus: A temet ipso hoc dicis? an alii dixerunt tibi de me?

.ка. Чьто мѧ въпрашаеши; въпроси слышавъшиихъ, чьто глаголахъ имъ· се, си вѣдѧть, ѩже рекохъ азъ.

.кв. Се рекъшоу ѥмоу ѥдинъ отъ прѣстоѩштиихъ слоугъ оударн за ланитѫ Іисоуса, рекъ: Тако ли отъвѣштаваѥши архиѥреови;

.кг. Отъвѣшта ѥмоу Іисоусъ: Аште зъле глаголахъ, съвѣдѣтельствоуй о зълѣ· аште ли добрѣ, чьто мѧ тепеши;

.кд. Посъла же й Аньна съвѧзана къ Каиафѣ архиѥреови.

.ке. Бѣ же Симонъ Петръ стоѩ и грѣѩ сѧ. Рекошѧ же ѥмоу: Ѥда и ты отъ оученикъ ѥго ѥси; Онъ же отъвръже сѧ и рече: Нѣсмь.

.кѕ. Глагола ѥмоу ѥдинъ отъ рабъ архиѥреовъ, ѫжика сы ѥмоуже оурѣза Петръ оухо: Не азъ ли тебе видѣхъ въ вρътоградѣ съ нимь;

.кз. Пакы же Петръ отъвръже сѧ, и абиѥ коуръ възгласи.

.ки. Ведошѧ же Іисоуса отъ Каиафы въ преторъ. Бѣ же зѣ оутра· и ти не вънидошѧ въ преторъ, да не оскврънѧть сѧ, нъ да ѩдѧть пасхѫ.

.кѳ. Изиде же Пилатъ къ нимъ вънъ, и рече: Кѫѭ рѣчь приносите на чловѣка сего;

.л. Отъвѣшташѧ и рекошѧ ѥмоу: Аште не бы былъ сь зълодѣй, не быхомъ ѥго прѣдали тебѣ.

.ла. Рече же имъ Пилатъ: Поимѣте й вы, и по законоу вашемоу сѫдите ѥмоу. Рекошѧ же ѥмоу Июдеи: Намъ не достоить оубити никогоже·

.лв. да слово Іисоусово събѫдеть сѧ, ѥже рече, (на)знаменаѩ, коѥѭ съмрътиѭ хотѣаше оумьрѣти.

.лг. Вънидe же пакы въ преторъ Пилатъ, и призъва Іисоуса и рече ѥмоу: Ты ли ѥси царь Июдейскъ;

.лд. Отъвѣшта ѥмоу Іисоусъ: О себѣ ли се глаголѥши, или инии рекошѧ тебѣ о мънѣ;

35. *Ἀπεκριθη ὁ Πιλατος· Μητι ἐγω Ἰουδαῖος εἰμι; το ἐθνος το σον και οἱ ἀρχιερεῖς παρεδωκαν σε ἐμοι· τι ἐποιηας;*

[illegible]

36. *Ἀπεκριθη ὁ Ἰησοῦς· Ἡ βασιλεια ἡ ἐμη οὐκ ἐστιν ἐκ τοῦ κοσμου τουτου· εἰ ἐκ τοῦ κοσμου τουτου ἠν ἡ βασιλεια ἡ ἐμη, οἱ ὑπηρεται ἀν οἱ ἐμοι ἠγωνιζοντο, ἱνα μη παραδοθῶ τοῖς Ἰουδαιοις· νῦν δε ἡ βασιλεια ἡ ἐμη οὐκ ἐστιν ἐντεῦθεν.*

[illegible]

37. *Εἰπεν οὐν αὐτῷ ὁ Πιλατος· Οὐκοῦν βασιλευς εἰ συ; Ἀπεκριθη ὁ Ἰησοῦς· Συ λεγεις, ὁτι βασιλευς εἰμι ἐγω. Ἐγω εἰς τοῦτο γεγεννημαι και εἰς τοῦτο ἐληλυθα εἰς τον κοσμον, ἱνα μαρτυρησω τῇ ἀληθειᾳ. Πᾶς ὁ ὢν ἐκ τῆς ἀληθειας ἀκουει μου τῆς φωνῆς.*

[illegible]

38. *Λεγει αὐτῷ ὁ Πιλατος· Τι ἐστιν ἀληθεια; Και τοῦτο εἰπων παλιν ἐξῆλθε προς τους Ἰουδαιους, και λεγει αὐτοῖς· Ἐγω οὐδεμιαν αἰτιαν εὑρισκω ἐν αὐτῷ.*

[illegible]

39. *Ἐστι δε συνηθεια ὑμῖν, ἱνα ἑνα ὑμῖν ἀπολυσω ἐν τῷ Πασχα· βουλεσθε οὐν ὑμῖν ἀπολυσω τον βασιλεα τῶν Ἰουδαιων;*

[illegible]

40. *Ἐκραυγασαν οὐν παλιν παντες, λεγοντες· Μη τουτον, ἀλλα τον Βαραββᾶν. Ἠν δε ὁ Βαραββᾶς ληστης.*

[illegible]

*Κεφ. XIX.*

[illegible]

1. *Τοτε οὐν ἐλαβεν ὁ Πιλατος τον Ἰησοῦν, και ἐμαστιγωσε.*

[illegible]

2. *Και οἱ στρατιῶται πλεξαντες στεφανον ἐξ ἀκανθῶν, ἐπεθηκαν αὐτοῦ τῇ κεφαλῇ, και ἱματιον πορφυροῦν περιεβαλον αὐτον.*

[illegible]

3. *Και ἠρχοντο προς αὐτον και ἐλεγον· Χαῖρε ὁ βασιλευς τῶν Ἰουδαιων και ἐδιδουν αὐτῷ ῥαπισματα.*

[illegible]

4. *Ἐξῆλθεν οὐν παλιν ἐξω ὁ Πιλατος, και λεγει αὐτοῖς· Ἰδε, ἀγω ὑμῖν αὐτον ἐξω, ἱνα γνῶτε, ὁτι ἐν αὐτῷ οὐδεμιαν αἰτιαν εὑρισκω.*

[illegible]

5. *Ἐξῆλθεν οὐν ὁ Ἰησοῦς ἐξω, φορῶν τον ἀκανθινον στεφανον, και το πορφυροῦν ἱματιον. Και λεγει αὐτοῖς· Ἰδε ὁ ἀνθρωπος.*

[illegible]

35. Respondit Pilatus: Numquid ego Judaeus sum? Gens tua et pontifices tradiderunt te mihi; quid fecisti?

.ле. Ѡтъвѣшта Пилатъ: Ѥда аꙁъ Жидовинъ ѥсмь; Родъ твой и архиѥреи прѣдаша тѧ мънѣ· чьто ѥси сътворилъ;

36. Respondit Jesus: Regnum meum non est de hoc mundo; si ex hoc mundo esset regnum meum, ministri mei utique decertarent, ut non traderer Judaeis; nunc autem regnum meum non est hinc.

.лѕ. Ѡтъвѣшта Іисоусъ: Царьство моѥ нѣсть ѡтъ мира сего· аште ѡтъ сего мира бы было царьство моѥ, слоугы моꙗ оубо подвиглы сѧ бышѧ, да не прѣданъ быхъ былъ Июдеомъ· нынѣ же царьство моѥ нѣсть ѡтъ сѫдоу.

37. Dixit itaque ei Pilatus: Ergo rex es tu? Respondit Jesus: Tu dicis, quia rex sum ego. Ego in hoc natus sum, et ad hoc veni in mundum, ut testimonium perhibeam veritati; omnis, qui est ex veritate, audit vocem meam.

.лꙁ. Рече же ѥмоу Пилатъ: Оубо царь ли ѥси ты; Ѡтъвѣшта Іисоусъ: Ты глаголѥши, ꙗко царь ѥсмь аꙁъ. Аꙁъ на се родихъ сѧ, и на се прїидохъ въ миръ, да послоушьствоуѭ ѡ истинѣ· вьсꙗкъ, иже ѥсть ѡтъ истины, послоушаѥть гласа моѥго.

38. Dicit ei Pilatus: Quid est veritas? Et cum hoc dixisset, iterum exivit ad Judaeos, et dixit eis: Ego nullam invenio in eo causam.

.ли. Глагола ѥмоу Пилатъ: Чьто ѥсть истина; И се рекъ, пакы иꙁиде къ Июдеомъ, и глагола имъ: Аꙁъ ни ѥдиноѩже вины не ѡбрѣтаѭ въ ниѥмь.

39. Est autem consuetudo vobis, ut unum dimittam vobis in Pascha; vultis ergo dimittam vobis regem Judaeorum?

.лѳ. Нъ ѥсть ѡбычай вамъ, да ѥдиного вамъ ѡтъпоуштѫ на Пасхѫ· хоштете ли оубо, да ѡтъпоуштѫ вамъ царꙗ Июдейска;

40. Clamaverunt ergo rursum omnes, dicentes: Non hunc, sed Barabbam! Erat autem Barabbas latro.

.м. Въꙁъпиша же пакы вьси глаголѭште: Не сего, нъ Варавьвѫ. Бѣ же Варавьва раꙁбойникъ.

## Caput XIX.

## Глава .ѳі.

1. Tunc ergo apprehendit Pilatus Jesum, et flagellavit.

.а. Тъгда же поꙗтъ Пилатъ Іисоуса, и би й.

2. Et milites plectentes coronam de spinis, imposuerunt capiti ejus; et veste purpurea circumdederunt eum.

.в. Воини же съплетъше вѣньць ѡтъ тръниꙗ въꙁложиша на главѫ ѥмоу, и въ риꙁѫ багърꙗнѫ ѡблѣкоша й.

3. Et veniebant ad eum, et dicebant: Ave, rex Judaeorum! et dabant ei alapas.

.г. И прихождаахѫ къ ниѥмоу и глаголаахѫ: Радоуй сѧ, царю Июдейскъ! и биꙗахѫ й по ланитама.

4. Exivit ergo iterum Pilatus foras, et dicit eis: Ecce, adduco vobis eum foras, ut cognoscatis, quia nullam invenio in eo causam.

.д. Иꙁиде же пакы Пилатъ вънъ, и глагола имъ: Се, иꙁвождѫ вамъ й вънъ, да раꙁоумѣѥте, ꙗко въ ниѥмь ни ѥдиноѩже вины не ѡбрѣтаѭ.

5. (Exivit ergo Jesus portans coronam spineam, et purpureum vestimentum.) Et dicit eis: Ecce homo!

.е. (Иꙁиде же Іисоусъ вънъ носѧ трънѣнъ вѣньць, и багърꙗнѫ риꙁѫ.) И глагола имъ: Се чловѣкъ!

6. Ὁτε οὐν εἰδον αὐτον οἱ ἀρχιερεῖς και οἱ ὑπηρεται, ἐκραυγασαν λεγοντες· Σταυρωσον, σταυρωσον. Λεγει αὐτοῖς ὁ Πιλατος· Λαβετε αὐτον ὑμεῖς και σταυρωσατε· ἐγω γαρ οὐχ εὑρισκω ἐν αὐτῷ αἰτιαν.

[illegible]

7. Ἀπεκριθησαν αὐτῷ οἱ Ἰουδαῖοι· Ἡμεῖς νομον ἐχομεν, και κατα τον νομον ἡμῶν ὀφειλει ἀποθανεῖν, ὁτι ἑαυτον υἱον τοῦ Θεοῦ ἐποιησεν.

[illegible]

8. Ὁτε οὐν ἠκουσεν ὁ Πιλατος τουτον τον λογον, μᾶλλον ἐφοβηθη.

[illegible]

9. Και εἰςῆλθεν εἰς τον πραιτωριον παλιν, και λεγει τῷ Ἰησοῦ· Ποθεν εἰ συ; Ὁ δε Ἰησοῦς ἀποκρισιν οὐκ ἐδωκεν αὐτῷ.

[illegible]

10. Λεγει οὐν αὐτῷ ὁ Πιλατος· Ἐμοι οὐ λαλεῖς; Οὐκ οἰδας, ὁτι ἐξουσιαν ἐχω σταυρῶσαι σε, και ἐξουσιαν ἐχω, ἀπολῦσαι σε;

[illegible]

11. Ἀπεκριθη ὁ Ἰησοῦς· Οὐκ εἰχες ἐξουσιαν οὐδεμιαν κατ' ἐμοῦ, εἰ μη ἡν σοι δεδομενον ἀνωθεν· δια τοῦτο ὁ παραδιδους με σοι μειζονα ἁμαρτιαν ἐχει.

[illegible]

12. Ἐκ τουτου ἐζητει ὁ Πιλατος ἀπολῦσαι αὐτον. Οἱ δε Ἰουδαῖοι ἐκραζον λεγοντες· Ἐαν τουτον ἀπολυσης, οὐκ εἰ φιλος τοῦ Καισαρος. Πᾶς ὁ βασιλεα ἑαυτον ποιῶν ἀντιλεγει τῷ Καισαρι.

[illegible]

13. Ὁ οὐν Πιλατος ἀκουσας τοῦτον τον λογον, ἠγαγεν ἐξω τον Ἰησοῦν, και ἐκαθισεν ἐπι τοῦ βηματος, εἰς τοπον λεγομενον Λιθοστρωτον, Ἑβραϊστι δε Γαββαθα.

[illegible]

14. Ἠν δε παρασκευη τοῦ Πασχα, ὡρα δε ὡσει ἑκτη· και λεγει τοῖς Ἰουδαιοις· Ἰδε ὁ βασιλευς ὑμῶν.

[illegible]

15. Οἱ δε ἐκραυγασαν· Ἀρον, ἀρον, σταυρωσον αὐτον. Λεγει αὐτοῖς ὁ Πιλατος· Τον βασιλεα ὑμῶν σταυρωσω; Ἀπεκριθησαν οἱ ἀρχιερεῖς· Οὐκ ἐχομεν βασιλεα, εἰ μη Καισαρα.

[illegible]

16. Τοτε οὐν παρεδωκεν αὐτον αὐτοῖς, ἱνα σταυρωθῇ. Παρελαβον δε τον Ἰησοῦν, και ἀπηγαγον·

[illegible]

17. και βασταζων τον σταυρον αὐτοῦ ἐξῆλθεν εἰς τον λεγομενον Κρανιου τοπον, ὁς λεγεται Ἑβραϊστι Γολγοθα·

[illegible]

6. Cum ergo vidissent eum pontifices et ministri, clamabant dicentes: Crucifige, crucifige eum! Dicit eis Pilatus: Accipite eum vos, et crucifigite; ego enim non invenio in eo causam.

.ѕ. Ѥгда же видѣшѧ ѝ архиѥреи и слоугы, въпиıахѫ глаголѭште: Распьни, распьни ѥго. Глагола имъ Пилатъ: Поимѣте й вы, и распьнѣте· азъ бо не ѡбрѣтаѭ въ нѥмь вины.

7. Responderunt ei Judaei: Nos legem habemus, et secundum legem debet mori, quia Filium Dei se fecit.

.ꙁ. Ѡтъвѣшташа ѥмоу Июдеи: Мы ꙁаконъ имамъ, и по ꙁаконоу нашемоу длъжьнъ ѥсть оумьрѣти, ıако Сынъ Божій творить сѧ.

8. Cum ergo audisset Pilatus hunc sermonem, magis timuit.

.и. Ѥгда же Пилатъ слыша се слово, паче оубоıа сѧ.

9. Et ingressus est praetorium iterum, et dixit ad Jesum: Unde es tu? Jesus autem responsum non dedit ei.

.ѳ. И вьниде къ преторъ пакы, и глагола Інсоусови: Ѡтъ кѫдоу ѥси ты; Інсоусъ же ѡтъвѣта не дастъ ѥмоу.

10. Dicit ergo ei Pilatus: Mihi non loqueris? Nescis, quia potestatem habeo crucifigere te, et potestatem habeo, dimittere te?

.і. Глагола же ѥмоу Пилатъ: Мънѣ ли не ѡтъвѣштаѥши; Не вѣси ли, ıако власть имамь, распѧти тѧ, и власть имамь поустити тѧ;

11. Respondit Jesus: Non haberes potestatem adversum me ullam, nisi tibi datum esset desuper; propterea, qui me tradidit tibi, majus peccatum habet.

.аі. Ѡтъвѣшта Інсоусъ: Не имаши власти на мънѣ никоѥıаже, аште не бы ти дано съ вꙑше· сего ради прѣдавꙑй мѧ тебѣ вѧштій грѣхъ имать.

12. Et exinde quaerebat Pilatus dimittere eum. Judaei autem clamabant, dicentes: Si hunc dimittis, non es amicus Caesaris. Omnis enim, qui se regem facit, contradicit Caesari.

.ві. Ѡтъ тоıа Пилатъ искааше поустити ѝ. Июдеи же въпиıахѫ, глаголѭште: Аште сего поустиши, нѣси дроугъ Кесареви. Вьсıакъ бо, иже сѧ творить царь, противить сѧ Кесареви.

13. Pilatus autem cum audisset hos sermones, adduxit foras Jesum, et sedit pro tribunali, in loco, qui dicitur Lithostrotos, Hebraice autem Gabbatha.

.гі. Пилатъ же слышавъ та словеса, иꙁведе вънъ Інсоуса, и сѣде на сѫдишти, на мѣстѣ нарицаѥмѣѥмь Лиѳостротъ, Єврейскы же Гавьваѳа.

14. Erat autem Parasceve Paschae, hora quasi sexta, et dicit Judaeis: Ecce, rex vester.

.ді. Бѣ же Параскеуги Пасцѣ, година же бѣ ıако шестаıа, и глагола Июдеомъ: Се царь вашь!

15. Illi autem clamabant: Tolle, tolle, crucifige eum! Dicit eis Pilatus: Regem vestrum crucifigam? Responderunt pontifices: Non habemus Regem, nisi Caesarem.

.еі. Ѡни же въпиıахѫ: Вьꙁьми, вьꙁьми, распьни й! Глагола имъ Пилатъ: Царıа ли вашего распьнѫ; Ѡтъвѣшташа архиѥреи: Не имамъ Царıа, тъкъмо Кесарıа.

16. Tunc ergo tradidit eis illum, ut crucifigeretur. Susceperunt autem Jesum, et eduxerunt.

.ѕі. Тъгда же прѣдастъ ѝ имъ, да й распьнѫть. Ѡни же поимъше Інсоуса ведоша.

17. Et bajulans sibi crucem exivit in eum, qui dicitur Calvariae locum, Hebraice autem Golgotha;

.ꙁі. И самъ си несы крьстъ иꙁиде въ нарицаѥмоѥ Краниѥво мѣсто, (ѥже глаголѥть сѧ) Єврейскы Гольгоѳа·

18. *όπου αύτον έσταυρωσαν, και μετ' αύτοῦ άλλους δυο έντεῦθεν και έντεῦθεν, μεσον δε τον 'Ιησοῦν.*

19. *'Εγραψε δε και τιτλον ὁ Πιλατος, και έθηκεν έπι τοῦ σταυροῦ· ἠν δε γεγραμμενον· 'Ιησοῦς ὁ Ναζωραῖος ὁ βασιλευς τῶν 'Ιουδαιων.*

20. *Τοῦτον οὐν τον τιτλον πολλοι άνεγνωσαν τῶν 'Ιουδαιων, ότι έγγυς ἠν τῆς πολεως ὁ τοπος, όπου έσταυρωθη ὁ 'Ιησοῦς· και ἠν γεγραμμενον 'Εβραϊστι, 'Ελληνιστι, 'Ρωμαϊστι.*

21. *'Ελεγον οὐν τῷ Πιλατῳ οἱ άρχιερεῖς τῶν 'Ιουδαιων· Μη γραφε· 'Ο βασιλευς τῶν 'Ιουδαιων· άλλ' ότι έκεῖνος είπε· Βασιλευς είμι τῶν 'Ιουδαιων.*

22. *'Απεκριθη ὁ Πιλατος· 'Ο γεγραφα, γεγραφα.*

23. *Οἱ οὐν στρατιῶται, ότε έσταυρωσαν τον 'Ιησοῦν, έλαβον τα ἱματια αύτοῦ, και έποιησαν τεσσαρα μερη, ἑκαστῳ στρατιωτη μερος, και τον χιτῶνα. 'Ην δε ὁ χιτων άρράφος, έκ τῶν άνωθεν ὑφαντος δι' όλου.*

24. *Είπον οὐν προς άλληλους· Μη σχισωμεν αύτον, άλλα λαχωμεν περι αύτοῦ, τινος έσται· ἱνα ἡ γραφη πληρωθῇ ἡ λεγουσα· „Διεμερισαντο τα ἱματια μου ἑαυτοῖς, και έπι τον ἱματισμον μου έβαλον κλῆρον.“ Οἱ μεν οὐν στρατιῶται ταῦτα έποιησαν.*

25. *Εἱστηκεισαν δε παρα τῷ σταυρῷ τοῦ 'Ιησοῦ ἡ μητηρ αύτοῦ, και ἡ άδελφη τῆς μητρος αύτοῦ, Μαρια ἡ τοῦ Κλωπᾶ, και Μαρια ἡ Μαγδαληνη.*

26. *'Ιησοῦς οὐν ἰδων την μητερα και τον μαθητην παρεστῶτα, όν ἠγαπα, λεγει τῇ μητρι αύτοῦ· Γυναι, ἰδου ὁ υἱος σου.*

27. *Είτα λεγει τῷ μαθητῇ· 'Ιδου ἡ μητηρ σου. Και άπ' έκεινης τῆς ώρας έλαβεν αύτην ὁ μαθητης είς τα ἰδια.*

28. *Μετα τοῦτο είδως ὁ 'Ιησοῦς, ότι παντα ἠδη τετελεσται, ἱνα τελειωθῇ ἡ γραφη, λεγει· Διψῶ.*

29. *Σκεῦος οὐν έκειτο όξους μεστον· οἱ δε πλησαντες σπογγον όξους, και ὑσσωπῳ περιθεντες, προσηνεγκαν αύτοῦ τῷ στοματι.*

30. *'Οτε οὐν έλαβε το όξος ὁ 'Ιησοῦς, είπε· Τετελεσται· και κλινας την κεφαλην, παρεδωκε το πνεῦμα.*

18. ubi crucifixerunt eum, et cum eo alios duos, hinc et hinc, medium autem Jesum.

.иі. идеже й распѣшѧ, и съ нимь ина дъва сѫдоу и ѡвѫдоу, по срѣдѣ же Інсоуса.

19. Scripsit autem et titulum Pilatus, et posuit super crucem; erat autem scriptum: Jesus Nazarenus Rex Judaeorum.

.ѳі. Написа же и титьлъ Пилатъ, и положи на крьстѣ· бѣ же написано: Інсоусъ Назарѣнинъ, Царь Июдейскъ.

20. Hunc ergo titulum multi Judaeorum legerunt, quia prope civitatem erat locus, ubi cruxifixus est Jesus; et erat scriptum: Hebraice, Graece et Latine.

.к. Сего же титьла мъноѕи чьтошѧ ѡтъ Июдеи, ꙗко близъ града бѣ мѣсто, идеже распѧшѧ Інсоуса· и бѣ написано: Еврейскы, Гръчьскы, и Латиньскы.

21. Dicebant ergo Pilato pontifices Judaeorum: Noli scribere, Rex Judaeorum; sed quia ipse dixit: Rex sum Judaeorum.

.ка. Глаголаахѫ же Пилатови архиереи Июдейстіи: Не пиши: Царь Июдейскъ, нъ ꙗко самъ рече: Царь ѥсмь Июдейскъ.

22. Respondit Pilatus: Quod scripsi, scripsi.

.кв. Ѡтъвѣшта Пилатъ: Ѥже писахъ, писахъ.

23. Milites ergo cum crucifixissent eum, acceperunt vestimenta ejus (et fecerunt quatuor partes, unicuique militi partem), et tunicam. Erat autem tunica inconsutilis, desuper contexta per totum.

.кг. Воини же ѥгда распѧшѧ й, приѩшѧ ризꙑ ѥго, (и сътворишѧ четꙑри части, комоужьдо воиноу часть), и хитонъ. Бѣ же хитонъ нешьвенъ, съ връхоу истъканъ вьсь.

24. Dixerunt ergo ad invicem: Non scindamus eum, sed sortiamur de illa, cujus sit; ut Scriptura impleretur, dicens: »Partiti sunt vestimenta mea sibi: et in vestem meam miserunt sortem.« Et milites quidem haec fecerunt.

.кд. Рекошѧ же къ себѣ: Не прѣдерѣмъ ѥго, нъ метѣмъ жрѣбиѩ ѡ нь, комоу бѫдеть: Да събѫдѫть сѧ Кънигꙑ глаголѭштаѩ: „Раздѣлишѧ себѣ ризꙑ моѩ, и ѡ матиꙁмъ мой меташѧ жрѣбиѩ.“ Воини же оубо си сътворишѧ.

25. Stabant autem juxta crucem Jesu mater ejus, et soror matris ejus, Maria Cleophae et Maria Magdalene.

.ке. Стоꙗхѫ же при крьстѣ Інсоусовѣ мати ѥго, и сестра матере ѥго, Мариꙗ Клеофова, и Мариꙗ Магдалꙑни.

26. Cum vidisset ergo Jesus matrem et discipulum stantem, quem diligebat, dicit matri suae: Mulier, ecce, filius tuus!

.кѕ. Інсоусъ же видѣвъ матере и оученика стоꙗшта, ѥгоже люблꙗаше, глагола матери своѥй: Жено, се, сꙑнъ твой!

27. Deinde dicit discipulo: Ecce, mater tua! Et ex illa hora accipit eam discipulus in sua.

.кꙁ. Потомь же глагола оученикоу: Се, мати твоꙗ! И ѡтъ того дьне поꙗтъ ѭ оученикъ въ своꙗ.

28. Postea sciens Jesus, quia omnia consummata sunt, ut consummaretur Scriptura, dixit: Sitio:

.ки. По семь вѣдꙑ Інсоусъ, ꙗко вьсꙗ оуже съвръшишѧ сѧ ѡ ѥмь, да събѫдѫть сѧ Кънигꙑ, глагола: Жаждѫ.

29. Vas ergo erat positum aceto plenum. Illi autem spongiam aceto plenam, hyssopo circumponentes obtulerunt ori ejus.

.кѳ. Съсѫдъ же стоꙗше плънъ ѡцьта. Ѡни же гѫбѫ наплъньше ѡцьта и на ѵсопъ въꙁнеꙁъше придѣшѧ къ оустомъ ѥго.

30. Cum ergo accepisset Jesus acetum, dixit: Consummatum est! Et inclinato capite tradidit spiritum.

.л. Ѥгда же приꙗтъ ѡцьтъ Інсоусъ, рече: Съвръши сѧ! И прѣклонь главѫ прѣдастъ доухъ.

31. *Οἱ οὐν Ἰουδαῖοι, ἱνα μη μεινη ἐπι τοῦ σταυροῦ τα σωματα ἐν τῷ σαββατῳ, ἐπει παρασκευη ἠν, (ἠν γαρ μεγαλη ἡ ἡμερα ἐκεινου τοῦ σαββατου), ἠρωτησαν τον Πιλατον, ἱνα κατεαγῶσιν αὐτῶν τα σκελη, και ἀρθῶσιν.*

[illegible]

32. *Ἠλθον οὐν οἱ στρατιῶται και τοῦ μεν πρωτου κατεαξαν τα σκελη και τοῦ ἀλλου τοῦ συσταυρωθεντος αὐτῷ·*

[illegible]

33. *ἐπι δε τον Ἰησοῦν ἐλθοντες, ὠς εἰδον αὐτον ἠδη τεθνηκοτα, οὐ κατεαξαν αὐτοῦ τα σκελη·*

[illegible]

34. *ἀλλ' εἱς τῶν στρατιωτῶν λογχη αὐτοῦ την πλευραν ἐνυξε, και εὐθυς ἐξῆλθεν αἱμα και ὑδωρ.*

[illegible]

35. *Και ὁ ἑωρακως μεμαρτυρηκε, και ἀληθινη αὐτοῦ ἐστιν ἡ μαρτυρια, κἀκεῖνος οἰδεν, ὁτι ἀληθῆ λεγει, ἱνα και ὑμεῖς πιστευσητε.*

[illegible]

36. *Ἐγενετο γαρ ταῦτα, ἱνα ἡ γραφη πληρωθῇ· „Ὀστοῦν οὐ συντριβησεται αὐτοῦ·"*

[illegible]

37. *και παλιν ἑτερα γραφη λεγει· „Ὀψονται, εἰς ὀν ἐξεκεντησαν."*

[illegible]

38. *Μετα δε ταῦτα ἠρωτησε τον Πιλατον ὁ Ἰωσηφ ὁ ἀπο Ἀριμαθαιας (ὠν μαθητης τοῦ Ἰησοῦ, κεκρυμμενος δε δια τον φοβον τῶν Ἰουδαιων), ἱνα ἀρη το σῶμα τοῦ Ἰησοῦ· και ἐπετρεψεν ὁ Πιλατος. Ἠλθεν οὐν και ἠρε το σῶμα τοῦ Ἰησοῦ.*

[illegible]

39. *Ἠλθε δε και Νικοδημος (ὁ ἐλθων προς τον Ἰησοῦν νυκτος το πρῶτον), φερων μιγμα σμυρνης και ἀλοης ὡσει λιτρας ἑκατον.*

[illegible]

40. *Ἐλαβον οὐν το σῶμα τοῦ Ἰησοῦ, και ἐδησαν αὐτο ὀθονιοις μετα τῶν ἀρωματων, καθως ἐθος ἐστι τοῖς Ἰουδαιοις ἐνταφιαζειν.*

[illegible]

41. *Ἠν δε ἐν τῷ τοπῳ, ὁπου ἐσταυρωθη, κῆπος, και ἐν τῷ κηπῳ μνημειον καινον, ἐν ᾡ οὐδεπω οὐδεις ἐτεθη.*

[illegible]

42. *Ἐκεῖ οὐν δια την παρασκευην τῶν Ἰουδαιων, ὁτι ἐγγυς ἠν το μνημεῖον, ἐθηκαν τον Ἰησοῦν.*

[illegible]

31. Judaei ergo (quoniam Parasceve erat), ut non remanerent in cruce corpora sabbato, (erat enim magnus dies ille Sabbati), rogaverunt Pilatum, ut frangerentur eorum crura, et tollerentur.

.ла. Нюдеи же (понеже Параскевъгиѩ бѣ) да не ѡстанѫть на крьстѣ тѣлеса въ сѫботѫ (бѣ бо великъ дьнь тъ Сѫботьный), молиша Пилата, да прѣбиѭть голѣни ихъ, и възьмѫть ѩ.

32. Venerunt ergo milites, et primi quidem fregerunt crura et alterius, qui crucifixus est cum eo:

.лв. Прiидоша же воини, и пръвоуоумоу же прѣбиша голѣни, и дроугоуоумоу распатоуоумоу съ нимь·

33. ad Jesum autem cum venissent, ut viderunt eum jam mortuum, non fregerunt ejus crura,

.лг. на Інсоуса же пришьдъше, ꙗко видѣша й оуже оумьръшь, не прѣбиша ѥмоу голѣнию·

34. sed unus militum lancea latus ejus aperuit, et continuo exivit sanguis et aqua.

.лд. нъ ѥдинъ ѡтъ воинъ копиѥмь ѥмоу ребра прободе, и абиѥ изиде кръвь и вода.

35. Et qui vidit, testimonium perhibuit, et verum est testimonium ejus; et ille scit, quia vera dicit, ut et vos credatis.

.ле. И видѣвый съвѣдѣтельствова, и истинньно ѥсть съвѣдѣтельство ѥго· и тъ вѣсть, ꙗко истинѫ глаголѥть, да и вы вѣрѫ имете.

36. Facta sunt enim haec, ut Scriptura impleretur: »Os non comminuetis ex eo.«

.лѕ. Бышѧ бо си, да събѫдѫть сѧ Кънигы: „Кость не съкроушить сѧ ѡтъ нѥго."

37. Et iterum alia Scriptura dicit: »Videbunt, in quem transfixerunt.«

.лз. И пакы дроугыѩ Кънигы глаголѭть: „Възьрѧть на нь, ѥгоже прободоша."

38. Post haec autem rogavit Pilatum Joseph ab Arimathaea, (eo quod esset discipulus Jesu, occultus autem propter metum Judaeorum), ut tolleret corpus Jesu. Et permisit Pilatus. Venit ergo, et tulit corpus Jesu.

.ли. По сихъ же проси оу Пилата Иосифъ, иже ѡтъ Аримаѳеѩ, (съи оученикъ Інсоусовъ, таинъ же страха ради Нюдейска), да възьметь тѣло Інсоусово. И повелѣ Пилатъ. Прiиде же и възѧтъ тѣло Інсоусоко.

39. Venit autem et Nicodemus, qui venerat ad Jesum nocte primum, ferens mixturam myrrhae et aloës quasi libras centum.

.лѳ. Прiиде же и Никодимъ, пришьдый къ Інсоусови ноштиѭ прѣжде, несы съмѣшениѥ змѵрьно и алоино ꙗко ликръ съто.

40. Acceperunt ergo corpus Jesu et ligaverunt illud linteis cum aromatibus, sicut mos est Judaeis sepelire.

.м. Приѩста же тѣло Інсоусово, и ѡбиста ѥ ризами съ ароматы, ꙗкоже обычай ѥсть Нюдеомъ погрѣбати.

41. Erat autem in loco, ubi crucifixus est, hortus; et in horto monumentum novum, in quo nondum quisquam positus erat.

.ма. Бѣ же на мѣстѣ, идеже й распѧша врътьпъ· и въ врътьпѣ гробъ новъ, въ нѥмьже николиже никътоже не бѣ положенъ.

42. Ibi ergo propter Parasceven Judaeorum, quia juxta erat monumentum, posuerunt Jesum.

.мв. Тоу же за Параскевъгиѭ Нюдейскѫ, ꙗко близъ бѣаше гробъ, положиста Інсоуса.

## Κεφ. XX.

1. Τῇ δε μιᾷ τῶν σαββατων Μαρια ἡ Μαγδαληνὴ ἐρχεται πρωϊ, σκοτιας ἐτι οὐσης, εἰς το μνημεῖον· και βλεπει τον λιθον ἠρμενον ἐκ τοῦ μνημειου.

2. Τρεχει οὐν και ἐρχεται προς Σιμωνα Πετρον και προς τον ἀλλον μαθητην, ὀν ἐφιλει ὁ Ἰησοῦς, και λεγει αὐτοῖς· Ἠραν τον Κυριον ἐκ τοῦ μνημειου, και οὐκ οἰδαμεν, ποῦ ἐθηκαν αὐτον.

3. Ἐξῆλθεν οὐν ὁ Πετρος και ὁ ἀλλος μαθητης, και ἠρχοντο εἰς το μνημεῖον.

4. Ἐτρεχον δε οἱ δυο ὁμοῦ· και ὁ ἀλλος μαθητης προεδραμε ταχιον τοῦ Πετρου, και ἠλθε πρῶτος εἰς το μνημεῖον.

5. Και παρακυψας βλεπει κειμενα τα ὀθονια, οὐ μεντοι εἰςῆλθεν.

6. Ἐρχεται οὐν Σιμων Πετρος ἀκολουθῶν αὐτῷ και εἰςῆλθεν εἰς το μνημεῖον, και θεωρεῖ τα ὀθονια κειμενα·

7. και το σουδαριον ὁ ἠν ἐπι τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ, οὐ μετα τῶν ὀθονιων κειμενον, ἀλλα χωρις ἐντετυλιγμενον εἰς ἑνα τοπον.

8. Τοτε οὐν εἰςῆλθε και ὁ ἀλλος μαθητης ὁ ἐλθων πρῶτος εἰς το μνημεῖον, και εἰδε και ἐπιστευσεν·

9. οὐδεπω γαρ ᾔδεισαν την γραφην, ὁτι δεῖ αὐτον ἐκ νεκρῶν ἀναστῆναι.

10. Ἀπῆλθον οὐν παλιν προς ἑαυτους οἱ μαθηται.

11. Μαρια δε εἱστηκει προς το μνημεῖον κλαιουσα ἐξω. Ὡς οὐν ἐκλαιε, παρεκυψεν εἰς το μνημεῖον,

12. και θεωρεῖ δυο ἀγγελους ἐν λευκοῖς καθεζομενους, ἑνα προς τῇ κεφαλῇ, και ἑνα προς τοῖς ποσιν, ὁπου ἐκειτο το σῶμα τοῦ Ἰησοῦ.

13. Και λεγουσιν αὐτῇ ἐκεῖνοι· Γυναι, τι κλαιεις; Λεγει αὐτοῖς· Ὁτι ἠραν τον Κυριον μου, και οὐκ οἰδα, ποῦ ἐθηκαν αὐτον.

14. Και ταῦτα εἰποῦσα ἐστραφη εἰς τα ὀπισω, και θεωρεῖ τον Ἰησοῦν ἑστῶτα· και οὐκ ᾔδει, ὁτι ὁ Ἰησοῦς ἐστι.

[illegible]

## Caput XX.

1. Una autem Sabbati, Maria Magdalene venit mane, cum adhuc tenebrae essent, ad monumentum, et vidit lapidem sublatum a monumento.

2. Cucurrit ergo, et venit ad Simonem Petrum et ad alium discipulum, quem amabat Jesus, et dicit illis: Tulerunt Dominum de monumento, et nescimus, ubi posuerunt eum.

3. Exiit ergo Petrus, et ille alius discipulus, et venerunt ad monumentum.

4. Currebant autem duo simul, et ille alius discipulus praecucurrit citius Petro, et venit primus ad monumentum.

5. Et cum se inclinasset, vidit posita linteamina, non tamen introivit.

6. Venit ergo Simon Petrus sequens eum, et introivit in monumentum, et vidit linteamina posita,

7. et sudarium, quod fuerat super caput ejus, non cum linteaminibus positum, sed separatim involutum in unum locum.

8. Tunc ergo introivit et ille discipulus, qui venerat primus ad monumentum, et vidit et credidit.

9. Nondum enim sciebant Scripturam, quia oportebat eum a mortuis resurgere.

10. Abierunt ergo iterum discipuli ad semet ipsos.

11. Maria autem stabat ad monumentum foris, plorans. Dum ergo fleret, inclinavit se, et prospexit in monumentum;

12. et vidit duos Angelos in albis, sedentes, unum ad caput, et unum ad pedes, ubi positum fuerat corpus Jesu.

13. Dicunt ei illi: Mulier, quid ploras? Dicit eis: Quia tulerunt Dominum meum, et nescio, ubi posuerunt eum.

14. Haec cum dixisset, conversa est retrorsum, et vidit Jesum stantem; et non sciebat, quia Jesus est.

## Глава .к.

.а. Въ юдинѫ же сѫботѫ Мариꙗ Магдалынии прїиде ѕа оутра, юште сѫшти тьмѣ на гробъ, и видѣ камень възѧтъ ѡтъ гроба.

.в. Тече же и прїиде къ Симоноу Петроу, и къ дроугоуоумоу оученикоу, югоже любѣаше Їисоусъ, и глагола има: Възѧшѧ Господа ѡтъ гроба, и не вѣмъ, къде положишѧ й.

.г. Изиде же Петръ и дроугый оученикъ, и идѣаста къ гробоу.

.д. Течааста же ѡба въкоупѣ· и тъ дроугый оученикъ тече скорѣе Петра, и прїиде прѣжде къ гробоу.

.є. И приникъ видѣ ризъи лежаштѧ, ѡбаче не вънide.

.ѕ. Прїиде же и Симонъ Петръ въ слѣдъ юго, и въниде въ гробъ, и видѣ ризъи лежаштѧ,

.ꙁ. и соударъ, иже бѣ на главѣ юго, не съ ризами лежаштъ, нъ ѡсобь съвитъ на юдиномь мѣстѣ.

.и. Тъгда же въниде и дроугый оученикъ, пришьдъй прѣжде къ гробоу, и видѣ и вѣрова.

.ѳ. Не оу бо вѣдѣахѫ Кънигъ, ꙗко подобааше юмоу ѡтъ мрътвъихъ въскрьснѫти.

.і. Идоста же пакы оученика къ себѣ.

.аі. Мариꙗ же стоꙗаше оу гроба вънѣ плачѫшти сѧ. Ꙗко же плакааше сѧ, приниче въ гробъ (и позьрѣ)

.ві. и видѣ дъва Анъгела въ бѣлахъ ризахъ сѣдѧшта, юдиного оу главы, и юдиного оу ногоу, идеже бѣ лежало тѣло Їисоусово.

.гі. И глаголаста юй ѡна: Жено, чьто плачеши сѧ; Глагола има: Ꙗко възѧшѧ Господа моюго, и не вѣдѣ, къде положишѧ й.

.ді. Си рекъши ѡбрати сѧ въспѧть, и видѣ Їисоуса стоꙗшта· и не вѣдѣаше, ꙗко Їисоусъ юсть.

15. Λεγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Γυναι, τι κλαιεις; Τινα ζητεῖς; Ἐκεινη δοκοῦσα ὅτι ὁ κηπουρος ἐστι, λεγει αὐτῷ· Κυριε, εἰ συ ἐβαστασας αὐτον, εἰπε μοι, ποῦ αὐτον ἐθηκας· κἀγω αὐτον ἀρῶ.

[illegible]

16. Λεγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Μαρια. Στραφεῖσα ἐκεινη λεγει αὐτῷ· Ῥαββουνι· ὁ λεγεται· Διδασκαλε.

[illegible]

17. Λεγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Μη μου ἁπτου· οὔπω γαρ ἀναβεβηκα προς τον Πατερα μου· πορευου δε προς τους ἀδελφους μου, και εἰπε αὐτοῖς· Ἀναβαινω προς τον Πατερα μου και Πατερα ὑμῶν και Θεον μου και Θεον ὑμῶν.

[illegible]

18. Ἐρχεται Μαρια ἡ Μαγδαληνη ἀπαγγελλουσα τοῖς μαθηταῖς, ὅτι ἑωρακε τον Κυριον, και ταῦτα εἰπεν αὐτῇ.

[illegible]

19. Οὔσης οὖν ὀψιας, τῇ ἡμερα ἐκεινῃ τῇ μιᾷ τῶν σαββατων και τῶν θυρῶν κεκλεισμενων, ὅπου ἦσαν οἱ μαθηται συνηγμενοι, δια τον φοβον τῶν Ἰουδαιων, ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς και ἐστη εἰς το μεσον, και λεγει αὐτοῖς· Εἰρηνη ὑμῖν.

[illegible]

20. Και τοῦτο εἰπων ἐδειξεν αὐτοῖς τας χεῖρας και την πλευραν αὐτοῦ. Ἐχαρησαν οὖν οἱ μαθηται ἰδοντες τον Κυριον.

[illegible]

21. Εἰπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς παλιν· Εἰρηνη ὑμῖν· καθὼς ἀπεσταλκε με ὁ Πατηρ, κἀγω πεμπω ὑμᾶς.

[illegible]

22. Και τοῦτο εἰπων ἐνεφυσησε, και λεγει αὐτοῖς· Λαβετε Πνεῦμα Ἅγιον.

[illegible]

23. Ἄν τινων ἀφῆτε τας ἁμαρτιας, ἀφιενται αὐτοῖς· ἄν τινων κρατῆτε, κεκρατηνται.

[illegible]

24. Θωμᾶς δε, εἷς ἐκ τῶν δωδεκα, ὁ λεγομενος Διδυμος, οὐκ ἦν μετ' αὐτῶν, ὅτε ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς.

[illegible]

25. Ἐλεγον οὖν αὐτῷ οἱ ἀλλοι μαθηται· Ἑωρακαμεν τον Κυριον. Ὁ δε εἰπεν αὐτοῖς· Ἐαν μη ἰδω ἐν ταῖς χερσιν αὐτοῦ τον τυπον τῶν ἥλων, και βαλω τον δακτυλον μου εἰς τον τυπον τῶν ἥλων, και βαλω την χεῖρα μου εἰς την πλευραν αὐτοῦ, οὐ μη πιστευσω.

[illegible]

15. Dicit ei Jesus: Mulier, quid ploras? quem quaeris? Illa existimans, quia hortulanus esset, dicit ei: Domine! si tu sustulisti eum, dicito mihi, ubi posuisti eum; et ego eum tollam.

16. Dicit ei Jesus: Maria! Conversa illa, dicit ei: Rabboni! (quod dicitur Magister).

17. Dicit ei Jesus: Noli me tangere; nondum enim ascendi ad Patrem meum; vade autem ac fratres meos, et dic eis: Ascendo ad Patrem meum, et Patrem vestrum, Deum meum, et Deum vestrum.

18. Venit Maria Magdalene annuntians discipulis: Quia vidi Dominum, et haec dixit mihi.

19. Cum ergo sero esset die illo, una sabbatorum, et fores essent clausae, ubi erant discipuli congregati propter metum Judaeorum: venit Jesus, et stetit in medio, et dixit eis: Pax vobis!

20. Et cum hoc dixisset, ostendit eis manus et latus. Gavisi sunt ergo discipuli, viso Domino.

21. Dixit ergo eis iterum: Pax vobis! Sicut misit me Pater, et ego mitto vos.

22. Haec cum dixisset, insufflavit, et dixit eis: Accipite Spiritum sanctum.

23. Quorum remiseritis peccata, remittuntur eis; et quorum retinueritis, retenta sunt.

24. Thomas autem unus ex duodecim, qui dicitur Didymus, non erat cum eis, quando venit Jesus.

25. Dixerunt ergo ei alii discipuli: Vidimus Dominum! Ille autem dixit eis: Nisi videro in manibus ejus fixuram clavorum, et mittam digitum meum in locum clavorum, et mittam manum meam in latus ejus, non credam.

.еі. Глагола ѥй Інсоусъ: Жено, чьто плачеши сѧ; кого иштеши; Ѡна же мьнѧшти, ꙗко врътоградьникъ ѥсть, глагола ѥмоу: Господи, аште ты ѥси въꙁѧлъ й, покажи мънѣ, къде й ѥси положилъ· и аꙁъ въꙁьмѫ й.

.ѕі. Глагола ѥй Інсоусъ: Марие! Ѡна же ѡбраштьши сѧ глагола ѥмоу: Раввоуни! (ѥже нарицаѥть сѧ Оучителю!)

.ꙁі. Глагола ѥй Інсоусъ: Не прикасай сѧ мънѣ· не оу бо въꙁидохъ къ Ѡтьцоу моѥмоу· нъ иди къ братій моѥй, и рьци имъ: Въсхождѫ къ Ѡтьцоу моѥмоу, и Ѡтьцоу вашемоу, къ Богоу моѥмоу и Богоу вашемоу.

.иі. Пріиде же Мариꙗ Магдалыни повѣдаѭшти оученикомъ: Ꙗко видѣхъ Господа, и си рече ми.

.ѳі. Сѫштоу же поꙁдѣ въ тъ дьнь, въ ѥдинѫ сѫботѫ, и двьрьмъ ꙁатворенамъ, идеже бѣахѫ оученици ѥго събьрани ꙁа страхъ Июдейскъ· пріиде Інсоусъ, и ста по срѣдѣ ихъ и глагола имъ: Миръ вамъ!

.к. И се рекъ, покаꙁа имъ рѫцѣ и ребра своꙗ. Въꙁрадоваша же сѧ оученици, видѣвъше Господа.

.ка. Рече же имъ Інсоусъ пакы: Миръ вамъ! Ꙗкоже посъла мѧ Ѡтьць, и аꙁъ посылаѭ вы.

.кв. И се рекъ, доунѫ на ня, и глагола имъ: Пріимѣте Доухъ Свѧтый.

.кг. Имъже ѡтъпоустите грѣхы, ѡтъпоустѧть сѧ имъ· и имъже дръжите, дръжѧть сѧ имъ.

.кд. Ѳома же, ѥдинъ ѡтъ ѡбою на десѧте, нарицаѥмый Близньць, не бѣ тоу съ ними, ѥгда пріиде Інсоусъ.

.ке. Глаголаша же ѥмоу дроуѕіи оученици: Видѣхомъ Господа. Ѡнъ же рече имъ: Аште не виждѫ на рѫкоу ѥго ꙗꙁвы гвоꙁдійныѩ, и вложѫ пръста моѥго въ ꙗꙁвѫ гвоꙁдійнѫѭ, и вложѫ рѫкы моѥѩ въ ребра ѥго, не имѫ вѣры.

15. *Λεγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Γυναι, τι κλαιεις; Τινα ζητεῖς; Ἐκεινη δοκοῦσα ὅτι ὁ κηπουρος ἐστι, λεγει αὐτῷ· Κυριε, εἰ συ ἐβαστασας αὐτον, εἰπε μοι, ποῦ αὐτον ἐθηκας· κἀγω αὐτον ἀρῶ.*

16. *Λεγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Μαρια. Στραφεῖσα ἐκεινη λεγει αὐτῷ· Ῥαββουνι· ὁ λεγεται· Διδασκαλε.*

17. *Λεγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Μη μου ἁπτου· οὔπω γαρ ἀναβεβηκα προς τον Πατερα μου· πορευου δε προς τους ἀδελφους μου, και εἰπε αὐτοῖς· Ἀναβαινω προς τον Πατερα μου και Πατερα ὑμῶν και Θεον μου και Θεον ὑμῶν.*

18. *Ἐρχεται Μαρια ἡ Μαγδαληνη ἀπαγγελλουσα τοῖς μαθηταῖς, ὅτι ἑωρακε τον Κυριον, και ταῦτα εἰπεν αὐτῇ.*

19. *Οὐσης οὐν ὀψιας, τῇ ἡμερα ἐκεινη τῇ μιᾷ τῶν σαββατων και τῶν θυρῶν κεκλεισμενων, ὅπου ἦσαν οἱ μαθηται συνηγμενοι, δια τον φοβον τῶν Ἰουδαιων, ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς και ἐστη εἰς το μεσον, και λεγει αὐτοῖς· Εἰρηνη ὑμῖν.*

20. *Και τοῦτο εἰπων ἐδειξεν αὐτοῖς τας χεῖρας και την πλευραν αὐτοῦ. Ἐχαρησαν οὐν οἱ μαθηται ἰδοντες τον Κυριον.*

21. *Εἰπεν οὐν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς παλιν· Εἰρηνη ὑμῖν· καθως ἀπεσταλκε με ὁ Πατηρ, κἀγω πεμπω ὑμᾶς.*

22. *Και τοῦτο εἰπων ἐνεφυσησε, και λεγει αὐτοῖς· Λαβετε Πνεῦμα Ἁγιον.*

23. *Ἀν τινων ἀφῆτε τας ἁμαρτιας, ἀφιενται αὐτοῖς· ἀν τινων κρατῆτε, κεκρατηνται.*

24. *Θωμᾶς δε, εἷς ἐκ τῶν δωδεκα, ὁ λεγομενος Διδυμος, οὐκ ἦν μετ' αὐτῶν, ὅτε ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς.*

25. *Ἐλεγον οὐν αὐτῷ οἱ ἀλλοι μαθηται· Ἑωρακαμεν τον Κυριον. Ὁ δε εἰπεν αὐτοῖς· Ἐαν μη ἰδω ἐν ταῖς χερσιν αὐτοῦ τον τυπον τῶν ἡλων, και βαλω τον δακτυλον μου εἰς τον τυπον τῶν ἡλων, και βαλω την χεῖρα μου εἰς την πλευραν αὐτοῦ, οὐ μη πιστευσω.*

[illegible]

15. Dicit ei Jesus: Mulier, quid ploras? quem quaeris? Illa existimans, quia hortulanus esset, dicit ei: Domine! si tu sustulisti eum, dicito mihi, ubi posuisti eum; et ego eum tollam.

.еі. Глагола ѥй Іисоусъ: Жено, чьто плачеши сѧ; кого иштеши; Ѡна же мьнѧшти, ꙗко вртоградьникъ ѥсть, глагола ѥмоу: Господи, аште ты ѥси въꙁѧлъ й, покѣждь мънѣ, къде й ѥси положилъ· и азъ въꙁьмѫ й.

16. Dicit ei Jesus: Maria! Conversa illa, dicit ei: Rabboni! (quod dicitur Magister).

.ѕі. Глагола ѥй Іисоусъ: Марие! Ѡна же ѡбраштьши сѧ глагола ѥмоу: Раввоуни! (ѥже нарицаѥть сѧ Оучителю!)

17. Dicit ei Jesus: Noli me tangere; nondum enim ascendi ad Patrem meum; vade autem ac fratres meos, et dic eis: Ascendo ad Patrem meum, et Patrem vestrum, Deum meum, et Deum vestrum.

.зі. Глагола ѥй Іисоусъ: Не прикасай сѧ мънѣ· не оу бо въꙁидохъ къ Ѡтьцоу моѥмоу· нъ иди къ братіи моѥй, и рьци имъ: Въсхождѫ къ Ѡтьцоу моѥмоу, и Ѡтьцоу вашемоу, къ Богоу моѥмоу и Богоу вашемоу.

18. Venit Maria Magdalene annuntians discipulis: Quia vidi Dominum, et haec dixit mihi.

.иі. Пріиде же Мариꙗ Магдалыни повѣдаѭшти оученикомъ: Ꙗко видѣхъ Господа, и си рече ми.

19. Cum ergo sero esset die illo, una sabbatorum, et fores essent clausae, ubi erant discipuli congregati propter metum Judaeorum: venit Jesus, et stetit in medio, et dixit eis: Pax vobis!

.ѳі. Сѫштоу же поꙁдѣ въ тъ дьнь, въ ѥдинѫ сѫботѫ, и двьрьмъ ꙁатворенамъ, идеже бѣахѫ оученици ѥго събьрани ꙁа страхъ Июдейскъ· пріиде Іисоусъ, и ста по срѣдѣ ихъ и глагола имъ: Миръ вамъ!

20. Et cum hoc dixisset, ostendit eis manus et latus. Gavisi sunt ergo discipuli, viso Domino.

.к. И се рекъ, покаꙁа имъ рѫцѣ и ребра своꙗ. Въꙁрадоваша же сѧ оученици, видѣвъше Господа.

21. Dixit ergo eis iterum: Pax vobis! Sicut misit me Pater, et ego mitto vos.

.ка. Рече же имъ Іисоусъ пакы: Миръ вамъ! Ꙗкоже посъла мѧ Ѡтьць, и азъ посылаѭ вы.

22. Haec cum dixisset, insufflavit, et dixit eis: Accipite Spiritum sanctum.

.кв. И се рекъ, доунѫ на нѧ, и глагола имъ: Пріимѣте Доухъ Свѧтый.

23. Quorum remiseritis peccata, remittuntur eis; et quorum retinueritis, retenta sunt.

.кг. Имъже ѡтъпоустите грѣхы, ѡтъпоустѧть сѧ имъ· и имъже дръжите, дръжѧть сѧ имъ.

24. Thomas autem unus ex duodecim, qui dicitur Didymus, non erat cum eis, quando venit Jesus.

.кд. Ѳома же, ѥдинъ ѡтъ ѡбою на десѧте, нарицаѥмый Близньць, не бѣ тоу съ ними, ѥгда пріиде Іисоусъ.

25. Dixerunt ergo ei alii discipuli: Vidimus Dominum! Ille autem dixit eis: Nisi videro in manibus ejus fixuram clavorum, et mittam digitum meum in locum clavorum, et mittam manum meam in latus ejus, non credam.

.ке. Глаголашѧ же ѥмоу дроуꙁіи оученици: Видѣхомъ Господа. Ѡнъ же рече имъ: Аште не виждѫ на рѫкоу ѥго ꙗꙁвы гвоздійныѧ, и вложѫ пръста моѥго въ ꙗꙁвѫ гвоздійнѫѭ, и вложѫ рѫкы моѩ въ ребра ѥго, не имѫ вѣры.

26. Και μεθ' ἡμερας ὀκτω παλιν ἠσαν
ἐσω οἱ μαθηται αὐτοῦ, και Θωμᾶς μετ'
αὐτῶν. Ἐρχεται ὁ Ἰησοῦς, τῶν θυρῶν κε-
κλεισμενων, και ἐστη εἰς το μεσον, και εἰπεν·
Εἰρηνη ὑμῖν.

27. Εἶτα λεγει τῷ Θωμᾷ· Φερε τον δακτυ-
λον σου ὡδε, και ἰδε τας χεῖρας μου· και
φερε την χεῖρα σου, και βαλε εἰς την πλευραν
μου· και μη γινου ἀπιστος ἀλλα πιστος.

28. Και ἀπεκριθη ὁ Θωμᾶς, και εἰπεν
αὐτῷ· Ὁ Κυριος, μου, και ὁ Θεος μου.

29. Λεγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὅτι ἑωρακας
με, Θωμᾶ, πεπιστευκας· μακαριοι οἱ μη ἰδον-
τες και πιστευσαντες.

30. Πολλα μεν οὐν και ἀλλα σημεῖα ἐποιη-
σεν ὁ Ἰησοῦς ἐνωπιον τῶν μαθητῶν αὐτοῦ,
ἁ οὐκ ἐστι γεγραμμενα ἐν τῷ βιβλιῳ τουτῳ.

31. Ταῦτα δε γέγραπται, ἱνα πιστευσητε,
ὁτι ὁ Ἰησοῦς ἐστιν ὁ Χριστος, ὁ υἱος τοῦ
Θεοῦ, και ἱνα πιστευοντες ζωην ἐχητε ἐν τῷ
ὀνοματι αὐτοῦ.

## Κεφ. XXI.

1. Μετα ταῦτα ἐφανερωσεν ἑαυτον παλιν
ὁ Ἰησοῦς τοῖς μαθηταῖς ἐπι τῆς θαλασσης
τῆς Τιβεριαδος· ἐφανερωσε δε οὑτως.

2. Ἠσαν ὁμοῦ Σιμων Πετρος, και Θωμας
ὁ λεγομενος Διδυμος, και Ναθαναηλ ὁ ἀπο
Κανᾶ τῆς Γαλιλαιας, καὶ οἱ τοῦ Ζεβεδαιου,
και ἀλλοι ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ δυο.

3. Λεγει αὐτοῖς Σιμων Πετρος· Ὑπαγω
ἁλιευειν. Λεγουσιν αὐτῷ· Ἐρχομεθα και ἡμεῖς
συν σοι. Ἐξῆλθον και ἀνεβησαν εἰς το πλοῖον
εὐθυς, και ἐν ἐκεινη τῇ νυκτι ἐπιασαν οὐδεν.

4. Πρωΐας δε ἠδη γενομενης ἐστη ὁ Ἰησοῦς
εἰς τον αἰγιαλον· οὐ μεντοι ᾐδεισαν οἱ μα-
θηται, ὁτι Ἰησοῦς ἐστι.

5. Λεγει οὐν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Παιδια,
μη τι προσφαγιον ἐχετε; Ἀπεκριθησαν αὐ-
τῷ· Οὐ.

6. Ὁ δε εἰπεν αὐτοῖς· Βαλετε εἰς τα δεξια
μερη τοῦ πλοιου το δικτυον και εὑρησετε.

26. Et post dies octo, iterum erant discipuli ejus intus, et Thomas cum eis. Venit Jesus, januis clausis, et stetit in medio, et dixit: Pax vobis!

27. Deinde dicit Thomae: Infer digitum tuum huc, et vide manus meas; et affer manum tuam, et mitte in latus meum: et noli esse incredulus, sed fidelis.

28. Respondit Thomas, et dixit ei: Dominus meus, et Deus meus!

29. Dixit ei Jesus: Quia vidisti me, Thoma, credidisti; beati, qui non viderunt et crediderunt.

30. Multa quidem et alia signa fecit Jesus in conspectu discipulorum suorum, quae non sunt scripta in libro hoc.

31. Haec autem scripta sunt, ut credatis, quia Jesus est Christus, Filius Dei, et ut credentes vitam habeatis in nomine ejus.

## Caput XXI.

1. Postea manifestavit se iterum Jesus discipulis ad mare Tiberiadis. Manifestavit autem sic:

2. Erant simul Simon Petrus et Thomas, qui dicitur Didymus, et Nathanaël, qui erat a Cana Galilaeae, et filii Zebedaei, et alii ex discipulis ejus duo.

3. Dicit eis Simon Petrus: Vado piscari. Dicunt ei: Venimus et nos tecum. Et exierunt et ascenderunt in navim; et illa nocte nihil prendiderunt.

4. Mane autem facto, stetit Jesus in littore; non tamen cognoverunt discipuli, quia Jesus est.

5. Dixit ergo eis Jesus: Pueri, numquid pulmentarium habetis? Responderunt ei: Non.

6. Dicit eis: Mittite in dexteram navigii rete, et invenietis. Miserunt ergo;

.кѕ. И по ѡсми дьнъ, пакы бѣахѫ вънѫтрь оученици ѥго, и Ѳома съ ними. Прiиде же Iисоусъ двьрьмъ затворенамъ, и ста по срѣдѣ и рече (имъ): Миръ вамъ!

.кꙁ. Потомь же глагола Ѳомѣ: Принеси пръстъ свой сѣмо, и виждь рѫцѣ мои· и принеси рѫкѫ твоѭ и вложи въ ребра моꙗ· и не бѫди невѣрьнъ, нъ вѣрьнъ.

.ки. Ѿвѣщта Ѳома и рече ѥмоу: Господь мой, и Богъ мой.

.кѳ. Глагола ѥмоу Iисоусъ: Ꙗко видѣлъ мꙗ ѥси, Ѳомо, вѣрова· блажени, иже не видѣша, и вѣроваша.

.л. Мънога же и ина знамениꙗ сътвори Iисоусъ прѣдъ оученикы своими, иже не сѫть писана въ кънигахъ сихъ.

.ла. Си же писана бꙑша, да вѣрѫ имете, ꙗко Iисоусъ ѥсть Христосъ, Сꙑнъ Божiй, и да вѣроуѭште животъ вѣчьнꙑй имате въ имꙗ ѥго.

## Глава .ка.

.а. По семь ѣви сꙗ пакы Iисоусъ оученикомъ своимъ на мори Тивериадьстѣѥмь. Ѣви же сꙗ имъ тако:

.в. Бѣахѫ въ коупѣ Симонъ Петръ и Ѳома, нарицаѥмꙑй Близньць, и Наѳанаиль, иже бѣ ѿтъ Кана Галилейскꙑꙗ, и сꙑна Зеведеова, и ина ѿтъ оученикъ ѥго дъва.

.г. Глагола имъ Симонъ Петръ: Идѫ рꙑбъ ловитъ. Глаголаша ѥмоу: Идемъ и мꙑ съ тобоѭ. Изидоша же и вѣсѣдоша въ корабль, и въ тѫ нощь неꙗша ничьсоже.

.д. Оутроу же бꙑвъшоу, ста Iисоусъ при брѣзѣ· не познаша же оученици, ꙗко Iисоусъ ѥсть.

.е. Глагола же имъ Iисоусъ: Чада, имате ли что сънѣдьно; Ѿвѣщташа ѥмоу: Ни.

.ѕ. Ѡнъ же рече имъ: Въвръѕѣте ѡ десьнѫѭ странѫ кораблꙗ мрѣжѫ, и ѡбра-

'Εβαλον οὖν, και οὐκέτι αὐτο ἑλκῦσαι ἴσχυσαν ἀπο τοῦ πληθους τῶν ἰχθυων.

Ƭ ϘĽЬЄШѠЭѠЭ. ƱϐƱЬϐՖЭЄ ЖЭ Ƭ ŀϐ ѠЭꙌꙮ ɁЭ ꙌЭЖ++ЬЭЄ ΓЬƟƱΔΔШѠƟ ЭЭЄ ϘѠϐ ꙌϐɁЭЖϐՋѠƱ+ ЬϐƬĽϐ.

7. Λεγει οὖν ὁ μαθητης ἐκεῖνος, ὃν ἠγαπα ὁ 'Ιησοῦς, τῷ Πετρῳ· Ὁ Κυριος ἐστι. Σιμων οὖν Πετρος, ἀκουσας ὅτι ὁ Κυριος ἐστι, τον ἐπενδυτην διεζωσατο (ἦν γαρ γυμνος) και ἔβαλεν ἑαυτον εἰς την θαλασσαν.

.ж. ՖΔ+ՖЭΔ+ ЖЭ ꙮƱЭɁƟŀϐ Ѡϐ, ЭՖЭЖЭ ΔɌĽΔΔ+ШЭ· ꙌՋꙮՋϐ, ΓЭѠЬЭƱƟ· ՖЭՋΓЭΔϐ ЭՋѠϐ. ՋƟꙌЭɁϐ ЖЭ ΓЭѠЬϐ, ՋΔϐƬШ+Ʊϐ ΔŀЭ ՖЭՋΓЭΔϐ ЭՋѠϐ, ЭΓЭɁϐΔϐѠЭꙌϐ ΓЬΔ-ΓЭΔՋ+ ՋЄ (ĽΔ ĽЭ Ɂ+Ֆϐ) Ƭ ƱϐƱЬϐЖЭ ՋЄ Ʊϐ ꙌЭЬЭ.

8. Οἱ δε ἄλλοι μαθηται τῷ πλοιαριῳ ἦλθον, (οὐ γαρ ἦσαν μακραν ἀπο τῆς γῆς, ἀλλ' ὡς ἀπο πηχῶν διακοσιων), συροντες το δικτυον τῶν ἰχθυων.

.ѳ. + ΔЬꙮϐƬƟ ꙮƱЭɁƟVƟ ŀЭЬ+ĽƟVЭꙌϐ ΓЬƟƬΔЭЄ, (ɁЭ ĽΔШЄ ĽЭ Δ+ΔЭƱЭ ϘѠϐ ΔЭꙌЄ, Ɂϐ ΔŀЭ ΔϐƱΔ ՋϐѠΔ Δ+ŀϐѠϐ), ƱΔΔŀЭЄШѠЭ ꙌЬΔЖЭЄ ЬϐƬĽϐ.

9. Ὡς οὖν ἀπεβησαν εἰς την γῆν, βλεπουσιν ἀνθρακαν κειμενην, και ὀψαριον ἐπικειμενον και ἀρτον.

.Δ. Ꙍ ΔŀЭ ƬΔΔΔΔЭЄ Ɂ+ ΔЭꙌΔϐЄ, ƱƟ-ΔΔШЄ ϘՖɁϐ ΔЭЖЄШѠϐ Ƭ ЬϐƬĽЭЄ Ɂ+ ɁЭꙌϐ ΔЭЖЄШѠЭЄ Ƭ ЬΔΔĽϐ.

10. Λεγει αὐτοῖς ὁ 'Ιησοῦς· 'Ενεγκατε ἀπο τῶν ὀψαριων ὧν ἐπιασατε νῦν.

.Ƭ. ՖΔ+ՖЭΔ+ ƬꙌϐ ꙌՋꙮՋϐ· ΓЬƟɁЭՋΔѠЭ ϘѠϐ ЬϐƬĽϐ, ЭЄЖЭ ЭЄՋѠЭ ɁϐƬɁΔ.

11. 'Ανεβη Σιμων Πετρος, και εἵλκυσε το δικτυον ἐπι τῆς γῆς, μεστον ἰχθυων μεγαλων ἑκατον πεντηκοντα τριῶν· και τοσουτων ὄντων, οὐκ ἐσχισθη το δικτυον.

.+Ƭ. ƱϐΔΔΔЭ ЖЭ ՋƟꙌЭɁϐ ΓЭѠЬϐ, Ƭ ƬΔƱΔΔƱЭ ꙌЬΔЖЭЄ Ɂ+ ΔЭꙌΔϐЄ, ΓΔϐɁЭЄ ƱЭΔƬƟЬϐ ЬϐƬĽϐ ՋϐѠЭ Ƭ ΓЄѠϐ ΔЭՋЄѠϐ Ƭ ѠЬƟ· Ƭ ѠЭΔƟŀꙮ ՋЭЄШѠɌ ɁЭ ΓЬЭѠЬϐЖЭ ՋЄ ꙌЬΔЖ+.

12. Λεγει αὐτοῖς ὁ 'Ιησοῦς· Δεῦτε ἀριστησατε. Οὐδεις δε ἐτολμα τῶν μαθητῶν ἐξετασαι αὐτον· Συ τις εἶ; εἰδοτες ὅτι ὁ Κυριος ἐστιν.

.ĽƬ. ՖΔ+ՖЭΔ+ ƬꙌϐ ꙌՋꙮՋϐ· ΓЬƟƬ-ΔΔѠЭ, ϘĽΔΔꙮƟѠЭ. Ꙍ ɁƟŀϐѠЭЖЭ ɁЭ ՋϐꙌΔ-+ШЭ ϘѠϐ ꙮƱЭɁƟŀϐ ƬՋѠЄϐ+ѠƟ ЭՖЭ· Ѡϐ Ƭ ŀϐѠЭ ЭՋƟ; ƱΔΔЭЄШѠЭ ΔŀЭ ՖЭՋΓЭΔϐ ЭՋѠϐ.

13. 'Ερχεται οὖν ὁ 'Ιησοῦς και λαμβανει τον ἀρτον και διδωσιν αὐτοῖς, και το ὀψαριον ὁμοιως.

.ƱƬ. ΓЬƟƬΔЭ ЖЭ ꙌՋꙮՋϐ Ƭ ΓЬƟЭЄѠϐ ЬΔΔĽϐ Ƭ Δ+ՋѠϐ ƬꙌϐ Ƭ ЬϐƬĽЭЄ Ѡ+ŀЭЖΔЭ.

14. Τοῦτο ἤδη τριτον ἐφανερωθη ὁ 'Ιησοῦς τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, ἐγερθεις ἐκ νεκρῶν.

.ՖƬ. ՋЭ ꙮЖЭ ѠЬЭѠƬƟVƟ ΔƱƟ ՋЄ ꙌՋꙮՋϐ ꙮƱЭɁƟŀЭꙌϐ ՋƱЭƟꙌϐ, ƱϐՋѠ+Ʊϐ ϘꙌϐ ꙌЬϐѠ-ƱϐƬƟЬϐ.

15. Ὅτε οὖν ἠριστησαν, λεγει τῷ Σιμωνι Πετρῳ ὁ 'Ιησοῦς· Σιμων 'Ιωνᾶ, ἀγαπᾷς με πλεῖον τουτων; Λεγει αὐτῷ· Ναι Κυριε· συ οἶδας, ὅτι φιλῶ σε. Λεγει αὐτῷ· Βοσκε τα ἀρνια μου.

.ΔƬ. ЭՖΔ+ ЖЭ ϘĽΔΔЭƱ+ШЄ, ՖΔ+ՖЭΔ+ ՋƟꙌЭɁЭƱƟ ΓЭѠЬꙮ ꙌՋꙮՋϐ· ՋƟꙌЭɁЭ ꙌЭ-ɁƟɁϐ, ΔɌĽƟШƟ ΔƟ ꙌЄ Γ+ƱЭ ՋƟЬϐ; ՖΔ+-ՖЭΔ+ ЭꙌꙮ· ЭƟ, ՖЭՋΓЭΔƟ· ѠϐƬ ƱΔՋƟ, ΔŀЭ ΔɌĽΔϐЄ ѠЄ. ՖΔ+ՖЭΔ+ ЭꙌꙮ· Γ+ՋƟ +ՖɁϐVЄ ꙌЭЭЄ.

16. Λεγει αὐτῷ παλιν δευτερον· Σιμων 'Ιωνᾶ, ἀγαπᾷς με; Λεγει αὐτῷ· Ναι, Κυριε· συ οἶδας, ὅτι φιλῶ σε Λεγει αὐτῷ· Ποιμαινε τα προβατα μου.

.ЭƬ. ՖΔ+ՖЭΔ+ ЭꙌꙮ Γ+ŀϐƬ ƱϐѠЭЬƟVЭϐЄ· ՋƟꙌЭɁЭ ꙌЭɁƟɁϐ, ΔɌĽƟШƟ ΔƟ ꙌЄ; ՖΔ+-ՖЭΔ+ ЭꙌꙮ· ЭƟ ՖЭՋΓЭΔƟ· ѠϐƬ ƱΔՋƟ, ΔŀЭ ΔɌĽΔϐЄ ѠЄ. ՖΔ+ՖЭΔ+ ЭꙌꙮ· Ɂ+ՋƟ ϘƱϐVЄ ꙌЭЭЄ.

17. Λεγει αὐτῷ το τριτον· Σιμων 'Ιωνᾶ, φιλεῖς με; 'Ελυπηθη ὁ Πετρος, ὅτι εἶπεν

.ЖƬ. ՖΔ+ՖЭΔ+ ЭꙌꙮ ѠЬЭѠƬƟVƟ· ՋƟ-ꙌЭɁЭ ꙌЭɁƟɁϐ, ΔɌĽƟШƟ ΔƟ ꙌЄ; ϴՋŀЬϐĽΔ

et jam non valebant illud trahere prae multitudine piscium.

штете. Въвръгоша же, и къ томоу не можаахѫ привлѣшти ѥѩ ѿтъ мъножьства рыбъ.

7. Dixit ergo discipulus ille, quem diligebat Jesus, Petro: Dominus est! Simon Petrus cum audisset, quia Dominus est, tunica succinxit se (erat enim nudus), et misit se in mare.

.з. Глагола же оученикъ тъ, ѥгоже любѣаше Інсоусъ, Петрови: Господь ѥсть. Симонъ же Петръ слышавъ, ꙗко Господь ѥсть, епендѹтъмь прѣпоꙗса сѧ, (бѣ бо нагъ), и въвръже сѧ въ морѥ.

8. Alii autem discipuli navigio venerunt (non enim longe erant a terra, sed quasi cubitis ducentis); trahentes rete piscium.

.и. А дроугии оученици корабицьмь приидоша, (не бѣша бо далече ѿтъ земѩ, нъ ꙗко дъвѣ сътѣ лакътъ)· влѣкѫште мрѣжѫ рыбъ.

9. Ut ergo descenderunt in terram, viderunt prunas positas, et piscem superpositum, et panem.

.ѳ. И ꙗко излѣзоша на землѭ, видѣша ѿгнь лежашть, и рыбѫ на нѥмь лежаштѫ, и хлѣбъ.

10. Dicit eis Jesus: Afferte de piscibus, quos prendidistis nunc.

.і. Глагола имъ Інсоусъ: Принесѣте ѿтъ рыбъ, ꙗже ꙗсте нынѣ.

11. Ascendit Simon Petrus et traxit rete in terram, plenum magnis piscibus, centum quinquaginta tribus. Et cum tanti essent, non est scissum rete.

.аі. Вълѣзе же Симонъ Петръ и извлѣче мрѣжѫ на землѭ, плънѫ великыихъ рыбъ, съто и пѧть десѧть и три. И толикоу бывъшоу, не протръже сѧ мрѣжа.

12. Dicit eis Jesus: Venite, prandete! Et nemo audebat discumbentium interrogare eum: Tu quis es? scientes, quia Dominus est.

.ві. Глагола имъ Інсоусъ: Приидѣте, ѡбѣдоуйте. И никътоже не съмѣаше ѿтъ оученикъ въпрашати ѥго: Ты къто ѥси; вѣдѫште, ꙗко Господь ѥсть.

13. Et venit Jesus, et accipit panem, et dat eis, et piscem similiter.

.гі. Приide же Інсоусъ, и приꙗтъ хлѣбъ и дастъ имъ, и рыбѫ такожде.

14. Hoc jam tertio manifestatus est Jesus discipulis suis, cum resurrexisset a mortuis.

.ді. Се оуже третицеѭ ꙗви сѧ Інсоусъ оученикомъ своимъ, въставъ ѿтъ мрътвыихъ.

15. Cum ergo prandissent, dicit Simoni Petro Jesus: Simon Joannis! diligis me plus his? Dicit ei: Etiam, Domine, tu scis, quia amo te. Dicit ei: Pasce agnos meos!

.еі. Ѥгда же ѡбѣдоваша, глагола Симоноу Петроу Інсоусъ: Симоне Иониинъ, любиши ли мѧ паче сихъ; Глагола ѥмоу: Ѥй, Господи, ты вѣси, ꙗко люблѭ тѧ. Глагола ѥмоу: Паси агньца моѩ!

16. Dicit ei iterum: Simon Joannis, diligis me? Ait illi: Etiam, Domine! tu scis, quia amo te. Dicit ei: Pasce agnos meos!

.ѕі. Глагола ѥмоу второѥ: Симоне Иониинъ, любиши ли мѧ; Глагола ѥмоу: Ѥй Господи, ты вѣси, ꙗко люблѭ тѧ. Глагола ѥмоу: Паси агньца моѩ.

17. Dicit ei tertio: Simon Joannis, amas me? Contristatus est Petrus, quia

.зі. Глагола ѥмоу третиѥѥ: Симоне Иониинъ, любиши ли мѧ; Ѡскрьбѣ же

αὐτῷ το τριτον· Φιλεῖς με; και εἶπεν αὐτῷ· Κυριε, συ παντα οἶδας· συ γινωσκεις, ὅτι φιλῶ σε. Λεγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Βοσκε τα προβατα μου.

18. Ἀμην, ἀμην λεγω σοι· Ὅτε ἦς νεωτερος, ἐζωννυες σεαυτον, και περιεπατεις, ὅπου ἤθελες· ὅταν δε γηρασῃς, ἐκτενεῖς τας χεῖρας σου, και ἄλλος σε ζωσει, και οἴσει, ὅπου οὐ θελεις.

19. Τοῦτο δε εἶπε, σημαινων ποιῳ θανατῳ δοξασει τον Θεον. Και τοῦτο εἰπων λεγει αὐτῷ· Ἀκολουθει μοι.

20. Ἐπιστραφεις δε ὁ Πετρος βλεπει τον μαθητην, ὃν ἠγαπα ὁ Ἰησοῦς, ἀκολουθοῦντα, ὃς και ἀνεπεσεν ἐν τῷ δειπνῳ ἐπι το στῆθος αὐτοῦ και εἶπε· Κυριε, τις ἐστιν ὁ παραδιδους σε;

21. Τουτον οὖν ἰδων ὁ Πετρος λεγει τῷ Ἰησοῦ· Κυριε, οὗτος δε τι;

22. Λεγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἐαν αὐτον θελω μενειν ἕως ἐρχομαι, τι προς σε; Συ ἀκολουθει μοι.

23. Ἐξῆλθεν οὖν ὁ λογος οὗτος εἰς τους ἀδελφους, ὅτι ὁ μαθητης ἐκεῖνος οὐκ ἀποθνησκει· και οὐκ εἶπεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, ὅτι οὐκ ἀποθνησκει· ἀλλ'· Ἐαν αὐτον θελω μενειν ἕως ἐρχομαι, τι προς σε;

24. Οὗτος ἐστιν ὁ μαθητης ὁ μαρτυρῶν περι τουτων, και γραψας ταῦτα· και οἴδαμεν, ὅτι ἀληθης ἐστιν ἡ μαρτυρια αὐτοῦ.

25. Ἐστι δε και ἀλλα πολλα ὅσα ἐποιησεν ὁ Ἰησοῦς, ἅτινα ἐαν γραφηται καθ' ἑν, οὐδε αὐτον οἶμαι τον κοσμον χωρῆσαι τα γραφομενα βιβλια.

[illegible]

dixit ei tertio: Amas me? et dixit ei: Domine, tu omnia nosti, tu scis, quia amo te. Dixit ei: Pasce oves meas!

Петръ, ꙗко рече ѥмоу третиѥѥ: Любиши ли мѧ; и глагола ѥмоу: Господи, ты вьсе вѣси, ты вѣси, ꙗко люблѭ тѧ. Глагола ѥмоу: Паси ѡвьцѧ моѩ!

18. Amen, amen dico tibi: Cum esses junior, cingebas te, et ambulabas, ubi volebas; cum autem senueris, extendes manus tuas, et alius te cinget, et ducet, quo tu non vis.

.иі. Аминъ, аминъ глаголѭ тебѣ: Ѥгда бѣ юнъ, поꙗсааше сѧ самъ и хождааше ꙗможе хотѣаше· ѥгда же състарѣѥши сѧ, въздеждеши рѫцѣ твои, и инъ тѧ поꙗшеть, и ведеть, ꙗможе не хоштеши.

19. Hoc autem dixit, significans, qua morte clarificaturus esset Deum. Et cum hoc dixisset, dicit ei: Sequere me!

.ѳі. Се же рече ꙁнаменаѩ, коѥѭ съмрътиѭ прославить Бога. И се рекъ, глагола ѥмоу: Иди по мънѣ.

20. Conversus Petrus vidit illum discipulum, quem diligebat Jesus, sequentem, qui et recubuit in coena super pectus ejus, et dixit: Domine, quis est, qui tradet te?

.к. Ѡбрашть же сѧ Петръ видѣ оученика, ѥгоже любѣаше Інсоусъ, идѫшта въ слѣдъ, иже и възлеже на вечери на пръси ѥго и рече: Господи, къто ѥсть прѣдаѧй тѧ;

21. Hunc ergo cum vidisset Petrus, dixit Jesu: Domine, hic autem quid?

.ка. Сего оубо видѣвъ Петръ, глагола Інсоусови: Господи, а сь чьто;

22. Dicit ei Jesus: Sic eum volo manere, donec veniam, quid ad te? Tu me sequere!

.кв. Глагола ѥмоу Інсоусъ: Аште хоштѫ, да тъ прѣбываѥть, доньдеже приидѫ, чьто ѥсть тебѣ; Ты по мънѣ гради.

23. Exiit sermo iste inter fratres, quia discipulus ille non moritur. Et non dixit ei Jesus: Non moritur; sed: Sic eum volo manere, donec veniam, quid ad te?

.кг. Изиде же слово се въ братиѭ, ꙗко оученикъ тъ не оумьреть. Не рече же ѥмоу Інсоусъ: Ꙗко не оумьреть· нъ: Аште хоштѫ, да тъ прѣбываѥть, доньдеже приидѫ, чьто ѥсть тебѣ;

24. Hic est discipulus ille, qui testimonium perhibet de his, et scripsit haec; et scimus, quia verum est testimonium ejus.

.кд. Сь ѥсть оученикъ съвѣдѣтельствоуѩй ѡ сихъ, иже и написа си· и вѣмъ, ꙗко истиньно ѥсть съвѣдѣтельство ѥго.

25. Sunt autem et alia multa, quae fecit Jesus, quae si scribantur per singula, nec ipsum arbitror mundum capere posse eos, qui scribendi sunt, libros.

.ке. Сѫть же и ина мънога, ꙗже сътвори Інсоусъ, ꙗже аште по ѥдиномоу писана бываѭть, ни самомоу, мьнѭ, вьсемоу мироу въмѣстити пишемыихъ кънигъ.
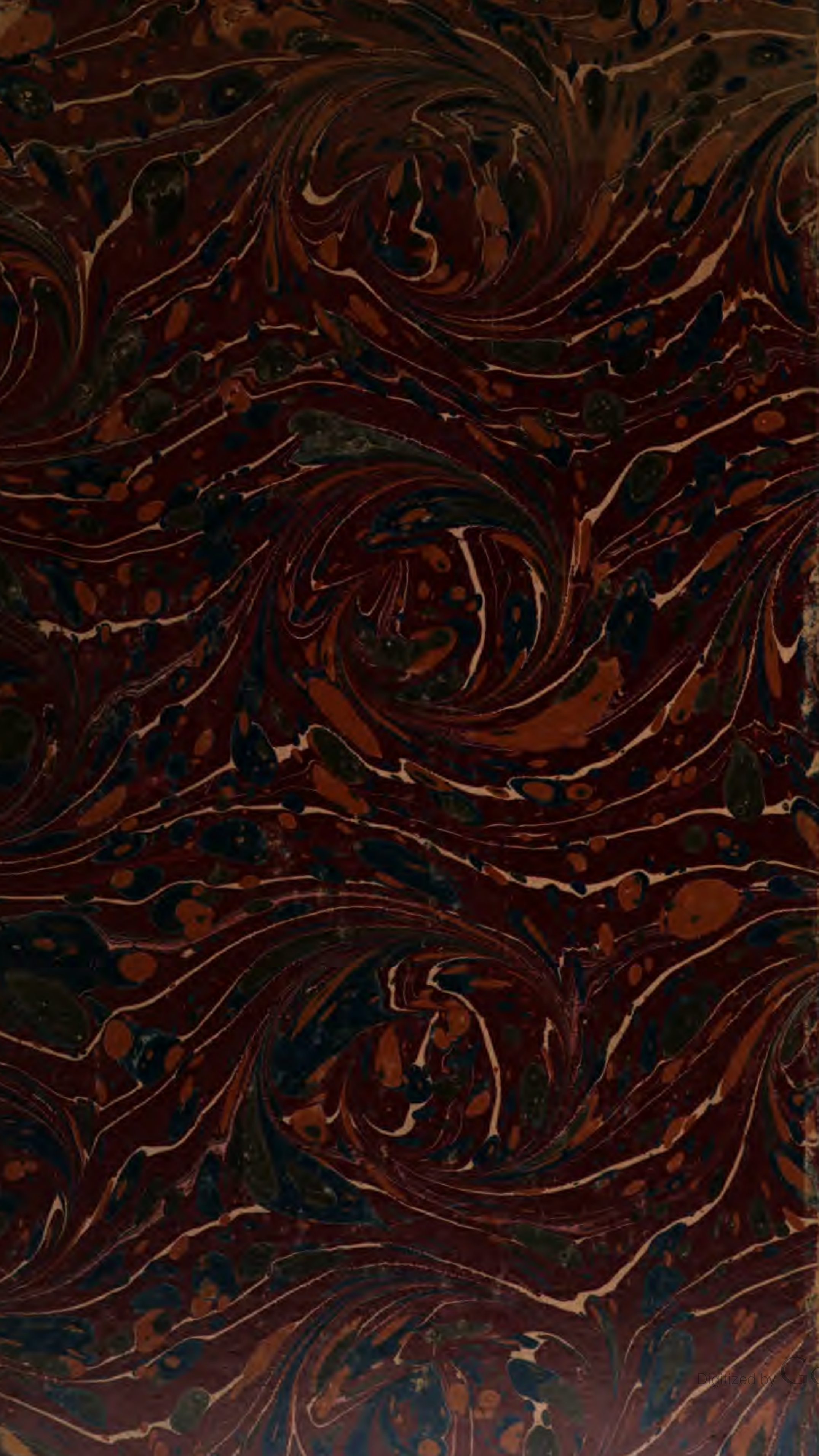
Oct. 28 1898.